# ضعیف حدیث کی شرعی حیثیت

ضعیف حدیث کے بارے میں جمہور محدثین کی آراء، اُن کا تعامل، احکام وفضائل میں بیان کرنے کی شرعی حیثیت، تحقیق کے نام پر ضعیف حدیث کے بارے میں پیدا کردہ شبہات ومنفی رویّوں کا تنقیدی جائزہ


مؤلف
مُحمّد انور کوہستانی
فاضل ومتخصّص فی الحدیث
جامعہ فارُوقیہ شاہ فیصل کالونی کراچی



الخلیل
پبلشنگ ہاؤس
راولپنڈی

# فہرست مضامین


| نمبر | عنوان | صفحہ |
|---|---|---|
| 1 | انتساب | 3 |
| 2 | تقریظ شیخ الحدیث مولانا سلیم اللہ خان صاحب | 26 |
| 3 | تقریظ حضرت مولانا محمد منظور مینگل صاحب | 27 |
| 4 | تقریظ حضرت مولانا عبدالماجد صاحب | 29 |
| 5 | مقدمہ از مؤلف | 33 |
| 6 | کتاب وموضوع کا خاکہ | 37 |
| 7 | تمہید | 41 |
| 8 | حدیث کی تعریف | 41 |
| 9 | حدیث کی لغوی تعریف | 41 |
| 10 | کلام الٰہی میں لفظ حدیث کا استعمال | 41 |
| 11 | کلام نبوی میں لفظ حدیث کا استعمال | 42 |
| 12 | حدیث کی اصطلاحی تعریف | 43 |
| 13 | حافظ ابن حجر رحمہ اللہ، علامہ سخاوی رحمہ اللہ، ملا علی قاری رحمہ اللہ، علامہ طیبی رحمہ اللہ سے اس کے حوالہ جات | 43 |
| 14 | کیا صحابہ اور تابعین کے آثار بھی حدیث ہیں؟ | 46 |
| 15 | حدیث کا وجہ تسمیہ، وجہ تسمیہ کے بارے میں ارباب فن کی آراء | 48 |
| 16 | حافظ ابن حجرؒ، علامہ سیوطیؒ، علامہ شبیر احمد عثمانیؒ کی عبارتیں | 50 |
| 17 | خبر کی تعریف | 51 |

| | | |
|---|---|---|
| 18 | خبر وحدیث میں فرق | 51 |
| 19 | خبر کی لغوی تعریف | 51 |
| 20 | خبر کی اصطلاحی تعریف | 51 |
| 21 | اثر کی تعریف | 51 |
| 22 | حدیث واثر میں فرق | 51 |
| 23 | اثر کی لغوی تعریف | 51 |
| 24 | اثر کی اصطلاحی تعریف | 52 |
| 25 | سنت کی تعریف | 57 |
| 26 | حدیث وسنت میں فرق | 57 |
| 27 | سنت کی لغوی تعریف | 57 |
| 28 | سنت کی اصطلاحی تعریف | 58 |
| 29 | سنت قولی | 59 |
| 30 | سنت فعلی | 60 |
| 31 | سنت تقریری | 60 |
| 32 | سنت کے معنی ومفہوم میں علماء کا اختلاف | 60 |
| 33 | سنت کی تشریح حضرات محدثین کے نزدیک | 60 |
| 34 | سنت کی تشریح حضرات اصولیین کے نزدیک | 61 |
| 35 | سنت کی تشریح حضرات فقہاء کے نزدیک | 61 |
| 36 | لفظ سنت کی تشریح | 62 |
| 37 | باب اوّل | 64 |

| | | |
|---|---|---|
| 38 | حدیث ضعیف اور اسباب ضعف | 64 |
| 39 | تمہید | 64 |
| 40 | ضعیف حدیث | 65 |
| 41 | حدیث ضعیف کی تعریف | 65 |
| 42 | حدیث صحیح وحدیث حسن کی شرائط | 65 |
| 43 | فصل اوّل: اتصال سند کے نہ ہونے کے سبب ضعف کا واقع ہونا | 66 |
| 44 | انقطاع کی اقسام | 66 |
| 45 | انقطاع ظاہری | 66 |
| 46 | انقطاع خفی | 66 |
| 47 | انقطاع ظاہری کے لحاظ سے ضعیف حدیث کی تقسیم (۱) معلق (۲) مرسل (۳) منقطع (۴) معضل | 67 |
| 48 | (۱) حدیث معلق | 67 |
| 49 | حدیث معلق کی تعریف اور حکم | 67 |
| 50 | حدیث معلق کی مثال | 67 |
| 51 | حدیث معلق کی اقسام | 67 |
| 52 | حدیث معلق کا حکم | 68 |
| 53 | (۲) حدیث مرسل | 71 |
| 54 | حدیث مرسل کی تعریف اور حکم | 71 |
| 55 | حدیث مرسل کی مثال | 71 |
| 56 | حدیث مرسل کا حکم | 71 |

| نمبر | عنوان | صفحہ |
|---|---|---|
| 57 | (۳) حدیث منقطع | 72 |
| 58 | حدیث منقطع کی تعریف اور حکم | 72 |
| 59 | حدیث منقطع کی مثال | 73 |
| 60 | حدیث منقطع کا حکم | 74 |
| 61 | (۴) حدیث معضل | 74 |
| 62 | حدیث معضل کی تعریف اور حکم | 74 |
| 63 | حدیث معضل کی مثال | 74 |
| 64 | حدیث معضل کا حکم | 75 |
| 65 | انقطاع خفی کے اعتبار سے ضعیف حدیث کی تقسیم: (۱) مدلس (۲) مرسل خفی | 75 |
| 66 | (۱) حدیث مدلس | 75 |
| 67 | حدیث مدلس کی تعریف اور حکم | 75 |
| 68 | تدلیس کی قسمیں: (۱) تدلیس الاسناد (۲) تدلیس الشیوخ | 75 |
| 69 | (۱) تدلیس الاسناد | 75 |
| 70 | تدلیس الاسناد کی مثال | 76 |
| 71 | تدلیس الاسناد کی قسمیں | 76 |
| 72 | (۱) تدلیس الحذف والاسقاط | 76 |
| 73 | (۲) تدلیس القطع والاقطاف | 76 |
| 74 | (۳) تدلیس باسقاط اداة الروایة | 76 |
| 75 | (۴) تدلیس العطف | 77 |

| | | |
|---|---|---|
| 76 | (۵) تدلیس التسویہ | 77 |
| 77 | تدلیس الاسناد کی مثال | 77 |
| 78 | تدلیس الاسناد کا حکم | 75 |
| 79 | (۲) تدلیس الشیوخ | 78 |
| 80 | تدلیس الشیوخ کی دو قسمیں (ا) تدلیس الشیوخ (۲) تدلیس الاماکن | 78 |
| 81 | (ا) تدلیس الشیوخ | 79 |
| 82 | تدلیس الشیوخ کی مثال | 79 |
| 83 | (۲) تدلیس الاماکن | 79 |
| 84 | تدلیس الاماکن کا حکم | 80 |
| 85 | (۲) حدیث مرسل خفی | 80 |
| 86 | حدیث مرسل خفی کی تعریف | 80 |
| 87 | حدیث مرسل خفی کی مثال | 80 |
| 88 | حدیث مرسل خفی کا حکم | 81 |
| 89 | حدیث مدلس اور حدیث مرسل خفی کے درمیان فرق | 81 |
| 90 | فصل دوم: راوی پر کلام ہونے کے سبب ضعف کا واقع ہونا | 82 |
| 91 | تمہید: موضوع کو چھوڑ کر باقی اسباب کا ذکر | 82 |
| 92 | (ا) حدیث متروک | 82 |
| 93 | حدیث متروک کی تعریف اور حکم | 82 |
| 94 | حدیث متروک کی مثال | 82 |
| 95 | حدیث متروک کا حکم | 83 |

| | | |
|---|---|---|
| 96 | (۲) حدیث منکر | 83 |
| 97 | حدیث منکر کی تعریف | 83 |
| 98 | حدیث منکر کی مثال | 83 |
| 99 | حدیث منکر کا حکم | 85 |
| 100 | (۳) حدیث معلل | 86 |
| 101 | حدیث معلل کی تعریف | 86 |
| 102 | حدیث معلل کی اقسام | 86 |
| 103 | (۱) معلل سنداً | 86 |
| 104 | (۲) معلل متناً | 86 |
| 105 | معلل سندا کی تعریف اور مثال | 86 |
| 106 | معلل متنا کی مثال | 87 |
| 107 | (۴) حدیث مدرج | 87 |
| 108 | حدیث مدرج کی تعریف اور حکم | 87 |
| 109 | حدیث مدرج کی اقسام | 87 |
| 110 | (۱) مدرج الاسناد | 87 |
| 111 | مدرج الاسناد کی مثال | 88 |
| 112 | (۲) مدرج المتن | 89 |
| 113 | مدرج المتن کی اقسام | 89 |
| 114 | حدیث مدرج کا حکم | 90 |
| 115 | (۵) حدیث مقلوب | 90 |

| | | |
|---|---|---|
| 116 | حدیث مقلوب کی تعریف اور حکم | 91 |
| 117 | حدیث مقلوب کی اقسام | 91 |
| 118 | (ا) مقلوب السند | 91 |
| 119 | مقلوب السند کی مثال | 91 |
| 120 | (۲) مقلوب المتن | 91 |
| 121 | مقلوب المتن کی مثال | 92 |
| 122 | حدیث مقلوب کا حکم | 92 |
| 123 | (۶) المزید فی متصل الاسانید | 92 |
| 124 | المزید فی متصل الاسانید حدیث کی تعریف | 92 |
| 125 | المزید فی متصل الاسانید حدیث کی مثال | 93 |
| 126 | (۷) حدیث مضطرب | 94 |
| 127 | حدیث مضطرب کی تعریف اور حکم | 94 |
| 128 | حدیث مضطرب کی اقسام | 94 |
| 129 | (ا) مضطرب السند | 94 |
| 130 | مضطرب السند کی مثال | 94 |
| 131 | (۲) مضطرب المتن | 95 |
| 132 | مضطرب المتن کی مثال | 95 |
| 133 | حدیث مضطرب کا حکم | 95 |
| 134 | (۸) حدیث مصحف | 96 |
| 135 | حدیث مصحف کی تعریف | 96 |

| | | |
|---|---|---|
| 136 | حدیث مصحف کی اقسام | 96 |
| 137 | (۱) مصحف فی السند | 96 |
| 138 | مصحف فی السند کی مثال | 96 |
| 139 | (۲) مصحف فی المتن | 96 |
| 140 | مصحف فی المتن کی مثال | 97 |
| 141 | حدیث مصحف کا حکم | 97 |
| 142 | (۹) جہالت | 97 |
| 143 | مجہول راوی | 97 |
| 144 | مجہول راوی کی قسمیں | 97 |
| 145 | (۱) مجہول الذات | 97 |
| 146 | مجہول الذات کی تعریف | 97 |
| 147 | اسباب جہالت | 98 |
| 148 | (۱) کثرت صفات | 98 |
| 149 | کثرت صفات کی مثال | 98 |
| 150 | نام کی عدم صراحت | 98 |
| 151 | نام کی عدم صراحت کی مثال | 98 |
| 152 | مجہول الذات راوی کا حکم | 98 |
| 153 | مجہول العین | 99 |
| 154 | مجہول العین راوی کی تعریف | 99 |
| 155 | مجہول العین راوی کا حکم | 99 |

| | | |
|---|---|---|
| 156 | مجہول الحال | 99 |
| 157 | مجہول الحال راوی کی تعریف | 99 |
| 158 | مجہول الحال راوی کا حکم | 100 |
| 159 | (۱۰) بدعت | 100 |
| 160 | بدعت کی تعریف | 100 |
| 161 | بدعت کی اقسام | 100 |
| 162 | بدعت مکفرہ | 100 |
| 163 | بدعت مکفرہ کا حکم | 101 |
| 164 | بدعت مفسقہ | 101 |
| 165 | بدعت مفسقہ کا حکم | 101 |
| 166 | (۱۱) سوء حفظ | 101 |
| 167 | سوء حفظ کی تعریف | 101 |
| 168 | سوء حفظ کی قسمیں | 101 |
| 169 | سوء حفظ لازمی | 101 |
| 170 | سوء حفظ طاری و عارضی | 102 |
| 171 | سوء حفظ کا حکم | 102 |
| 172 | ضعیف حدیث کی تمام اقسام کا اجمالی حکم | 102 |
| 173 | باب دوم: ضعیف حدیث کی استدلالی و عملی حیثیت | 103 |
| 174 | تمہید | 103 |
| 175 | حجیت حدیث | 103 |

| | | |
|---|---|---|
| 176 | حجیت حدیث کی پہلی دلیل | 103 |
| 177 | حجیت حدیث کی دوسری دلیل | 103 |
| 178 | حجیت حدیث کی تیسری دلیل | 104 |
| 179 | حجیت حدیث کی چھوتھی دلیل | 104 |
| 180 | حجیت حدیث کی پانچویں دلیل | 104 |
| 181 | فصل اول: عقائد کے باب میں ضعیف حدیث کا مقام | 106 |
| 182 | عقیدہ کی تعریف | 106 |
| 183 | خبر واحد کا حکم | 107 |
| 184 | خبر واحد سے علم یقینی ثابت نہ ہونے کے دلائل | 108 |
| 185 | متعدد ائمہ کرام سے اس کے حوالہ جات | 108 |
| 186 | (۱) ابو بکر جصاص حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 108 |
| 187 | (۲) ابن عبد البر مالکی رحمہ اللہ کا حوالہ | 109 |
| 188 | (۳) امام الحرمین شافعی رحمہ اللہ کا حوالہ | 110 |
| 189 | (۴) فخر الاسلام بزدوی حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 110 |
| 190 | (۵) امام سرخسی حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 111 |
| 191 | (۶) امام غزالی شافعی رحمہ اللہ کا حوالہ | 112 |
| 192 | (۷) علامہ ابن العربی مالکی رحمہ اللہ کا حوالہ | 112 |
| 193 | (۸) علامہ کاسانی حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 113 |
| 194 | (۹) امام رازی شافعی رحمہ اللہ کا حوالہ | 113 |
| 195 | (۱۰) علامہ ابن قدامہ حنبلی رحمہ اللہ کا حوالہ | 114 |

| | | |
|---|---|---|
| 196 | (۱۱) صاحب محیط برہانی کا حوالہ | 115 |
| 197 | (۱۲) علامہ زیلعی حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 117 |
| 198 | (۱۳) علامہ تاج الدین سبکی شافعی رحمہ اللہ کا حوالہ | 117 |
| 199 | (۱۴) علامہ نووی شافعی رحمہ اللہ کا حوالہ | 117 |
| 200 | (۱۵) علامہ تفتازانی رحمہ اللہ کا حوالہ | 118 |
| 201 | (۱۶) علامہ زرکشی شافعی رحمہ اللہ کا حوالہ | 119 |
| 202 | (۱۷) علامہ ابن ہمام حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 119 |
| 203 | (۱۸) علامہ ابن ابی شریف شافعی رحمہ اللہ کا حوالہ | 120 |
| 204 | (۱۹) علامہ ابن نجیم حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 120 |
| 205 | (۲۰) علامہ امیر بادشاہ حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 121 |
| 206 | (۲۱) علامہ ملا علی قاری حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 121 |
| 207 | (۲۲) علامہ عبدالحی لکھنوی حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 122 |
| 208 | (۲۳) علامہ ابن بدران دمشقی حنبلی رحمہ اللہ کا حوالہ | 122 |
| 209 | (۲۴) خبر واحد کے بارے میں امام احمد بن حنبل رحمہ اللہ کے موقف کی وضاحت | 123 |
| 210 | (۲۵) علامہ بحر العلوم کا حوالہ | 125 |
| 211 | (۲۶) علامہ محمد انور شاہ کشمیری حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 126 |
| 212 | (۲۷) علامہ شبیر احمد عثمانی حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 126 |
| 213 | کیا صحیحین کی حدیثیں علم یقینی کا فائدہ دیتی ہے؟<br>علامہ ابن الصلاح رحمہ اللہ کے موقف کی وضاحت | 127 |
| 214 | صحیحین کی احادیث کا علم یقینی نہ دینے کے حوالہ جات | 127 |

| | | |
|---|---|---|
| 215 | (۱) علامہ قاسم بن قطلو بغا حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 128 |
| 216 | (۲) علامہ عزالدین بن عبدالسلام شافعی رحمہ اللہ کا حوالہ | 128 |
| 217 | (۳) علامہ جعفر ادفوی شافعی رحمہ اللہ کا حوالہ | 129 |
| 218 | (۴) علامہ ابن نجیم حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 130 |
| 219 | (۵) علامہ ابن الحنبلی حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 130 |
| 220 | (۶) علامہ محب اللہ بہاری حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 131 |
| 221 | (۷) علامہ بحر العلوم حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 131 |
| 222 | (۸) علامہ صنعانی کا حوالہ | 133 |
| 223 | (۹) علامہ طاہر جزائری رحمہ اللہ کا حوالہ | 136 |
| 224 | (۱۰) علامہ شبیر احمد عثمانی حنفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 137 |
| 225 | (۱۱=۱۶) علامہ عراقی، محقق ابن ہمام، امیر الحاج، ملا علی القاری، علامہ عبدالفتاح ابوغدہ اور علامہ عبدالرشید نعمانی رحمہم اللہ کے حوالے | 139 |
| 226 | خبر واحد سے عقیدہ کے ثبوت کے بارے میں علامہ ابن قیم رحمہ اللہ اور شیخ ناصر الدین البانی صاحب کا جمہور سے تفرد | 43 |
| 227 | ان کے موقف کی تردید علامہ ابن تیمیہ رحمہ اللہ کی عبارت سے | 144 |
| 228 | علامہ ابن القیم رحمہ اللہ کا حدیث طواف فی الارض سے استدلال | 146 |
| 229 | طواف فی الاض والی حدیث کی فنی حیثیت | 146 |
| 230 | علامہ ابن کثیر رحمہ اللہ کا حوالہ | 147 |
| 231 | حافظ ابن حجر رحمہ اللہ کا حوالہ | 147 |
| 232 | علامہ ابن تیمیہ رحمہ اللہ اور علامہ ابن قیم رحمہ اللہ کے ہاں لفظ استواء کا معنی | 147 |

| | | |
|---|---|---|
| 233 | مقام محمود کی تفسیر | 147 |
| 234 | (۱) علامہ ابن تیمیہ رحمہ اللہ کے نزدیک | 148 |
| 235 | (۲) علامہ ابن قیم رحمہ اللہ کے نزدیک | 148 |
| 236 | مقام محمود کی تفسیر میں علامہ طبری رحمہ اللہ کی نقل کردہ حدیث کی فنی حیثیت | 152 |
| 237 | عباد بن یعقوب کے بارے میں حضرات محدثین کے اقوال | 152 |
| 238 | محمد بن فضیل کے بارے میں حضرات محدثین کے اقوال | 153 |
| 239 | لیث بن ابی سلیم کے بارے میں حضرات محدثین کے اقوال | 154 |
| 240 | (۳) مقام محمود کی تفسیر علامہ ذہبی رحمہ اللہ کے نزدیک | 156 |
| 241 | (۴) شیخ ناصر الدین البانی صاحب کے نزدیک | 156 |
| 242 | (۵) علامہ ابن جریر طبری رحمہ اللہ کے نزیک | 156 |
| 243 | (۶) امام مجاہد رحمہ اللہ کے نزدیک | 156 |
| 244 | (۷) علامہ قرطبی رحمہ اللہ کے نزدیک | 156 |
| 245 | (۸) علامہ ابن کثیر رحمہ اللہ کے نزدیک | 156 |
| 246 | سنن ابی داؤد کی حدیث سبعۃ اوعال کی فنی حیثیت | 160 |
| 247 | عبداللہ بن عمیرہ کے بارے میں حضرات محدثین کے اقوال | 160 |
| 248 | ولید بن عبداللہ بن ابی ثور کے بارے میں | 161 |
| 249 | حدیث سبعۃ اوعال کے بارے میں علامہ ابن جوزی رحمہ اللہ کا حوالہ | 162 |
| 250 | علامہ ابن العربی رحمہ اللہ کا حوالہ | 162 |
| 251 | صفات باری تعالی کے بارے میں معتزلہ کا موقف | 170 |
| 252 | مقاتل بن سلیمان کا موقف | 170 |

| | | |
|---|---|---|
| 253 | جمہور کا موقف | 170 |
| 254 | ضعف کے درجات | 171 |
| 255 | علامہ محمد عوامہ حفظہ اللہ کے نزدیک | 172 |
| 256 | شیخ محمود سعید ممدوح حفظہ اللہ کے نزدیک | 173 |
| 257 | جرح کے درجات | 173 |
| 258 | حدیث منکر کے بارے میں مزید تفصیل | 174 |
| 259 | فصل دوم: فضائل اور احکام میں ضعیف حدیث کا مقام | 175 |
| 260 | پہلا مذہب: حدیث ضعیف مطلقاً حجت ہے | 176 |
| 261 | حدیث ضعیف اور ائمہ اربعہ | 176 |
| 262 | موضع احتیاط میں ضعیف خدیث احکام میں بھی مستدل بن سکتی ہے | 182 |
| 263 | علامہ نووی رحمہ اللہ کا حوالہ | 182 |
| 264 | علامہ زرکشی رحمہ اللہ کا حوالہ | 183 |
| 265 | علامہ سیوطی رحمہ اللہ کا حوالہ | 183 |
| 266 | کیا ائمہ اربعہ حدیث کی مخالفت کرتے ہیں؟ | 186 |
| 267 | امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ کے ہاں اخبار آحاد کو پرکھنے کے اصول | 186 |
| 268 | دوسرا مذہب: ضعیف حدیث فضائل میں حجت ہے نہ کہ احکام میں | 188 |
| 269 | (۱) علامہ نووی رحمہ اللہ کا حوالہ | 189 |
| 270 | (۲) علامہ ابن حجر مکی ہیتمی رحمہ اللہ کا حوالہ | 189 |
| 271 | (۳) علامہ ملا علی قاری رحمہ اللہ کا حوالہ | 190 |
| 272 | (۴) امیر المؤمنین فی الحدیث امام سفیان ثوری رحمہ اللہ کا حوالہ | 190 |

| 273 | (۵) امام سفیان بن عیینہ رحمہ اللہ کا حوالہ | 191 |
|---|---|---|
| 274 | (۶) حضرت عبد اللہ بن مبارک رحمہ اللہ کا حوالہ | 192 |
| 275 | (۷) علامہ ابن عبد البر رحمہ اللہ کا حوالہ | 193 |
| 276 | (۸) امام عبد الرحمٰن بن مہدی رحمہ اللہ کا حوالہ | 193 |
| 277 | (۹) امام احمد حنبل رحمہ اللہ کا حوالہ | 194 |
| 278 | (۱۰) امام حاکم نیسابوری رحمہ اللہ کا حوالہ | 194 |
| 279 | (۱۱) علامہ عنبری رحمہ اللہ کا حوالہ | 195 |
| 280 | (۱۲) علامہ ابن قدامہ حنبلی رحمہ اللہ کا حوالہ | 195 |
| 281 | (۱۳) علامہ ابن الصلاح رحمہ اللہ کا حوالہ | 196 |
| 282 | (۱۴) علامہ نووی رحمہ اللہ کا حوالہ | 196 |
| 283 | (۱۵) علامہ ناصر الدین دمشقی رحمہ اللہ کا حوالہ | 196 |
| 284 | (۱۶) علامہ طیبی رحمہ اللہ کا حوالہ | 198 |
| 285 | (۱۷) علامہ زرکشی رحمہ اللہ کا حوالہ | 198 |
| 286 | (۱۸) علامہ عراقی رحمہ اللہ کا حوالہ | 198 |
| 287 | (۱۹) حافظ ابن حجر رحمہ اللہ کا حوالہ | 199 |
| 288 | (۲۰) محقق ابن ہمام رحمہ اللہ کا حوالہ | 199 |
| 289 | (۲۱) علامہ سید شریف جرجانی رحمہ اللہ کا حوالہ | 200 |
| 290 | (۲۲) علامہ جلال الدین محلی رحمہ اللہ کا حوالہ | 201 |
| 291 | (۲۳) علامہ سخاوی رحمہ اللہ کا حوالہ | 201 |
| 292 | (۲۴) علامہ سیوطی رحمہ اللہ کا حوالہ | 201 |

| | | |
|---|---|---|
| 293 | (۲۵) علامہ زکریا انصاری رحمہ اللہ کا حوالہ | 202 |
| 294 | (۲۶) علامہ ابن نجار حنبلی رحمہ اللہ کا حوالہ | 203 |
| 295 | (۲۷) علامہ خطیب شربینی رحمہ اللہ کا حوالہ | 203 |
| 296 | (۲۸) علامہ علاء الدین حصکفی رحمہ اللہ کا حوالہ | 204 |
| 297 | (۲۹) علامہ وزیر یمانی رحمہ اللہ کا حوالہ | 204 |
| 298 | (۳۰) علامہ عبد العزیز فرہاروی رحمہ اللہ کا حوالہ | 205 |
| 299 | (۳۱) علامہ عبد الحی لکھنوی رحمہ اللہ کا حوالہ | 205 |
| 300 | (۳۲=۳۶) علامہ سید محمد نذیر حسین دہلوی، مولانا محمد عبد الوہاب، مولانا سید شریف حسین، مولانا سید احمد حسین اور مولانا حفیظ اللہ صاحب رحمہم اللہ کا حوالہ | 207 |
| 301 | (۳۷) فقیہ الہند مولانا رشید احمد گنگوہی رحمہ اللہ کا حوالہ | 208 |
| 302 | (۳۸) محدث علامہ عبد اللہ غماری رحمہ اللہ کا حوالہ | 208 |
| 303 | (۳۹) شیخ علامہ محمد عوامہ مدظلہ العالی کا حوالہ | 209 |
| 304 | (۴۰) شیخ علامہ نور الدین عتر مدظلہ العالی کا حوالہ | 210 |
| 305 | حدیث ضعیف سے استحباب کا ثبوت اور اس پر ایک اشکال و جواب | 211 |
| 306 | علامہ دوانی رحمہ اللہ کا حوالہ | 211 |
| 307 | شہاب الدین خفاجی رحمہ اللہ کا حوالہ | 219 |
| 308 | علامہ عبد الحی لکھنوی رحمہ اللہ کا حوالہ | 222 |
| 309 | حدیث ضعیف سے استحباب کے ثبوت کی مثال | 232 |
| 310 | تیسرا مذہب: حدیث ضعیف مطلقا حجت نہیں ہے | 233 |
| 311 | کیا امام یحیی بن معین رحمہ اللہ کا یہ مسلک تھا؟ ان کے موقف کی وضاحت | 233 |

| | | |
|---|---|---|
| 312 | کیاامام بخاری رحمہ اللہ کا یہ مسلک ہے؟ان کے موقف کی وضاحت | 235 |
| 313 | کیاامام مسلم رحمہ اللہ کا یہ مسلک تھا؟ان کے موقف کی وضاحت | 238 |
| 314 | علامہ ابن حزم رحمہ اللہ کے موقف کی وضاحت | 244 |
| 315 | قاضی ابوبکر ابن العربی رحمہ اللہ کے موقف کی وضاحت | 245 |
| 316 | علامہ ابن تیمیہ رحمہ اللہ کے موقف کی وضاحت | 246 |
| 317 | علامہ شوکانی رحمہ اللہ کے موقف کی وضاحت | 247 |
| 318 | کیا صحتِ سند صحتِ متن کو مستلزم ہے؟ | 250 |
| 319 | (۱)علامہ ابن صلاح رحمہ اللہ کا حوالہ | 250 |
| 320 | (۲)علامہ ابن کثیر رحمہ اللہ کا حوالہ | 251 |
| 321 | (۳)علامہ ابن ہمام رحمہ اللہ کا حوالہ | 251 |
| 322 | (۴)علامہ ظفر احمد عثمانی رحمہ اللہ کا حوالہ | 251 |
| 323 | تلقی بالقبول کی حیثیت | 252 |
| 324 | (۱) علامہ ابن عبدالبر رحمہ اللہ کا حوالہ | 252 |
| 325 | (۲)علامہ ابن قیم رحمہ اللہ کا حوالہ | 253 |
| 326 | (۳)علامہ ابن کثیر رحمہ اللہ کا حوالہ | 253 |
| 327 | (۴)علامہ زرکشی رحمہ اللہ کا حوالہ | 254 |
| 328 | (۵)حافظ ابن حجر رحمہ اللہ کا حوالہ | 254 |
| 329 | (۶)محقق ابن ہما م رحمہ اللہکا حوالہ | 254 |
| 330 | (۷)امام مالک رحمہ اللہ کا حوالہ | 254 |
| 331 | (۸)علامہ سخاوی رحمہ اللہ کا حوالہ | 254 |

| | | |
|---|---|---|
| 332 | (۹) علامہ سیوطی رحمہ اللہ کا حوالہ | 256 |
| 333 | (۱۰) علامہ محمد اکرم سندھی رحمہ اللہ کا حوالہ | 256 |
| 334 | (۱۱) علامہ عبدالحی لکھنوی رحمہ اللہ کا حوالہ | 257 |
| 335 | (۱۲) رئیس المحدثین علامہ انور شاہ کشمیری رحمہ اللہ کا حوالہ | 257 |
| 336 | حدیث ضعیف میں شروط ثلاثہ کی حیثیت | 258 |
| 337 | شرط اول کی حیثیت | 260 |
| 338 | (۱) علامہ محمد عوامہ مدظلہ العالی کی تشریح | 261 |
| 339 | (۲) علامہ سخاوی رحمہ اللہ کی تشریح | 260 |
| 340 | (۳) امام بیہقی رحمہ اللہ کی تشریح | 260 |
| 341 | (۴) امام ابن ابی حاتم رحمہ اللہ کی تشریح | 261 |
| 342 | شرط ثانی کی حیثیت | 262 |
| 343 | (۱) حافظ ابن حجر رحمہ اللہ کی تشریح | 262 |
| 344 | (۲) علامہ محمود سعید ممدوح کی تشریح | 263 |
| 345 | شرط ثالث کی حیثیت | 263 |
| 346 | (۱) حافظ ابن حجر رحمہ اللہ کی تشریح | 264 |
| 347 | (۲) علامہ عبدالحی لکھنوی رحمہ اللہ کی تشریح | 264 |
| 348 | (۳) علامہ محمود سعید ممدوح کی تشریح | 265 |
| 349 | کیا ضعیف حدیث کو بیان کرتے وقت ضعف کا بیان کرنا ضروری ہے؟<br>(۱) پہلا مسلک: ضروری نہیں | 268 |
| 350 | (۱) علامہ ابن صلاح رحمہ اللہ کا حوالہ | 268 |

| | | |
|---|---|---|
| 351 | (۲) علامہ عراقی رحمہ اللہ کا حوالہ | 268 |
| 352 | (۳) علامہ زکریا انصاری رحمہ اللہ کا حوالہ | 268 |
| 353 | (۴) علامہ طیبی رحمہ اللہ کا حوالہ | 269 |
| 354 | (۵) سید شریف جرجانی رحمہ اللہ کا حوالہ | 269 |
| 355 | (۶) علامہ ابن الوزیر الیمانی رحمہ اللہ کا حوالہ | 269 |
| 356 | (۷) علامہ سخاوی رحمہ اللہ کا حوالہ | 269 |
| 357 | (۸) علامہ سیوطی رحمہ اللہ کا حوالہ | 269 |
| 358 | کیا ضعیف حدیث کو بیان کرتے وقت ضعف کا بیان کرنا ضروری ہے؟<br>(۲) دوسرا مسلک: ضروری ہے | 270 |
| 359 | (۱) علامہ البانی صاحب کا حوالہ<br>(۲) علامہ احمد شاکر صاحب کا حوالہ<br>(۳) شیخ فوزی بن عبدہ کا حوالہ | 270 |
| 360 | احادیث ضعیفہ اور تعامل محدثین | 272 |
| 361 | چند ایک معتبر کتابوں کے اندر ضعیف احادیث کی مثالیں | 275 |
| 362 | (۱) مسند امام احمد بن حنبل | 275 |
| 363 | پہلی حدیث | 275 |
| 364 | دوسری حدیث | 275 |
| 365 | تیسری حدیث | 276 |
| 366 | (۲) الادب المفرد للامام البخاری | 277 |
| 367 | پہلی حدیث | 277 |

| | | |
|---|---|---|
| 368 | دوسری حدیث | 278 |
| 369 | تیسری حدیث | 278 |
| 370 | (۳) منتقی الاخبار | 279 |
| 371 | پہلی حدیث | 279 |
| 372 | دوسری حدیث | 279 |
| 373 | تیسری حدیث | 280 |
| 374 | (۴) المحلی بالآثار لابن حزم الظاہری | 280 |
| 375 | پہلی حدیث | 280 |
| 376 | آداب واخلاق، زہد ورقائق اور فضائل وترغیب وترہیب پر لکھی جانے والی کتابیں، جن میں ضعیف احادیث ہیں۔ | 281 |
| 377 | کیا حدیث ضعیف کو صیغہ تمریض سے بیان کرنا ضروری ہے؟ | 283 |
| 378 | (۱) علامہ ابن الصلاح رحمہ اللہ کا حوالہ | 283 |
| 379 | (۲) علامہ زرکشی رحمہ اللہ کا حوالہ | 284 |
| 380 | حدیث ضعیف اور موضوع میں فرق کی دس وجوہات | 285 |
| 381 | باب ثالث ...... ضعیف حدیث کے بارے میں منفی پہلو | 288 |
| 382 | تمہید | 288 |
| 383 | فصل اول<br>فضائل اعمال، ترغیب وترہیب کی کتابوں پر اعتراض واشکالات کا جائزہ | 290 |
| 384 | فصل دوم: ضعیف حدیث کے بارے میں منفی پہلو کا تنقیدی جائزہ | 291 |
| 385 | کتاب "الحدیث الضعیف وحکم الاحتجاج بہ" پر ایک نظر | 294 |

| | | |
|---|---|---|
| 386 | حدیث ضعیف کے بارے میں ایک جدید موقف اور اس کا جائزہ | 299 |
| 387 | علم حدیث کی راہ میں محدثین اور ائمہ جرح وتعدیل کے تگ ودو پر مشتمل تین ائمہ کے واقعات | 307 |
| 388 | (۱) امام ربیعۃ الرائے رحمہ اللہ<br>(۲) امام یحیی بن معین رحمہ اللہ<br>(۳) امام بخاری رحمہ اللہ | 307 |
| 389 | ایک ضروری تنبیہ | 310 |
| 390 | خاتمہ | 312 |
| 391 | (۱) فہرست آیات کریمہ | 314 |
| 392 | (۲) فہرست احادیث نبویہ | 316 |
| 393 | (۳) فہرست رجال مترجمین | 318 |
| 394 | (۴) فہرست مصادر ومراجع | 324 |

JAMIA FAROOQIA
الجامعۃ الفاروقیۃ
P.O.Box 11020, KARACHI 25, P.C. 75230 PAKISTAN

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الحمدللّٰہ وکفی وسلام علی عباد الذین اصطفیٰ

وبعد! مولانا محمد انور بن عالمگیر کوہستانی جامعہ فاروقیہ کراچی کے فاضل اور متخصص فی علوم الحدیث ہیں۔

مولانا محمد انور نے ''ضعیف حدیث کی شرعی حیثیت'' کے عنوان پر مقالہ لکھا ہے، جو لوگ ضعیف حدیث کو موضوع حدیث کا درجہ دیتے ہیں اور بالکل رد کرتے ہیں مقالہ ان کے رد میں ہے۔

جمہور محدثین اور فقہاء نے ہمیشہ ضعیف حدیث سے استدلال کیا ہے تو اس کو موضوع حدیث کا درجہ کیسے دیا جاسکتا ہے۔

مولانا عبدالماجد رفیق استاد شعبۂ تخصص فی علوم الحدیث نے مولانا محمد انور کے مقالے پر نہایت قیمتی اور جاندار تبصرہ لکھا ہے، احقر اس کی تائید کرتا ہے اور متفق ہے۔

سلیم اللہ خان

سلیم اللہ خان
مہتمم جامعہ فاروقیہ کراچی

۱۴۳۵/۶/۲۵ھ - ۲۰۱۴/۴/۲۶م

HEAD OFFICE: SHAH FAISAL COLONY, BLOCK 4, KARACHI 25, PAKISTAN TEL: 4571132-457[illegible] FAX: 45[illegible]

Dr. Manzoor Ahmed Maingal
Principal Jamia Siddiquia
P.H.D. Jamshoro University Sindh
0322 - 2870363 , 0333 - 7974023
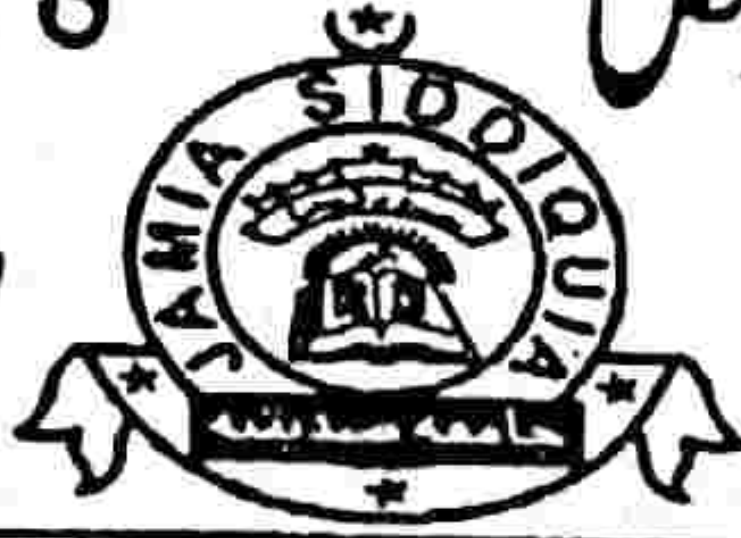
حضرت مولانا ڈاکٹر منظور احمد مینگل
رئیس جامعہ صدیقیہ
پی۔ایچ۔ڈی۔سندھ یونیورسٹی جامشورو

## تقریظ

# حضرت مولانا منظور احمد مینگل صاحب دامت برکاتہ

بسم الله الرحمن الرحیم

الحمد للّٰه الذي أنزل إلى نبيّه الذكر، ليبين للناس مانزل إليهم ولعلهم يتفكرون. والصلاة والسلام على نبيّه الّذي بلّغ الرسالة وأدى الأمانة وعلى آله وأصحابه الّذين تأدّبوا بآدابه۔

یہ ایک واضح حقیقت ہے کہ قرآن وحدیث دونوں وحی کی اقسام ہیں قرآن پاک وحی جلی، وحی متلو ہے اور حدیثِ رسول وحی خفی اور غیر متلو ہے اور یہ بھی واضح امر ہے کہ احادیثِ رسول کو نظر انداز کرنے کے بعد قرآن پاک کا ایک بہت بڑا حصہ نا قابل عمل قرار پائے گا۔قرآن پاک میں نہ نمازوں کی رکعات کی تفصیل ہے، نہ روزہ وصوم وحج کی تفصیلات۔

جولوگ اپنے آپ کو اہل قرآن کہہ کر حدیثِ رسول کی محبت کا انکار کرتے ہیں وہ درحقیقت حلال وحرام اور ایمان وکفر کی حدود کو پامال کرنے کی کوشش کرتے ہیں تاکہ ان کو ان کی بے حیائی اور بے ایمانی میں چھوٹ مل جائے، اس میں کوئی شک نہیں کہ قرآن پاک کا جو مقام ہے اور جس محفوظ شکل میں وہ امت کے پاس موجود ہے، حدیث کا علی الاعلان وہ درجہ نہیں، لیکن حدیثِ رسول کی محبت سے انکار اس بناء پر ہے کہ ناقلانِ حدیث اور رواۃ پر اعتماد نہیں کیا جاسکتا، یہ بات

Dr. Manzoor Ahmed Maingal
Principal Jamia Siddiquia
P.H.D. Jamshoro University Sindh
0322 - 2870363 , 0333 - 7974023
حضرت مولانا ڈاکٹر منظور احمد مینگل
رئیس جامعہ صدیقیہ
پی۔ایچ۔ڈی۔سندھ یونیورسٹی جامشورو

بالکل فضول؛ ہے اس لئے کہ جو لوگ حدیث کے راوی ہیں وہ ہی لوگ ہی قرآن پاک کے ناقل ہیں، پھر کیا وجہ ہے کہ قرآن پاک کی نقل میں ان پر اعتماد ہے اور حدیثِ رسول کے سلسلے میں ان پر اعتماد نہیں؟ البتہ اس بات سے انکار نہیں، دشمنانِ دین نے یقیناً کوشش کی بھی ہے اور کر بھی رہے ہیں کہ قرآن وحدیث میں تحریف کی جائے اور بہت سی حدیثیں اس سلسلے میں انہوں نے گھڑ بھی لیں لیکن اہلِ علم خوب جانتے ہیں کہ محدثین نے ان کی خوب گت لی، ہزاروں راویوں پر کلام کیا اور ہر ایک کی اصلی حقیقت امت کے سامنے واضح کی، اللہ کے فضل وکرم سے اس سلسلے میں نہ کسی جھوٹے کی کامیابی ہوئی اور نہ آئندہ اس کی توقع اور اندیشہ ہے۔

یاد رہے! کہ حدیثِ رسول فی نفسہ کبھی بھی ضعیف نہیں ہوتی جن احادیث کو محدثین نے موضوع اور ضعیف قرار دیا ہے وہ رواۃ کی پوزیشن اور ان کی صفات کے لحاظ سے ہے اور یہ بھی یاد رہے! کہ دجاجلہ اور کذابین کی روایت (موضوع، مختلق) کو محدثین مکمل مسترد کر دیتے ہیں البتہ احادیثِ ضعیفہ جن کے ضعف میں کبھی رواۃ کے لحاظ سے ان کا اختلاف رہتا ہے "ایک راوی" کوئی محدث اس کو اپنی دانست اور تحقیق کے مطابق کمزور سمجھتا ہے، اس کی روایت کو وہ مقام نہیں دے پاتا جو عام احادیثِ صحیحہ کا ہے جب کہ اسی راوی کے ظاہری تدیّن اور تقوی کو دیکھ کر دوسرا محدث اس کی حدیث کو صحیح قرار دیتا ہے لیکن یہ صورتِ حال بہت کم ہے اللہ کے فضل وکرم سے ماہرین حدیث کسی تذبذب اور شک کے جال میں پھنسے ہوئے نہیں ہیں برخلاف آزاد مشن طبقہ کے جو تمنا عمادی اور پرویز، عمر عثمانی کی جماعتیں جو انکارِ حدیث کا زہر اپنے سینوں میں لے کر واصل جہنم ہوئیں۔

پھر خدا بھلا کرے ان فقہاء ومحدثین کا، جنہوں نے احادیثِ رسول اگرچہ ضعیف ہی ہوں

Dr. Manzoor Ahmed Maingal
Principal Jamia Siddiqula
P.H.D. Jamshoro University Sindh
0322 - 2870363 , 0333 - 7974023

حضرت مولانا ڈاکٹر منظور احمد مینگل
رئیس جامعہ صدیقیہ
پی۔ایچ۔ڈی۔سندھ یونیورسٹی جامشورو

لیکن اپنے قیاس اور رائے پر اس کو ترجیح دے کر بعض صورتوں میں اس کے ضعف کی تصریح کر کے بطور مؤید اور شاہد کے لے لیا اور اس کے متعدد طرق کو جمع کر کے بعض طرق صحیحہ کی بناء پر اس سے استحباب اور اولویّت کو ثابت فرمایا، اصول کلّیہ صحیحہ ثابتہ کے ساتھ اس کو جوڑ کر نسبتِ رسول کی لاج رکھتے ہوئے اس کو معمول بنالیا، نہ جانے اس میں کون سا گناہ انہوں نہ کیا؟ شاید تمنا عمادی، پرویز غلام، اسلم جیراج پوری، عمر عثمانی جیسے تقوی اور طہارت سے محروم لوگوں کی رائے نالینا ان کا مقدر اور جرم ٹھہرا اور یہ لوگ مجرم قرار پائے۔

برادرِ مکرم مولوی محمد انور نے ایک شعبہ اور حصہ حدیثِ ضعیفہ اس کے مراتب اور اس کے مختلف احکام عقائد، احکام شرعیہ میں اس کا درجہ، فضائل میں اس کا مقام ان امور پر اپنے اس رسالہ میں کھل کر گفتگو کی ہے "مشک آنست خود ببوید۔ نہ آنکہ عطار بگوید۔"

اہل علم سے میری گزارش ہے کہ حقائق علمیہ کے متلاشی بن کر کتاب کا مطالعہ فرمائیں۔ اللہ تعالی سے دعا ہے کہ پیارے پیغمبر ﷺ کے ساتھ، آپ ﷺ کی عظمت کی بدولت کتاب کو شرفِ قبولیت سے نوازے، اور مؤلف زید مجدہم کی آخرت کے لیے اس کو ذخیرہ بنائے۔ آمین۔

منظور احمد نیک محمد مینگلؒ (نزیل جامعہ صدیقیہ گلشن معمار کراچی)

۱۴۳۵/۵/۲۱ بمطابق ۲۰۱۴/۳/۲۲م

## تقریظ

# مولانا عبدالماجد صاحب حفظہ اللہ تعالی

## استاد و مراقب شعبہ تخصص فی علوم الحدیث جامعہ فاروقیہ کراچی

بسم اللہ الرحمن الرحیم
حامداً و مصلّیاً و مسلّماً، أما بعد:

حدیث نبوی کو آپ ﷺ کے ساتھ براہِ راست تعلق ہونے کی وجہ سے ایک خاص شان اور علوم دینیہ میں ایک نمایاں حیثیت حاصل ہے۔ یہی وجہ ہے کہ شریعت کے مصادر میں قرآن کریم کے بعد اسے اہم ترین ماخذ تسلیم کیا گیا ہے۔ یہ حدیث ہی تو ہے جو قرآن حکیم کی تفسیر اور اس کے اجمال و ابہام کی وضاحت کا انتہائی اہم اور حساس فریضہ انجام دیتی ہے۔ اسی لیے خلاقِ عالم کتابِ ہدایت میں " اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهُ لَحٰفِظُوْنَ "[1] کا اعلان کر کے جہاں قرآن حکیم کی حفاظت کا ذمہ اٹھایا ہے تو وہیں اسی آیت شریفہ میں حدیثِ نبوی کی حفاظت کا بھی بڑے لطیف انداز میں بندوبست فرمایا ہے کیونکہ قرآن کریم کے معانی و مطالب کی حفاظت حدیثِ نبوی ہی کی حفاظت سے ممکن ہے بلکہ قرآن کی کئی آیات کے سمجھنا صرف حدیث ہی پر موقوف ہے۔

یہی وجہ ہے کہ اسلام کے شروع دور سے ہی حدیث کی روایۃً و درایۃً دونوں پہلوؤں سے ہی خدمت کو سعادت سمجھا گیا، اس کے لیے صحابہ کرام، تابعین، محدثین اور فقہاء نے کیا کیا جتن نہیں کیے! ایک ایک حدیث کے لیے حجاز سے شام، مشرق سے مغرب تک کا سفر کیا گیا، حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ عنہ کا ایک حدیث کو حاصل کرنے کے لیے ملکِ شام کے سفر کا واقعہ مشہور ہے اور تابعین کے تو اس بارے میں ان گنت واقعات ہیں جن سے "کتب رجال" بھری پڑی

---

۱۔ الحجر: ۹

ہیں، بلکہ ان کے ہاں تو حدیث کا ذہن میں یاد ہونا یا اپنے پاس لکھا ہوا ہونا بھی کافی نہیں ہے اسی لیے علوِ سند کے حصول کے لیے کئی کئی ملکوں کے اسفار کرنا ان کے ہاں حصول علم کا ایک اہم پہلو اور اُن کی زندگی کا ایک بڑا اور نمایاں حصّہ ٹھہرا۔

الغرض حدیث کی خدمت ایک بہت بڑی سعادت ہے یہی وجہ ہے کہ محدثین نے ہر ہر پہلو اور زاویے سے حدیث کی خدمت کی ہے۔ یہاں تک کہ فنِ حدیث ایک کثیر العلوم اور متنوع الجہات فن کی شکل اختیار کر گیا ہے جو ایک بڑے برگِ سایہ دار درخت کی صورت میں مسلمانوں پر سایہ فگن ہے اور انہیں کفر والحاد، بدعات ورسومات کی بادِ سموم اور مغرب کی بے راہ روی کے گرم تھپیڑوں سے اپنی گھنی شاخوں اور ٹھنڈے سائے کی بدولت محفوظ کیے ہوئے ہے۔

زیرِ نظر کتاب ''ضعیف حدیث کی شرعی حیثیت'' (از مولوی محمد انور کوہستانی متخصص فی علوم الحدیث جامعہ فاروقیہ) اسی سلسلے کی ایک کڑی ہے اس کتاب میں مؤلف نے ''حدیثِ ضعیف'' کی شرعی حیثیت کو بیان کیا ہے۔ فنِ حدیث سے وابستہ حضرات اس حقیقت سے بخوبی واقف ہیں کہ اس اہم اور دقیق عنوان پر قلم اٹھانا اور راہِ اعتدال اختیار کرتے ہوئے افراط وتفریط سے پرخار راستوں کے درمیان آسانی اور عافیت کے ساتھ دامن بچا کر گزر جانا ناممکن تو نہیں، لیکن انتہائی مشکل، کٹھن اور دشوار ضرور ہے۔

اللہ جزائے خیر دے موصوف کو، جنہوں نے اپنے مشفق اور فنِ حدیث کے ماہر اساتذہ کی زیرِ نگرانی اس انتہائی اہم عنوان پر قلم اُٹھایا اور پھر محنت، لگن، جاں فشانی کے ساتھ اس سے وابستہ تمام مباحث کو متقدمین اور متاخرین کے نصوص وآراء کی روشنی میں ذکر کر کے اس مجال میں مذہبِ حق کی نشاندہی کرنے کی ایک مبارک سعی کی ہے۔

موصوف نے اپنے مقالے کو تمہید، تین ابواب اور خاتمہ پر مرتب کیا ہے۔ تمہید میں حدیث، خبر، اثر اور سنت جیسی اصطلاحات پر روشنی ڈالی ہے۔ بابِ اوّل میں حدیثِ ضعیف، اس کی اقسام اور اسبابِ ضعف کو بیان کیا ہے۔ بابِ دوم حدیثِ ضعیف کی عملی حیثیت سے متعلق

مذاہبِ ثلاثہ، ضعیف حدیث سے استدلال اور تعاملِ سلف میں اس کی حیثیت پر متقدمین ومتاخرین کے اقوال وآراء کی روشنی میں تفصیلاً بحث کی ہے۔اس مقالے کی بنیادی اورسب سے مفید بحث یہی دوسراباب ہے۔

باب سوم میں حدیثِ ضعیف کے بارے میں منفی پہلو کو بیان کر کے اس کو رد کیا ہے۔ موصوف کے مقالے کا مقصد ضعیف حدیث کے بارے میں اسی غلط نظریے پر قدغن لگانا ہے۔ آخر میں موصوف نے خاتمہ میں اس پوری بحث کے نتائج پر مختصراً روشنی ڈالی ہے۔

موصوف اپنی کتاب میں ضعیف حدیث کے بارے میں منفی رویوں کا تنقیدی جائزہ پیش کرتے ہوئے ایک جگہ لکھتے ہیں: ''یہ ایک اٹل حقیقت ہے کہ جمہور فقہاء ومحدثین حدیثاً وقدیماً فضائل میں ضعیف احادیث سے برابر استدلال کرتے رہے ہیں، مگر ایک عرصہ سے ضعیف الاسناد احادیث کو ناقابل اعتبار قرار دینے کے لئے نت نئی دلائل پیش کئے جاتے ہیں، اور یہ پروپیگنڈہ کیا جارہا ہے کہ ضعیف الاسناد احادیث مردود ہیں ان پر عمل کرنا درست نہیں۔

یہ علمی دنیا میں ایک نیا فتنہ ہے۔نام نہاد سلفیت خصوصاً البانیہ سے تعلق رکھنے والے شیخ ناصر الدین البانی نے اس کی خوب آبیاری کی، اوران کے شاگردوں اور شیخ کی فکر سے متاثر دوسرے لوگوں نے اس کو عام کردیا۔

یہ رویہ حدیث نبوی سے تعلق ومحبت کے بالکل خلاف ہے جس کے نتائج نہایت خطرناک ہیں! اس سے نہ صرف یہ کہ سلف سے بداعتادی پیدا ہوتی ہے جن کا ضعیف احادیث کے بارے میں مثبت رویہ تھا، بلکہ خود روایات نبویہ ہی کے ایک بڑے ذخیرے پر سے ہاتھ صاف کئے جانے کے مترادف ہے۔ضعیف روایات کے بارے میں جمہور سے ہٹ کر یہ نیا موقف اپنے لوگوں نے بھی اپنایا ہوا ہے۔موصوف ایک دوسری جگہ ضعیف حدیث کو علی الاطلاق رد کردینے والی فکر پر تنقید کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

''اکابر محدثین، ناقدین اورفن شناس لوگوں کی موجودگی میں ضعیف روایات کے بارے

میں نرم رویہ اپنایا گیا۔ تو پھر آج اس طرح کے خواہ مخواہ کے تشدد سے کسی کو کیا سوجھی؟!
ہماری غرض ومنشا ہرگز یہ نہیں کہ صحیح اور حسن درجہ والی روایات کو چھوڑ کر ضعیف الاسناد روایات پر ہی دارومدار ہو، بلکہ مقصود یہ ہے کہ ضعیف الاسناد روایات کو ان کا وہ مقام دیا جائے جو جمہور علماء اپنے قول وعمل سے دیتے چلے آئے ہیں۔
ضعیف الاسناد روایات کو موضوع کے ساتھ ملا کر بدعت کا ارتکاب نہ کیا جائے بلا وجہ جمہور سے ہٹ کر کوئی روش نہ اپنائی جائے، اصولِ حدیث کی فنی باتیں اس لئے نہیں کہ روایات نبوی کا انکار کیا جائے، بلکہ اس کا مقصد یہ ہے کہ غیر نبوی روایات "من گھڑت" اس میں نہ در آئیں۔ اگر غور کیا جائے تو "حدیثِ حسن لغیرہ" چند ضعیف روایات کا مجموعہ ہی تو ہے، جس سے احکام میں بھی استدلال کیا جاتا ہے چہ جائیکہ فضائل میں!"

مؤلف نے اس کتاب میں اپنی علمی تشنگی کو دور کرنے کے لیے بیسیوں کتبِ علوم حدیث ورجالِ حدیث سے استفادہ کرکے اور پھر ان سے سینکڑوں حوالہ جات نکالنے جیسی تھکا دینے والی محنت کو اپنا شعار بنایا ہے اگرچہ کتاب میں بعض جگہ کچھ فنی تعبیر اور اردو املاء وترقیم کی غلطیاں بھی پائی گئی ہیں۔ جن میں سے اکثر کی کسی مصحح نے تصحیح بھی کردی ہے۔ اِن کی اصلاح کردینے کے بعد بندے کے نزدیک اِس کتاب کی افادیت "نورعلی نور" کا مصداق بنتے ہوئے مزید بڑھ جائے گی اور امید واثق ہے کہ اہل علم واصحابِ ذوق کی اِس باب میں علمی تشنگی کو کم کرنے میں معین ومددگار ثابت ہوگی۔

آخر میں اللہ رب العزت کے حضور دُعا ہے کہ اللہ تعالی موصوف کو دنیا وآخرت میں بہترین جزاء عطا فرمائے اور ہم سب کو حق کی اتباع کرنے کی اور سلف کے دامن سے چمٹے رہنے کی توفیق عطا فرمائے۔ اللّٰهم أرنا الحق حقاً وارزقنا اتباعه وأرنا الباطل باطلاً وارزقنا اجتنابه۔

عبدالماجد رفیق عفی عنہ ۲۳/۶/۱۴۳۵ھ بمطابق ۲۴/۴/۲۰۱۴م

## مقدمہ از مؤلف

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين على ما أنعم ويسّر ،فهو وليّ كلِ خير، وإليه يرجع كل فضل ، وهو الذي بنعمته تتم الصالحات ، والصلوات الناميات الزاكيات، والتسليمات المباركات على سيدنا ومولانا محمد سيد السادات ، صاحب المعجزات الباهرات، والدرجات الرفيعات ،صلى الله وسلّم وبارك عليه وعلى آله وأصحابه وأتباعه إلى يوم الدين .

أما بعد:

یہ بات محتاج بیان نہیں ہے کہ حدیث علوم دینیہ کا اہم موضوع اور شریعتِ اسلامی کا دوسرا عظیم ماخذ ہے ۔قرآنِ کریم کے فرمودات کی واضح تشریح وتوضیح اقوالِ رسول ﷺ سے ہی ممکن ہے۔قرآنِ حکیم کو صحیح معنوں میں سمجھ کر اس پر نبوی مزاج کے مطابق عمل پیرا ہونے کے لیے احادیثِ نبویہ سے گہرے لگاؤ اور مضبوط رشتے کی ضرورت ہے،: بلکہ قرآن کی کئی آیات کا سمجھنا حدیث ہی پر موقوف ہے،اس کے بغیر ممکن ہی نہیں۔

جن لوگوں نے اپنی ذہانت وعقلیت کے زعم میں احادیثِ نبویہ کو پس پشت ڈال کر محض عربی کو قرآن فہمی کے لیے کافی سمجھا، اِنسانی تاریخ شاہد ہے کہ ایسے افراد پر نہ آج سے پہلے کبھی کتاب اللہ کے سربستہ حقائق کھلے ہیں اور نہ ہی مستقبل میں اس کا کوئی اِمکان ہے!۔

آنحضرت ﷺ چونکہ احادیث کی اِس غیر معمولی اہمیت سے بخوبی واقف تھے اور آپ ﷺ نے مستقبل میں آنے والے تمام خطرات کو قبل از وقت بھانپ لیا تھا،

اس لئے ابتدا ہی سے آپ ﷺ نے اپنی اُمت کو اس بارے میں جزم واحتیاط کے ایک مخصوص نہج پر چلایا۔ چنانچہ آپ ﷺ نے سب سے پہلے اپنے متبعین کو یہ بات ذہن نشین کرائی کہ آپ ﷺ قیامت تک آنے والی نسلوں کے لیے اللہ تعالی کے نبی ہیں، اور آپ ﷺ کا ہر قول وفعل آئندہ نسلوں کے لیے نمونہء زندگی ہے۔ اس کے ساتھ ساتھ آپ ﷺ نے اپنے ہر صحابی کو حکم دیا کہ "بلّغو اعني ولو آية"[1]

یعنی میرے اقوال واحوال دوسروں تک پہنچاؤ خواہ ایک جملہ ہی کیوں نہ ہو۔ اس حکم کا نتیجہ یہ نکلا کہ ہر وہ مسلمان، جس نے ایک مرتبہ بھی آپ کو دیکھا تھا، آپ کی حیاتِ طیبہ کا مبلغ بن گیا۔ اسی بنا پر اسلام کے ابتدائی دور ہی سے حدیث کی روایۃً ودرایۃً، دونوں پہلوؤں کے اعتبار سے خدمت کو سعادت سمجھا گیا۔ صحابہ کرام ، تابعین، محدثین وفقہاء نے اس کے لیے انتھک کوششیں کی ہیں۔ ایک ایک حدیث کے لیے حجاز سے شام جیسے طویل سفر طے کئے۔

دین اسلام کے تفصیلی مسائل کا استنباط ''علم حدیث'' ہی کے ذریعہ سے ممکن ہے۔ اس لیے اہل علم نے دیگر علوم اسلامیہ کی بنسبت ''علم حدیث'' کی خدمت زیادہ کی ہے اور یہی وجہ ہے کہ ''علم حدیث'' سے متعلقہ علوم وفنون کی تعداد سینکڑوں سے متجاوز ہے۔ من جملہ ان علوم کے سب سے زیادہ اہمیت کے حامل ''فنِ اُسماء الرجال'' اور ''علم جرح وتعدیل'' ہیں۔ مسلمانوں نے ان فنون میں جو خدمات انجام دیں ہیں وہ تاریخ عالم کا ایک تابناک باب ہے۔

''فنِ اُسماء الرجال'' میں راویوں کی ثقاہت اور جرح کے بارے میں جو اصول وضع کیے گئے اور ردّو قبول کے جو پیمانے مقرر کئے گئے وہ نہایت ہی درست ہیں۔

جوں جوں زمانہ گذرتا گیا ''فنِ اُسماء الرجال'' کو مزید ترقی ملتی گئی۔ اس کے قواعد کی تنقیح

---

١۔ الجامع الصحيح للإمام البخاري: ص٥٨٢

اور تشریح کی گئی، جس سے اس میں مزید پختگی آئی اور نئے اصول اور عملی تطبیقات وجود میں آئیں، حتیٰ کہ آج کے ترقیاتی دور میں تو اس فن نے خوب ترقی کی۔ قدیم کتب کو تحقیق کے مروجہ اصولوں کے مطابق شائع کیا گیا۔ ایک ایک جزئی پر مستقل کتابیں، رسائل اور مقالے لکھے گئے۔ ''حدیث مرسل''، ''حدیث موضوع''، ''حدیث متواتر''، ''حدیث معلل'' اور اس جیسے دیگر سینکڑوں موضوعات پر مستقل تفصیلی مقالات لکھے گئے۔

یہ ایک اٹل حقیقت ہے کہ جمہور فقہاء و محدثین حدیثاً وقدیماً فضائل میں ضعیف احادیث سے برابر استدلال کرتے رہے ہیں، مگر ایک عرصہ سے ضعیف الاسناد احادیث کو ناقابل اعتبار قرار دیا جارہا ہے اور اس دعویٰ پر نت نئے دلائل پیش کئے جارہے ہیں اور یہ پروپیگنڈہ کیا جارہا ہے کہ ضعیف الاسناد احادیث مردود ہیں ان پر عمل کرنا درست نہیں۔ یہ علمی دنیا میں ایک نیا فتنہ ہے۔ نام نہاد سلفیت خصوصاً البانیہ سے تعلق رکھنے والے شیخ ناصر الدین البانی صاحب نے اس کی خوب آبیاری کی ہے اور ان کے شاگردوں اور شیخ کی فکر سے متاثر دوسرے لوگوں نے اس کو عام کردیا۔ یہ رویہ حدیث نبوی سے تعلق و محبت کے بالکل خلاف ہے جس کے نتائج نہایت خطرناک ہیں۔ اس سے نہ صرف یہ کہ سلف سے بداعتمادی پیدا ہوتی ہے جن کا ضعیف احادیث کے بارے میں مثبت رویہ تھا، بلکہ خود روایات نبویہ ہی کے ایک بڑے ذخیرے پر سے ہاتھ صاف کئے جانے کے مترادف ہے۔

اکابر محدثین، ناقدین اور فن شناس لوگوں کے روبرو ضعیف روایات کے بارے میں نرم رویہ اپنایا گیا تو پھر آج کے دور میں اس طرح کے بے جا تشدد سے کسی کو کیا سوجھی؟! ضعیف الاسناد روایات کو موضوع کے ساتھ ملا کر بدعت کا ارتکاب نہ کیا جائے اور بلاوجہ جمہور سے ہٹ کر کوئی روش نہ اپنائی جائے۔ اصول حدیث کی فنی باتیں اس لئے نہیں کہ روایات نبوی کا انکار کیا جائے بلکہ اس کا مقصد یہ ہے کہ غیر نبوی ''من گھڑت'' روایات اس میں نہ در آئیں۔ اگر غور کیا جائے تو ''حدیث حسن لغیرہ'' چند ضعیف روایات کا مجموعہ ہی تو ہے، جس سے احکام میں بھی استدلال کیا جاتا ہے

چہ جائیکہ فضائل میں!'' اگر شیخ ناصر الدین البانی صاحب کے مسلک و مشرب اور طرز کو اپنایا جائے تو بات جمہور اہل سنت والجماعت کے دائرہ سے نکل جائے گی۔

ضعیف احادیث کو صرف اس وجہ سے نا قابل عمل قرار دے کر موضوع کے پلڑے میں ڈال دینا کہ ان روایات کو ''ضعیف'' یا ''مردود'' کے نام سے موسوم کیا گیا ہے ایک بہت بڑی غلطی ہے۔ یہ درحقیقت فن اور اہل فن کے اصول وضوابط سے ناواقفیت ہی کا نتیجہ ہے۔

حدیث اور سنت کی جو بھی تعریف محدثین اور اصولیین نے کی ہے۔ قدیم ہو یا جدید، اس میں کوئی ایسی قید نہیں جس سے ضعیف احادیث کو نکال باہر کیا جائے۔ اسی لئے انہوں نے ہمیشہ حدیث کی دوسری انواع کی طرح اس کو بھی استدلال واستنباط میں حیثیت دی ہے اگر چہ اس کے ضعف اور درجہ کا خیال ضرور رکھا ہے۔

ہماری غرض و منشا ہرگز یہ نہیں کہ صحیح اور حسن درجہ والی روایات کو چھوڑ کر ضعیف الاسناد روایات پر ہی دارومدار ہو، بلکہ مقصود یہ ہے کہ ضعیف الاسناد روایات کو ان کا وہ مقام دیا جائے جو جمہور علماء اپنے قول وعمل سے دیتے چلے آئے ہیں۔

زیر نظر تالیف بھی اسی سلسلہ کی ایک کڑی ہے۔ جو صرف ''ضعیف حدیث کی شرعی حیثیت'' کو بیان کرتی ہے۔ ''ضعیف حدیث'' سے متعلقہ مباحث کو بڑی اہمیت حاصل ہے۔ متقدمین ومتاخرین محدثین نے ''حدیثِ ضعیف'' کی متعلقہ مباحث اگر چہ تفصیل سے ذکر کی ہیں لیکن وہ مباحث اصول حدیث کی کتابوں میں منتشر ہیں اور بعض متاخرین نے اس سلسلہ میں مستقل رسائل ومقالات اگر لکھے بھی ہیں تو انہوں نے یا تو اس موضوع کی تمام مباحث کو ذکر نہیں کیا یا وہ موضوع کیساتھ انصاف نہ کر پائے حتیٰ کہ بعض تو اس سلسلہ میں بہت افراط وتفریط کا شکار ہو گئے۔ اس لیے ضرورت محسوس کی جارہی تھی کہ اس موضوع کی تمام مباحث پر گفتگو کی جائے، متعلقہ مسائل کو الگ بیان کیا جائے اور متقدمین ومتاخرین کے مذاہب ودلائل کا جائزہ پیش کیا جائے۔

ضعیف الاسناد احادیث کے بارے میں اس غیر علمی طرز وانداز کو واضح طور پر دیکھ کر بندہ

نے اس موضوع پر قلم اٹھایا جس میں اس بات کی کوشش کی گئی ہے کہ جمہور فقہاء، محدثین اور علماء دیوبند کے قول اور طرز عمل سے ضعیف احادیث کا مقام و مرتبہ واضح کیا جائے۔ تحقیق و جستجو سے معلوم ہوا کہ قرونِ اولی سے امتِ مسلمہ میں ضعیف احادیث کے بارے میں مثبت رویہ چلا آرہا ہے۔ احتیاط و اتقان ہی کی بنیاد پر اِن احادیث کو صحیح اور حسن سے الگ کر کے ضعیف کی جداگانہ اصطلاح سے موسوم کیا گیا ہے۔ اس سے آگے جانے کی نہ کبھی ضرورت سمجھی گئی ہے اور نہ ہی احتیاط کے پردہ میں کسی کے لیے ایسا کرنا درست ہوگا۔

یہاں پر یہ بات بھی واضح رہے کہ اگرچہ یہ بحث حدیثِ ضعیف کے متعلق ہے، عقائد سے نہیں تاہم عقائد کے متعلق بھی قدرے تفصیل سے بحث کی گئی ہے، چونکہ بعض حضرات نے ضعیف حدیث کو عقائد میں بھی مستدل ٹھہرایا ہے، اس لیے اس کو بھی موضوع کا حصہ بنادیا گیا۔

موضوع کا خاکہ:

یہ تالیف ایک مقدمہ تین ابواب اور ایک خاتمہ پر مشتمل ہے:

مقدمہ:

مقدمے میں موضوع کا تعارف، اس کی اہمیت اور غرض و غایت کے بیان کے علاوہ اس موضوع پر باقاعدہ لکھنے کی ضرورت پر روشنی ڈالی گئی ہے۔

تمہید:

اس میں حدیث، خبر، اثر اور سنت کے مابین نسبتوں کو بیان کیا گیا ہے۔

باب اول:

حدیثِ ضعیف اور اسبابِ ضعف۔

اس میں دو فصلیں ہیں۔

فصل اول:

فصل اول میں ضعف کے وہ اسباب ذکر کئے گے ہیں جو انقطاع سند کے باعث

وجود میں آتے ہیں۔

فصل دوم:

فصل دوم میں اُن اسباب کا ذکر ہے جن کی بنا پر رواۃِ سند مجروح قرار دیے جاتے ہیں۔

باب دوم:

حدیثِ ضعیف سے استدلال اور تعامل سلف میں اس کی حیثیت۔

اس میں دو فصلیں ہیں۔

فصل اول:

عقائد میں ضعیف حدیث کا مقام۔

اس میں اس امر کو واضح کرنے کی کوشش کی گئی ہے کہ عقائد کے باب میں ضعیف حدیث اور خبر واحد کی کیا حیثیت ہے۔

فصل دوم:

احکام و فضائل میں ضعیف حدیث سے استدلال اور تعاملِ سلف میں اُس کی حیثیت۔

اس میں بیان ہے اس امر کا کہ ضعیف حدیث کی احکام وفضائل میں کیا حیثیت ہے؟ اس بارے میں جمہور فقہاء ومحدثین کی تصریحات کس امر کی نشاندہی کر رہی ہیں؟ نیز ان کا تعامل کیا ظاہر کرتا ہے؟

باب ثالث:

ضعیف حدیث کے بارے میں منفی پہلو۔

اس میں دو فصلیں ہیں۔

فصل اول:

اس میں فضائل اور ترغیب وترہیب کی کتابوں پر ہونے والے اعتراضات واشکالات کا جائزہ لیا گیا ہے۔

فصل دوم:

ضعیف حدیث کے بارے میں منفی رویّوں کا تنقیدی جائزہ۔

اس میں ان حضرات کا تعارف کرایا گیا ہے جنہوں نے جمہور کے مسلکِ اعتدال کو چھوڑ کر تشدّد کی راہ اختیار کی ہے۔

خاتمہ:

خلاصہ کلام اور نتائج کا مختصر تذکرہ۔

تشکر

بندہ چھ سال اس مقالہ کی ترتیب وتالیف میں مصروف رہا، اس دوران جن حضرات نے میرے ساتھ جو بھی تعاون کیا ہے، میں ان سب کا تہہ دل سے شکریہ ادا کرتا ہوں، اللہ تعالی ان سب کو اس کا صلہ عطا فرمائے، سب سے پہلے اپنے مادر علمی جامعہ فاروقیہ کراچی اور اس کے بانی حضرت مولانا شیخ سلیم اللہ خان صاحب کا میں زیر بارِ احسان ہوں، پھر اپنے تخصص فی الحدیث کے اساتذہ: مولانا محمد انور صاحب، مولانا نور البشر صاحب، اور مولانا ساجد احمد صدوی صاحب کا شکر گذار ہوں، جن کی قدم قدم رہنمائی سے بندہ اس مشکل موضوع پر مقالہ لکھنے میں کامیاب ہوا، مولانا عبداللہ معروفی (استاذ تخصص فی الحدیث دارالعلوم دیوبند) کے ایک مقالے ''فضائل اعمال پر اعتراضات ایک اصولی جائزہ'' سے استفادہ پر ان کا بھی شکر گذار ہوں۔ مولانا عبدالماجد صاحب (استاذ تخصص فی الحدیث جامعہ فاروقیہ کراچی)، مفتی اسد اللہ خان صاحب (متخصص فی الحدیث والفقہ بنوری ٹاون کراچی، مدرس جامعہ امداد العلوم الاسلامیہ مسجد درویش پشاور)، مفتی احمد عبداللہ صاحب (فاضل و متخصص فی الفقہ جامعہ اسلامیہ راولپنڈی وخطیب جامع مسجد امیر حمزہ فالکن کمپلیکس راولپنڈی)، مفتی مطیع الرحمٰن صاحب (متخصص فی

الحدیث بنوری ٹاون کراچی)، مفتی طارق امیر خان صاحب (متخصص فی الحدیث جامعہ فاروقیہ کراچی) اور مفتی سمیع الرحمٰن صاحب (متخصص فی الفقہ جامعہ فاروقیہ کراچی) کا بھی ان کے خصوصی تعاون پر احسان مند ہوں۔

راقم الحروف

خاک پائے علماء دیوبند محمد انور بن عالمگیر کوہستانی

فاضل و متخصص فی الحدیث جامعہ فاروقیہ شاہ فیصل کالونی کراچی

۲۸/۷/۱۴۳۵ھ بمطابق ۲۸/۵/۲۰۱۴م

# تمہید

## حدیثِ نبوی کی تعریف:

### حدیث کی لغوی تعریف:

لغت میں حدیث مطلق بات چیت (تھوڑی ہو یا زیادہ) کو کہتے ہیں، اور اس کی جمع خلاف قیاس ''احادیث'' کے وزن پر آتی ہے۔ چنانچہ ''الصحاح'' میں ہے: ''الحديث: الخبر "يأتي على القليل والكثير" ويجمعه أحاديث على غير القياس.''(۱)

اور ''لسان العرب'' میں بھی یہی ہے:

"الحديث:الخبر "يأتي على القليل والكثير" وجمعه أحاديث على غير القياس" (۲)

### قرآن مجید میں لفظ حدیث کا استعمال:

قرآن کریم میں لفظِ حدیث کا استعمال مختلف معنوں میں ہوا ہے۔

(۱) اخبار (خبر دینے) کے معنی میں جیسے: ﴿أَتُحَدِّثُونَهُم بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ﴾ (۳)

(ترجمہ) ''تم کیا مسلمانوں کو وہ باتیں بتلا دیتے ہو جو اللہ تعالیٰ نے تم پر منکشف کردی ہیں'' (بیان القرآن)۔

(۲) کلام کے معنی میں: ﴿وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا﴾ (۴)

---

۱۔ الصحاح :۱/۲۷۸:باب الثاء فصل الحاء

۲۔ لسان العرب ۲/۱۳۳ فصل الحاء

۳۔ البقرہ:۷۶

۴۔ النساء :۸۷

(ترجمہ) ''اور خدا تعالیٰ سے زیادہ کس کی بات سچی ہوگی'' (بیان القرآن)۔

(۳) قرآن کریم کے معنی میں: ﴿فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ﴾ (۱)

(ترجمہ) ''تو یہ لوگ اس طرح کا کوئی کلام لے آئیں''۔ (بیان القرآن)

(۴) قصص کے معنی میں: ﴿اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيثِ﴾ (۲)

(ترجمہ) ''اللہ تعالیٰ نے بڑا عمدہ کلام نازل فرمایا ہے''۔ (بیان القرآن)

(۵) عبرت کے معنی میں: ﴿فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيثَ﴾ (۳)

(ترجمہ) ''سو ہم نے ان کو افسانہ بنا دیا''۔ (بیان القرآن)

## آپ ﷺ کے کلام مبارک میں لفظِ حدیث کا استعمال:

حضور ﷺ نے اپنے کلام مبارک پر خود لفظِ حدیث کا اطلاق فرمایا ہے۔ چنانچہ آپ ﷺ کا ارشاد مبارک ہے:

(۱) ''من حدث عني بحديث يرى أنه كذب فهو أحدالكا ذبين''(۴)

(۲) عن أبي هريرة قال:قلت: يارسول الله !من أسعد الناس بشفاعتك يوم القيامة؟ قال رسول الله ﷺ: لقد ظننت ياأباهريرة أن لا يسئلني عن هذا الحديث أحد أول منك لما رأيت من حرصك على الحديث.''(۵)

(۳) ''من حدث عني حديثا وهو يرى أنه كذب فهو أحد الكا ذبين''۔(۶)

---

۱۔ الطور:۳۴

۲۔ الزمر:۲۳

۳۔ السبا:۱۹

۴۔ مقدمہ الجامع الصحیح للإمام مسلم:۹/۱۔

۵۔ الجامع الصحیح للإمام البخاري:ص۲۲: کتاب العلم، باب الحرص علی الحدیث

۶۔ الجامع الترمذي:۳۹۷/۴: کتاب العلم، باب في من روی حدیث وھو یری أنه کذب

## حدیث کی اصطلاحی تعریف:

حافظ ابن حجر رحمہ اللہ (۱) نے حدیث کی تعریف اس طرح کی ہے:

"المراد بالحديث في عرف الشرع مايضاف إلى النبي ﷺ". (۲)

(ترجمہ) "شریعت کے اصطلاح میں حدیث ہر اس چیز کا نام ہے جس کی نسبت حضور ﷺ کی طرف ہو"۔

---

۱۔ شہاب الدین ابوالفضل احمد بن علی بن محمد بن حجر کنعانی عسقلانی شافعی ۱۲ شعبان ۷۷۳ھ کو قاہرہ میں پیدا ہوئے، کچھ عرصہ میں والدہ کا انتقال ہوگیا پھر چار برس کی عمر میں پدر بزرگوار کا سایہ بھی سر سے اٹھ گیا۔ طلب علم کے لئے مکہ مکرمہ، مدینہ منورہ، زبید، عدن، اسکندریہ، فارس، شام، حلب، حجاز اور یمن میں سیاحت کر کے چشمۂ علم سے سیرابی حاصل کی۔ آپ کو مختلف فنون میں کمال حاصل تھا سب سے پہلے ادب و تاریخ پر توجہ دی۔ دونوں میں آپ فائق تھے۔ فقہ اور عربیت میں ممتاز تھے، شعر و سخن کا فطری ذوق تھا۔ اللہ تعالی نے آپ کو زبردست ذکاوت اور قوت حافظہ سے نوازا تھا، آپ اپنے زمانے میں بلا اختلاف "امیر المؤمنین فی الحدیث" تھے اسماء رجال میں بھی امامت کا مرتبہ حاصل تھا، موصوف کی زندگی کا بیشتر حصہ علم دین خصوصاً حدیث شریف کی خدمت، اس کی نشر و اشاعت، درس و تدریس اور تصنیف و افتاء میں بسر ہوئی ہے۔ قاہرہ کے بڑے مدارس میں مدت تک آپ نے تفسیر، حدیث اور فقہ کی تعلیم دی۔ ۲۸ ذی الحجہ ۸۵۲ھ کو اس دار فانی سے عالم جاودانی کو رحلت فرما گئے۔ جنازہ میں بڑا ہجوم تھا، خلیفہ وقت اور اراکین و عمائد سلطنت حاضر تھے، امراء و اکابر کا یہ حال تھا کہ کاندھا دینے کے لئے جنازہ پر ٹوٹ پڑتے تھے۔ جنازہ کے بعد آپ کی نعش کو اٹھا کر قرافہ صغری میں لایا گیا اور جامع دیلمی کے بالمقابل بنو الخربی کے قبرستان میں اس علم کے شہاب ثاقب کو سپرد خاک کیا گیا۔ چند مشہور تصانیف: فتح الباری شرح صحیح البخاری، الاصابہ فی تمییز الصحابہ، التلخیص الحبیر، لسان المیزان۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے الضوء اللامع لاہل القرن التاسع: ۳۶/۲، الجواہر والدرر فی ترجمہ شیخ الاسلام ابن حجر: ۱۲۶۔ ۱۱۲۸، اور بستان المحدثین: ص ۳۰۲۔

۲۔ فتح الباري شرح صحيح البخاري: ۱۵۷/۱.

علامہ سخاوی رحمہ اللہ (۱) اور ملا علی قاری رحمہ اللہ (۲) نے حدیث کی تعریف ان الفاظ میں کی ہے:

۱۔ ابو الخیر، شمس الدین، محمد بن عبد الرحمان بن محمد بن ابی بکر سخاوی شافعي، ربیع الاول ۸۳۱ھ میں پیدا ہوئے۔ بچپن میں قرآن مجید حفظ کیا۔ حفظ قرآن مجید کے بعد بہت سے علوم وفنون کی کتابیں یاد کیں۔ دوسرے علوم کے ساتھ حدیث، فقہ، قرأت، تاریخ اور عربیت میں ممتاز مقام حاصل کیا۔ موصوف نے طلب علم کے لئے حلب، دمشق اور بیت المقدس وغیرہ امصار بعیدہ کا سفر کیا، تذکرہ نگاروں کا اس امر پر اتفاق ہے کہ حافظ ابن حجرؒ کے شاگردوں میں ان کا سہیم وشریک نہیں، قاہرہ میں درس وتدریس کا شغل اختیار کیا۔ ۸۵۰ھ سے تصنیف وتالیف کا سلسلہ شروع ہوا مصر میں عہدۂ قضاء بھی ان کو پیش کیا گیا مگر موصوف نے اس کو قبول نہیں کیا۔ حفاظ حدیث میں ان کا شمار ہوتا ہے اور فن جرح وتعدیل میں بھی مسلّم امام ہیں۔ بعض اہل علم کا قول ہے کہ علم جرح وتعدیل کی ان پر انتہا ہوگئی۔ یہاں تک کہا گیا کہ علامہ ذہبی کے بعد کوئی ایسا شخص پیدا نہیں ہوا جو ان کی طرز پر چلا ہو۔ ۲۸ شعبان ۹۰۲ھ میں داعی اجل کو لبیک کہا اور جنت البقیع میں امام مالکؒ کے پہلو میں دفن ہوئے۔ مشہور تصانیف: فتح المغیث، القول البدیع، المقاصد الحسنۃ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذہب في أخبار من ذہب: ۸/۴۶-۴۸، اور الضوء اللامع لاہل القرن التاسع: ۸/۲-۳۴

۲۔ )علي بن سلطان محمد قاری ہروی حنفی، ہرات میں پیدا ہوئے۔ ابتدائی تعلیم وطن میں حاصل کی پھر مکہ معظمہ میں کبار علماء سے حدیث کی تکمیل کی۔ تفسیر، قرأت، حدیث اور فقہ میں کمال حاصل کیا۔ علوم معقولہ میں مہارت پیدا کی پھر حرم میں درس وتدریس اور تصنیف وتالیف کا شغل اختیار کیا جس سے عالم کو فائدہ پہنچا۔ موصوف نے فن خطاطی میں بھی کمال حاصل کیا اور یہی فن شریف گزر بسر کا ذریعہ بنا۔ علامہ موصوف کو معانی حدیث کی وضاحت اور مطالب کی تشریح میں یدطولی حاصل تھا۔ حدیث کی توجیہ اور فقۂ حدیث پر خوب کلام کرتے ہیں۔ ان کی ژرف نگاہی اور جلالت علمی پر تذکرہ نگاروں کا اتفاق ہے۔ مورخ عصامی لکھتے ہیں: موصوف رئیس العلماء اور یکتائے زمانہ عالم تھے۔ انتقال شوال ۱۰۱۴ھ میں مکہ معظمہ میں ہوا اور جنت المعلی میں دفن کئے گئے۔ چند مشہور تصانیف: مرقاۃ المفاتیح شرح مشکاۃ المصابیح، موضوعات الکبری، شرح فقہ اکبر۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: البدر الطالع بمحاسن من بعد القرن السابع: ۱/ ۴۴۵-۴۴۶ اور فوائد جامعہ بر عجالہ نافعہ: ۱/۶

"ما أضيف إلى النبي ﷺ قولاً أو فعلاً أو تقريراً أو صفةً حتى الحركات والسكنات في اليقظة والمنام".(۱)

(ترجمہ) "حدیث ہر اس چیز کا نام ہے، جس کی نسبت رسول اللہ ﷺ کی طرف کی گئی ہو، خواہ وہ قول ہو، یا فعل ہو، یا تقریر کے قبیل سے ہو یا کوئی اور بیان ہو، یہاں تک کہ نیند اور بیداری میں صادر ہونے والے حرکات وسکنات کے بیان کو بھی حدیث کہا جاتا ہے"۔

علامہ طیبی رحمہ اللہ (۲) لکھتے ہیں:

"والسلف أطلقوا الحديث على أقوال الصحابة والتابعين لهم بإحسان وآثارهم وفتاواه"(۳)

---

۱- فتح المغیث بشرح ألفیۃ الحدیث: ۱/۱۴، شرح شرح نخبۃ الفکر: ص ۱۵۳۔

۲- شرف الدین حسین بن عبد اللہ بن محمد طیبی شافعي، اپنے زمانہ کے نامور فقیہ، محدث اور مفسر تھے۔ موصوف موروثی مال دار اور تاجر تھے ہمیشہ دولت خیر کے کاموں میں خرچ کرتے رہے؛ یہاں تک کہ اخیر عمر میں فقیر ہو گئے تھے۔ علامہ سخی، متواضع اور صحیح العقیدہ تھے۔ بلاد اسلامیہ پر فلسفیوں اور بدعتیوں کے غلبہ پا لینے کے وقت بھی ان کی سختی سے تردید کرتے تھے۔ خدا اور رسول کی محبت میں سرشار اور بڑے باحیا تھے۔ اخیر عمر میں ضعف بصارت کے باوجود پانچوں نمازوں کو باجماعت ادا کرنے جاتے تھے۔ قرآن اور سنت سے باریک باتوں کے نکال لینے میں اللہ کی ایک نشانی تھے۔ علامہ شعرانی لکھتے ہیں: موصوف صوفی، نحوی، فقیہ اور اصولی تھے۔ مشکل ہی سے یہ صفات کسی عالم میں جمع ہوئی ہوں گی۔ علامہ صبح سے ظہر تک تفسیر میں اور ظہر سے عصر تک بخاری کے سنانے میں مصروف رہتے تھے۔ ان کا یہ معمول مرتے دم تک قائم رہا، انتقال کے روز تفسیر سے فارغ ہو کر حدیث کی مجلس میں جانے کے لئے گھر کے پاس مسجد میں داخل ہوئے نفل بیٹھ کر پڑھے اقامت کے انتظار میں قبلہ رو بیٹھے ہوئے ۲۳ شعبان ۷۴۳ھ کو روح پرواز کر گئی۔ تصانیف: الکاشف عن حقائق السنن، الخلاصۃ فی اصول الحدیث، فتوح الغیب فی الکشف عن قناع الریب، مزید حالات کے لئے دیکھئے: الدرر الکامنۃ في أعیان المائۃ الثامنۃ: ۲/۳۹، اور شذرات الذہب في أخبار من ذہب: ۶/۳۱۵

۳- الخلاصة في أصول الحديث: ص ۳۰.

(ترجمہ) ''سلف نے صحابہ اور تابعین کرام کے اقوال وآثار اور ان کے فتاوی پر بھی حدیث کا اطلاق کیا ہے''۔

## کیا صحابہ کرام اور تابعین کے آثار بھی احادیث ہیں؟

حضرات محدثین کا موضوع چونکہ حدیث ہی ہوتا ہے اس لئے وہ اس کی تمام جہات سے بحث کرتے ہیں، چنانچہ اسی سبب سے صحابہ اور تابعین کے اقوال پر بھی حدیث کا اطلاق کرتے ہیں۔اس لیے عموماً احادیث کی کتابوں میں حضورﷺ کی احادیث کے ساتھ آثار صحابہ وتابعین بھی ذکر کیے جاتے ہیں۔اجمالاً یہ حضرات ہر ایک پر حدیث کا اطلاق کرتے ہیں، البتہ تفصیل میں جا کر ان میں سے ہر ایک کو مستقل نام دے دیتے ہیں، لہذا حدیثِ رسولﷺ کو حدیثِ مرفوع، اور حدیثِ صحابی کو حدیثِ موقوف اور حدیثِ تابعی کو حدیث مقطوع کہتے ہیں۔

لیکن اس کا یہ مطلب نہیں کہ عملی اعتبار سے ان تینوں کی حیثیت بھی ایک جیسی ہے، بلکہ حدیث سے اکثر وبیشتر حدیث رسولﷺ ہی مراد ہوتی ہے، جس کا مقام سب سے بلند ہے۔ ہاں اس میں کوئی شک نہیں کہ حدیث مرفوع کے بعد حدیث موقوف اور حدیث مقطوع کو بھی اہمیت حاصل ہے، اسی اہمیت کی وجہ سے محدثین نے ان کے ذکر کرنے کا اہتمام کیا ہے۔یہ بات نہیں کہ جب صحابی اور تابعی پر بھی حدیث کا اطلاق کیا گیا تو ان کو بھی وہی حیثیت مل گئی جو مرفوع حدیث کی ہے، اور احکامات کے استنباط کے لحاظ سے ہر ایک کا یکساں مقام ہے۔بعض حضرات کو اس حقیقت کا پتہ نہیں چلا، لہٰذا انہیں یہاں یہ تسامح لگ گیا، چنانچہ ''قطرات العطر شرح نخبة الفکر'' میں ہے:

''اس سے بھی معلوم ہوا کہ صحابہ اور تابعین کے فتاوی کو متقدمین حدیث کہتے تھے، امام اعظم کے اقوال ،افعال اور تقریرات بھی حدیث ہے۔اس تعریف کے اعتبار سے سیدنا امام اعظم ابوحنیفہ رحمہ اللہ کے اقوال وافعال وتقریرات بھی حدیث کہلائیں گے۔ جو لوگ امام صاحب کے اقوال کے مخالفت کرتے ہیں وہ گویا

احادیث کی مخالفت کرتے ہیں"۔ (۱)

حضرات محدثین کے درمیان حدیث کی تعریف کا فرق صرف تعبیری ہے، نفس الامر میں وہ تابعی، صحابی اور رسول اللہ ﷺ کے اقوال، افعال اور تقریرات کی مستقل حیثیت اور احکام کے قائل ہیں اور یہ ایک طے شدہ اصول ہے" ولا مناقشته فی الاصطلاح "البتہ صحابی اور رسول اللہ ﷺ کے اقوال، افعال اور تقریرات کے لئے مستعمل لفظ کا تابعی کے لئے اطلاق کرنا، تابعی اور غیر تابعی کے مابین اختلافی تناظر میں ترجیح تابعی کے سوا کوئی معنی نہیں رکھتا۔

حدیث کی وجہ تسمیہ:

حضور ﷺ کے افعال، اقوال، اعمال اور احوال کو حدیث سے تعبیر کرنا کوئی خود ساختہ اصطلاح نہیں بلکہ خود قرآن کریم ہی سے مستنبط ہے۔ قرآن کریم میں دین کو نعمت فرمایا ہے۔ چنانچہ ارشاد باری ہے:

﴿وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ﴾ (۲)

(ترجمہ) "اور حق تعالیٰ کی جو تم پر نعمتیں ہیں ان کو یاد کرو اور اس کتاب اور حکمت کو جو اللہ تعالیٰ نے تم پر اس حیثیت سے نازل فرمائی ہیں کہ تم کو ان کے ذریعہ سے نصیحت فرماتے ہیں"۔ (بیان القرآن)

اور تکمیلِ دین کے سلسلہ میں فرمایا:

﴿اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ﴾ (۳)

(ترجمہ) "آج کے دن تمہارے لئے تمہارے دین کو میں نے کامل کر دیا اور میں نے تم پر اپنا انعام تمام کر دیا"۔ (بیان القرآن)

---

۱۔ قطرات العطر شرح نخبۃ الفکر: ص ۴۷

۲۔ البقرہ: ۲۳۱

۳۔ المائدہ: ۳

دیکھئے ان دونوں آیتوں میں قرآن حکیم نے دین کو"نعمت" کہا ہے اور سورۂ"الضحیٰ" میں آنحضرت ﷺ کو اسی نعمت کی نشر و اشاعت کو تحدیث سے تعبیر کیا گیا ہے۔﴿وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ﴾(۱) اور اپنے رب کے انعامات کا تذکرہ کرتے رہا کیجئے"

بس آپ ﷺ کی اسی تحدیثِ نعمت کو حدیث کہتے ہیں:

یہی نہیں بلکہ سابقہ انبیاء علیہم السلام کے اقوال، اعمال اور احوال کے لئے خود قرآن مجید میں متعدد مقامات پر"حدیث" ہی کا لفظ استعمال کیا گیا ہے۔

چنانچہ سورہ"الذاریات" میں حضرت ابراہیم علیہ السلام کا تذکرہ اس طرح شروع ہوتا ہے ﴿هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ﴾(۲)

(ترجمہ)"کیا ابراہیم علیہ السلام کے معزز مہمانوں کی حکایت آپ تک پہنچا ہے"۔

اور حضرت موسیٰ علیہ السلام کے حالات میں ایک جگہ نہیں، دو جگہ فرمایا ہے﴿وَهَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى﴾(۳)

(ترجمہ)"کیا آپ کو موسیٰ علیہ السلام کا قصہ پہنچا ہے"۔(بیان القرآن)

خود حضور ﷺ کے قول مبارک کے لئے بھی قرآن حکیم میں"حدیث" کا لفظ موجود ہے۔

﴿و اذأ سرّالنبي إلی بعض ازوا جه حديثا﴾(۴)

"اور جبکہ پیغمبر نے اپنی کسی بی بی سے ایک بات چپکے سے فرمائی"۔

حدیث کی وجہ تسمیہ کے بارے میں ارباب فن کی آراء:

حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ اس بارے میں رقمطراز ہیں:

"المراد با لحديث في عرف الشرع ما يضاف إلی النبي و كأنه أريد به

---

۱۔ سورۃ الضحیٰ:۱۱

۲۔ سورۃ الذاریات:۲۴

۳۔ سورۃ طٰہٰ:۹

۴۔ التحریم:۳

مقابلة القرآن لأنه قديم". (۱)

(ترجمہ) "یعنی عرف شرع میں حدیث اُسے کہا جاتا ہے جو آپ ﷺ کی طرف منسوب ہو۔ اور جو بھی امر آنحضرت ﷺ کی طرف منسوب ہوا سے قرآن کے مقابلہ میں ہونے کی وجہ سے جو کہ قدیم ہے "حدیث" کہتے ہیں"۔

علامہ سیوطی رحمہ اللہ (۲) حدیث کی تعریف یوں کرتے ہے:

"أما الحديث فأصله: ضد القديم، وقد استعمل في قليل الخبر وكثيره لأنه محدث شيئًا فشيئًا". (۳)

(ترجمہ) "یعنی حدیث قدیم کی ضد ہے اس کا اطلاق خبر قلیل وخبر کثیر دونوں پر ہوتا ہے اور خبر ایک مرتبہ صادر نہیں ہوتی بلکہ تدریجاً اس کا ظہور ہوتا ہے اور خبر ہونے کی یہ شان حضور ﷺ کی احادیث میں موجود ہے اس لیے اس کو حدیث کہتے ہیں"۔

---

۱۔ فتح الباري شرح صحيح البخاري: ۵۷/۱.

۲۔ ابوالفضل جلال الدین عبدالرحمان بن کمال الدین ابی بکر بن محمد سیوطی شافعی، یکم رجب ۸۴۹ھ کو قاہرہ میں پیدا ہوئے، ابھی وہ پانچ برس کے تھے کہ پدر بزرگوار شیخ کمال الدین کا انتقال ہوگیا، مگر پھر بھی اپنے زمانے کے کبار علماء سے علم حاصل کیا۔ تحصیل علوم کے بعد ملک کی مشہور درسگاہوں میں تدریس کے اعلی عہدوں پر ممتاز ہوئے۔ متاخرین علمائے اسلام میں علامہ موصوف کو اپنی علمی خدمت کی بناء پر جو شہرت اور قبولیت حاصل رہی ہے وہ محتاج بیان نہیں۔ وہ نہایت باکمال ائمہ فنون میں سے تھے فطرت کی طرف سے ان کی ذات میں بہت سی خصوصیات اور خوبیاں ودیعت کی گئی تھیں۔ درس وتدریس، تصنیف وتالیف، افتاء وقضاء، رشد وہدایت اور تقوی وطہارت میں انہیں کمال حاصل تھا۔ علامہ موصوف نامور مصنف، بلند پایہ مفسر، محدث، فقیہ، ادیب، شاعر، مورخ اور لغوی تھے، بلکہ اپنے زمانہ کے مجدد تھے۔
وفات شب جمعہ ۱۹ جمادی الاولی ۹۱۱ھ کو اپنے مکان روضة المقياس میں پائی۔ چند مشہور تصانیف: تفسیر درمنثور، تدریب الراوی، تاریخ الخلفاء، مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذهب في أخبار من ذهب ۸۷/۸۔۹۰، اور فوائد جامعہ بر عجالہ نافعہ: ص ۳۵۵۔۳۵۷

۳۔ تدريب الراوي فی شرح تقريب النواوي: ۲۹/۱

علامہ شبیر احمد عثمانی رحمہ اللہ [1] ایک لطیف توجیہ کرتے ہوئے فرماتے ہیں: کہ حدیث کا نام مقتبس اور ماخوذ ہے قرآن پاک کی آیت ﴿أما بنعمة ربك فحدث﴾ سے۔ تفصیل اس کی یہ ہے کہ سورہ ''الضحیٰ'' کے آخر میں حق تعالیٰ نے نبی اکرم ﷺ پر اپنے تین احسانات ذکر کر کے ان کا شکریہ ادا کرنے کا حکم دیا ہے۔ پہلا احسان یہ جتایا ﴿ألم يجدك يتيما فاوى﴾ (کیا اللہ تعالیٰ نے آپ کو یتیم نہیں پایا پھر ٹھکانا دیا)۔(بیان القرآن)

اس کا شکریہ آگے یہ ارشاد فرمایا ہے ﴿فأما اليتيم فلا تقهر﴾ تو آپ یتیم پر سختی نہ کیجئے۔ دوسرا احسان: یہ جتایا ﴿ووجدك ضالا فهدى﴾ اور اللہ تعالیٰ نے آپ کو بے خبر پایا سو راستہ بتلایا۔ اس کا شکریہ یہ ہے کہ ﴿وأما بنعمة ربك فحدث﴾ علوم و معارف ملنے کی جو نعمت ہے آپ اس کو لوگوں کے سامنے بیان کیجئے۔ یہی چیزیں جو آپ بیان فرماتے ہیں انہیں حدیث کہا جاتا ہے تو ''حدث'' سے اقتباس کر کے آپ کی باتوں کا نام حدیث رکھ دیا ہے۔

تیسرا احسان: یہ جتایا ﴿ووجدك عائلا فأغنى﴾ کہ آپ مفلس تھے آپ کو غنی بنا دیا اس کا

---

ا۔ شیخ الاسلام شبیر احمد عثمانی بن فضل الرحمان دیوبندی حنفی، ماہ محرم ۱۳۰۵ھ کو پیدا ہوئے حصول علم اپنے زمانے کے کبار علماء سے کیا۔ موصوف بڑے جلیل القدر مفسر، محدث، جامع معقول و منقول، سحر بیان متکلم، عالی قدر مصنف و انشاپرداز، میدان سیاست کے بطل جلیل، زاہد، عابد و تقویٰ شعار تھے، آپ نے ۱۳۲۵ھ میں علوم سے فراغت حاصل کی،۔ پہلے مدرسہ فتح پوری کے صدر نشین ہوئے، پھر سالہا سال دار العلوم دیوبند میں درس حدیث دیا۔ آپ کے مسلم شریف کے درس کی بہت شہرت تھی، ۱۳۴۶ھ کی تحریک اصلاح دار العلوم میں شاہ صاحب اور دیگر اساتذہ کی پوری ہمنوائی کی، ڈابھیل تشریف لے گئے اور جامعہ گجرات کی مسند درس حدیث کو زینت بخشی، بقول مولانا عبید اللہ سندھیؒ آپ حضرت مولانا قاسم نانوتویؒ کی قوت بیانیہ کے ممثل تھے، تقریر و تحریر دونوں لا جواب تھیں، جس موضوع پر قلم اٹھایا اس کا حق ادا کر گئے، انتقال، ۲۱ صفر ۱۳۶۹ھ کو ہوا، چند مشہور تصانیف: فتح الملہم شرح صحیح مسلم، اعجاز القرآن، لطائف الحدیث، مزید حالات کے لئے دیکھئے: مقدمہ فتح الملہم شرح صحیح مسلم: ۳۔۶، اور انوار الباري شرح صحیح البخاري: ۱/۲۴۸

شکر یہ یہ ہے کہ ﴿أما السائل فلا تنهر﴾ اور سائل کو مت جھڑکیئے۔ (۱)

## خبر کی تعریف اور خبر و حدیث میں فرق:

### خبر کی لغوی تعریف:

" الخبر النبأ" (۲) یعنی خبر دینا"۔

### خبر کی اصطلاحی تعریف:

حدیث اور خبر کے درمیان کیا نسبت ہے؟ اس بارے میں تین قول ہیں:

پہلا قول: دونوں کے مابین ترادف کی نسبت ہے۔

دوسرا قول: دونوں میں عموم وخصوص مطلق کی نسبت ہے، اس لئے کہ حدیث کا اطلاق آپ ﷺ کے اقوال وافعال وغیرہ پر ہوتا ہے، اور خبر عام ہے احادیث نبوی اور اخبارِ سلاطین وملوک دونوں کو شامل ہے۔

تیسرا قول: دونوں میں تباین کی نسبت ہے کہ حدیث کا تعلق رسول اللہ ﷺ سے اور خبر کا تعلق غیر رسول سے ہے، چنانچہ اسی مناسبت سے تاریخ کا مشغلہ رکھنے والے کو "اخباری" جبکہ حدیث کا مشغلہ رکھنے والے کو "محدث" کہا جاتا ہے۔ (۳)

## اثر کی تعریف اور حدیث واثر میں فرق:

### اثر کی لغوی تعریف:

" الأثر: بقية الشيء" (۴) "کسی چیز کا باقی ماندہ حصہ"۔

---

۱۔ فتح الملہم شرح صحیح مسلم: ۱/۲۱

۲۔ لسان العرب: ۴/۲۲۷: فصل الخاء

۳۔ نزهة النظر شرح نخبة الفكر: ص ۳۷ ۔تدريب الراوي في شرح تقريب النواوي: ۱/۲۹، توجيه النظر إلى أصول الأثر: ۱/۴۰۔ظفر الاماني بشرح سيد شريف جرجاني: ص ۲۴

۴۔ لسان العرب: ۴/۵: فصل الالف

## اثر کی اصطلاحی تعریف اور حدیث واثر میں فرق:

حدیث اور اثر کے مابین نسبت کے بارے میں تین قول ہیں:

پہلا قول: دونوں کے مابین ترادف کی نسبت ہے۔

دوسرا قول: دونوں میں عموم وخصوص مطلق کی نسبت ہے؛ اس لئے کہ اثر عام ہے: مرفوع، موقوف سب کو شامل ہے، جبکہ حدیث صرف مرفوع کو۔ (۱)

تاہم امام نووی رحمہ اللہ (۲) نے اس بات کی تصریح کی ہے کہ جمہور سلف وخلف کے نزدیک حدیث اور اثر میں کوئی فرق نہیں ہے، دونوں کا اطلاق احادیثِ مرفوعہ وموقوفہ ہی پر ہوتا ہے

---

۱۔ تدریب الراوي في شرح تقریب النواوي: ۱/۲۹ فتح المغیث بشرح الفیۃ الحدیث: ۱/۷ اتوجیہ النظر إلی أصول الأثر: ۱/۴۰

۲۔ ابوزکریا محی الدین یحیی بن شرف بن حسن بن حسین بن مری نووی شافعی، محرم ۶۳۱ھ میں حوران کے ایک چھوٹے سے شہر نوی میں پیدا ہوئے ۶۴۹ھ میں دمشق آئے اور رواحہ میں فروکش ہوئے یہیں پڑھنا شروع کیا۔ علم کی تکمیل اپنے زمانہ کی نامور علماء کرام سے کی۔ فراغت کے بعد درس وتدریس اور تصنیف وتالیف میں مشغول ہوگئے۔ آپ حدیث اور فنون حدیث کے حافظ، رجال، صحیح اور سقیم حدیث کے ماہر تھے اور شافعی مذہب کے چوٹی کے عالم تھے۔ موصوف ایسے اعلی مراتب پر فائز تھے کہ اگر کسی کو ان میں سے کوئی ایک مرتبہ بھی حاصل ہوجائے تو وہ مرجع خلائق بن جائے۔ علامہ ذہبی فرماتے ہیں کہ موصوف کو تین مرتبے اور مقامات حاصل تھے اور ہر مرتبہ ایسا کہ اگر وہ کسی شخص کو حاصل ہو تو اس کی طرف سفر کر کے پہنچا جائے، علم، زہد اور امر بالمعروف ونہی عن المنکر۔ آپ علم، ورع، عبادت، کم کھانے اور سخت تر زندگی بسر کرنے میں یکتائے زمانہ تھے۔ دمشق میں دار الحدیث کے متولی اور صدر بھی رہے۔ وفات تک اسی منصب پر فائز رہے۔ موصوف نے دو برس اس طرح گزارے کہ زمین پر کبھی پہلو نہیں لگا۔ ۲۴ رجب ۶۷۶ھ میں انتقال ہوگیا۔ چند مشہور تصانیف: شرح مسلم، ریاض الصالحین، تہذیب الاسماء واللغات۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: طبقات الشافعیۃ الکبری: ۴/۱۷۴-۴۷۶، تذکرۃ الحفاظ: ۴/۱۷۴-۱۷۶ اور صحیح مسلم مع شرح النووي: ۱/۶۳

علامہ عبدالحی لکھنوی رحمہ اللہ [1] نے بھی اسی بات پر جمہور سلف وخلف کا اتفاق نقل کیا ہے، اور یہی جمہور کے ہاں مختار مذہب ہے۔

چنانچہ امام ابو جعفر طحاوی رحمہ اللہ [2] نے اپنی کتاب کا نام "شرح معانی الآثار" رکھا ہے،

---

۱۔ ابوالحسنات عبدالحي بن عبدالحليم لكھنوي حنفي ۲۶ ذوالقعدة بروز منگل ۱۲۶۴ھ کو پیدا ہوئے، علوم کی تحصیل اپنے والد ماجد سے کی اور سترہ سال کے عمر میں تحصیل علم سے فارغ ہو گئے تھے، موصوف کو اللہ تعالی نے بچپن ہی سے درس وتدریس وتالیف کی محبت عطا فرمائی تھی؛ اس لئے ایسی کوئی کتاب نہیں کہ پڑھی ہو اور پڑھائی نہ ہو، موصوف کو تمام علوم میں مہارت تامہ حاصل تھی، یہی وجہ ہے کہ تقریباً اکثر فنون میں کتابیں لکھیں ہیں ۱۲۷۹ھ میں حرمین شریفین میں حاضر ہوئے، شیخ محدث سید احمد حلان سے ان تمام علوم کی اجازت حاصل کی جن کی اجازت ان کو اپنے شیوخ سے حاصل تھی۔ ایک عالَم نے آپ کے علمی فیوض وبرکات اور درس وتصنیف کے بحر بیکراں سے استفادہ کیا۔ بہت تھوڑی عمر میں اتنے کام کر گئے کہ حیرت ہوتی ہے۔ آپ کی تمام تصانیف نہایت گراں قدر علمی جواہر سے مرصع ہیں۔ انتقال ۱۳۰۴ھ کو ہوا، چند مشہور تصانیف: الرفع والتکمیل فی الجرح والتعدیل، ظفر الامانی، الفوائد البہیہ فی تراجم الحنفیہ، مزید حالات کے لئے دیکھئے: الرفع والتکمیل: ص ۱۸۔۳۳، اور انوار الباری شرح صحیح البخاري: ۱/۲۰۵۔

۲۔ ابو جعفر احمد بن محمد بن سلامہ طحاوی حنفی، ۲۳۹ھ میں پیدا ہوئے۔ آپ طلب علم کے لئے اپنے مسکن سے مصر آئے اور اپنے ماموں امام مزنی کے پاس پڑھتے رہے۔ طلب علم کے لئے غزہ، عسقلان، طبریہ، بیت المقدس، دمشق، شام، خراسان، حجاز، مصر، عراق، وغیرہ کا سفر کیا۔ علمائے اسلام میں علامہ موصوف کو اپنی علمی خدمت کی بناء پر جو شہرت اور قبولیت حاصل رہی ہے وہ محتاج بیان نہیں۔ امام ذہبی لکھتے ہیں: موصوف فقیہ، محدث، حافظ حدیث، ثقہ، ثبت، عاقل اور اعلام میں سے تھے۔ علامہ سمعانی ؒ فرماتے ہیں: ایسے بڑے امام ثقہ، ثبت، فقیہ وعالم تھے کہ اپنا مثل نہیں چھوڑا۔ موصوف جلیل القدر فقیہ، اختلاف علماء کے بڑے عالم اور تصنیف وتالیف کی بڑی بصیرت رکھنے والے، ان کے، فضل، صدق، زہد وورع پر علماء کا اتفاق ہے۔ فن اسماء رجال میں بھی موصوف کی رائے بطور سند کتب جرح وتعدیل میں مذکور ہوئی ہے۔ بلا اختلاف آپ اپنے زمانہ کے مجتہد اور مجدد تھے، ۳۲۱ھ کو قاہرہ میں انتقال ہوا۔ چند مشہور تصانیف: مشکل الآثار، شرح معانی الآثار، عقیدۃ الطحاوی۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے الانساب: ۲/۲۱۶، اور تذکرۃ الحفاظ: ۲/۲۱، اور شذرات الذهب في أخبار من ذهب: ۲/۲۸۹۔۲۹۰

حالانکہ اس میں مرفوع احادیث بھی بکثرت موجود ہیں۔

نیز حافظ ابن جریر طبری رحمہ اللہ (۱) نے بھی اپنی کتاب کا نام "تہذیب الآثار" رکھا ہے، جس میں صرف مرفوع احادیث ہی ہیں موقوف احادیث اگر ہیں بھی تو تبعاً مذکور ہیں۔ (۲)

تیسرا قول: دونوں میں تباین کی نسبت ہے:

فقہاءِ خراسان نے اسی آخری قول کو لیا ہے اور اثر کی تعریف یوں کی ہے:

" أن الحديث اسم للمرفوع والأثر اسم للموقوف على الصحابة والتابعين " (۳)

(ترجمہ) " کہ حدیث کا اطلاق مرفوع پر اور اثر کا اطلاق موقوف ومقطوع پر کرتے ہیں "۔ اسی وجہ سے اس قسم کی احادیث کے محدث کو "اثری" کہتے ہیں۔ اسی مناسبت سے امام محمد رحمہ اللہ (۴) نے اپنی اس کتاب کا نام جس میں انہوں نے

---

۱۔ ابو جعفر محمد بن جریر بن یزید طبری، ۲۲۴ھ کو "آمل طبرستان" میں پیدا ہوئے، طلب علم کے لئے دور دراز شہروں کا سفر طے کیا۔ خطیب بغدادی لکھتے ہیں: مشہور مفسر، مورخ اور امام تھے ۔موصوف کتاب اللہ کی حفاظت کرنے والے، قرأت کے جاننے والے، معانی میں بصیرت رکھنے والے، فقاہت میں مہارت رکھنے والے، سنت کو جاننے والے، صحیح اور سقیم کو سمجھنے والے اور ناسخ ومنسوخ کو جاننے والے تھے۔ بغداد میں سکونت اختیار کی اور وہیں ۳۱۰ھ کو وفات پاگئے۔ چند مشہور تصانیف: تفسیر طبری، تاریخ طبری، تہذیب الآثار، مزید حالات کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ ۱۲/۵۷، اور شذرات الذہب فی اخبار من ذہب: ۲/۴۵۰

۲ ظفر الامانی بشرح سید شریف جرجانی ص ۱۲۵ امعان النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۱۱

۳ ظفر الاماني بشرح سيد شريف جرجاني: ص ۲۶.

۴ ابو عبداللہ محمد بن الحسن بن فرقد شیبانی حنفی، ۱۳۲ھ میں پیدا ہوئے، ۱۴ سال کی عمر میں امام اعظم کی خدمت میں حاضر ہو کر علم حاصل کیا چار سال تک حاضر خدمت رہے پھر تکمیل امام ابو یوسف سے کی اور ان کے علاوہ امام اوزاعی، امام ثوری، امام مالک وغیرہ سے بھی علم حدیث وغیرہ میں استفادہ کیا حتی کہ باتفاق اہل علم فقہ کے بلند پایہ امام ہوئے، تفسیر وحدیث کے ماہر وحاذق اور لغت وادب کے نازش روزگار مسلم استاد ہوئے۔ (بقیہ اگلے صفحہ پر)

آثار موقوفہ ذکر کئے ہیں ''کتاب الآثار'' رکھا ہے۔

امام غزالی رحمہ اللہ (۱) نے بھی ''احیاء العلوم'' میں فقہاءِ خراسان ہی کی اصطلاح کو اختیار کیا ہے۔

---

حوالہ بقیہ گزشتہ صفحہ.........

تاریخ فقہ شاہد ہے کہ کتب مشہورہ مؤلفہ مذاہب ائمہ متبوعین مدونہ، حجۃ اورام وغیرہ سب امام محمد کی کتابوں کی روشنی میں تالیف ہوئیں اور ایک عرصہ دراز تک ان کی کتابیں تمام مذاہب کے فقہاء کے ہاتھوں میں متداول رہی ہیں اور بے تکلف سب ان سے مستفید ہوتے رہے کیونکہ ان کے دلائل، وضوح بیان، دقت نظر اور تفریع مسائل کا بہترین اسلوب ان کے اپنے زمانہ کے بھی اکثر اعلام کے اعتبار سے اعلیٰ وفائق تھا چہ جائکہ اس کا موازنہ بعد کے زمانہ سے کیا جائے۔ ۱۸۹ھ کو وفات پاگئے۔ چند مشہور تصانیف: مؤطا امام محمد، جامع صغیر، جامع کبیر۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الجواہر المضیہ فی طبقات الحنفیۃ: ص۳۲۵، اور البدایہ والنہایہ ۱۰/۴۸۱ ، اور شذرات الذھب في أخبار من ذھب: ۲/۱۷۔۲۰

(۱) ابوالحامد محمد بن محمد غزالی شافعی ۴۵۰ھ میں پیدا ہوئے، ابتدائی تحصیل علم سرزمین طوس پر کی، پھر نیشاپور چلے گئے اور امام جوینی کے حلقہ درس میں شامل ہوئے۔ بہت کم مدت میں فنون متداولہ کی تعلیم سے فراغت حاصل کرلی، اور بہت کم عمر میں اپنے زمانے کے ممتاز علماء میں شمار ہونے لگے۔ تعلیم سے فراغت کے بعد درس وتدریس میں مشغول ہوگئے۔ امام جوینی آپ کی ذات گرامی کو اپنے لئے وجہ افتخار سمجھتے تھے۔ علم فقہ کے امام ہوئے۔ اپنے مذہب کے بھی پورے واقف تھے اور دوسرے مذاہب کے بھی۔ طوس میں آپ نے ایک خانقاہ اور ایک مدرسہ بھی قائم کیا، خانقاہ میں دور دراز سے لوگ آتے اور اکتساب فیض کرتے۔ آپ اپنی نگرانی میں انہیں مختلف وظائف کی تعلیم دیتے۔ حلقہ درس میں بھی طلباء کا ہجوم رہتا۔ آپ زیادہ تر تفسیر، حدیث اور تصوف کی کتابیں پڑھاتے، ۱۴ جمادی الأخری بروز شنبہ ۵۰۵ھ میں وفات پائی۔ چند مشہور تصانیف: احیاء العلوم، المستصفی فی اصول الفقہ، جواہر القرآن۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۱۴/۱۴۔۱۵، اور طبقات الشافعیۃ الکبریٰ: ۳/۴۱۶۔۵۳۶

علامہ ابن صلاح رحمہ اللہ (۱) نے بھی فقہاءِ خراسان کی اصطلاح کو اپنی کتاب میں نقل کرنے کے بعد بطور استشہاد ابو القاسم الفورانی رحمہ اللہ کا قول بھی نقل کیا ہے:

"الفقهاء يقولون: الخبر ما يروى عن النبي ﷺ والأثر ما يروى عن الصحابة"(۲)

"کہ فقہاءِ خراسان کا کہنا ہے کہ خبر تو وہ ہے، جو آپ ﷺ سے روایت کی جائے، اور اثر وہ ہے، جو حضرات صحابہ رضی اللہ عنہم سے منقول ہو"۔

چونکہ یہ اصطلاح بھی بکثرت مستعمل ہے، اس لئے علامہ ابن کثیر رحمہ اللہ (۳) نے بھی

---

۱۔ تقی الدین ابو عمرو عثمان بن عبد الرحمان بن عثمان ابن الصلاح شہرزوری شافعی ۵۷۷ھ کو شرخان میں پیدا ہوئے، تحصیل علم کے لئے موصل، بغداد، بلادِ عجم، مرو، نیشاپور، ہمزان، حران، دمشق اور حلب وغیرہ کا سفر کیا، تحصیل علم کے بعد درس و تدریس میں مشغول رہے، سب سے پہلے مدرسہ ناصریہ میں، پھر مدرسہ رواحیہ میں اور آخر میں مدرسہ صلاحیہ میں مدرس بنے اور تیرہ سال تک دمشق کے دار الحدیث کی مسند کو زینت بخشی، موصوف تفسیر، حدیث، اصول حدیث فقہ، اور اسماء رجال کے بہت بڑے عالم تھے، تصنیف و تالیف کی بڑی بصیرت رکھنے والے، ان کے فضل، صدق، زہد و ورع پر علماء کا اتفاق ہے۔ فن اسماء رجال میں بھی موصوف کی رائے بطور سند، کتب جرح و تعدیل میں مذکور ہے، دمشق ہی میں ۶۴۳ھ کو وفات پا گئے۔ چند مشہور تصانیف: معرفۃ انواع علم الحدیث، صیانۃ صحیح مسلم، طبقات فقہاء الشافعیۃ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: طبقات الشافعیۃ الکبری: ۴/۴۲۸۔ ۴۳۴، اور وفیات الاعیان وأنباء أبناء الزمان: ۲/۱۱۶

۲۔ معرفۃ انواع علم الحدیث ص ۱۱۸

۳۔ حافظ عماد الدین ابو الفداء اسماعیل بن عمر بن کثیر دمشقی شافعی بصرہ کے ایک چھوٹے سے گاؤں میں ۷۰۱ھ کو پیدا ہوئے۔ تحصیل علم میں دور دراز شہروں کا سفر کیا، آپ مشہور و معروف محدث، فقیہ، مورخ اور جامع معقول و منقول تھے۔ تحصیل حدیث اپنے زمانہ کے مشاہیر اساتذہ حدیث سے کی۔ فراغت کے بعد درس و تدریس، افتاء اور تصنیف و تالیف میں مشغول ہو گئے اور اس میں بھی فائق ہوئے۔ بڑے بڑے حفاظ حدیث و فضلاء عصر نے آپ سے کسب فیض کیا۔ علامہ ابن تیمیہؒ سے بھی استفادہ کیا، اور باوجود شافعی ہونے کے موصوف سے بڑا تعلق تھا، ۱۶ شعبان ۷۷۴ھ کو وفات پا گئے۔ چند مشہور تصانیف: تفسیر ابن کثیر، البدایہ والنہایہ، جامع المسانید۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذہب في أخبار من ذہب: ۶/۲۳۲، اور الاعلام: ۱/۳۲۰

اپنی کتاب میں اس کو ذکر کیا ہے۔

چنانچہ موصوف لکھتے ہیں:

"ومن هذا يسمى كثير من العلماء الكتاب الجامع لهذا (بالسنن والآثار) ككتابيں (السنن والآثار) للطحاوي والبيهقي وغيرهما"[1]

چنانچہ بہت سے علماء کی وہ کتابیں جو احادیثِ موقوفہ کی جامع ہو اس کا نام کتاب السنن والآثار رکھتے ہیں، جیسے امام طحاوی رحمۃ اللہ علیہ اور امام بیہقی رحمہ اللہ[2] کی کتابیں السنن ولااثار کے نام سے مشہور ہیں۔

## سنت:

### سنت کی لغوی تعریف:

"السنة: الطريقة".[3]

"سنت راستہ اور طریقہ کو کہتے ہیں، خواہ اچھا ہو یا برا"۔

---

۱ اختصار علوم الحدیث مع شرح الباعث الحثیث: ص۴۳

۲۔ ابو بکر احمد بن الحسین بن علی بن عبداللہ بیہقی شافعی، شعبان ۳۸۴ھ کو پیدا ہوئے، تحصیل علم کے لئے مکہ مکرمہ، خراسان، عراق، حجاز، بغداد، وغیرہ شہروں کا سفر کیا، اور اپنے زمانہ کے کبار علماء سے علم کی تکمیل کی، موصوف مشہور و معروف جلیل القدر محدث تھے، بڑی بڑی گراں قدر تصانیف لکھیں۔ امام الحرمین شافعی کا قول ہے کہ دنیا میں سوائے امام بیہقی کے اور کسی کا احسان امام شافعی c پر نہیں، کیونکہ امام بیہقی نے اپنی تمام تصانیف میں امام شافعی c کے مذہب کی تائید کی ہے اور اسی وجہ سے ان کے مذہب کا رواج زیادہ ہوا۔ امام شافعی کی فقہ اور فنِ حدیث و علل میں پوری مہارت رکھتے تھے۔ ۱۰ جمادی الاولی ۴۵۸ھ کو وفات پائی۔ چند مشہور تصانیف: سنن الکبری ، کتاب الاسماء والصفات، دلائل النبوہ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: طبقات الشافعیۃ الکبری ۲/ ۳۴۸۔۳۵۱، اور بستان المحدثین: ص ۱۳۴۔۱۳۵

۳۔ لسان العرب: ۲۲۶/۱۳: فصل السین

اس کی دلیل نبی اکرم ﷺ کی یہ حدیث ہے:

"من سن في الاسلام سنّةً حسنةً فعمل بها بعده ، كتب له مثل أجر من عمل بها . ولا ينقص من أجورهم شيءٌ ومن سنّ في الاسلام سنّةً سيئة ، فعمل بها بعده ، كتب عليه مثل وزرمن عمل بها ، ولا ينقص من أوزارهم شيءٌ." (۱)

(ترجمہ) ''جس شخص نے اسلام میں کسی نیک کام کی بنیاد رکھی، تو اسے اس کا اجر ملے گا اور اس پر عمل کرنے والے تمام لوگوں کا بھی اور ان کی اجور میں سے کچھ کمی نہیں کی جائے گی۔ اسی طرح جس شخص نے اسلام میں کوئی برا طریقہ ایجاد کیا تو اس پر اس برائی کا گناہ ہوگا اور جو شخص اس پر عمل کرے گا اس کا بھی۔ اوران کے گناہوں سے کچھ کمی نہیں کی جائے گی''۔

## سنت کی اصطلاحی تعریف:

محدثین آپ ﷺ کی ذات مبارکہ سے صادر ہونے والے ہر قول، فعل، تقریر، جسمانی اور اخلاقی صفت کو سنت کہتے ہیں اگر چہ ان کا تعلق آپ کے زمانۂ بعثت سے قبل ہی کیوں نہ ہو۔ مذکورہ تعریف کے لحاظ سے بعض محدثین کے نزدیک حدیث اور سنت دونوں ایک ہی چیز ہیں۔ (۲)

اصولیین کے نزدیک حضور ﷺ کی ذات مبارکہ سے منقول ہر قول، فعل، یا تقریر کو سنت کہتے ہیں۔ (۳)

اس صورت میں بھی، سنت اور حدیث میں ترادف کی نسبت ہوگی،، لیکن بعض اصولیین دونوں میں عموم وخصوص مطلق کی نسبت بیان فرماتے ہیں یعنی حدیث فقط اقوال رسول کا نام ہے

---

۱۔ الجامع الصحیح للإمام مسلم: ۲۰۶۰/۴.

۲۔ السنۃ ومکانتھا فی التشریع الاسلامی: ص ۶۵

۳۔ فواتح الرحموت بشرح مسلم الثبوت: ۱۱۷/۲، شرح الکوکب المنیر: ۱۶۰/۲

اور سنت قول، فعل، تقریر وغیرہ سب کو شامل ہے۔ چنانچہ اس رائے کو علامہ عمیر بن امیر اتقانی رحمہ اللہ (۱) اور علامہ طاہر جزائری رحمہ اللہ (۲) نے نقل فرمایا ہے۔ (۳)

فقہاء کے نزدیک جو فعل آنحضرت ﷺ سے ثابت ہو، مگر فرض اور واجب نہ ہو، اس کو سنت کہتے ہیں۔ (۴)

## سنتِ قولی کی تعریف:

شرعی احکام سے متعلق جو بات آپ نے کسی موقع پر ارشاد فرمائی ہو۔ اس کو سنتِ قولی کہتے ہیں۔ مثلاً آپ ﷺ کا ارشاد مبارک ہے: "إنما الأعمال بالنیات." (۵) "کہ اعمال کا انحصار و مدار نیت پر ہے"۔

---

۱۔ قوام الدین عمیر بن امیر غازی اتقانی حنفی، شوال ۶۸۵ھ کو پیدا ہوئے، اپنے زمانہ کے اکابر محدثین واہل فضل سے تحصیل علوم کی۔ حدیث، فقہ، لغت وعربیت کے امام تھے۔ ایک مدت تک مدرسہ مشہد امام اعظم میں درس وتدریس اور قضاء وافتاء میں مشغول رہے۔ امام ذہبی کی وفات پر ظاہریہ میں مدرسہ دار الحدیث کے مدرس ہوئے ۲۱ شوال ۷۵۸ھ کو وفات پا گئے۔ چند مشہور تصانیف: التبیین، غایۃ البیان شرح ہدایہ، الشامل۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الدرر الکامنۃ فی اعیان المائۃ الثامنۃ: ۱/۴۴۲۔۴۴۴ اور الطبقات السنیۃ فی تراجم الحنفیہ: ۲/۲۲۱، اور الفوائد البہیۃ فی تراجم الحنفیہ: ص ۵۰۔۵۲

۲۔ طاہر بن صالح (محمد صالح) بن احمد بن موہوب سمعونی جزائری دمشقی، ۱۲۶۸ھ کو دمشق میں پیدا ہوئے، اپنے زمانہ کے اکابر علماء امت واہل فضل سے تحصیل علوم کی، اصول حدیث، لغت وادب کے بلند پایہ علماء میں ان کا شمار ہوتا ہے۔ موصوف نے بیشتر وقت مخطوطات پر صرف کیا، ۱۳۳۸ھ کو دمشق میں وفات پا گئے۔ چند مشہور تصانیف: التبیان لبعض المباحث القرآن، التقریب الی اصول التعریب، توجیہ النظر۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۲/۲۲۱۔۲۲۲

۳۔ التبیین: ۱/۵۷۵، توجیہ النظر الی اصول الأثر: ۱/۴۰

۴۔ السنۃ ومکانتھا فی التشریع الاسلامی: ص ۶۶

۵۔ الجامع الصحیح للامام بخاری: ص ۱

### سنتِ فعلی کی تعریف:

متعلق حضور ﷺ کے جو افعال نقل کئے ہوں ان کو صحابہ کرام نے عبادات یا دیگر معاملات سے سنتِ فعلی کہتے ہیں۔ مثلاً نمازوں کی ادائیگی، احکامِ حج، آدابِ صیام وغیرہ۔ (۱)

### سنت تقریری کی تعریف:

''تقریر'' سے مراد یہ ہے کہ کسی صحابی نے حضور ﷺ کے سامنے کوئی کام کیا ہو، یا کوئی بات کہی ہو اور اس پر آپ ﷺ نے سکوت (۲) فرمایا ہو، نکیر نہ فرمائی ہو۔

مثلاً آپ ﷺ نے غزوہ خندق کے بعد صحابہ کو حکم دیا تھا کہ عصر کی نماز بنو قریظہ کے قبیلہ میں جا کر ادا کریں۔ بعض صحابہ نے اس حکم کو حقیقت پر محمول کیا۔ جب بنو قریظہ کے قبیلہ میں پہنچے تو مغرب کا وقت ہو چکا تھا۔ انہوں نے عصر کی نماز مغرب کے بعد ادا کی۔ بعض صحابہ نے سمجھا کہ آپ ﷺ کا مقصد یہ تھا کہ صحابہ جلد از جلد وہاں پہنچنے کی کوشش کریں، انہوں نے صحیح وقت پر راستہ میں عصر کی نماز پڑھ لی۔ جب آنحضرت ﷺ کو اس واقعہ کا علم ہوا تو آپ نے سکوت فرمایا اور کسی پر بھی نکیر نہ فرمائی۔ (۳)

### سنت کے معنی و مفہوم میں علماء کا اختلاف:

سنت کے معنی و مفہوم میں یہ اختلاف درحقیقت اہل علم کے مقاصد کے اختلاف کے نتیجے میں وجود میں آیا۔

### محدثین:

حضرات محدثین بحیثیت مقتدا اور پیشوا آنحضرت ﷺ کی ذات گرامی سے بحث کرتے ہیں، کیونکہ رب کائنات نے آپ ﷺ کو عالم انسانیت کے لئے مقتدا اور پیشوا بنا کر مبعوث فرمایا ہے۔

---

۱۔ السنة ومكانتها في التشريع الاسلامي: ص ۶۵
۲۔ لمعات التنقيح شرح مشكاة المصابيح: ۱/۲۲
۳۔ الجامع الصحيح للامام بخاري: ص ۶۹۸

اس لئے آپ ﷺ سے متعلقہ جملہ اقوال وافعال، اخبار وشمائل اور اخلاق وعادات اس لائق ہیں کہ انہیں نقل کیا جائے۔ قطع نظر اس سے کہ ان سے کوئی شرعی حکم ثابت ہوتا ہے یا نہیں۔

**اصولیین:**

علماءِ اصول رسول اللہ ﷺ کے افعال، اقوال اور تقریرات سے ایسے زاویئے سے بحث کرتے ہیں جن کا ثمرہ مجتہدین کے لئے ظہورِ قواعد اور انسانیت کے لئے دستورِ حیات ہوتا ہے۔

**فقہاء:**

فقہاءِ کرام رسول اللہ ﷺ کے اقوال، افعال اور تقریرات میں شرعی احکام کے ثبوت کی حیثیت سے بحث کرتے ہیں۔ چنانچہ اُن کا موضوع حدیث سے وجوب حرمت، حلت اور اباحت جیسے احکام کا استنباط ہے۔(۱)

بہر حال لفظِ حدیث عام ہے بخلاف سنت کے کہ سنت کا اطلاق اُن امور پر ہوتا ہے جن پر امت عمل پیرا رہی ہوں۔ چنانچہ اسی وجہ سے ارشاد نبوی ہے: ''عليكم بسنتي وسنة الخلفاء الراشدين المهديين.''(۲)

(ترجمہ) ''تم پر میری اور خلفاء راشدین کی سنت لازم ہے''۔

نیز ارشاد گرامی ہے: ''تركت فيكم أمرين لن تضلو اما تمسكتم بهما كتاب الله وسنة رسوله.''(۳)

(ترجمہ) '' آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا میں تم میں دو چیزیں چھوڑ کر جا رہا ہوں، جب تک ان دونوں کا دامن مضبوطی سے تھامے رہو گے، ہر گز گمراہ نہ ہو گے: کتاب اللہ، اور سنت رسول اللہ ﷺ''۔

---

۱۔ السنۃ ومکانتھا فی التشریع الاسلامی: ص ۶۷

۲۔ شرح مشکل الآثار: ۳/۲۲۳

۳۔ الموطا للامام مالک: ۲/۴۸۰

علامہ محمد اکرم سندھی رحمۃ اللہ علیہ [1] نے سنت اور حدیث کے درمیان تین نسبتیں بتائیں ہیں: پہلا: دونوں کے مابین ترادف کی نسبت ہے۔ اس لئے کہ دونوں قولِ رسول، فعلِ رسول اور تقریرِ رسول کو شامل ہیں۔ دوسرا: دونوں کے درمیان عموم وخصوص مطلق کی نسبت ہے، اس لئے کہ حدیث آپ ﷺ کے قول اور فعل کو شامل ہے اور سنت آپ کے قول اور فعل کے ساتھ ساتھ صحابی اور تابعی کے قول وفعل کو بھی شامل ہے۔

تیسرا: دونوں کے درمیان عموم وخصوص من وجہ کی نسبت ہے؛ اس لئے کہ حدیث، قول، فعل اور تقریرِ رسول کا نام ہے، اور سنت رسول اللہ ﷺ، صحابی اور تابعی کے قول اور فعل کا نام ہے۔(۲)

یہاں پر یہ بات ضرور ملحوظ خاطر رکھنی چاہئے کہ آپ ﷺ کے کلام میں جہاں بھی لفظ ''سنت''، استعمال ہوا ہے جیسا کہ آپ ﷺ کا ارشاد گرامی ہے: ''علیکم بسنتي وسنة الخلفاء الراشدین المهدیین.''(۳)

اور اسی طرح آپ کا ارشاد مبارک ہے: ''النکاح من سنتي ''(۴)

تو یہاں لفظ ''سنت'' کا معنی ہر جگہ وہ نہیں ہوگا جو عوام کے ذہنوں میں راسخ ہے بلکہ اس کا معنی موقع محل کے اعتبار سے بدلتا رہے گا۔ لہٰذا اس فرق کا ضرور خیال رکھنا چاہئے۔

یہ بات بھی ملحوظ رہے کہ علماء کے مابین یہ اختلاف صرف تعبیر میں ہے

---

۱۔ محمد اکرم بن عبدالرحمان نصر پوری حنفي ۱۱۰۰ھ کے اوائل میں پیدا ہوئے۔ تحصیل علم اپنے والد ماجد اور شیوخ سندھ سے کیا اور علم حدیث شیوخ سندھ کے علاوہ شیوخ مکہ مکرمہ سے بھی حاصل کیا۔ موصوف فقہ، حدیث اور عربیت میں بلند مقام پر فائز تھے، اپنی ساری عمر درس حدیث اور تصنیف وتالیف میں بسر کردی۔ چند مشہور تصانیف: شرح بخاری، امعان النظر۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: مقدمہ امعان النظر: ص ۱۰، اور نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر: ۶/ ۲۸۹۔۲۹۰

۲۔ امعان النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۱۱، ۱۲

۳۔ شرح مشکل الاثار للإمام الطحاوي: ۳/ ۲۲۳

۴۔ کتاب السنن للإمام ابن ماجہ: ۲/ ۴۱۵: کتاب النکاح

"ولا مناقشة في الاصطلاح "اور نفس الامر میں کوئی اختلاف نہیں۔ اس لئے کہ محدثین کا طرز عمل یہ بتلاتا ہے کہ جمہور خلف وسلف کے نزدیک یہ محقق بات ہے کہ عام استعمال میں یہ تمام الفاظ مترادف ہیں اور ایک کو دوسرے کی جگہ بکثرت استعمال کیا جاتا ہے۔ چنانچہ اسی رائے کو علامہ نووی رحمۃ اللہ علیہ اور علامہ لکھنوی رحمۃ اللہ علیہ نے جمہور کا مختار مذہب قرار دیا ہے۔

# باب اول

## حدیثِ ضعیف اور اسبابِ ضعف:

### تمہید:

ضعیف احادیث کو صرف اس وجہ سے ناقابل عمل قرار دے کر موضوع کے پلڑے میں ڈال دینا کہ ان روایات کو ''ضعیف'' یا ''مردود'' کے نام سے موسوم کیا گیا ہے ایک بہت بڑی غلطی ہے۔ یہ درحقیقت فن اور اہل فن کے اصول وضوابط سے ناواقفیت ہی کا نتیجہ ہے۔

حدیث اور سنت کی جو بھی تعریف محدثین اور اصولیین نے کی ہے۔ قدیم ہو چاہے جدید اس میں کوئی ایسی قید نہیں جس سے ضعیف احادیث کو نکال باہر کیا جائے، اسی لئے انہوں نے ہمیشہ حدیث کی دوسری انواع کی طرح اس کو بھی استدلال واستنباط میں حیثیت دی ہے، اگرچہ اس کے ضعف اور درجہ کا خیال ضرور رکھا ہے۔

جہاں تک موضوع احادیث کی بات ہے تو وہ اس وقت تک اس تعریف کے دائرہ میں رہتی ہیں جب تک اس کا موضوع ہونا معلوم نہیں ہوتا۔ واقفیت اور اطلاع کے بعد وہ قول، فعل اور تقریر منسوب الی الرسول ﷺ کے دائرہ سے خارج ہو جاتی ہیں۔

ضعیف احادیث کو امکانِ خطا کی وجہ سے صحیح کا درجہ سے دینے کی بجائے ضعیف کے جداگانہ اصطلاح سے موسوم کیا گیا؛ تاکہ خطا کا جو امکان تھا وہ بھی نہ رہے، ورنہ ایک ہی مجلس میں سنی ہوئی احادیث ہی تو ہیں، سب کو ایک ہی درجہ دینا چاہئے تھا۔ ساری احادیثِ ضعیفہ کا ایک مرتبہ نہیں جیسا کہ تمام احادیث صحیحہ کا ایک درجہ نہیں بلکہ صحیح احادیث کی طرح ضعیف کے اندر بھی مراتب ودرجات کا فرق ہے جیسا کہ آنے والی تفصیلات سے واضح ہوتا ہے۔

## حدیثِ ضعیف:

### حدیثِ ضعیف کی تعریف:

''ضعیف ہر وہ حدیث ہے جس میں صحیح اور حسن کی شرائط نہ پائی جائیں''۔

چنانچہ علامہ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"كل حديث لم يجتمع فيه صفات الحديث الصحيح، ولا صفات الحديث الحسن."[1]

حدیثِ صحیح کی پانچ شرائط ہیں: (۱) راوی عادل ہوں (۲) کامل الضبط ہوں (۳) سند متصل ہو (۴) شاذ نہ ہو (۵) معلل نہ ہو اور حدیثِ حسن کی بھی پانچ شرائط ہیں: (۱) راوی عادل ہوں (۲) کامل الضبط نہ ہوں (۳) سند متصل ہو (۴) شاذ نہ ہو (۵) معلل نہ ہو[2]

کسی بھی فنی اصطلاح کو تعریف کے قالب میں ڈھالنا اس بات کا مقتضی ہوتا ہے کہ تعریف اپنے موضوع کی جملہ جزئیات کو شامل رہے اور کسی دوسری اصطلاح سے خلط نہ ہو۔ چنانچہ کسی بھی چیز کی ایسی ہمہ جہت حد بندی اس کی تعریف کہلاتی ہے۔

حدیثِ صحیح کی جزئیات چونکہ وجودی شرائط کے نتیجے میں تعریف کے سانچے میں بآسانی ڈھل جاتی ہیں نیز حدیثِ حسن کی تعریف بھی اکثر وجودی شرائط کی وجہ سے جامعیت میں حدیث صحیح کے مشابہ نظر آتی ہے، لیکن اس کے بالمقابل حدیثِ ضعیف کو پہچاننے میں کافی دقت پیش آتی ہے۔ کیونکہ اس کی اکثر شرائط منفی (احترازی) ہیں اور کسی ایک بھی شرط کے نہ ہونے کی وجہ سے حدیث ضعیف کہلاتی ہے اس لئے حدیثِ ضعیف کی پہچان نہایت مشکل ہو جاتی ہے اور اضطراب کی صورت پیش آ جاتی ہے۔

---

۱۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۱۱۲

۲۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۵۵، ۶۲

یہ بھی واضح رہے کہ حدیثِ ضعیف کے اسباب کو عملی طور پر منطبق کرنے میں بھی بہت دقت پیش آتی ہے مثلاً حدیثِ ضعیف کے لئے ایک سبب سند کا متصل نہ ہونا ہے۔ یہ بظاہر تو بہت آسان ہے لیکن عملی طور پر بعض مرتبہ سند متصل نہیں ہوتی اور اس کے باوجود اس پر ضعف کا حکم نہیں لگایا جاسکتا مثلاً: حدیثِ مرسل، حدیث منقطع تو ہوتی ہے لیکن بالجزم اس پر ضعف کا حکم نہیں لگایا جاسکتا۔ لہذا تمام جہات کو مدنظر رکھنا ضروری ہے۔

حدیثِ صحیح اور حدیثِ حسن کی پانچ شرائط کو مختصراً دو میں جمع کیا جاسکتا ہے (۱) اتصال سند (۲) راوی کا ثقہ ہونا۔ آگے انہی دونوں کی بنیاد پر بحث کو علاحدہ علاحدہ فصول میں ذکر کیا جاتا ہے۔

## فصل اول

### ضعف بوجہ عدم اتصال:

اتصال سند کے نہ ہونے کا مطلب یہ ہے کہ حدیث کی سند کے راویوں میں سے کوئی راوی رہ جائے۔ خواہ ایک ہو یا ایک سے زائد، اول سے ہو، درمیان سے یا آخر سے، راوی کا رہ جانا واضح اور ظاہر ہو یا مخفی، قصداً ہو یا بلا قصد کے۔ اسکو انقطاع بھی کہتے ہیں۔

انقطاع کی اقسام: (۱) انقطاعِ ظاہری (۲) انقطاعِ خفی۔

### (۱) انقطاعِ ظاہری کی تعریف:

انقطاعِ ظاہری کا مطلب یہ ہے کہ حدیث کی سند میں کسی راوی کا رہ جانا اس طرح واضح ہو کہ اس کے جاننے کے لئے بہت زیادہ تحقیق اور جستجو کی ضرورت نہ ہو۔ اس کا علم ائمہ حدیث اور حدیث سے شغف رکھنے والے حضرات کو بآسانی ہو جاتا ہے بایں طور کہ زمانہ ایک نہ ہونے کی وجہ سے راوی اور مروی عنہ میں ملاقات ثابت نہیں ہوتی! یا تو اس وجہ سے کہ زمانہ ایک نہیں ہوتا، یا زمانہ تو ایک ہوتا ہے مگر دونوں کے ایک جگہ پر جمع ہونے کی نوبت نہیں آئی ہوتی مثلاً تابعی نبی ﷺ سے براہ راست روایت کرے۔

انقطاع ظاہری کے لحاظ سے ضعیف حدیث کی تقسیم درج ذیل ہے:

(۱)معلق (۲) مرسل (۳)منقطع (۴)معضل

## (۱)حدیثِ معلق:

### حدیثِ معلق کی تعریف:

معلق ہر وہ حدیث ہے جس کی سند کے ابتدائی حصہ سے ایک یا زیادہ راویوں کو حذف کردیا گیا ہو۔

چنانچہ علامہ ابن الصلاح رحمہ اللہ تحریر فرماتے ہیں:

"الذي حذف من مبتدإإ سناد ہ واحد أوأ كثر ." (۱)

### حدیثِ معلق کی مثال:

امام بخاری رحمہ اللہ کی وہ حدیث جوانہوں نے "باب ما يذ كر في الفخذ " کے مقدمہ میں ذکر کی ہے:

"وقال موسى غطى النبي ﷺ ركبتيه حين دخل عثمان رضی اللہ عنہ." (۲)

اس حدیث میں امام بخاری رحمہ اللہ نے بجز صحابی کے پوری سند کو حذف کردیا ہے۔

### حدیثِ معلق کی اقسام:

معلق کی چند صورتیں ہیں:

(۱) قائل کی طرف اضافت کر کے باقی پوری سند کو حذف کردیا جائے جیسے امام بخاری رحمہ اللہ کا قول:

"و قال النبي ﷺ لصا حب القبر: كان لا يستتر من بوله"(۳)

---

۱۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص۹۲

۲۔ الجامع الصحیح للإمام البخاري: ص۶۶

۳۔ الجامع الصحیح للإمام البخاري: ص۴۱

(۲) قائل کی طرف اضافت کئے بغیر پوری سند کو حذف کر دیا جائے جیسے امام بخاری رحمہ اللہ کا قول:

" کانت أم الدرداء تجلس في الصلاة جلسة الرجل، وكانت فقيهة ." (۱)

(۳) صحابی کے علاوہ پوری سند کو حذف کر دیا جائے جیسے امام بخاری رحمہ اللہ کا قول: "قال أنس رضی حسر النبي ﷺ عن فخذه "(۲)

(۴) صحابی وتابعی کے علاوہ پوری سند کو حذف کر دیا جائے جیسے امام بخاری رحمہ اللہ کا قول:

" وقال حميد عن أنس رضی عن النبي ﷺ لا يبزق في القبلة ولا عن يمينه، ولكن عن يساره أو تحت قدمه ." (۳)

(۵) اپنے شیخ کو حذف کر کے اوپر کے راوی کو ذکر کیا جائے خواہ وہ اوپر والا اس ناقل کا استاذ ہو یا نہ ہو جیسے امام بخاری رحمہ اللہ کا قول: " كان النبي ﷺ إذا دخل الخلاء قال: اللهم إني أعوذ بك من الخبث والخبائث" (۴)

## حدیثِ معلق کا حکم

معلق حدیث بظاہر اتصال سند کے نہ ہونے کی وجہ سے ضعیف کے اقسام میں شمار ہوتی ہے لیکن اس کے باوجود اس کی عملی حیثیت ضعیف حدیث کی دیگر انواع سے مختلف ہے لہذا معلق حدیث کو یکسر ضعیف نہیں کہا جا سکتا بلکہ تحقیق کر کے اصل حقیقت کی طرف جانا ضروری ہوتا ہے کیونکہ بیشتر معلق احادیث کی اسانید موجود ہوتی ہیں اور محدثین اختصار کے پیش نظر یا دیگر وجوہات کی بنا پر سند حذف کر دیتے ہیں۔ چنانچہ بخاری شریف کی تمام معلق احادیث مسند ہیں۔

---

۱۔ الجامع الصحیح للإمام البخاري: ص۱۳۴
۲۔ الجامع الصحیح للإمام البخاري: ص۲۶
۳۔ الجامع الصحیح للإمام البخاري: ص۹۹
۴۔ الجامع الصحیح للإمام البخاري: ص۳۰

یہی وجہ ہے کہ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے اس پر مستقل کتاب لکھی ہے "تغلیق التعلیق"۔ صحیح بخاری شریف کے بعد موطا امام مالک اس سلسلہ میں بہت مشہور ہے اس میں معلقات روایات بکثرت ہیں لیکن علامہ ابن عبدالبر رحمہ اللہ نے "التمہید" میں اس کی تمام معلقات کو مسند ثابت کیا ہے۔ ان سے جو روایات رہ گئی تھیں علامہ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ نے اس پر "وصل بلاغات الموطا" لکھدی۔ لہٰذا تحقیق کر کے اصل حقیقت کی طرف جانا چاہئے۔

دوسری بات اس فن کو جن حضرات نے موضوع بنایا ہے ان کے کلام میں اس کا ذکر اس طرح نہیں ملتا جیسا کہ مرسل منقطع اور معضل کا ملتا ہے، مثلاً امام رامہرمزی رحمۃ اللہ علیہ (۱)، امام حاکم رحمۃ اللہ علیہ (۲) علامہ خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ (۳)

---

۱۔ ابو محمد حسن بن عبدالرحمان بن خلاد رامہرمزی فارسی۔ اپنے زمانہ کے کبار علماء امت سے علم حاصل کیا۔ عجم کے محدث، ادیب، مورخ اور مشہور شاعر تھے۔ وفات ۳۶۰ھ کو ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: المحدث الفاصل، ادب الناطق، العلل فی مختار الاخبار۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے سیر أعلام النبلاء: ۷۳/۱۶، اور الأعلام: ۱۹۴/۲

۲۔ ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ بن محمد حاکم نیسابوری ۳۲۱ھ کو نیسابور میں پیدا ہوئے، ابتدائی تعلیم اپنے والد ماجد سے حاصل کرنے کے بعد تکمیل اپنے زمانہ کے کبار علماء سے کی۔ موصوف مشہور محدث اور حافظ حدیث تھے۔ آپ کو علوم حدیث میں مہارت تامہ حاصل تھی، اس لئے ان کی اکثر تصانیف حدیث اور علوم حدیث سے متعلق ہیں۔ نیسابور میں قاضی مقرر ہوئے اور اسی وجہ سے حاکم لقب پڑ گیا اور نیسابور ہی میں ۴۰۵ھ کو وفات پائی۔ چند مشہور تصانیف: المستدرک علی الصحیحین، معرفۃ علوم الحدیث، تاریخ نیسابور۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۲۴/۱۳، ۲۵، اور الاعلام: ۲۲۷/۶

۳۔ ابو بکر احمد بن علی بن ثابت بغدادی، جو کہ خطیب بغدادی کے نام سے مشہور ہیں ۳۹۲ھ کو پیدا ہوئے، گیارہ سال کی عمر سے طلب علم اور سماع حدیث کا سلسلہ شروع کیا اور دور دراز بلاد وممالک کا سفر کر کے علم وفضل میں امتیاز حاصل کیا ۴۶۳ھ کو وفات پا گئے۔ چند مشہور تصانیف: تاریخ مدینۃ السلام المعروف بتاریخ بغداد، الکفایہ فی علم الروایہ، شرف اصحاب الحدیث۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۱۷۶/۱۳، ۱۷۹، اور شذرات الذهب في أخبار من ذهب: ۴۹۷/۳

اور ابن دقیق العید رحمۃ اللہ علیہ [۱] ان کے بعد جب ان قوانین کو مرتب کرنے والوں نے اس موضوع پر قلم اٹھایا، تو انہوں نے ہر ہر جزئی کو بھی اپنے کلام کا حصہ بنایا۔ چنانچہ بقول حافظ سخاوی رحمۃ اللہ علیہ کے کہ ''امام دارقطنی رحمۃ اللہ علیہ [۲] وہ پہلے شخص ہیں جنہوں نے معلق کو اپنے کلام کا حصہ بنایا، اور ان کے بعد امام حمیدی رحمۃ اللہ علیہ [۳] وغیرہ نے۔ اس کے بعد اس کا عام استعمال ہونے لگا''۔ [۴]

---

۱۔ ابوالفتح تقی الدین محمد بن علی بن وہب بن مطیع قشیری شافعی جو کہ ابن دقیق العید کے نام سے مشہور ہیں''، ساحل ینبع'' کے مقام پر ۱۵ شعبان ۶۲۵ھ میں ان کی ولادت ہوئی، ابتدا میں قرآن مجید پڑھا، فقہ کی تعلیم اپنے والد اور ان کے شاگرد بہاء الدین ہبت اللہ سے پائی۔ قاہرہ میں آکر عز الدین بن عبد السلام سے تفقہ حاصل کیا، حدیث اس دور کے نامور محدثین سے پڑھی اور اس کے طلب میں دمشق اور اسکندریہ وغیرہ کا بھی سفر کیا۔ جب ان علوم میں کمال پیدا ہو گیا تو درس و تدریس کا شغل اختیار کیا، موصوف مجتہد اور اصول کے ماہر عالم تھے۔ دیار مصریہ کے جج کے عہدے پر فائز ہوئے۔ ان کی جلالت علمی کا سب کو اعتراف ہے۔ قاہرہ میں بروز جمعہ ۱۱ صفر ۷۰۲ھ کو وفات پائی۔ چند مشہور تصانیف: الالمام فی احادیث الاحکام، الاحکام فی شرح حدیث سید الانام، الاربعین۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: طبقات الشافعیۃ الکبریٰ: ۱۱۵/۵، ۱۳۹ اور الاعلام: ۲۸۳/۶

۲۔ ابوالحسن علی بن عمر دارقطنی شافعی، آپ ۳۰۶ھ میں پیدا ہوئے۔ طلب علم کے لئے بغداد، کوفہ، شام، مصر اور دوسرے اسلامی شہروں کی سیر وسیاحت کی۔ علم نحو و فن تجوید میں بھی کامل مہارت رکھتے تھے۔ فن معرفت علل حدیث واسماء رجال میں بے نظیر اور اپنے وقت کے یگانہ تھے۔ ۳۸۵ھ کو وفات ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: سنن الدارقطنی، کتاب العلل، الالزامات والتتبع۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۳۳۹/۱۳، ۳۴۰، اور شذرات الذهب في أخبار من ذهب: ۲۴۱/۳، ۲۴۲

۳۔ ابوعبداللہ محمد بن ابی نصر فتوح بن عبداللہ بن حمیدی ازدی اندلسی ظاہری ۴۲۰ھ سے قبل پیدا ہوئے۔ طلب علم کے لئے اندلس، مصر، شام، عراق اور حرم شریف میں رہ کر حدیث کی سماعت کی۔ موصوف علل حدیث کی معرفت اور اصول کے موافق تحقیقِ معانی میں کامل دستگاہ رکھتے تھے۔ علم عربیت وادب، قرآن مجید کی ترکیب اور لطائف بلاغت بیان کرنے میں بھی حق تعالیٰ نے انہیں کامل دست گاہ عطا فرمایا تھا۔ ۴۸۸ھ کو وفات ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: الجمع بین الصحیحین، تاریخ اندلس، کتاب ذم النمیمہ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذهب في أخبار من ذهب: ۹۹/۴، اور بستان المحدثین: ص ۲۱۲

۴۔ فتح المغیث بشرح الفیۃ الحدیث: ۱۰۲/۱

چنانچہ بعض حضرات نے اس کو ضعیف کی دیگر اقسام کی طرح مستقل حیثیت دی اور بعض نے ضمناً اس کا ذکر کیا۔ جیسا کہ علامہ ابن الصلاح رحمہ اللہ نے اس کو صحیح کے فوائد میں ذکر کیا ہے۔ (۱)

## (۲) حدیثِ مرسل:

### حدیثِ مرسل کی تعریف:

"ہر وہ حدیث ہے جس کی سند کے آخری حصہ میں تابعی کے بعد کا راوی مذکور نہ ہو"۔

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ لکھتے ہیں:

" هو ما سقط من آخره من بعد التا بعي." (۲)

### حدیثِ مرسل کی مثال:

مسلم شریف کی روایت ہے" حد ثنامحمد بن رافع، عن حجين ،عن الليث، عن عقيل ،عن ابن شهاب، عن سعيد بن المسيب أن رسول الله ﷺ نهى عن المزا بنة". (۳)

اس حدیث کو سعید بن میتب نے (جو کہ کبار تابعین میں سے ہیں) اپنے مابعد کے راوی کو حذف کر کے براہ راست حضور ﷺ سے نقل کیا ہے۔

### حدیثِ مرسل کا حکم:

جمہور فقہاء و محدثین کے ہاں یہ مسلمہ اصول رہا ہے، کہ "قرون ثلاثہ" کے مراسیل قابل استدلال و حجت ہیں؛ اس لئے کہ صرف ارسال، ان حضرات کے نزدیک ضعف کی علت نہیں ہے۔ یہی وجہ ہے کہ حافظ ابن جریر طبری رحمۃ اللہ علیہ نے تو اس پر سب کا اجماع نقل کیا ہے۔ (۴)

---

۱۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۹۲

۲۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۷۹

۳۔ الجامع الصحیح للامام مسلم: ۱۱۶۸/۳

۴۔ قواعد فی علوم الحدیث: ص ۱۴۶، ۱۴۷

سب سے پہلے امام شافعی رحمہ اللہ(۱) نے حجیتِ مرسل کو چند شرائط کے ساتھ مقید کیا۔(۲)

اگر مرسل روایت کو صرف ارسال (جس کو قرون ثلاثہ میں صحیح ہی کی طرح درجہ دیا جاتا تھا) کی وجہ سے ضعیف قرار دے کر اسے قابل حجت نہ سمجھا جائے تو حدیث کا ایک معتد بہ حصہ (جس پر قرونِ اولی میں امت کا عمل رہا ہے) کو چھوڑنا پڑے گا۔

یہاں پر یہ بات بھی یاد رہے کہ حدیثِ مرسل بظاہر اتصالِ سند نہ ہونے کی وجہ سے ضعیف کے اقسام میں شمار تو ہوتی ہے لیکن اس کے باوجود اس کی عملی حیثیت ضعیف حدیث کی دیگر انواع جیسی یکسر نہیں۔ لہذا حدیث مرسل کو یکسر ضعیف نہیں کہا جاسکتا بلکہ تحقیق کر کے اصل حقیقت کی طرف جانا چاہیئے۔ کیونکہ بیشتر مرسل احادیث کی اسانید موجود ہوتی ہیں، مگر ناقل اختصار کے پیش نظر یا دیگر وجوہات کی وجہ سے سند حذف کر دیتا ہے۔

### (۳) حدیثِ منقطع:

#### حدیثِ منقطع کی تعریف:

"منقطع ہر وہ حدیث ہے جس کی سند کے درمیان میں سے ایک یا زائد راوی غیر مسلسل یعنی الگ الگ جگہوں سے حذف ہوں"۔

---

۱۔ ابوعبداللہ محمد بن ادریس بن عباس بن عثمان بن شافعی،، موصوف ائمہ اربعہ میں سے ہیں، ۱۵۰ھ کو غزہ (فلسطین) میں پیدا ہوئے۔ دو سال کی عمر میں مکہ معظمہ لائے گئے۔ دو دفعہ بغداد گئے، ۱۹۹ھ کو مصر تشریف لے گئے اور آخر عمر تک وہیں رہے، آپ شعر، لغت، ایام عرب، فقہ اور حدیث کے بہت بڑے عالم تھے۔ نہایت ذکی، فطین اور حاضر جواب تھے۔ پہلا فتوی بیس سال کے عمر میں دیا تھا۔ رمضان المبارک میں ساٹھ بار قرآن ختم کرنے کا معمول تھا۔ ۲۰۴ھ کو مصر میں وفات پائی۔ تصانیف: کتاب الام، الرسالہ، الامالی الصغیر۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۱۳/۱۱۔۲۰، اور تاریخ مدینۃ السلام المعروف بتاریخ بغداد: ۳۹۲/۲۔۴۰۴

۲۔ الرسالہ: ص ۱۰۳، ۱۰۵

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

" فإن كان الساقط باثنين غير متوا ليين في موضعين مثلا فهو المنقطع و كذا لك إنْ سَقَطَ واحدٌ فقط، أو أكثر من اثنين لكن يشترط عدم التوا لي "(۱)

لغوی اعتبار سے انقطاع کا اطلاق راویوں کے عدم ذکر کی ہر صورت پر ہوتا ہے اور بہت سے اہل فن اس کی اصطلاحی تعریف بھی یہی کرتے ہیں۔ مگر متقدمین اور متاخرین کے نزدیک اکثر مذکورہ بالا صورت پر ہی اس کا اطلاق معروف ہے۔ علامہ عراقی رحمۃ اللہ علیہ اور حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ اسی کے قائل ہیں۔ علامہ نووی رحمۃ اللہ علیہ کا کہنا ہے کہ "منقطع" کا اطلاق اکثر اس حدیث پر ہوتا ہے جسے صحابی سے تابعی کے نیچے کے لوگ روایت کریں۔ (۲)

## حدیثِ منقطع کی مثال:

امام عبدالرزاق رحمۃ اللہ علیہ کی روایت جو انہوں نے حضرت سفیان ثوری رحمۃ اللہ علیہ سے نقل کی ہے:

"عبد الرزاق قال :ذكر الثوري عن أ بي اسحاق، عن زيد بن يثيع، عن حذيفة قال: قال رسول الله ﷺ:إن وليتمو ها أ با بكرٍ فقوي أمين .... . وهو منقطع في مو ضعين؛لأن عبد الرزاق لم يسمع من الثوري، وإنما سمعهُ من العمان بن أبي شيبة الجندي، عن الثوري، ولم يسمعهُ الثوري أيضا من أبي اسحاق، إنما سمعه من شريك، عن إسحاق۔ "(۳)

اس سند میں دو جگہ انقطاع ہے۔ امام عبدالرزاق رحمہ اللہ نے یہ روایت حضرت سفیان

۱۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۸۰، ۸۱

۲۔ تدریب الراوي في شرح تقریب النواوي ۱/۲۳۵

۳۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۱۳۲۔۱۳۳، معرفۃ علوم الحدیث: ص ۲۹

ثوری رحمہ اللہ سے براہ راست نہیں سنی، نیز حضرت سفیان ثوری رحمۃ اللہ علیہ اور ابواسحاق کے درمیان ایک راوی (شریک نامی) مذکور نہیں، اس لئے کہ حضرت سفیان ثوری رحمۃ اللہ علیہ نے براہِ راست ابواسحاق سے نہیں سنی ہے، بلکہ شریک سے سنی ہوئی ہے اور شریک نے ابواسحاق سے سنی ہے۔

### حدیثِ منقطع کا حکم:

چونکہ حدیثِ منقطع میں راوی مذکور نہیں ہوتا، جس کی وجہ سے اس کی ثقاہت معلوم نہیں ہوتی یا مجہول ہوتی ہے! لہذا حدیثِ منقطع ضعیف ہوتی ہے۔

## (۴) حدیثِ معضل:

### حدیثِ معضل کی تعریف:

"معضل ہر وہ حدیث ہے جس کی سند سے دو یا دو سے زائد راوی یکے بعد دیگرے مذکور نہ ہو یا حذف کئے گئے ہوں"۔

چنانچہ علامہ ابن الصلاح رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

"سقط من إسناد إثنان فصاعدا مع التوالي."(۱)

### حدیثِ معضل کی مثال:

امام حاکم رحمۃ اللہ علیہ کی روایت ہے جو انہوں نے امام قعنبی رحمۃ اللہ علیہ کے واسطہ سے امام مالک رحمۃ اللہ علیہ سے نقل کی ہے:

"عن مالك أ نه بلغه أن أبا هريرةؓ قال : قال رسول اللهﷺ: للمملوك طعا مه و كسو ته با لمعروف، و لا يكلف من العمل إلا ما يطيق ." (۲)

---

۱۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۱۳۶ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر ص: ۸۰

۲۔ معرفۃ علوم الحدیث: ص ۳۷

امام حاکم رحمۃ اللہ علیہ کا بیان ہے کہ یہ حدیث معضل ہے؛ کیونکہ امام مالک رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی کتاب ''موطأ'' میں اسے معضلاً ذکر کیا ہے؛ (اگرچہ موطأ کے علاوہ میں اسے موصولاً بھی ذکر کیا ہے) اس لئے کہ اس میں حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ اور امام مالک رحمۃ اللہ علیہ کے درمیان پے در پے دو راوی مذکور نہیں ہیں،:"عن مالك عن محمد بن عجلان عن أبيه عن أبي هريرة ."(۱)

## حدیثِ معضل کا حکم:

حدیثِ معضل حدیث منقطع کی طرح بعض راویوں کے مذکور نہ ہونے کی وجہ سے مجہول السند ہوتی ہے جس کی وجہ سے ضعیف کے درجہ میں شمار ہوتی ہے۔

## (۲) انقطاعِ خفی:

انقطاعِ خفی کے لحاظ سے ''ضعیف حدیث'' کی دو قسمیں ہیں: (۱) حدیث مدلس (۲) مرسل خفی

## (۱) حدیثِ مدلس:

## حدیثِ مدلس کی تعریف:

''ہر وہ حدیث جس کی سند کے عیب کو چھپا کر اس طرح پیش کیا جائے کہ بظاہر اس میں عیب کا کوئی وہم وشائبہ نہ ہو!''۔

چنانچہ ملا محمد حنفی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"هو ما أخفي عيبه على وجه يوهم أنه لاعيب فيه ."(۲)

## تدلیس کی اقسام

## تدلیس الاسناد:

تدلیس الاسناد کا مطلب یہ ہے کہ راوی ایسے شیخ سے روایت کرے جو اس کا ہم عصر ہو اور اس سے مل چکا ہو مگر اس سے اس کا سماع ثابت نہ ہو یا ایسے ہم عصر سے روایت کرے جس سے ملا

---

۱۔ معرفۃ علوم الحدیث: ص۳۷

۲۔ شرح الدیباج المہذب: ص۴۶

نہ ہومگر دوسرے کو یہ تأثر دے کہ اس نے اپنے معاصر سے سن کر یہ روایت کی ہے۔

ایسی روایت کی نشانی یہ ہوتی ہے کہ مدلس راوی "حدثنا فلان" اور "أ خبرنا فلان" کے بجائے "عن فلان" کہتا ہے۔ (۱)

## تدلیس الاسناد کی مثال:

امام حاکم رحمۃ اللہ علیہ نے "علی بن خشرم" سے روایت کی ہے کہ ہم سے ابن عیینہ نے بیان کیا، "عن الزہری" تو ان سے پوچھا گیا: "کیا آپ نے براہ راست زہری سے سنا ہے"؟ انہوں نے انکار کیا اور کہا: "نہ میں نے ان سے سنا، نہ ان سے سننے والوں میں سے کسی سے سنا، بلکہ مجھ سے عبدالرزاق نے بواسطہ معمر، زہری سے نقل کیا ہے۔ (۲)

تدلیس الاسناد کی پانچ قسمیں ہیں جو درج ذیل ہیں:

## (۱) تدلیس الحذف والاِسقاط:

اس کا مطلب یہ ہے کہ راوی اپنے شیخ کو حذف کر کے شیخ الشیخ کو ذکر کرے جس سے مطلقاً سماع تو حاصل ہے لیکن اس روایت میں سماع حاصل نہیں۔

## (۲)۔ تدلیس القطع والاقطاف:

اس کا مطلب یہ ہے کہ راوی "سمعت" یا "حدثنا" کہے اور اس کے بعد تھوڑی دیر کے لئے خاموش رہے پھر کہے اعمش، اس سے سننے والا یہ تأثر لے گا کہ اس نے اعمش سے سنا حالانکہ راوی کا اس سے سماعِ حدیث ثابت نہیں۔

## (۳) تدلیس باسقاط اداۃ الروایۃ:

اس کا مطلب یہ ہے کہ الفاظِ اداء: جیسے "قال فلان" "عن فلان" حدثنا فلان" یعنی شیخ کے نام سے پہلے جو الفاظ لائے جاتے ہیں ان کو ذکر کیے بغیر "شیخ" کا نام لینا، مثلاً: "الزھری عن فلان" کہے۔

---

۱۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۱۵۷

۲۔ معرفۃ علوم الحدیث: ص ۱۰۵ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۱۵۷

## (۴) تدلیس العطف:

اس کا مطلب یہ ہے کہ مثلاً راوی کہے: " حدثنا فلان وفلان " اگر چہ راوی نے اس دو سرے شخص سے کچھ بھی نہ سنا ہو۔

## (۵) تدلیس التسویہ:

اس کا مطلب یہ ہے کہ راوی اپنے شیخ سے روایت نقل کرے، مگر آگے سند میں آنے والے دو ایسے ثقہ راوی جن کی ملاقات ثابت ہو، ان کے درمیان آنے والے کسی کم حیثیت راوی کو گرا دے، خواہ اسکے ضعف کی وجہ سے یا کم عمری کی بنا پر، اور ایسے الفاظ استعمال کرے کہ جن سے براہ راست سننے کا گمان ہو اور بظاہر یہ سمجھا جائے کہ کوئی معتمد راوی معتمد راوی سے ہی روایت کر رہا ہے۔ جیسے راوی کا استاذ ثقہ و معتمد ہے، اور استاذ کے استاذ کا استاذ بھی ثقہ و معتمد ہے، اور دونوں کے درمیان ملاقات بھی ثابت ہے مگر استاذ کا استاذ، ضعیف یا کم عمر ہے، راوی نقل روایت میں یہ کرے کہ اپنے استاذ کے بعد بجائے اپنے استاذ کے استاذ کا ذکر کرنے کے ان کے استاذ کے استاذ کو ذکر کرے اور احتمال والے الفاظ استعمال کرے۔ (۱)

## تدلیس الاسناد کی مثال:

علامہ ابن ابی حاتم رحمۃ اللہ علیہ کی ذکر کردہ روایت ہے جو انہوں نے اپنے والد سے سنی اور وہ اسحاق بن راہویہ رحمۃ اللہ علیہ سے نقل کرتے ہیں:

"عن بقية، قال: حدثني أبو وهب الأسدي، قال: حدثنا نافع، عن ابن عمر، قال: لا تحمدوا إسلام إمرئ، حتى تعرفوا عقدة رأيه." (۲)

علامہ ابو حاتم رحمۃ اللہ علیہ کا بیان ہے کہ اس حدیث میں ایسی خامی ہے جسے بہت کم ہی لوگ سمجھ سکتے ہیں، اس حدیث کو ابو وہب اسدی (جن کا نام عبید اللہ بن عمر ہے) نے بواسطہ اسحاق بن ابی فروہ حضرت نافع سے روایت کیا ہے، بقیہ جس سے اسحاق بن راہویہ نے روایت لی ہے

۱۔ التاصيل الشرعي لقواعد المحدثين: ص ۵۹۲:۵۹۳

۲۔ کتاب العلل لابن ابي حاتم: ۱۵۶/۲، ۱۵۷

اس نے یہ کیا ہے کہ اسحاق بن ابی فروہ کو درمیان سے حذف کردیا ہے اور اپنی اس عمل کو ظاہر نہ کرنے کے لئے عبید اللہ بن عمر کے نام کے بجائے (جس سے وہ معروف تھے) ان کی کنیت (جو کہ ابو وہب ہے) اور خاندانی نسبت جو کہ (اسدی ہے) ذکر کی ہے حالانکہ وہ ان سے معروف نہیں ہے؛ تا کہ جو لوگ ان رواۃ کے احوال سے واقف ہیں وہ بقیہ کی اس عمل کو سمجھ نہ سکیں۔

## تدلیس الاسناد کا حکم:

تدلیس الاسناد: تدلیس کی بدترین قسم ہے اس لئے علماء نے اس عمل کو نہایت مکروہ قرار دیا ہے اور بہت مذمت کی ہے حتی کہ امام شعبہ رحمۃ اللہ علیہ [۱] نے تدلیس کو جھوٹ کے بھائی سے تعبیر کیا ہے!۔ [۲] لیکن اس سے زیادہ مذموم تدلیس التسویہ ہے؛ اس لئے کے اس میں یہ بات ضروری ہے کہ راوی تمام سند کے رواۃ کی تصریح "سمعت" یا "حدثنا" سے کرے؛ [۳] کیونکہ ہر طبقے میں تدلیس کا احتمال موجود ہے، جبکہ تدلیس الاسناد میں یہ بات نہیں؛ اس لئے صرف سماع کی تصریح کافی ہے۔

## (۲) تدلیس الشیوخ:

تدلیس الشیوخ کی دو اقسام ہیں:

---

۱۔ ابو بسطام شعبہ بن حجاج بن ورد عتکی، ازدی، واسطی، بصری۔ موصوف کی ولادت باسعادت ۸۲ھ یا ۸۳ھ میں ہوئی۔ ابان بن تغلب، ایوب سختیانی، جبلۃ بن سحیم، سعید بن مرزوق، عمرو بن دینار وغیرہ سے علم حاصل کیا۔ موصوف اپنے دور کے یکتائے زمانہ محدث اور اس فن کے نامور شہسوار ہیں جن کی جلالت شان اور حدیث کی گراں قدر خدمات پوری امت تسلیم کرتی ہے۔ چنانچہ موصوف کو "امیر المؤمنین فی الحدیث" کا خطاب دیا گیا ۱۶۰ھ کو وفات پا گئے۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: تاریخ مدینۃ السلام: ۱۰/۳۵۳۔۳۶۷، اور الاعلام: ۳/۱۶۴

۲۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۱۵۸

۳۔ التدلیس واحکامہ: ص ۳۶۸

(ا) تدلیس الشیوخ:

تدلیس الشیوخ کا مطلب یہ ہے کہ راوی اپنے استاذ سے نقل کرتے ہوئے، اس کے لئے کوئی غیر معروف نام، لقب یا کنیت ذکر کرے۔

تدلیس الشیوخ کی مثال:

ابو بکر بن مجاہد جو ائمہ قراء میں سے ہیں، ان کا قول ہے: حدثنا عبداللہ بن ابی عبداللہ، انہوں نے اس سے ابو بکر بن ابو داؤد سجستانی مراد لیا ہے، جو عبداللہ بن ابی عبداللہ کے نام سے مشہور نہیں ہیں؛ تا کہ اسے پہچانا نہ جا سکے؛ کیونکہ وہ ضعیف اور غیر معتبر راوی ہے!۔(۱)

(۲) تدلیس الاماکن:

تدلیس الاماکن کا مطلب یہ ہے کہ راوی اپنے شیخ کی تعظیم کے لئے ایک مبہم اور متشابہ لفظ کا استعمال کرتا ہے اور اسی طرح کسی شہر یا قبیلہ کی عظمت یا فضیلت کے پردہ میں شیخ کی عظمت جتانا چاہتا ہے، مثلاً ایک مصری شخص کہے: " حدثني فلان با لأندلس "یعنی مجھے فلاں شخص نے اندلس میں حدیث بیان کی، اور اندلس سے مراد وہ مقام لے جو "القرافہ" میں واقع ہے۔ یا "زقاق حلب" کہے اور "قاہرہ" کی ایک جگہ مراد لے، یا ایک بغدادی شخص کہے" حدثني فلان بماوراء النهر " یعنی ماوراء النہر کے ایک شخص نے مجھے حدیث بیان کی اور اس سے مراد یہ لے کہ دریائے دجلہ کے پار مجھے حدیث بیان کی، یا یوں کہے "حدثني فلان بالرقة " فلاں شخص نے مجھے رقہ (ایک شہر کا نام ہے) میں حدیث بیان کی اور اس سے مراد دریائے دجلہ کے کنارے پر ایک باغ مراد لے۔

ان تمام الفاظ کے سننے سے سامع کے ذہن میں یہ وہم پیدا ہوتا ہے کہ یہ شخص طلب حدیث کے لئے بہت سے شہروں کا سفر کر چکا ہے۔(۲)

۱۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۱۵۸

۲۔ النکت علی کتاب ابن الصلاح لابن حجر: ۱۵۶/۲

### تدلیس الاماکن کا حکم:

پہلی قسم "یعنی تدلیس الاسناد" سے کم درجہ کی ہے، اس لئے کہ اس میں کوئی راوی محذوف نہیں ہوتا بلکہ راوی کا غیر معروف نام ذکر کرنے سے سننے والے الجھن و دشواری میں پڑتے ہیں اور راوی کی عرفی حیثیت متاثر ہوتی ہے۔ البتہ چونکہ ایسا کرنے کی اغراض مختلف ہوتی ہیں اس لے اس کے پیش نظر درجہ کراہت مختلف ہوگا۔ [1] اگر راوی اپنے استاذ سے سماع کی تصریح کرے تو روایت مقبول ہوگی۔

### (۲) حدیثِ مرسل خفی:

### حدیثِ مرسل خفی کی تعریف:

"ہر وہ روایت ہے جسے راوی کسی ایسے شخص سے نقل کرے، جس سے اس کی معاصرت کے باوجود ملاقات وسماع ثابت نہ ہو بلکہ دونوں کے درمیان واسطہ ہو"۔

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

'المرسل الخفي إذا صدر من معاصر لم يلق من حدث عنه بل بينه وبينه واسطة."[2]

### حدیثِ مرسل خفی کی مثال:

سنن ابن ماجہ کی حدیث ہے: "عمر بن عبد العزيز عن عقبة بن عامر مرفوعاً رحم الله حارس الحرس." [3]

حضرت عمر بن عبد العزیز رحمۃ اللہ علیہ کی ملاقات حضرت عقبہ بن عامر رضی اللہ عنہ سے ثابت نہیں ہے، جس کی تصریح علامہ مزی رحمۃ اللہ علیہ نے "تحفۃ الاشراف" [4] میں کی ہے۔

---

۱۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۱۶۱

۲۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۸۲

۳۔ سنن ابن ماجہ: ۳/ ۳۴۹

۴۔ تحفۃ الاشراف بمعرفۃ الاطراف: ۷/ ۳۱۴

## حدیثِ مرسل خفی کا حکم:

حدیثِ مرسل خفی بھی راوی کے مذکور نہ ہونے کی وجہ سے مجہول السند بن کر ضعیف بن جاتی ہے!۔

## مدلس اور مرسل خفی میں فرق:

۱۔ تدلیس میں مدلس جس سے روایت کر رہا ہے اس سے ملاقات اور سماع دونوں ثابت ہوتے ہیں بخلاف مرسل خفی کے کہ ارسال کرنے والا اگرچہ اپنے مروی عنہ کا معاصر ہوتا ہے مگر اس سے اس کی ملاقات اور سماع دونوں ثابت نہیں ہوتے۔

۲۔ تدلیس میں ملاقات اور سماع دونوں شرط ہے جبکہ ارسال خفی اسے کہتے ہیں جس میں سماع اور ملاقات ثابت نہ ہو۔

۳۔ محدثین کا اتفاق ہے کہ ابو عثمان نہدی، قیس ابن حازم وغیرہ مخضر مین (یعنی وہ لوگ جنہوں نے زمانہ جاہلیت اور زمانہ اسلام دونوں دیکھے) آنحضرت ﷺ سے جو روایت کرتے ہیں یہ تدلیس نہیں؛ بلکہ ارسالِ خفی ہے پس اگر تدلیس کا مدار صرف معاصرت پر ہوتا تو ان حضرات کا شمار مدلسین میں ہوتا، کیونکہ یہ آنحضرت ﷺ کے معاصر تو تھے، مگر انکی آپ سے ملاقات ہوئی یا نہیں ہوئی، یہ معلوم نہیں ہے، چنانچہ امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ اور ابو بکر رازی رحمۃ اللہ علیہ اس بات کے قائل ہیں کہ تدلیس میں ملاقات شرط ہے اور "کفایہ" میں علامہ خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ کا کلام بھی اس کا تقاضا کرتا ہے اور قابل اعتماد بھی یہی ہے۔ (۱)

---

۱۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۸۳

## فصل دوم

راوی کے غیر ثقہ ہونے کی وجہ سے ضعف کا واقع ہونا:۔

چونکہ ہماری بحث ضعیف احادیث سے متعلق ہے نہ کہ موضوع احادیث سے؛ کیونکہ موضوع سے استدلال واستنباط نہیں کیا جاسکتا اور نہ ہی اسے دوسری حدیث کی تقویت وتائید کے لئے پیش کیا جاسکتا ہے، اس لئے ہم نے موضوع حدیث کو چھوڑ کر متروک سے آغاز کیا! کیونکہ متروک یعنی متہم بالکذب کے بارے میں مختلف آراء موجود ہیں۔ اگرچہ مصطلحات پر لکھنے والے حضرات نے موضوع کو ضعیف میں شمار کیا ہے، کیونکہ انہوں نے ترتیب رتبی کو ملحوظ رکھا تو موضوع بھی اس جہت سے اس میں داخل ہوگی۔

راوی میں اسبابِ طعن دس ہیں، جن کی بنا پر راوی مجروح قرار دیا جاتا ہے۔ البتہ موضوع کو نکال دینے سے پیچھے نو اسباب رہ جاتے ہیں، جن کی بنا پر درج ذیل اقسام وجود میں آتی ہیں۔:

### (ا) حدیثِ متروک

#### حدیثِ متروک کی تعریف:

''ہر وہ حدیث جس کے راوی پر جھوٹ کی تہمت ہو''۔

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

”هو ما يكون بسبب تهمة الراوي با لكذب .“ (۱)

#### حدیثِ متروک کی مثال:

عمرو بن شمر جعفی کوفی شیعی کی روایت ہے:”عن جابر، عن أبي الطفيل ،عن علي وعمار قالا: كان رسول الله ﷺ .... يقنت في الفجر ويكبريوم عرفة من صلاة الغداة ويقطع صلاة العصرآخر أيام التشريق .“ (۲)

---

۱۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص۸۹

۲۔ سنن دار قطنی: ۲/۴۷

اس حدیث کے راوی (جو کہ عمرو بن شمر ہے) کے متعلق امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ اور امام دار قطنی رحمۃ اللہ علیہ وغیرہ حضرات نے اس بات کی تصریح کی ہے کہ یہ راوی ''متروک الحدیث'' ہے۔(۱)

## حدیثِ متروک کا حکم:

بعض حضرات کے نزدیک اگر یہ شخص تائب ہو جائے، جس کی صورت یہ ہے کہ اس میں توبہ کی سچائی کی علامات ظاہر ہو جائیں تو ایسے شخص کی روایت مقبول ہے ورنہ نہیں۔ (۲)

## (۲) حدیثِ منکر:

### حدیثِ منکر کی تعریف:

''ہر وہ حدیث جس کی سند میں ایسا راوی ہو جو فسق یا فحشِ غلط یا کثرتِ غفلت کے ساتھ متصف ہو''۔

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" فمن فحش غلطه أو كثرت غفلته أو ظهر فسقه فحديثه منكر." (۳)

## حدیثِ منکر کی مثال:

سنن ابن ماجہ کی روایت ہے جو ابو زکیر یحیی بن محمد بن قیس سے عن ہشام عن أبیہ عن عائشۃ مرفوعا مروی ہے۔

" كلوا البلح بالتمر، كلوا الخلق بالجديد، فإن الشيطان يغضب ويقول: بقي ابن آدم حتى أكل الخلق بالجديد"(۴)

---

۱۔ میزان الاعتدال: ۳۲۴/۵

۲۔ منہل الروي في مختصر علوم الحديث: ص ۶۷، مقدمہ فی اصول الحدیث: ص ۴۲

۳۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۸۹ ۴۔ سنن ابن ماجہ: ۴/۴۳، ۴۴

امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ [1] کا بیان ہے کہ یہ حدیث ""منکر"" ہے، اس لئے کہ یہ صرف ""ابو زکیر"" کے طریق سے مروی ہے باوجود اس کے کہ صالح اور نیک شخص ہے، امام مسلم نے متابعات میں ان کی روایات لی ہے، مگر اس درجہ کا آدمی نہیں ہے کہ ان کا تفرد قابل قبول ہو، بلکہ بعض ائمہ حضرات جیسے ابن معین، ابن حبان اور عقیلی وغیرہ نے ان کو ضعیف قرار دیا ہے۔ [2]

""منکر"" کی مذکورہ تعریف حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ نے ""نخبۃ الفکر"" میں ذکر کی ہے اگرچہ اس کی شرح نزہۃ النظر میں اس کی نسبت دوسروں کی طرف کی ہے اور خود وہ تعریف پسند کی ہے جس کو زیادتِ ثقہ کی بحث میں بیان کیا ہے (یعنی ضعیف راوی ثقہ راوی کی مخالفت کرے) حافظ ابن صلاح رحمۃ اللہ علیہ نے ""منکر"" کی دو اقسام قرار دیتے ہوئے پہلی قسم (یعنی ثقہ راوی اوثق کی مخالفت کرے) کو شاذ قرار دیا ہے اور دوسری قسم کی تعریف ان الفاظ کے ساتھ کی ہے "وھو الفرد الذي ليس له في راويه من الثقة و الاتقان ما يحتمل معه تفرده" وہ غریب روایت جس کا راوی اعتماد و اعتبار میں اس درجہ کا نہ ہو کہ اس کا تفرد قابل قبول ہو" اس کا حاصل تقریباً وہی ہے جو اوپر بیان ہو چکا ہے۔ چنانچہ موصوف نے بطور مثال مذکورہ بالا روایت ہی ذکر کی ہے اور ""اسباب طعن"" کے مناسب بھی یہی تعریف ہے جو اوپر ذکر کی گئی۔ [3]

منکر کی تعریف میں انتہائی اضطراب کا مشاہدہ ہوتا ہے۔ درحقیقت یہ اضطراب سطحی نظر کا نتیجہ ہے۔ بغور جائزہ لیں تو صاف نظر آتا ہے کہ لفظ ""منکر"" متقدمین اور متاخرین میں ایک خاص

---

۱۔ ابوعبدالرحمان احمد بن علی بن شعیب نسائی، آپ ۲۱۵ھ میں نسا میں پیدا ہوئے، ابتدائی تعلیم اپنے شہر کے شیوخ سے حاصل کی، اس کے بعد مختلف مقامات خراسان، عراق، حجاز، جزیرہ، شام، مصر وغیرہ کا سفر کر کے علم میں کمال حاصل کیا، موصوف زہد و تقوی میں بھی یکتائے روزگار تھے، صوم داودی پر ہمیشہ عمل پیرا رہے، دن رات کا اکثر حصہ عبادت میں گزرتا، کثرت سے حج بیت اللہ کیا کرتے، وفات ۱۳ صفر ۳۰۳ھ کو ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: کتاب السنن، کتاب عمل الیوم واللیلۃ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: سیر أعلام النبلاء: ۱۲۵/۱۴، ۱۳۰، اور بستان المحدثین: ۱۹۵، ۱۹۸

۲ تدریب الراوي فی شرح تقریب النواوي ۲۷۸/۲

۳۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ۱۷۱، ۱۷۲

"پس منظر" رکھتا ہے۔ متاخرین محدثین کرام عام طور پر "ما رواه الضعيف مخالفاً للثقة" کے تناظر میں لفظ "منکر" استعمال کرتے ہیں۔ متقدمین علماء کرام اکثر و بیشتر لفظ "منکر" کو مخالفت کے بغیر محض تفردِ راوی کے لئے بھی استعمال کرتے ہیں، اگر چہ راوی ثقہ ہی ہو مثلاً امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ افلح بن حمید الانصاری، (جو صحیحین کے راویوں میں سے ایک راوی ہے) ان کے بارے میں فرماتے ہیں:

"روى أفلح حديثين منكرين: أن النبي ﷺ أشعر، وحديث: وقت لأهل العراق ذات عرق."[1]

امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ نے ان دونوں حدیثوں کو افلح بن حمید کے تفرد کی وجہ سے منکر کہا حالانکہ افلح ثقہ راوی ہے۔

اس تفصیل کے بعد اب ہم فی زمانہ ایک کوتاہی کی نشاندہی کرتے ہیں وہ یہ ہے کہ بعض معاصرین لفظ "منکر" دیکھ کر جلدی سے بلا تأمل اس پر ضعف کا حکم لگا دیتے ہیں، جب کہ یہ عین ممکن ہے کہ زیر بحث روایت کو صرف تفرد بلا مخالفت کی وجہ سے منکر کہا گیا ہو اور وہ فی نفسہ حسن یا صحیح ہو۔ جیسا کہ گزشتہ مثال سے یہ بات واضح ہو چکی ہے۔

### حدیثِ منکر کا حکم:

"حدیثِ منکر" کا حکم مختلف ہوگا، اگر راوی کی مناکیر بکثرت نہیں ہے تو پھر اس پر ضعف شدید کا حکم نہیں لگایا جائے گا۔ اگر مناکیر بکثرت ہوں تو ضعف شدید کا حکم لگایا جائے گا، یہ حدیث پھر فضائل اعمال میں بھی قابل عمل نہیں ہوگی اور نہ ہی اس کو متابعت اور شواہد میں ذکر کیا جا سکتا ہے۔

---

۱۔ ہدی الساري مقدمہ فتح الباري ۲/۱۱۷

## (۳) حدیثِ معلل:

### حدیثِ معلل کی تعریف:

"ہروہ حدیث جوظاہراً علل سے محفوظ ہومگرحقیقت میں اس کے اندرکوئی علت قادحہ ہو"

چنانچہ علامہ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"هو الحديث الذي اطلع على علة تقدح في صحته مع أن ظاهره السلامة منها"(۱)

### حدیثِ معلل کی اقسام:

حدیثِ معلل کی دو قسمیں ہیں:

(۱) معلل سنداً (۲) معلل متناً

### معلل سنداً کی تعریف اور مثال:

علل سنداً اس کو کہتے ہیں جس میں علت قادحہ سند میں ہو۔ مثلاً: یعلی بن عبید کی روایت ہے جو سفیان ثوری سے بواسطہ عمرو بن دینار عن ابن عمر مرفوعاً مروی ہے، "البیعان با لخیار" اس میں یعلی بن عبید کو سفیان کے شیخ کے بارے میں وہم ہوا ہے، اور عبداللہ بن دینار کی جگہ عمرو بن دینار کا نام لیا ہے، اس غلطی کی وجہ سے اگر چہ سند مجروح ہے لیکن متن بالکل محفوظ ہے کیونکہ اصل ثقہ کی جگہ دوسرے ثقہ کا نام لیا ہے۔ نیز دوسری صحیح ترین اسانید کے ساتھ یہ روایت بھی حدیث کی کتابوں میں موجود ہے۔ (۲)

### معلل متناً کی مثال:

یہ قلیل الوقوع ہے مثلاً موطاً امام مالک اور مسلم شریف کی حدیث ہے:

---

۱۔ معرفة انواع علم الحديث: ص ۱۸۷

۲۔ معرفة انواع علم الحديث: ص ۱۸۹ ،تدريب الراوي في شرح تقريب النواوي: ۱/۲۹۷

”عن أنس بن مالك رضی اللہ عنہ؛ أنه قال: قمت وراء أبي بكر وعمر وعثمان، فكلهم كان لا يقرأ ﴿بسم الله الرحمن الرحيم﴾ إذا افتتحوا الصلاة.“ (۱)

یہ حدیث کئی وجوہ سے معلول ہے، جن کو حافظ سیوطی رحمۃ اللہ علیہ نے مختصر انقل کیا ہے۔ اس کی تفصیل کے لئے وہاں ملاحظہ فرمائیں۔ (۲) راوی پر طعن کے اسباب میں سے ایک سبب ثقات کی مخالفت ہے جس کی مختلف صورتیں ہیں جو حسب ذیل ہیں۔

(۴) حدیثِ مدرج

حدیثِ مدرج کی تعریف:

”ہر وہ حدیث ہے جس کی متن میں راوی ایسا اضافہ کرے جسے سننے والا حدیث کا جز تصور کرے“۔

چنانچہ علامہ ابن کثیر رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

”هو: أن تزداد لفظة في متن الحديث من كلام الراوي، فيحسبها من يسمعها منه مرفوعة في الحديث“ (۳)

حدیثِ مدرج کی دو اقسام ہیں:

(۱) مدرج الاسناد:

ہر وہ حدیث جس میں سیاقِ سند بدل جانے سے ثقات کی مخالفت ہو جائے۔ اس کی مختلف صورتیں ہیں:

(۱) راوی نے متعدد اساتذہ سے مختلف سندوں کے ساتھ ایک حدیث سنی مگر اسے بیان

---

۱۔ الموطأ للإمام مالك: ۱/۱۳۶، الجامع الصحيح للإمام مسلم: ۱/۲۹۹

۲۔ تدريب الراوي: ۱/۲۹۷، ۳۰۲

۳۔ اختصار علوم الحديث مع الباعث الحثيث، ص۵۸

کرتے وقت ہر استاد کی سند کو علیحدہ علیحدہ بیان کرنے کے بجائے سب سندوں کو ملا کر ایک سند سے بیان کرے مثلاً؛

جامع الترمذی کی حدیث ہے:

"عن سفيان، عن منصور والأعمش، عن أبي وائل، عن عمرو بن شرحبيل، عن عبد الله، عن النبي ﷺ أي الذنب أعظم؟ الحديث."(۱)

اس حدیث میں سفیان ثوری رحمۃ اللہ علیہ کے تین شیوخ مذکور ہیں جن کا سند کے اگلے حصے میں یہ اختلاف ہے کہ ان میں سے ''واصل'' نے ''ابو وائل'' اور ''عبداللہ'' کے درمیان ''عمرو بن شرحبیل'' کا واسطہ نہیں بیان کیا ہے، باقی دو نے اس واسطے کا ذکر کیا ہے مگر روایت کرنے والوں نے تینوں سے بالاتفاق ''عمرو'' کا واسطہ ہونا نقل کیا ہے۔(۲)

(۲) شیخ نے حدیث کسی سند سے روایت کی اور اس کا کچھ حصہ دوسری سند سے بیان کیا۔ راوی نے پوری روایت پہلی ہی سند سے روایت کی، یا ایک حدیث ایک شیخ سے سنی اور اس کا کچھ حصہ اس شیخ کے کسی شاگرد سے اور پھر پوری حدیث شیخ کی سند سے روایت کی اور اس شاگرد کو بیچ سے حذف کر دیا۔

(۳) کسی راوی کے پاس دو حدیثیں مختلف سندوں سے تھیں مگر بیان کرتے وقت ایک ہی سند سے دونوں کی روایت کی، یا ایک حدیث کو اس کی مخصوص سند سے بیان کیا مگر دوسری حدیث کا کوئی حصہ اس میں شامل کر دے۔

(۴) شیخ نے کسی سے حدیث کی سند بیان کی، پھر اس کا متن بیان کرنے سے پہلے کوئی دوسرا کلام کیا جسے شاگرد نے غلط فہمی سے اسے متن سمجھ کر اسے اس سند سے روایت کیا۔(۳)

---

۱۔ جامع الترمذی: ۲۴۵/۵

۲۔ تدریب الراوي في شرح تقريب النواوي: ۳۲۲،۳۲۱/۱

۳۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۹۱،۹۰

## (۲) مدرج المتن:

ہر وہ حدیث ہے جس کے متن میں غیر متن کو داخل کر دیا جائے (جو کبھی صحابی کا قول ہوتا ہے اور کبھی بعد کے راویوں میں سے کسی کا)۔

### مدرج المتن کی اقسام:

(۱) ''ادراج'' کی ایک قسم یہ ہے کہ راوی حدیث کے شروع میں اپنا کلام درج کرے لیکن ایسا بہت کم ہوتا ہے، مثلاً راوی اپنے کسی قول پر حدیث سے استدلال کرنا چاہتا ہے تو اس قول کو ذکر کر کے پھر حدیث نقل کرتا ہے، سننے والا پورے مجموعے کو حدیث سمجھ کر اسی حیثیت سے روایت کرتا ہے، جیسے خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ نے روایت نقل کی ہے، ''ابو قطن وشبابہ'' سے بواسطہ شعبہ "عن محمد بن زیاد عن أبي هريرة رضی اللہ عنہ قال: قال رسول الله ﷺ: أسبغوا الوضوء، ويل للأعقاب من النار."(۱)۔

اس میں ''أسبغوا الوضوء'' کا ٹکڑا مدرج ہے جو کہ آغاز حدیث میں حضرت ابو ہریرۃ رضی اللہ عنہ کا ارشاد ہے؛ اس لئے کہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ نے بواسطہ آدم عن شعبہ سے اسی سند سے روایت کو یوں نقل کیا ہے: "أسبغوا الوضوء، فإن أبا القاسم ﷺ قال: ويل للأعقاب من النار."(۲) خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ کا کہنا ہے کہ ابو قطن اور شبابہ کو وہم ہو گیا ہے کہ انہوں نے اس ٹکڑے کو بھی بطور حدیث نقل کر دیا حالانکہ آدم کے علاوہ دوسروں نے بھی شعبہ سے آدم کے الفاظ کے ساتھ روایت نقل کی ہے۔(۳)

(۲) ادراج کی ایک قسم یہ ہے کہ ادراج درمیان میں ہو، جس کا وقوع نہ ہونے کے برابر ہے، حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کی حدیث جو کہ آغاز وحی کے بیان میں بہت مشہور ہے: كان النبي

---

۱ الفصل للوصل المدرج فی النقل: ۱/ ۱۰۷

۲ الجامع الصحیح للإمام البخاری: ص ۳۳

۳ الفصل للوصل المدرج فی النقل: ۱/ ۱۰۸

ﷺ یتحنث في غار حرا وهو التعبد الليالي ذوات العدد." [۱] اس میں" هو التعبد"

درمیانِ حدیث میں مدرج ہے جو کہ امام زہری رحمۃ اللہ علیہ کا قول ہے جس سے لفظ"

تحنث" کی تشریح مقصود ہے۔

(۳) ادارج کی تیسری قسم یہ ہے کہ ادراج حدیث کے آخر میں ہو جس کا وقوع بکثرت ہے، جیسے امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ کی روایت ہے:

"عن أبي هريرة رضی اللہ عنہ مرفوعا: للعبد المملوك الصالح أجران، والذي نفسي بيده لولا الجهاد في سبيل الله، والحج، وبرّ أمي، لأحببت أن أموت، وأنا مملوك." [۲]

اس میں "والذي نفسي" سے آخر تک مدرج ہے، جو حضرت ابوہریرۃ رضی اللہ عنہ کا ارشاد ہے، اس لئے کہ حضور ﷺ غلامی کی تمنا کیسے کر سکتے ہیں اور نہ ہی آپ ﷺ کی والدہ ماجدہ با حیات تھیں۔ [۳]

## ادراج کا حکم:

تمام فقہاء ومحدثین کا اتفاق ہے کہ صحابہ کے بعد کسی اور کے لئے ادراج حرام ہے۔ البتہ اگر کسی نے غریب لفظ کی تفسیر وتشریح کے طور پر ادراج کیا ہو تو اجازت ہے نیز اگر خطا ہو تب بھی مضائقہ نہیں مگر بکثرت ایسا ہو تو اس وقت اس کی حدیث ضعیف قرار پائے گی۔

## (۵) حدیثِ مقلوب

### حدیثِ مقلوب کی تعریف:

"ہر وہ حدیث جس کی سند یا متن میں تقدیم یا تاخیر کی وجہ سے مخالفت واقع ہو جائے"۔

---

۱۔ الجامع الصحيح للإمام البخاری: ص ۱

۲۔ الجامع الصحيح للإمام البخاری: ص ۴۱۱، ۴۱۲

۳۔ تدريب الراوي في شرح تقريب النواوي: ۳۱۷/۱

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"إن كا نت المخالفة بتقديم أو تأخير :فهو المقلوب" (۱)

مقلوب کی دو اقسام ہیں:

(۱) مقلوب السند (۲) مقلوب المتن

(۱) مقلوب السند کی تعریف:

ہر وہ حدیث جس کی سند میں تقدیم وتاخیر کے ذریعے ردّ و بدل کیا جائے۔ مثلاً کسی راوی اور اس کے والد کے نام میں تقدیم وتاخیر کر دی جائے، جیسے "کعب بن مرہ" کو "مرہ بن کعب" کر دینا۔ اسی طرح کسی حدیث کے مشہور راوی کی جگہ دوسرے کا نام لینا، جیسے حضرت سالم بن عبداللہ سے منقول کسی مشہور حدیث کو "حضرت نافع" سے نقل کرنا۔

مقلوب السند کی مثال:

"عن عمرو بن خالد عن، حماد بن، عمرو النصبي، عن الأعمش، عن أبي صالح، عن أبي هريرة رضی اللہ عنہ مرفو عا: إذا لقيتم المشر كين في طريق فلا تبدأ وهم با لسلام، وا ضطروهم إلى أ ضيقها." (۲)

یہ حدیث مقلوب السند ہے۔ حماد بن عمرو نے اعمش سے نقل کیا ہے، حالانکہ یہ حدیث سہیل بن ابی صالح سے مروی ہے، جیسا کہ مسلم شریف میں ہے۔ (۳)

(۲) مقلوب المتن کی تعریف:

متنِ حدیث کے کسی حصے کو مقدم و موخر کر دیا جائے یا کئی احادیث میں سے ہر ایک کی سند کو

---

۱۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر، ص ۹۲

۲۔ میزان الاعتدال: ۳۶۸/۲

۳۔ الجامع الصحیح للإمام مسلم: ۱۷۰۷/٤

دوسری حدیث کے سند کے ساتھ جوڑ دیا جائے، جیسے اہل بغداد نے امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ کی بغداد تشریف آوری کے موقع پر ان کے امتحان کے لئے کیا تھا۔

### مقلوب المتن کی مثال:

مسلم شریف کی حدیث ہے:

"عن أبي هريرةؓ عن النبي ﷺ، قال: سبعة يظلهم الله في ظله يوم لا ظل إلا ظله: الامام العادل، وشاب نشأ بعبادة الله، ورجل قلبه معلق في المساجد، ورجلان تحابا في الله اجتمعا عليه وتفرقا عليه، ورجل دعته امرأة ذات منصب وجمال فقال: إني أخاف الله، ورجل تصدق بصدقة فأخفاها حتى لا تعلم يمينه ما تنفق شماله ورجل ذكر الله خاليا ففاضت عيناه."۔ (۱)

اس حدیث میں ایک جملہ ہے "رجل تصدق بصدقة فأخفاها حتى لا تعلم يمينه ما تنفق شماله" اس میں کسی راوی سے آخری ٹکڑے میں قلب ہوگیا ہے، صحیح یوں ہے: "حتى لا تعلم شماله ما تنفق يمينه."

### حدیثِ مقلوب کا حکم:

اگر قلب "اغراب" کی وجہ سے ہوتو بالاتفاق ناجائز ہے اور اگر امتحان کی غرض سے ہوتو جائز ہے اور اگر کسی راوی سے خطاً بکثرت ایسا ہوتو اس راوی کی حدیث ضعیف قرار پائے گی۔

## (٦) المزید فی متصل الاسانید

### المزید فی متصل الاسانید کی تعریف:

"ہر وہ حدیث جس کی سند میں راوی ایسے شخص کا اضافہ کرے جس کو اس کے غیر نے ذکر نہ کیا ہو"۔

(۱) الجامع الصحیح للامام مسلم: ۲/۷۱۵

چنانچہ علامہ ابن کثیر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"ھو أن یزید راو في الإسناد رجلا لم یذکرہ غیرہ"۔ (۱)

**المزید فی متصل الاسانید کی مثال:**

مسلم شریف میں عبداللہ بن مبارک رحمۃ اللہ علیہ کی روایت ہے:

"حدثنا سفیان، عن عبد الرحمان بن یزید، حدثني بسر بن عبید الله قال: سمعت أبا ادریس، قال: سمعت واثلة، یقول: سمعت أبا مرثد، یقول: سمعت رسول الله ﷺ یقول: لا تجلسوا علی القبور ولا تصلوا الیها" (۲)

اس حدیث کی سند میں دو جگہ زیادتی ہے: (۱) سفیان کی (۲) ابوادریس کی، اور یہ زیادتی محض وہم کی بنا پر ہے۔

(۱) "سفیان" کی زیادتی، عبداللہ بن مبارک سے نقل کرنے والوں کے وہم کی بنا پر ہے؛ اسلئے کہ ثقات کی ایک جماعت نے عبداللہ بن مبارک رحمۃ اللہ علیہ سے براہ راست عبدالرحمٰن بن یزید سے اس روایت کو نقل کیا ہے اور بعض نے "عن" کے بجائے صریح لفظ "أخبر" استعمال کیا ہے۔

(۲) "ابوادریس" کی زیادتی خود عبداللہ بن مبارک کا وہم ہے؛ اس لیے کہ ان کے استاذ عبدالرحمان بن یزید سے روایت کرنے والوں میں سے ثقات کی ایک جماعت نے "ابو ادریس" کا ذکر نہیں کیا ہے اور بعض نے یہ تصریح کی ہے کہ "بسر" نے براہ راست "واثلہ" سے سنا ہے۔ (۳)

---

۱۔ اختصار علوم الحدیث مع الباعث الحثیث: ص۱۳۱

۲۔ الجامع الصحیح للامام مسلم: ۶۶۹/۲

۳ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۳۹۲، ۳۹۳

## (۷) حدیثِ مضطرب

### حدیثِ مضطرب کی تعریف:

"ہر وہ حدیث جو ایک ہی درجہ کی قوت و مرتبہ رکھنے والی مختلف صورتوں کے ساتھ مروی ہو، خواہ راوی ایک ہی ہو اور اختلاف دو یا تین مرتبہ روایت کرنے کی وجہ سے ہوا ہو یا راوی ایک سے زائد ہونے کی وجہ سے اختلاف ہو"۔

چنانچہ علامہ ابن جماعہ رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"هو الذي يروي على أو جه مختلفة متقاربة ."(۱)

### مضطرب کی دو قسمیں ہیں:

(۱) مضطرب السند (۲) مضطرب المتن

### (۱) مضطرب السند کی تعریف:

ہر وہ حدیث جس کی سند میں اضطراب واقع ہو (اکثر یہی صورت پیش آتی ہے)

### مضطرب السند کی مثال:

جامع الترمذی میں حضرت ابو بکر رضی اللہ عنہ سے منقول ہے کہ انہوں نے حضور ﷺ سے عرض کیا: " يارسول الله! أراك شبت ، قال رسول الله ﷺ شيبتني هود وأخواتها."(۲)

امام دارقطنی رحمۃ اللہ علیہ کا قول ہے کہ یہ روایت مضطرب السند ہے، اس لیے کہ یہ صرف ابو اسحاق کے طریق سے مروی ہے اور اس میں دس وجہوں سے اختلاف ہے، بعض نے مرسلاً روایت کی ہے اور بعض نے موصولاً، بعض نے مسانید ابی بکر میں اس کو شمار کیا ہے اور بعض نے مسانید عائشہ وغیرہ میں۔

---

۔۱المنہل الروي في مختصر علوم الحديث: ص۵۲

۔۲جامع الترمذي: ۵/ ۳۲۵

اور تمام رواۃ ثقات، ہم پلہ و ہم درجہ ہیں اس لئے ترجیح و تطبیق کی صورت ممکن نہیں۔ (۱)

## (۲) مضطرب المتن کی تعریف:

ہر وہ حدیث ہے جس کے متن میں اضطراب واقع ہو۔

### مضطرب المتن کی مثال:

جامع الترمذی کی روایت ہے:

"عن شريك، عن أبي حمزة، عن الشعبي، عن فاطمة بنت قيس رضی اللہ عنہا قالت: سئل رسول الله ﷺ عن الزكوة فقال: إن في المال لحقاً سوى الزكوة." (۲)

امام ابن ماجہ رحمۃ اللہ علیہ نے اس روایت کو اسی سند سے بایں الفاظ نقل کیا ہے: "ليس في المال حق سوى الزكوة"۔ (۳)

حافظ عراقی رحمۃ اللہ علیہ ان دونوں روایات کو نقل کر کے لکھتے ہیں: یہ ایسا اضطراب ہے کہ اس کی توجیہ ممکن ہی نہیں۔ (۴)

### حدیثِ مضطرب کا حکم:

چونکہ اضطراب راوی "ضبط" نہ ہونے کی وجہ سے ہوتا ہے اس لئے مضطرب روایت ضعیف کہلاتی ہے لیکن کبھی کبھار اضطراب کے باوجود حدیث صحیح ہوتی ہے اور وہ اس طرح کہ، کسی راوی اور اس کے باپ یا اس کی نسبت میں اختلاف واقع ہو جائے لیکن وہ راوی ثقہ ہو تو اس اضطراب کے باوجود حدیث صحیح کہلائے گی۔ (۵)

---

۱۔ تدریب الراوي في شرح تقریب النواوي: ۱/۳۱۴

۲ جامع الترمذي: ۲/۴۰

۳۔ سنن ابن ماجہ: ۲/۳۸۱

۴۔ شرح التبصرہ والتذکرہ: ۱/۲۹۳

۵ تدریب الراوي في شرح تقریب النواوي ۱/۳۱۲

## (۸) حدیثِ مصحَّف

### حدیثِ مصحَّف کی تعریف:

"ہر وہ حدیث جس میں راوی نے کسی کلمہ کے نقطوں کو تبدیل کر کے مخالفت کی ہو باوجود اس کے کہ اس کلمہ کی صورت خطی باقی ہو"۔

چنانچہ علامہ شبیر احمد عثمانی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"هو ما وقعت المخالفة فيه بتغيير النقط في الكلمة مع بقاء صورة الخط فيها." (۱)

### مصحّف کی دو قسمیں ہیں:

(۱) مصحف فی السند (۲) مصحف فی المتن:

### (۱) مصحّف فی السند کی تعریف:

ہر وہ حدیث جس کی سند میں تصحیف واقع ہو۔

### مصحّف فی السند کی مثال:

امام شعبہ رحمۃ اللہ علیہ کی حدیث ہے "عن العوام بن مراجم، عن أبي عثمان النهدي، عن عثمان بن عفان، قال: قال رسول الله ﷺ لتؤدن الحقوق إلى أهلها." (۲)

اس روایت میں ابن معین رحمۃ اللہ علیہ نے تصحیف کر کے "عوام بن مراجم" کو "عوام بن مزاحم" بنا دیا۔ (۳)

### (۲) مصحّف فی المتن کی تعریف:

ہر وہ حدیث ہے جس کی سند میں تصحیف واقع ہو۔

---

۱۔ فتح الملہم شرح صحیح مسلم: ۱/۱۶۰

۲۔ کتاب العلل: ۳/۶۴۔۶۵

۳۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۳۸۴

## مصحف فی المتن کی مثال:

"عن زيد بن ثابت :" أن رسول الله ﷺ احتجر في المسجد"[1]

اس روایت میں ابن لہیعہ نے تصحیف کر کے "احتجر" کو "احتجم" بنا دیا۔

## حدیث مصحّف کا حکم:

اگر کسی راوی سے اتفاقاً یہ عمل سرزد ہو جائے تو اس کی وجہ سے اس کا ضبط متاثر نہیں ہوتا، اس لیے کہ تھوڑی بہت غلطی سے تو شاذ و نادر ہی کوئی محفوظ رہا ہوگا اور اگر بکثرت ہو تو اس سے راوی کا ضبط متاثر ہوتا ہے جس کی بنا پر روایت ضعیف کہلاتی ہے۔

## (۹) جہالت

راوی پر طعن کے اسباب میں سے ایک سبب "جہالت" ہے اس پر مشتمل حدیث کا کوئی خاص نام نہیں ہے، بلکہ جو راوی اس وصف کے ساتھ متصف ہو اس کو حضرات محدثین "مجہول" سے یاد کرتے ہیں۔

## مجہول کی تعریف:

ہر وہ راوی جس کی ذات یا صفات کا علم نہ ہو۔

مجہول کی اقسام: (۱) مجہول الذات (۲) مجہول العین (۳) مجہول الحال

## (۱) مجہول الذات:

ہر وہ راوی جس کے نام کی تصریح نہ کی جائے۔ اسے حضرات محدثین "مبہم" کے عنوان سے ذکر کرتے ہیں۔ (۲)

---

۱۔ الجامع الصحیح للإمام البخاري: ص۶

۲۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص۹۲

## جہالت کی قسمیں:

### (۱) کثرت صفات:

جن الفاظ وکلمات سے راوی کو ذکر کیا جاتا ہے ان کی کثرت خواہ حقیقی نام وکنیت ہو یا لقب و وصف، یا نسب وپیشہ، راوی ان میں سے کسی ایک سے معروف ومشہور ہوتا ہے اور ذکر کرنے والا کسی خاص غرض کے تحت غیر مشہور نام ووصف کو استعمال کرتا ہے، جس سے یہ سمجھا جاتا ہے کہ یہ کوئی دوسرا راوی ہے اور اس نام ووصف سے معروف نہ ہونے کی وجہ سے راوی مجہول قرار پاتا ہے۔

### کثرت صفات کی مثال:

''محمد بن سائب بن بشر کلبی'' کو بعض نے ''دادا'' کی طرف منسوب کرکے ''محمد بن بشر'' کہا ہے، بعض نے ان کا نام ''حماد'' ذکر کیا ہے، بعض نے ان کی کنیت ''ابونصر'' بعض نے ''ابوسعید'' اور بعض نے ''ابوہشام'' ذکر کی ہے، جس سے یہ سمجھا جاتا ہے کہ یہ پوری ایک جماعت کے نام ہیں، حالانکہ ان سب کا مصداق ایک ہی شخص ہے۔[۱]

### (۲) نام کی عدم صراحت:

اختصار یا کسی دوسری غرض سے راوی حدیث کا نام نہ لینا۔

### نام کی عدم صراحت کی مثال:

راوی کا قول "أخبرني فلان، أخبرني شيخ، أخبرني رجل" وغیرہ۔

### مجہول کا حکم:

اگر راوی نام کی تصریح کرے یا کسی دوسری سند سے اس کے نام کا علم ہو جائے تو اس کی روایت صحیح قرار پائے گی ورنہ ضعیف۔

---

۱۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۹۲

## (۲) مجہول العین

### مجہول العین کی تعریف:

"ہر وہ راوی ہے جس کا نام تو لیا گیا ہو، لیکن اس سے روایت کرنے والا ایک ہی شخص ہو"۔

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" فإن سمي الراوي وانفرد راو واحد بالرواية عنه ." (۱)

### مجہول العین کا حکم:

اگر اس مجہول سے راویت کرنے والے کے علاوہ کوئی دوسرا شخص یا خود راوی توثیق کردے، بشرطیکہ راوی اس مرتبہ واہلیت کا حامل ہو تب اس کی حدیث صحیح قرار پائے گی ورنہ ضعیف کہلائے گی۔

## (۳) مجہول الحال: (مستور)

### مجہول الحال کی تعریف:

"ہر وہ راوی جس سے روایت کرنے والے دو یا دو سے زائد ہوں، مگر اس کی توثیق منقول نہ ہو"۔

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" إن روى عنه اثنان فصاعدا ولم يوثق. " (۲)

---

(۱) نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۹۷

(۲) نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۹۹

## مجہول الحال کا حکم:

بقول ابن جماعہ رحمۃ اللہ علیہ [1] کے مختار قول یہی ہے کہ اس کی روایت مقبول ہے، اور سُلیم رازی رحمۃ اللہ علیہ [2] نے بھی اسی قول کو صحیح قرار دیا ہے، اور متقدمین کے ہاں بھی اسی پر عمل تھا۔ [3]

حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ کی رائے یہ ہے کہ راوی کی حالت معلوم ہونے تک توقف کیا جائے گا۔ [4]

## (۱۰) بدعت:

## بدعت کی تعریف:

وہ اعتقادات واعمال جن کو حضور ﷺ اور صحابہ کرام کے بعد بطور دین ایجاد کیا گیا ہے یا اپنا یا گیا ہے۔ بدعت کی دو قسمیں ہیں:

### (۱) بدعتِ مکفرہ:

ایسا اعتقاد رکھنا جو باعث تکفیر ہو، مثلاً: راوی شریعت کے کسی متواتر حکم کا انکار کرے یا اس کے خلاف اعتقاد رکھے۔ حوالو بالا

---

(۱) محمد بن ابراہیم بن سعد اللہ شافعی جو ابن جماعہ کے نام سے مشہور ہیں ۶۳۹ھ میں پیدا ہوئے۔ تحصیل علم اپنے زمانہ کے اعیان سے کی، موصوف تفسیر، حدیث اور فقہ اور دوسرے علوم کے ماہر عالم تھے ۷۳۳ھ کو وفات پائی۔ چند مشہور تصانیف: المنہل الروی، التبیان لمبہمات القرآن، کشف الغمۃ فی احکام اہل الذمہ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: طبقات الشافعیۃ الکبری: ۵/۷۹۔۸۳، اور الاعلام: ۵/۲۹۷

(۲) ابوالفتح سُلیم بن ایوب رازی شافعی۔ مشہور مفسر، محدث، فقیہ، لغوی اور ادیب تھے ۴۴۷ھ کو وفات پاگئے۔ چند مشہور تصانیف: غریب الحدیث، الاشارہ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: طبقات الشافعیۃ الکبری: ۳/۴۹۔۵۰، اور تاریخ الاسلام: ۹/۷۲۳، اور الاعلام: ۳/۱۱۷

(۳) المنہل الروي في مختصر علوم الحديث: ص ٦٦

(۴) نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۱۰۰

**بدعتِ مکفرہ کا حکم:**

ایسے راوی کی روایت جمہور کے نزدیک بالاتفاق مردود ہے۔

**(۲) بدعتِ مفسقہ:**

ایسا اعتقاد و عمل جو فسق و گمراہی کا باعث ہو۔ اس کے تحت وہ تمام امور آتے ہیں جنہیں اپنی طرف سے دین کی حیثیت دے دی گئی ہو یا ان کو اپنے مرتبے سے گھٹا یا بڑھا دیا گیا ہو(۱)۔

**بدعتِ مفسقہ کا حکم:**

اگر راوی اپنی اس بدعت کی طرف داعی نہ ہو اور اپنی بدعت کی مؤید اور اس کو رواج دینے والی کسی چیز کو روایت نہ کرے تو جمہور کے نزدیک اس کی روایت مقبول ہوگی ورنہ نہیں۔

اسباب طعن میں سے ایک سبب ''سوء حفظ'' ہے۔

**(۱۱) سوءِ حفظ:**

**سوءِ حفظ کی تعریف:**

''وہ راوی جس کی اصابت (درست گوئی) خطا پر راجح و غالب نہ ہو''۔ چنانچہ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

" هو من لم يرجح جانب اصابته على جانب خطئه ." (۲)

سوء حفظ کی دو اقسام ہیں: (۱) سوء حفظ لازمی (۲) سوء حفظ طاری و عارضی۔

**(۱) سوءِ حفظ لازمی:**

''سوءِ حفظ لازمی وہ ہے جو راوی کے ساتھ ہر وقت رہے''۔

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

---

۱۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۱۰۰

۲۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۱۰۱

"إن كان لازما للراوي في جميع حا لاته ."(۱)

(۲) سوءِ حفظ طاری وعارضی:

"سوءِ حفظ طاری وعارضی وہ ہے جو بڑھاپے یا بینائی چلے جانے یا کتابیں جل جانے کی وجہ سے عارض ہو گیا ہو۔"

چنانچہ حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"إن كان سوء الحفظ طارئا على الراوي، إما لكبر أو لذهاب بصره ، أو لاحتراق كتبه ."(۲)

## سوءِ حفظ کا حکم:

جو روایات اختلاط سے پہلے کی ہیں وہ "صحیح" ہیں اور جو اختلاط کے بعد کی ہیں وہ "ضعیف" ہیں اور جن کی قبلیت اور بعدیت کا علم نہ ہو سکے وہ حصول علم پر موقوف رہیں گی۔

## ضعیف حدیث کی تمام اقسام کا اجمالی حکم:

یہاں تک ضعیف کی تمام اقسام کا تذکرہ بمع ان کی تعریف اور حکم کے ہو چکا ہے تاہم یہاں تمام اقسام کا اجمالی حکم ذکر کیا جاتا ہے۔

"متروک" (جس کے راوی پر جھوٹ کی تہمت ہو) اور "منکر" (جس کا راوی فسق یا فحش غلط یا کثرت غفلت کا شکار ہو) روایت میں بعض مرتبہ ضعفِ شدید کی بنا پر انہیں بالکل قبول نہیں کیا جاتا البتہ مرسل، منقطع، معضل، مدلس، معلل، مدرج، مقلوب، مضطرب اور مصحف وغیرہ یہ سب جمہور فقہاء و محدثین کے نزدیک تابع اور شاہد کی تائید حاصل کئے بغیر فضائل اور ترغیب و ترہیب میں قابل عمل، ہیں اور اگر مذکورہ اقسام کو کوئی تابع یا شاہد مل جائے، جس کا راوی ان کے روات سے فائق ہو یا ان کے درجے کا ہو تو یہ تمام روایات درجہ ضعف سے ترقی کر کے "حسن لغیرہ" کے درجے میں پہنچ جاتی ہیں جو کہ احکام میں بھی قابل استدلال ہے۔(۳)

---

۱۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۱۰۲

۲۔ نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۱۰۲

۳۔ الامتاع بالاربعین المتباینۃ: ص ۷۰، نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۱۰۳

باب دوم

# ضعیف حدیث سے استدلال اور اس کی عملی حیثیت

## حجیتِ حدیث:

پوری امت کا اس بات پر اتفاق ہے کہ "سنت" اسلامی قانون کا دوسرا ماخذ ہے چنانچہ اسی وجہ سے سنت کو احکام کی تشریع میں وہ مقام و مرتبہ حاصل ہے جو خود کلام اللہ شریف کو حاصل ہے۔ اسی پر بس نہیں، بلکہ سنتِ رسول تحلیل و تحریم کے باب میں بھی قرآن ہی کی طرح ہے۔ قرآن کریم حکم دیتا ہے کہ آپ ﷺ کی طرف سے جو کچھ دیا جائے اس کو بلا چوں و چرا قبول کرلیں؛ اور آپ ﷺ کے منع کردہ امور سے باز رہیں۔

ارشاد خداوندی ہے: ﴿وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا﴾ (۱)

(ترجمہ): "اور رسول تم کو جو کچھ دیدیا کریں وہ لے لیا کرو اور جس چیز سے تم کو روک دیں تم رک جایا کرو"۔ (بیان القرآن)

آپ ﷺ کے امر کی مخالفت کرنے والے لوگوں کو ڈرایا گیا ہے:

﴿فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖٓ اَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ﴾ (۲) ترجمہ): "سو جو لوگ آپ کے حکم کی مخالفت کرتے ہیں ان کو اس سے ڈرنا چاہیے، کہ ان کو کوئی آفت آ پڑے یا ان پہ کوئی دردناک عذاب نازل ہو جائے"۔ (بیان القرآن)

یہ بھی اعلان کر دیا گیا، کہ آپ ﷺ کی اطاعت درحقیقت اللہ جل شانہ ہی کی اطاعت ہے:

---

۱۔ الحشر:۷

۲۔ النور:۶۳

﴿مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ﴾ (۱)

(ترجمہ): ”جس شخص نے رسول ﷺ کی اطاعت کی، اس نے خدا تعالی کی اطاعت کی“۔

ہر ضلالت کے لئے اسوۂ نبوت تریاق اعظم ہے، جب تک کتاب اللہ کے ساتھ سنت رسول اللہ ﷺ کو دینی سند کی حیثیت سے تسلیم کیا جاتا رہے گا۔ امت گمراہی وضلالت سے محفوظ رہے گی، لیکن جونہی کتاب وسنت میں تفریق کی جائے گی تو اس وقت امت قعرِ ضلالت میں جا گرے گی۔

”عن مالك بن أنس رضی اللہ عنہ قال: قال النبي ﷺ تركت فيكم أمرين لن تضلوا ما تمسكتم بهما؛ كتاب الله، و سنة رسوله.“ (۲)

(ترجمہ): ”آپ ﷺ نے ارشاد فرمایا۔ میں تم میں دو چیزیں چھوڑ کر جا رہا ہوں، جب تک ان دونوں کا دامن مضبوطی سے تھامے رہو گے، ہرگز گمراہ نہ ہو گے: کتاب اللہ، اور سنت رسول اللہ ﷺ“۔

”عن مقدام بن معديكرب، قال: قال النبي ﷺ: ألا هل عسى رجل يبلغه الحديث عني وهو متكئى على أريكته، فيقول: بيننا و بينكم كتاب الله، فما وجدنا فيه حلالا استحللناه وما وجدنافيه حراماً حرمناه، وإنَّ ما حرم رسول الله كما حرم الله.“ (۳)

(ترجمہ): ”حضرت مقدام بن معدیکرب رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا۔ سن رکھو!! وہ شخص جس کو میری طرف سے حدیث پہنچے اور وہ اپنے تکیہ پر ٹیک لگایا ہوا

---

۱۔ النساء: ۸۰

۲۔ المؤطا للإمام مالک: ۲/۴۸۰

۳۔ جامع الترمذي: ۴/۳۹۹-۴۰۰

ہو یہ کہنے لگے کہ لوگوں! تمہیں یہ قرآن کافی ہے، بس جو چیز اس میں حلال ملے، اسی کو حلال سمجھو! اور جو چیز اس میں حرام ملے اسی کو حرام سمجھو! حالانکہ اللہ کے رسول کی حرام بتلائی ہوئی چیزیں بھی ویسی ہیں جیسی اللہ تعالی کی حرام بتلائی ہوئی''۔

مذکورہ آیات واحادیث مختلف انداز اور اسالیب سے سنتِ رسول ﷺ کی حجیت پر دلالت کر رہی ہیں۔

تنبیہ: حدیث وسنت کی جو بھی تعریف محدثین یا اصولیین نے کی ہے۔ قدیم ہو یا جدید اس میں کوئی ایسی قید نہیں جس سے ضعیف احادیث کو نکال باہر کیا جائے۔ جہاں تک موضوع احادیث کی بات ہے، تو وہ اس وقت تک داخل رہتی ہے جب تک وضع کا پتہ نہیں چلتا۔

یہ بات بھی ملحوظِ خاطر رہے کہ حلت وحرمت کے باب میں سنتِ رسول ﷺ کا قرآن کی طرح ہونے کا یہ مطلب نہیں کہ من حیث الثبوت بھی دونوں کا ایک ہی درجہ ہے بلکہ اس حیثیت سے دونوں میں تھوڑا سا فرق ہے، وہ اس طرح کہ کلام اللہ شریف پورا کا پورا قطعی الثبوت ہے اور اس میں اس جہت سے کسی طرح کے بھی اختلاف کی گنجائش نہیں۔ رہا مسئلہ سنت رسول ﷺ کا تو اس میں ایک قسم وہ ہے جو قرآن کی طرح قطعی الثبوت ہے جیسے خبر متواتر، جس سے علم یقینی بدیہی حاصل ہوتا ہے اور ایک قسم وہ ہے جو ظنی الثبوت ہے جیسے اخبار آحاد جن سے علم یقینی حاصل نہیں ہوتا۔

چونکہ ان اخبار سے علم یقینی حاصل نہیں ہوتا اس لئے ان سے وہ عقائد ثابت نہیں ہوتے جن کا تعلق قطعیات سے ہے اس لیے ان سے استدلال نہیں کیا جاسکتا ہے۔ چہ جائیکہ ضعیف یا منکر روایت کے ذریعہ عقیدے کا اثبات کیا جائے جس کی تفصیل انشاء اللہ تعالی آگے آئیگی۔

## فصل اول:

## عقائد کے باب میں ضعیف حدیث کا مقام:

### تمہید:

ضعیف حدیث کے ساتھ افراط وتفریط کا معاملہ برتا جاتا ہے۔ایک طبقہ ضعیف حدیث کو سرے سے قابل اعتبار نہیں سمجھتا اور اس کو موضوع کے درجہ میں رکھتا ہے جبکہ جمہور فقہاء ومحدثین حدیثاً وقدیماً فضائل میں ضعیف احادیث سے استدلال کرتے رہے ہیں اور اگر اسی طبقہ سے عقائد کے متعلق پوچھا جائے جس پر ایمان کا دارومدار ہے تو خبر واحد (جوکہ جمہور فقہاء ومحدثین کے نزدیک ظن کا فائدہ دیتی ہے) کو بھی عقائد میں حجت قرار دینے سے گریز نہیں کرتے اور بسااوقات شدید ضعیف احادیث (جبکہ ان کے نظریہ کی تائید میں ہو) کی صحت کے لئے ایڑی چوٹی کا زور صرف کرنے لگتے ہیں۔بے اعتدالی کے یہ دونوں پہلو مذموم اور مضر نتائج کا پیش خیمہ ہیں، اس لیے صحیح موقف وہی ہے جسے جمہور نے اپنایا ہے۔ذیل میں اسے تفصیل سے درج کیا جاتا ہے۔

عقیدہ کی تعریف:

" العقائد ما يقصد فيه الاعتقاد دون العمل ." (۱)

(ترجمہ): ''عقیدے میں عمل نہیں بلکہ نفسِ اعتقاد مقصود ہوتا ہے''۔

" العقيدة هي القضية التي تصدق بها ." (۲)

(ترجمہ): ''عقیدہ اس قضیہ کو کہتے ہیں جو تصدیق کے درجے میں ہو''۔

عقیدہ کسی بھی مذہب کی وہ اساس ہے جس پر وہ مذہب قائم ہوتا ہے۔اگر عقیدہ متزلزل ومشکوک ہوجائے تو مذہب کی بنیادیں استوار نہیں رہتیں، لہذا عقیدے کا ثبوت ایسے امور سے ہونا چاہئے جو قطعی الثبوت اور قطعی الدلالۃ ہوں جیسے کتاب اللہ شریف اور خبر متواتر، اور جو امور قطعی

---

۱۔ التعریفات: ص ۱۰۸

۲۔ ال[illegible]اس: ص ۱۰

الثبوت نہیں بلکہ ظنی الثبوت ہیں جیسے اخبار آحاد، تو ان سے عقیدے کا ثبوت نہیں ہوگا۔البتہ یہ بات ملحوظ رکھنی چاہئے کہ یہاں پر ''علم یقینی'' اور ''علم ظنی'' سے مراد عوام کی اصطلاح میں یقین اور ظن وخیال مراد نہیں ہے بلکہ اہل علم کی خاص اصطلاح ہے کہ وہ قرآن مجید اور حدیث متواتر سے حاصل شدہ علم کو علم یقین سے تعبیر کرتے ہیں اور خبر واحد سے حاصل شدہ علم کو علم ظنی سے تعبیر کرتے ہیں ورنہ عوامی اصطلاح کے اعتبار سے خبر واحد سے حاصل ہونے والا علم، یقین کے اونچے درجے کا ہے، ظن وخیال نہیں ہے۔لہذا ان دونوں اصطلاحات کو خلط ملط نہیں کرنا چاہئے جیسا کہ بعض حضرات نے کیا ہے۔(۱)

## خبر واحد کا حکم:

ائمہ اربعہ سمیت جمہور فقہاء، محدثین، اصولیین اور متکلمین کا یہی مختار مذہب ہے کہ خبر واحد علم یقینی کا فائدہ نہیں دیتی، بلکہ اس کے ذریعے علم ظنی حاصل ہوتا ہے، جبکہ عقیدے کو ثابت کرنے کے لئے علم یقینی کا ہونا ضروری ہے اور یہ مسلمہ اصول ہے کہ ظن یقین کے منافی ہے، اس لئے خبر واحد سے اس عقیدے کا ثبوت نہیں ہوگا جس کا تعلق قطعیات سے ہے۔چنانچہ اس کی مزید وضاحت کے لئے درجہ ذیل عبارت ملاحظہ فرمائیے۔

علامہ عبدالحی لکھنوی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"وقد صرحوا بأن أخبار الآحاد وإن كانت صحيحة لاتكفي في باب العقائد فما بالك بالضعيفة منها؟" والمراد بعدم كفايتها أنها لاتفيد القطع فلايعتبر بها مطلقاً في العقائد التي كلف الناس بالإعتقاد الجازم فيها لاأنها لاتفيد الظن أيضاً ولاأنها لاعبرة بها رأساً في العقائد مطلقاً كما توهمه كثير من أبناء عصر نا."(۲)

---

۱۔ تعلیق نزہۃ النظر شرح نخبۃ الفکر: ص ۴۸

۲۔ ظفر الاماني بشرح سید شریف جرجاني: ص ۲۰۳

(ترجمہ): ”اور تحقیق بہت سے اہل علم اس بات کی تصریح کر چکے ہیں کہ اخبار آحاد اگر چہ صحیح ہی ہوں لیکن پھر بھی عقائد کے باب میں مستدل نہیں بن سکتی ہیں چہ جائیکہ ضعیف حدیث؟ لیکن یہ بات بھی یاد رکھنی چاہیئے کہ خبر واحد کا عقائد کے باب میں کافی نہ ہونے کا مطلب یہ ہے کہ یہ قطعیت کا فائدہ نہیں دیتی، یہ ان عقائد میں مطلقاً معتبر نہیں ہوتی جن کے پختہ اعتقاد کے لوگ مکلّف ہیں یہ بات نہیں کہ یہ ظن کا بھی فائدہ نہیں دیتی اور نہ یہ مطلب ہے کہ عقائد کے باب میں سرے سے معتبر نہیں جیسا کہ ہمارے زمانے کے بعض حضرات نے سمجھا ہے“۔

## خبر واحد سے علم یقینی ثابت نہ ہونے کے دلائل:

### متعدد ائمہ کرام سے اس کے حوالہ جات:

(۱) علامہ ابو بکر جصاص حنفی رحمۃ اللہ علیہ[۱] ﴿يَاۤ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ﴾[۲] کے تحت رقمطراز ہیں:

”وفي هذه الآية دلالة على أن خبر الواحد لا يوجب العلم“[۳]

---

۱۔ ابو بکر احمد بن علی رازی حنفی ۳۰۵ھ میں پیدا ہوئے، موصوف نے علم کی تحصیل و تکمیل اپنے زمانہ کے مشہور اعیان سے کی، آپ تفسیر، فقہ، حدیث اور اصول میں مسلّم امام تھے، دور دراز ممالک سے اہل علم موصوف کی خدمت میں استفادہ کے لئے پہنچے تھے، بقول خطیب بغدادی کے کہ امام جصاص اپنے وقت کے امام اصحاب حنیفہ تھے اور زہد و تقوی میں بہت مشہور تھے، عہدہ قضاء بار بار پیش کیا گیا مگر اس کو قبول نہ کیا اور درس و تعلیم کے مشغلہ کو ترجیح دی، ۳۷۰ھ کو انتقال ہوا۔ چند مشہور تصانیف: احکام القرآن، الفصول فی الاصول، ۔مزید حالات کے لئے دیکھئے: تاریخ مدینۃ السلام: ۵/۵۱۳۔۵۱۵ اور تاریخ الاسلام: ۸/۵۷۶۔۵۷۷

۲۔ الحجرات: ۶

۳۔ احکام القرآن: ۵/۲۷۹

(ترجمہ): ''اس آیت سے یہی بات معلوم ہوتی ہے کہ خبر واحد سے علم یقینی ثابت نہیں ہوتا''۔

نیز دوسرے مقام پر موصوف یوں رقمطراز ہیں:

"وأما نسخ حكم القرآن وماثبت من السنة من طريق التواتربخبر الواحد،فإنه غير جائز عندنا، لأن خبرالواحدلايوجب العلم "(۱)

(ترجمہ): ''قرآن اور سنت سے بطریق تواتر ثابت شدہ حکم کو خبر واحد سے منسوخ کرنا ہمارے نزدیک جائز نہیں کیونکہ خبر واحد موجب علم یقینی نہیں ہے''۔

(۲) علامہ ابن عبدالبر مالکی رحمۃ اللہ علیہ (۲) تحریر فرماتے ہیں:

"والذي عليه أكثر أهل العلم منهم:أنه يوجب العمل دون العلم، وهو قول الشافعيؒ وجمهور أهل الفقه والنظر، قال أبو عمر: الذي نقول به: إنه يوجب العمل دون العلم"(۳)

(ترجمہ): ''اکثر اہل علم کا یہی کہنا ہے کہ خبر واحد عمل کا فائدہ دیتی ہے، نہ کہ علم کا، اور یہی قول امام شافعیؒ اور جمہور فقہاء کا بھی ہے، اور مالکیہ کا مختار مذہب بھی یہی ہے کہ خبر واحد موجب عمل ہے نہ کہ موجب علم''۔

---

۱۔ الفصول فی الاصول:۲/۳۶۵

۲۔ ابوعمر یوسف بن عبداللہ بن محمد بن عبدالبر نمری قرطبی مالکی جمعہ کے روز ماہ ربیع الاول ۳۶۸ھ میں پیدا ہوئے۔حصول علم کے لئے اندلس کے مشرقی اور مغربی علاقے چھان مارے۔موصوف مشہور حافظ حدیث، فقیہ، مورخ اور ادیب تھے۔اپنے دور میں حافظ مغرب کے نام سے یاد کئے جاتے تھے۔صدق، دیانت، اعتقاد، اتباع سنت نزاہت لسان کے اعتبار سے زمرہ علماء میں آپ کا خاص امتیاز ہے۔شبونہ اور شنترین کے قاضی بھی رہے ہیں، شاطبہ میں ۴۶۳ھ کو ان کا انتقال ہوا۔چند مشہور تصانیف: التمہید، الاستذکار، الاستیعاب۔مزید حالات کے لئے دیکھئے: تاریخ الاسلام:۱۰/۱۵۰۔۱۵۲، اور الاعلام:۵/۲۴۰

۳۔ التمہید لما فی الموطا من المعانی والاسانید:۱/۷

(۳) امام الحرمین جوینی شافعی رحمۃ اللہ علیہ (۱) لکھتے ہیں:

"خبر الواحد لايقتضي العلم ويوجب العمل" (۲)

(ترجمہ): "خبر واحد موجب علم نہیں البتہ عمل کو واجب کرتا ہے"۔

(۴) فخر الاسلام علامہ بزدوی حنفی رحمۃ اللہ علیہ (۳) رقمطراز ہیں:

"و هذا (أي خبر الواحد) يوجب العمل ولا يوجب العلم يقيناً عندنا." (۴)

(ترجمہ): "احناف کے نزدیک خبر واحد وجوب عمل کا فائدہ تو دیتی ہے، لیکن علم یقینی کا فائدہ نہیں دیتی"۔

---

۱۔ ابو المعالی امام الحرمین عبد الملک بن عبد اللہ بن یوسف بن عبد اللہ بن یوسف شافعی نیسابوری۔ ماہ محرم ۴۱۹ھ میں پیدا ہوئے علم کی تکمیل اپنے والد ماجد سے کی خصوصاً فقہ میں امتیاز حاصل کیا ۲۰ سال کی عمر میں والد ماجد کا انتقال ہوا تو والد کے جگہ پڑھانا شروع کیا، مزید علم کے حصول کے لئے نیسابور، مکہ مکرمہ، وغیرہ تشریف لے گئے اور ان علاقوں میں تدریسی سلسلہ کو بھی جاری رکھا۔ موصوف مشہور محدث وفقیہ، رئیس الشافعیہ گزرے ہیں، بڑے مناظر ومتکلم، بلند پایہ خطیب وواعظ تھے۔ وفات ۲۵ ربیع الاول ۴۷۹ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: الارشاد، النہایہ، البرہان۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: تاریخ الاسلام: ۳۲۵/۱۰۔۳۲۸، اور طبقات الشافعیۃ الکبری: ۱۵۸/۳

۲۔ کتاب التلخیص في اصول الفقہ: ۱۱۱/۲

۳ ابو الحسن علی بن محمد بن حسین بزدوی۔ موصوف فروع واصول میں اپنے زمانہ کے امام، شیخ حنفیہ، مرجع العلماء تھے، فقیہ کامل، محدث ثقہ اور حفظ مذہب میں ضرب المثل تھے، موصوف نے عرصہ دراز تک سمرقند میں تدریس وقضاء کے فرائض انجام دیئے۔ مؤرخین نے ان کو امام فی الدنیا فی الفروع والاصول لکھا ہے۔ وفات بخارا میں رجب ۴۸۲ھ کو ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: مبسوط، اصول بزدوی، تفسیر قرآن مجید۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الجواہر المضیہ فی طبقات الحنفیۃ: ص ۳۷۲، اور الاعلام: ۳۲۸/۴

۴۔ اصول البزدوي مع کشف الاسرار: ۶۷۸/۲

موصوف دوسرے مقام پر یوں فرماتے ہیں:

”وأما دعوى علم اليقين به، فباطل بلا شبهة؛ لأن العيان يرده من قبل أنا قد بينا أن المشهور لا يوجب علم اليقين، فهذا أولى وهذا لأن خبر الواحد محتمل لا محالة ولا يقين مع الاحتمال ومن أنكر هذا فقد سفه نفسه وأضل عقله.!“(۱)

(ترجمہ): ”جن لوگوں نے اس بات کا دعویٰ کیا ہے کہ خبر واحد سے علم یقینی حاصل ہوتا ہے، تو ان کا یہ دعویٰ بالکل بے بنیاد ہے؛ اس لئے کہ مشاہدہ اس کی تردید کر رہا ہے۔ وہ اس طرح کہ جب خبر مشہور، خبر واحد سے اوپر کے درجے کی ہے اور اس سے علم یقینی حاصل نہیں ہوتا تو خبر واحد سے بطریق اولیٰ علم یقینی حاصل نہیں ہوگا اور یہ اس وجہ سے کہ خبر واحد میں یقیناً احتمال ہوتا ہے، اور احتمال کی موجودگی میں یقین کا پایا جانا ممکن نہیں اور جو شخص اس کے باوجود اس کا انکار کرے تو وہ اپنی ذات سے بے خبر ہے۔“

(۵) شمس الائمہ علامہ سرخسی حنفی رحمۃ اللہ علیہ (۲) لکھتے ہیں:

”فإن خبر الواحد لا يوجب علم اليقين، لاحتمال غلط من الراوي وهو دليل موجب العمل“ (۳)

---

۱۔ اصول البزدوي مع كشف الاسرار: ۲/۶۹۴

۲۔ ابوبکر محمد بن احمد بن ابی سہل سرخسی حنفی، آپ نے علم اپنے وقت کے کبار علماء سے حاصل کیا، موصوف مشہور جلیل القدر محدث وفقیہ تھے، امام وقت، متکلم اصولی ومناظر تھے، آپ سے فقہاء ومحدثین کی ایک بڑی جماعت نے فقہ وحدیث میں مہارت حاصل کی۔ موصوف بڑے حق گو تھے، خاقان (بادشاہ وقت) کو بھی نصیحت کی جس کی وجہ سے اس نے کنوئیں میں قید کردیا۔ وہیں سے آپ نے اپنی مشہور ومقبول کتاب مبسوط کی املاء کرائی، ۴۹۰ھ میں انتقال ہوا، چند مشہور تصانیف: المبسوط، شرح السیر الکبیر، الجامع الکبیر، مزید حالات کے لئے دیکھئے: الأعلام ۵/۳۱۵، اور الفوائد البہیہ في تراجم الحنفیۃ: ص ۱۵۸

۳۔ اصول السرخسي: ۱/۱۱۲

(ترجمہ): ’’یقیناً خبر واحد علم یقین کو واجب نہیں کرتا؛ کیونکہ راوی سے غلطی کا احتمال ہے البتہ وجوبِ عمل کی دلیل ضرور ہے‘‘۔

(٦) امام غزالی شافعی رحمۃ اللہ علیہ ’’هل خبر الواحد يفيد العلم‘‘ کے تحت لکھتے ہیں:

’’فنقول: خبر الواحد لا يفيد العلم وهو معلوم بالضرورة؛ لأنا لا نصدق بكل ما نسمع ولو صدقنا وقدّرنا تعارض خبرين فيكف نصدق بالضدين‘‘.(١)

(ترجمہ): ’’ہمارا کہنا یہی ہے کہ خبر واحد علم کا فائدہ نہیں دیتی ہے، یہ بات تو بدیہی ہے کہ ہر سنی ہوئی خبر کی ہم تصدیق نہی کرتے، اگر ہم دو متعارض خبروں کو سچا جانیں (حالانکہ اجتماعِ ضدین ہے) تو ہم کیسے ضدین کی تصدیق کر سکتے ہیں‘‘۔

(٧) علامہ ابن العربی مالکی رحمۃ اللہ علیہ (٢) لکھتے ہیں:

’’أما الثاني الذي يوجب العمل دون العلم فهو الخبر الواحد‘‘. (٣)

---

١۔ المستصفى في علم الاصول: ١/٢٧٢

٢۔ ابوبکر محمد بن عبداللہ بن محمد بن عبداللہ ابن العربی معافیری اشبیلی سے مشہور ہیں۔ ٤٦٨ھ میں پیدا ہوئے یہ اندلس کے آخری عالم اور آخری حافظ حدیث تھے، انہوں نے مشرقی بلاد کا سفر کیا، مثلاً شام، بغداد، دمشق، مصر، بیت المقدس وغیرہ اور ہر ملک کے بڑے بڑے علماء سے علم حاصل کر کے روایت میں وسعت تامہ حاصل کی، نیز علم اصول وکلام اور دوسرے فنون میں بھی مہارت تامہ حاصل کی۔ تمام کمالات کے باوجود حسن خلق، تحمل ایذا، دوستی میں ثابت قدمی اور حسن عہد میں بلند مرتبہ کے مالک تھے۔ موصوف کو اشبیلہ کا منصب قضاء بھی سپرد تھا۔ موصوف کو درجۂ اجتہاد بھی حاصل تھا۔ حدیث، فقہ، اصول، قرآن، علوم دینیہ، نحو اور تاریخ میں بھی مہارت تامہ حاصل تھی۔ وفات ٥٤٦ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: احکام القرآن، عارضۃ الاحوذی فی شرح جامع الترمذی، الناسخ والمنسوخ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذهب في أخبار من ذهب: ٤/٣٠٨، ٣١٠، تاریخ الادب العربي: ٦/٢٧٥۔٢٧٦، اور بستان المحدثین: ص ٣٢٦۔٣٣٣

٣۔ المحصول في اصول الفقه: ١/١١٥

(ترجمہ): ''بہر حال دوسری قسم جس سے عمل ثابت ہوتا ہے نہ کہ علم، تو وہ خبر واحد ہے''۔

ملک العلماء علامہ کاسانی حنفی رحمۃ اللہ علیہ (۱) جبیرہ پر مسح کے بارے میں بحث کرتے ہوئے رقمطراز ہیں:

''ووجوب المسح على الجبائر ثبت بحديث علي b، وإنه من الآحاد، فيوجب العمل دون العلم''(۲)

(ترجمہ): ''جبیرہ پر مسح کا وجوب حدیث علیؓ سے ثابت ہے اور یہ حدیث خبر آحاد میں سے ہونے کی وجہ سے عمل کو واجب کرتا ہے نہ کہ علم کو''۔

(۸) امام رازی شافعی رحمۃ اللہ علیہ (۳) ﴿إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا﴾ (۴) کے تحت لکھتے ہیں:

---

۱۔ ابوبکر بن مسعود بن احمد کاسانی۔ موصوف کاسان میں پیدا ہوئے اور اپنے زمانہ کے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی۔ فقہ کی تکمیل علاء الدین صاحب تحفۃ الفقہاء، وغیرہ حضرات سے کی اور فقہ میں ایسا کمال بہم پہنچایا کے مرجع خلائق بن گئے، موصوف امام عصر، فقیہ کامل، جامع علوم وفنون تھے۔ آپ استحضار مذاہب میں بے نظیر تھے، موصوف نے حلب کے مدرسہ حلاویہ میں تاحیات درس دیا۔ ۵۸۷ھ میں انتقال ہوا۔ تصانیف: البدائع والصنائع۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے الاعلام: ۲/۶۴، اور تاج التراجم فی من صنف من الحنفیۃ: ص ۲۹۴۔۲۹۷

۲۔ بدائع الصنائع في ترتيب الشرائع: ۱/۱۵۵

۳۔ فخر الدین ابو عبد اللہ محمد بن عمر بن الحسین بن علی رازی شافعی ۔۲۵ رمضان ۵۴۴ھ میں پیدا ہوئے۔ ابتدائی تعلیم اپنے والد ماجد سے حاصل کی، اس کے بعد طلب علم کے لئے خوارزم، ماوراء النہر، ری اور خراسان وغیرہ کا سفر کیا اور ان علاقوں کے اعیانِ وقت سے علوم کو حاصل کیا۔ موصوف مشہور مفسر قرآن، فقیہ، اصولی، طبیب حاذق اور امام المتکلمین تھے۔ موصوف کی جلالت شان کی سب نے گواہی دی ہے۔ وعظ اور تصنیف میں موصوف کو کمال حاصل تھا، وفات ۶۰۶ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: التفسیر الکبیر، المحصول، المعالم فی اصول الدین۔ مزید حالات کے لیے دیکھیے: تاریخ الاسلام: ۱۲/۶۵۵۔۶۶۱، اور شذرات الذہب في أخبار من ذہب: ۵/۹۲۔۹۳

۴۔ البقرہ: ۲۴۶

"أما خبر الواحد فإ نه لا يفيد إ لا الظن". (۱)

(ترجمہ): "بہرحال خبر واحد تو ظن ہی کا فائدہ دیتی ہے"۔

(۹) علامہ ابن قدامہ مقدسی حنبلی رحمۃ اللہ علیہ (۲) فرماتے ہیں:

" اختلف الرواية،عن إما منا في حصول العلم بخبر الوا حد، فروى أ نه لا يحصل به وهوقول الأكثرين والمتأخرين من أصحا بنا ل؛أ نا نعلم ضرورة أ نا لا نصدق كلّ خبرٍنسمعه، ولو كان مفيدا للعلم، لما صح ورود خبرين متعارضين لاستحا لة اجتماع الضد ين ،ولجاز نسخ القرأن والأخبارالمتواترة؛ به لكو نه بمنز لتها في إفادة ا لعلم، وَلَوَجَبَ الحكم بالشاهدالوا حد، ولاستوى في ذلك العدلُ والفاسقُ كما في المتواتر .

وروى عن أ حمد أ نه قال في أ خبار الرؤية يقطع على العلم بها وهذايحتمل أ ن يكون فى أخبار الرؤ ية وما أ شبهها مما كثرت روا ته وتلقته الأمة با لقبول ودلت القرائن على صدق ناقله فيكون إذن من المتواتر،إذليس للمتواتر عدد محصور"(۳)

ابن قدامہ رحمہ اللہ کی اس عبارت کا خلاصہ یہ ہے کہ امام احمد بن حنبلؒ سے

---

۱۔ التفسیر الکبیر:۵۰۲/۲

(۲) ابو محمد عبد اللہ بن احمد بن محمد بن قدامہ مقدسی حنبلی شعبان ۵۴۱ھ میں پیدا ہوئے ۵۵۱ھ میں دمشق آئے یہاں علوم دینیہ کی تکمیل کی اور ان علوم میں کمال حاصل کیا۔ موصوف کا شمار اپنے عصر کے نامور فقہاء اور محدثین میں تھا۔ ابن کثیر لکھتے ہیں: موصوف امام اور ایسے زبردست عالم تھے کہ ان کے زمانہ ہی میں کیا ان سے بہت پہلے بھی کوئی ان سے زیادہ فقیہ نہ ہوا۔ وفات ۶۱۰ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: المغنی، روضۃ الناظر، کتاب الاعتقاد۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ:۱۲۷/۱۵۔۱۲۹، اور شذرات الذهب في أخبار من ذهب:۱۷۹/۵۔۱۸۳

۳۔ روضۃ الناظر وجنۃ المناظر: ص۵۲

اس بارے میں اگرچہ دو قول نقل کئے گئے ہیں، لیکن صحیح و معتمد قول وہی ہے جس کی تصریح خود یہاں کر رہے ہیں کہ خبرِ واحد علم کا فائدہ نہیں دیتی اور یہی جمہور متقدمین و متاخرین حنابلہ کا مختار مذہب ہے اور پھر اپنی اس رائے کی تائید کے لئے پانچ دلیلیں ذکر کی ہیں۔

(۱) اگر خبرِ واحد علم کا فائدہ دیتی ہوتی، تو ہر خبر کی تصدیق ہم پر ضروری ہوتی، حالانکہ ایسا نہیں، بسا اوقات ثقات کی خبر ہمارے سامنے آتی ہے لیکن ہم اس کی تصدیق نہیں کرتے۔

(۲) اخبارِ آحاد آپس میں متعارض بھی ہوتی ہیں اور قطعیات میں کوئی تعارض نہیں ہوتا۔ اگر خبرِ واحد علم کا فائدہ دیتی ہوتی تو ان کے درمیان ہرگز تعارض واقع نہ ہوتا۔

(۳) گر اخبارِ آحاد علم کا فائدہ دیتیں تو قواعدِ کلیہ قرانیہ اور خبرِ متواتر کے مقابلے میں انہیں ترک نہ کیا جاتا؛ کیونکہ پھر یہ بھی علم کا فائدہ دیتیں، حالانکہ ایسا نہیں ہے۔ اور اس صورت میں خبرِ واحد سے نسخِ قرآن و خبرِ متواتر جائز ہوتا جبکہ اس کا کوئی بھی قائل نہیں۔

(۴) خبرِ متواتر میں فاسق و عادل برابر سمجھے جاتے ہیں، اگر خبرِ واحد علم کا فائدہ دیتی تو اس میں بھی فاسق و عادل کو برابر سمجھا جاتا، حالانکہ ایسا نہیں۔

(۵) معاملات میں دو گواہ مقرر کئے گئے ہیں تب جا کر کہیں یقین حاصل ہوتا ہے، اگر خبرِ واحد علم کا فائدہ دیتی، تو ایک گواہ بھی کافی تھا دو کی ضرورت ہی نہ ہوتی۔

جہاں تک امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ کا دوسرا قول ہے، اس کی یہ توجیہ بیان کی ہے، کہ یہ وہ اخبارِ آحاد ہیں جن کو تلقی بالقبول کا درجہ حاصل ہے یا وہ محتف بالقرائن ہیں، چنانچہ ان وجوہ کی وجہ سے یہ اخبارِ آحاد پھر اخبارِ آحاد نہیں رہتیں بلکہ وہ بمنزلہ متواتر بن جاتی ہیں"۔

(۱۰) علامہ محمود بخاری حنفی رحمۃ اللہ علیہ (۱) صاحب المحیط البرہانی لکھتے ہیں:

---

۱۔ برہان الدین محمود بن احمد بن عبد العزیز بن عمر بخاری حنفی۔ موصوف مرغینان کے ایک علمی گھرانے میں پیدا ہوئے، علوم کی تحصیل و تکمیل اپنے والد اور چچا سے کی، امت کے کبار علماء میں آپ کا شمار ہوتا ہے، موصوف جلیل القدر فقیہ، اختلافاتِ علماء کے بڑے عالم اور تصنیف و تالیف کی بڑی بصیرت رکھنے والے تھے۔ آپ کے فضل، صدق، زہد و ورع پر اتفاق ہے۔ موصوف کی وفات ۶۱۶ھ کو ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: المحیط البرہانی، الذخیرہ، التجرید، مزید حالات کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۱۶۱/۷

"وهذا الخبر من جملة أخبار الآحاد، وخبر الواحد يوجب العمل دون العلم"(۱)

(ترجمہ): "اور یہ خبر جملہ اخبار آحاد میں سے ہے، اور یہ تو معلوم ہی ہے کہ خبر واحد سے عمل ثابت ہوتا ہے نہ کہ علم یقین"۔

(۱۱) علامہ نسفی حنفی رحمۃ اللہ علیہ (۲) لکھتے ہیں:

"وأما دعوى علم اليقين به فباطل، لأنا قد بينا أن المشهور لا يوجب علم اليقين، فخبر الواحد أولى، وهذا! لأنَّ خبرَ الواحد محتمل في نفسه، وكيف يثبت اليقين مع وجود الاحتمال."(۳)

(ترجمہ): "بہرحال اس بات کا دعوی کرنا کہ خبر واحد سے علم یقینی حاصل ہوتا ہے، تو ان کا یہ دعوی بالکل بے بنیاد ہے؛ کیونکہ ہم پہلے عرض کر چکے ہیں: کہ جب خبر مشہور (جو خبر واحد سے اوپر کے درجے کی ہے) اس سے علم یقینی حاصل نہیں ہوتا، تو خبر واحد سے بطریق اولی علم یقینی حاصل نہیں ہوگا، اور وجہ اس کی یہی ہے کہ خبر واحد میں بذات خود احتمال موجود ہے، اور احتمال کی موجودگی میں یقین کا پایا جانا ممکن نہیں"!!

---

۱۔ المحيط البرهاني في الفقه النعماني: ۹۶/۳

۲۔ ابو البرکات حافظ الدین عبد اللہ بن احمد بن محمود نسفی حنفی، موصوف نے علوم کی تحصیل و تکمیل اپنے وقت کے اکابر علماء امت سے کی، آپ مشہور محدث وفقیہ ومفسر تھے، آپ نے فقہ حنفی اور علوم قرآن کی بڑی خدمت انجام دی ہے، وفات ۷۰۱ھ یا ۷۱۰ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: مدارک التنزیل، کنز الدقائق، المنار، مزید حالات کے لئے دیکھئے: الدرر الكامنة في أعيان المائة الثامنة: ۱۵۱/۲۔ تاج التراجم في من صنف من الحنفية: ص ۱۱۱۔۱۱۲، اور الاعلام: ۶۷/۴

۳۔ کشف الاسرار بشرح المنار: ۱۹/۲

(۱۲) علامہ زیلعی حنفی رحمۃ اللہ علیہ (۱) صاحب تبیین الحقائق رقمطراز ہیں:

"لأن خبر الواحد يوجب العمل دون العلم". (۲)

(ترجمہ): "اس لئے کہ خبر واحد عمل کو ثابت کرتا ہے نہ کہ علم کو"۔

(۱۳) علامہ تاج الدین سبکی شافعی رحمۃ اللہ علیہ (۳) رقمطراز ہیں:

"النص قسمان: أحاد لا يفيد إلا الظن ومتواتر وهو مقطوع.." (۴)

(ترجمہ): "نص کی دو قسمیں ہیں: آحاد: جو ظن کا فائدہ دیتی ہیں۔ متواتر: جو یقین کا فائدہ دیتی ہے"۔

(۱۴) علامہ نووی شافعی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"وخالفه المحققون والأكثرون، فقالوا: يفيد الظن ما لم يتواتر." (۵)

(ترجمہ): "جمہور محققین نے حافظ ابن الصلاح رحمہ اللہ سے اس بارے میں اختلاف کیا ہے اور یہ فرمایا ہے کہ خبر واحد جب تک متواتر نہ ہو اس وقت تک ظن کا فائدہ دیتی ہے"۔

---

۱۔ ابو محمد عثمان بن علی بن محجن زیلعی حنفی، آپ نے اپنے زمانہ کے کبار علماء سے علم حاصل کیا، موصوف بڑے محدث وفقیہ اور نحوی تھے ۷۰۵ھ میں قاہرہ آئے تدریس، افتاء اور تنقید و تحقیق علمی میں مشغول ہوئے اور اپنے زمانہ میں خاص امتیاز پایا بڑے بڑے علماء نے آپ سے استفادہ کیا، موصوف کی وفات ۷۴۳ھ میں ہوئی، چند مشہور تصانیف: تبیین الحقائق شرح کنز الدقائق، شرح جامع الکبیر، شرح المختار ترجمہ کے لئے دیکھئے: الفوائد البہیہ تراجم الحنفیۃ: ص ۱۱۵۔۱۱۶، اور تاج التراجم فی من صنف من الحنفیۃ: ص ۱۴۴

۲۔ تبیین الحقائق شرح کنز الدائق: ۵۹/۲

۳۔ ابو نصر عبد الوہاب بن تقی الدین بن زین الدین سبکی شافعی ۷۲۷ھ کو مصر کے ایک علمی گھرانہ میں پیدا ہوئے۔ بچپن میں قرآن حفظ کیا۔ موصوف نے تحصیل علم اپنے زمانہ کے اساطین علم سے کیا، جیسے علامہ مزی اور علامہ ذہبی وغیرہ۔ موصوف بہت ہی کم عمری میں تدریس وافتاء میں مشغول ہو گئے تھے۔ وفات ۷۷۱ھ ذی الحجہ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: طبقات الشافعیۃ الکبری، جمع الجوامع فی اصول الفقہ، الاشباہ والنظائر فی الفروع۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذهب في أخبار من ذہب: ۲۲۰/۶، اور الاعلام: ۱۸۴/۴

(۴) الابہاج فی شرح المنہاج: ج ۱: ۳۸

(۱۵) علامہ سعد الدین تفتازانی رحمۃ اللہ علیہ (۱) رقمطراز ہیں

" وا لأولى أن لا يقتصر على عدد في التسمية فقد قال الله تبارك وتعالى: ( منهم من قصصنا عليك ومنهم من لم نقصص عليك )، ولا يؤمن في ذكر العدد أن يدخل فيهم مَنُ ليس منهم ، أن ذكر عدد أكثر منهم أو يخرج منهم من هو فيهم ، أن ذكر أقل من عدد هم يعني أن خبر الواحد على تقدير اشتما له على جميع الشرائط المذكورة في أصول الفقه لا يفيد إلا الظن ، ولا عبرة با لظن في باب الا عتقا د يات . " (۲)

(ترجمہ): "بہتر یہی ہے کہ حضرات انبیاء کرام علیہم الصلاۃ والسلام کی تعداد کسی عدد میں محصور نہ کی جائے ، کیونکہ باری تعالی کا ارشاد مبارک ہے: "ہم نے بعض حضرات انبیاء کرام علیہم الصلوۃ والسلام کے حالات آپ کو بتائے ہیں اور بعض کے احوال نہیں بتائے"۔

اور عدد اگر ان کے صحیح عدد اور تعداد سے زیادہ ذکر کیا گیا تو ہوسکتا ہے کہ غیر نبی کو نبی مان لیا جائے اور اگر ان کی صحیح تعداد سے کم عدد بیان کیا گیا تو ہوسکتا ہے کہ کسی نبی کی نبوت کا انکار لازم آئے ، یعنی خبر واحد اگر چہ تمام ان شرائط سے موصوف ہو جو اصول فقہ میں بیان ہوئی ہیں تب بھی یہ ظن ہی کا فائدہ دیگی اور اعتقادیات میں ظن کا سرے سے کوئی اعتبار نہیں ہے"۔

---

۱۔ سعد الدین مسعود بن عمر بن عبد اللہ تفازانی ۔خراسان کے شہر تفتازان میں ۷۱۲ھ کو پیدا ہوئے تحصیل علم اپنے زمانہ کے کبار علماء امت سے کیا۔ موصوف عربیت بلاغت اور منطق میں مسلم امام تھے۔ بقول حافظ ابن حجرؒ کے کہ علم بلاغت کی انتہاء ان پر ہے۔ ان کے بعد ایسا کوئی شخص نہیں آیا، وفات ۷۹۲ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: مختصر المعانی ،شرح عقائد، المطول، مزید حالات کے لئے دیکھئے: الدرر الکامنہ فی اعیان المائۃ الثامنۃ: ۲۱۴/۴ ، اور الاعلام: ۲۹/۷

۲۔ شرح عقائد: ص ۱۳۹۔۱۴۰

(۱۶) علامہ زرکشی شافعی رحمۃ اللہ علیہ [۱] نے لکھا ہے:

"خبر الواحد یوجب العمل دون العلم" [۲]

(ترجمہ): ''خبر واحد عمل کو ثابت کرتا ہے نہ کہ علم کو''۔

(۱۷) محقق ابن ہمام حنفی رحمۃ اللہ علیہ [۳] ''مسایرہ'' میں اور کمال الدین ابن ابی شریف

---

۱۔ بدرالدین محمد بن بہادر بن عبداللہ زرکشی شافعی۔ آپ ۷۴۵ھ میں پیدا ہوئے۔ اپنے زمانہ کے ارباب کمال سے علم حاصل کیا۔ موصوف مشہور محدث وفقیہ ومفسر تھے۔ آپ نے فقہ شافعی اور علوم قرآن کی بڑی خدمت انجام دی ہے۔ وفات ۷۹۴ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: النکت علی کتاب ابن الصلاح، التجرید، شرح منہاج۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الدرر الکامنۃ في اعیان المائۃ الثامنۃ: ۳/۲۴۱۔۲۴۲، اور شذرات الذہب في أخبار من ذہب: ۷/۸۵

۲۔ البحر المحیط في اصول الفقہ: ۳/۳۲۳

۳۔ کمال الدین محمد بن عبد الواحد بن عبد الحمید بن مسعود سیواسی قاہری حنفی جو ابن ہمام کے نام سے مشہور ومعروف ہیں۔ ابن ہمام ایک علمی خاندان کے چشم وچراغ تھے، ان کی ولادت ۷۹۰ھ میں ہوئی ہے۔ بچپن میں قاہرہ آگئے اور مختصرات فنون کو یاد کر کے استادوں کو سنایا اور پھر وطن سے واپس آکر قاہرہ میں علوم عقلیہ اور نقلیہ کی تحصیل اہل فن علماء وفضلاء سے کی۔ موصوف نے ان جملہ فنون میں درجۂ کمال حاصل کیا۔ پھر درس وتدریس کا مشغلہ اختیار کیا۔ سلطان اشرف نے اپنے مدرسہ میں منصب تدریس کے لئے ان ہی کا انتخاب کیا۔ ان کی جلالتِ علمی، وسعتِ نظر، ژرف نگاہی، تقوی اور پرہیز گاری کا تمام اہل عصر نے اعتراف کیا ہے۔ موصوف اپنے زمانہ میں اپنے علوم میں یگانہ تھے۔ دور دور تک ان کا شہرہ اور چرچا تھا۔ چھوٹوں کا تو ذکر ہی کیا، ان کے بہت سے شیوخ نے ان کو اپنے پر فضیلت دی ہے۔ متعدد مدرسوں میں درس دیا، اصول، تفسیر، فقہ، فرائض، حساب، تصوف، نحو، صرف، معانی، بیان، بدیع، منطق، مناظرہ اور ادب میں امام تھے۔ جمعہ کے دن ۷ رمضان المبارک ۸۶۱ھ میں انتقال ہوا۔ چند مشہور تصانیف: فتح القدیر، التحریر، مسایرہ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذہب فی اخبار من ذہب ۷/۴۳۵۔۴۳۷، اور الفوائد البہیہ فی تراجم الحنفیہ: ص ۱۸۰۔۱۸۱، اور الاعلام: ۶/۲۵۵

شافعی رحمۃ اللہ علیہ [۱] اس کی شرح ''مسامرہ'' میں لکھتے ہیں:

''ولا ينبغي في الإيمان با لأنبياء القطع بحصر هم في عدد هم، إذ لم يرد بحصرهم دليل قطعي ؛لأن الحديث الوارد في ذلك أي في عدد هم خبر واحد لم يقترن بما يفيد القطع'' [۲]

(ترجمہ): ''حضرات انبیاء علیہم الصلوۃ السلام پر ایمان لانے کے سلسہ میں یہ مناسب نہیں ہے کہ قطعیت کے ساتھ ان کی تعداد کو کسی عدد میں منحصر سمجھا جائے کیونکہ ان کے کسی عدد میں منحصر ہونے پر کوئی قطعی دلیل وارد نہیں ہوئی اور جو حدیث اس بارے میں وارد ہے وہ خبر واحد ہے جس سے قطعیت کا ثبوت نہیں ملتا''۔

علامہ ابن نجیم حنفی رحمۃ اللہ علیہ [۳] باب المسح علی الخفین کے تحت لکھتے ہیں:

---

۱۔ ابو المعالی ابن ابی شریف محمد بن محمد ابی بکر بن علی مقدسی شافعی۔ بروز ہفتہ ۵ ذی الحجہ ۸۲۲ھ میں پیدا ہوئے۔ بچپن میں قرآن مجید حفظ کرنے کے بعد اپنے زمانہ کے اعیان سے علوم وفنون میں مہارت تامہ حاصل کی۔ موصوف کو مورخین نے ان الفاظ کے ساتھ یاد کیا ہے۔ شیخ الأئمہ، شیخ الاسلام، ملک العلماء، موصوف مشہور فقیہ اور اصولی تھے۔ وفات ۹۰۶ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: المسامرہ شرح مسایرہ، الفرائد فی حل شرح العقائد۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے شذرات الذہب فی اخبار من ذہب: ۶۲/۸۔ ۶۳، اور الاعلام: ۵۳/۷

۲۔ المسامرہ شرح المسایرہ: ص ۱۹۰، ۱۹۱

۳۔ زین الدین بن ابراہیم بن محمد بن محمد۔ موصوف نے قاسم بن قطلو بغا حنفی وغیرہ سے علوم کی تحصیل وتکمیل کی۔ آپ کو ان الفاظ کے ساتھ یاد کیا گیا ہے، امام اعلام، بحر فہامہ، وحید دہر، فرید عصر، عمدۃ العلماء، قدوۃ الفقہاء، خاتم المحققین والمفتیین۔ موصوف نے بہت سے کتب ورسائل لکھے۔ آپ کی سب کتابیں بہترین نوادر علمی تحقیقات وتدقیقات کی حامل ہے۔ موصوف کی وفات ۹۷۰ھ کو ہوئی ہے۔ چند مشہور تصانیف: البحر الرائق شرح کنز الدقائق، الاشباہ والنظائر، شرح المنار، مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذہب في أخبار من ذہب: ۴۲۱/۸۔ ۴۲۲، اور الاعلام: ۶۴/۳

"وحديث علي رض من أخبار الآحاد،فأوجب العمل دون العلم". (۱)

(ترجمہ): ''اور حدیثِ علیؓ اخبار آحاد میں سے ہے جو عمل کو ثابت کرتا ہے نہ کہ علم کو''۔

(۱۸) علامہ امیر بادشاہ رحمۃ اللہ علیہ (۲) لکھتے ہیں:

"بأن روى ثقة أن الصحابة أجمعوا على كذا ،فإنه بمنزلة السنة المنقولة بالآحادفيوجب العمل لا العلم عند العلماء."(۳)

(ترجمہ): ''اگر کوئی ثقہ شخص یہ نقل کرے کہ صحابہ رضی اللہ عنہم کا فلاں بات پر اجماع تھا، تو یہ اجماع علماء کے نزدیک اس سنت کے مانند ہے جو آحاد سے منقول ہو کر عمل کو واجب کرتا ہے نہ کہ علم کو''۔

(۱۹) علامہ ملا علی قاری حنفی رحمۃ اللہ علیہ تحریر فرماتے ہیں:

" نعم الأولى أن لا يقتصر على الأعداد فإن الآحادلا تفيد الاعتماد في الاعتقاد بل يجب كما قال الله تعالىٰ (كل امن بالله وملئكته،وكتبه ،ورسله) أن يؤمن إيمانا إجماليا من غير تعرض لتعدد الصفات ،وعدد الملئكةوالكتب والأنبياء وأرباب الرسالة من الأصفياء."(۴)

۱۔ البحر الرائق شرح کنز الدقائق ۱/۳۲۱

۲۔ محمد بن امین بن محمود بخاری۔ موصوف نے علوم کی تکمیل اپنے زمانہ کے اکابر علماء سے کی۔ آپ مشہور فقیہ، محقق اور مدقق تھے۔ موصوف کی وفات ۹۷۲ھ میں ہوئی۔ تصانیف: تیسر التحریر شرح التحریر مزید حالات کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۶/۴۱

۳۔ تیسر التحریر شرح التحریر: ۳/۳۷

۴۔ شرح فقہ اکبر: ص ۵۷

(ترجمہ): ''ہاں مناسب یہی ہے کہ حضرات انبیاء کرام علیہم الصلوۃ والسلام کی تعداد کسی معین عدد میں محصور نہ کی جائے؛ کیونکہ خبر واحد پر اعتقادیات کے باب میں کوئی اعتماد نہیں کیا جا سکتا؛ بلکہ یہی واجب ہے کہ فرشتوں، کتابوں، انبیاء ورسل کی تعداد وصفات سے تعرض کئے بغیر اجمالی طور پر ایمان لایا جائے، جیسا کہ اللہ تعالی نے ارشاد فرمایا:

''تو کہہ کہ سب ایمان لائے اللہ تعالی پر اور اللہ تعالی کے فرشتوں پر اور اس کی کتابوں پر اور اس کے رسولوں پر''۔

(۲۰) علامہ عبدالحی لکھنوی حنفی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

" والصحيح المختار عند الجمهور هو الأول: أنه يوجب العمل دون العلم."[۱]

(ترجمہ): ''جمہور کے ہاں صحیح اور مختار قول وہ پہلا ہی ہے: کہ خبر واحد موجب عمل ہے نہ کہ موجب علم''۔

(۲۱) علامہ عبدالقادر دمشقی حنبلی رحمۃ اللہ علیہ[۲] فرماتے ہیں:

" عن الامام أحمد بن حنبل رحمه الله في حصول العلم بخبر الواحد قولان، أحدهما: لا يحصل العلم به وهو قول الأكثرين والمتأخرين من أصحابه، قال الطوفي رحمه الله وهو الأظهر من

۱۔ ظفر الامانی بشرح سید شریف جرجانی: ص ۶۱

۲۔ عبد القادر بن احمد بن مصطفیٰ بن عبد الرحیم بن محمد بدران دمشق کے قریب دومہ مقام میں پیدا ہوئے۔ اور اپنی زندگی یہی بسر کی۔ موصوف مذہب حنبلی کے مشہور فقیہ، اصولی، ادیب، مورخ اور شاعر تھے، خوش اخلاق، بہت تھوڑے پر قناعت کرنے والے۔ دمشق میں عرصہ تک قضاء کے فرائض انجام دیئے۔ وفات ۱۳۴٦ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: المدخل الی مذہب الامام احمد بن حنبل، شرح روضۃ الناظر لابن قدامہ، تہذیب تاریخ ابن عساکر۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۴/ ۳۷

القو لیین۔ الثاني: یحصل به العلم و هو قول جماعة المحدثین قال الآ مدي[٣]: وهوقول بعض أ هل الظا هر، وحمل بعض العلماء قول الإمام أحمد[٣] الثاني علی أخبار مخصوصة کثرت روا تها و تلقتها الأمة با لقبول ، و دلت القرا ئن علی صدق نا قلها ، فیکون إذن من المتواتر"[١]

(ترجمہ): "ابن بدران رحمۃ اللہ علیہ نے بھی اس بارے میں امام احمد رحمۃ اللہ علیہ سے دوقول نقل کئے ہیں: ایک قول یہ کہ خبر واحد علم کا فائدہ نہیں دیتی ہے اور یہی جمہور متقدمین ومتاخرین حنابلہ کا مذہب ہے، امام طوفی رحمۃ اللہ علیہ[٢] جو مشہور حنبلی فقیہ ہیں، وہ انتہائی یقین سے بتا رہے ہیں کہ امام احمد رحمۃ اللہ علیہ سے ظاہری قول یہی ہے (جس کو ابن قدامہ اور ابن بدران نے نقل کیا ہے) کہ خبر واحد علم کا فائدہ نہیں دیتی ہے۔ جہاں تک دوسرا قول ہے: تو یہ محدثین کی ایک جماعت، اور بعض اہل ظاہر کا مذہب ہے کہ خبر واحد علم کا فائدہ دیتی ہے۔

امام احمد رحمۃ اللہ علیہ کا جو دوسرا قول ہے کہ خبر واحد علم کا فائدہ دیتی ہے، امام آمدی رحمۃ اللہ علیہ[٣] کا یہی کہنا ہے کہ بعض علماء نے اس قول کو ان اخبار آحاد پر محمول کیا ہے جن کو تلقی بالقبول کا

---

١۔ المدخل: ١/٢٠٤

٢۔ ابو الربیع سلیمان بن عبد القوی بن عبد الکریم طوفی حنبلی ۶۵۷ھ کو بغداد کے قریب مقام طوف میں پیدا ہوئے۔ اپنے زمانہ کے اعیان وقت سے علم حاصل کیا، موصوف مذہب حنبلی کے مشہور فقیہ تھے، قوی حافظہ کے مالک، زکی اور فطین، کثیر المطالعہ۔ رجب ۷۱۶ھ کو وفات پا گئے۔ چند مشہور تصانیف: بغیۃ السائل فی امہات المسائل، الاکسیر فی قواعد التفسیر، معراج الوصول۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الدرر الکامنۃ في أعیان المائۃ الثامنۃ: ٢/٩١۔٩٢، اور الأعلام: ٣/١٢٧۔١٢٨

٣۔ ابو عبد اللہ محمد بن عثمان بن یوسف بن محمد بن الحداد آمدی موصوف نے علم اپنے زمانہ کے کبار علماء امت سے حاصل کیا، آپ مذہب حنبلی کے مشہور امام، فقیہ اور محدث تھے، ایک عرصہ دراز تک دمشق اور حلب میں خطیب رہے۔ معاصرین نے موصوف کی بہت مدح سرائی کی ہیں ۷۲۴ھ کو وفات پا گئے۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الدرر الکامنۃ في اعیان المائۃ الثامنۃ: ٤/٢٩، اور شذرات الذہب في أخبار من ذہب: ٦/٢٢١۔٢٢٢

درجہ حاصل ہے یا وہ محتف بالقرائن ہیں، تو اس صورت میں یہ اخبار آحاد بمنزلہ متواتر بن جاتی ہے"۔

یہاں یہ بات بھی ملحوظ خاطر رہے! کہ امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ کا اس بارے میں وہی مسلک ہے جو جمہور کا ہے، جیسا کہ مذکورہ عبارتوں سے واضح ہو چکا، مگر بعض حضرات نے امام احمد رحمۃ اللہ علیہ کی طرف اس قول کو منسوب کیا ہے کہ ان کے نزدیک خبر واحد مطلقا علم کا فائدہ دیتی ہے، ان حضرات میں علامہ عبدالعزیز بخاری رحمۃ اللہ علیہ (1)، علامہ سبکی رحمۃ اللہ علیہ اور علامہ امیر الحاج (2) وغیرہ شامل ہیں۔ تاہم جمہور حنابلہ میں سے کسی نے بھی اس قول کی تائید نہیں کی ہے، بلکہ صریح عبارتوں کے ذریعے اس بات کو ثابت کیا ہے کہ امام احمد رحمۃ اللہ علیہ کے نزدیک بھی خبر واحد علم کا فائدہ نہیں دیتی ہے، الا یہ کہ وہ محتف بالقرائن ہو یا اس کو تلقی بالقبول کا درجہ حاصل ہو، (اور یاد رہے کہ ان صورت میں تو جمہور بھی اس کے قائل ہیں کہ ان صورتوں میں خبر واحد علم کا فائدہ دیتی ہے) ان حضرات میں مشہور فقیہ ابن قدامہ، علامہ طوفی اور ابن بدران وغیرہ شامل ہیں اور یہ تمام حضرات فقہ اور اصول میں مذہب حنبلی کے ترجمان ہونے کے ساتھ ساتھ " صاحب البیت أدری بما فیہ" کے مصداق بھی ہیں۔

---

۱۔ عبدالعزیز بن احمد بن محمد بخاری حنفی۔ مصوف نے تفقہ اپنے چچا محمد بن محمد فخر الدین اور دوسرے حضرات سے حاصل کیا، موصوف مشہور حنفی فقیہ اور علماء اصول میں سے تھے۔ ۷۳۰ھ کو اس دنیا فانی سے کوچ کر گئے۔ چند مشہور تصانیف: کشف الاسرار، شرح منتخب الحسامی، کتاب الافنیہ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۱۵/۴، اور الجواہر المضیہ: ص ۳۱۷۔۳۱۸

۲۔ محمد بن محمد بن محمد حنفی جو ابن امیر الحاج کے نام سے مشہور ہیں۔ موصوف حلب کے جلیل القدر عالم حدیث، تفسیر وفقہ اور امام وقت علامہ ومصنف تھے۔ آپ سے بڑے بڑوں نے علم حاصل کیا اور آپ کی شاگردی پر فخر کیا ہے، وفات ۸۷۹ھ میں ہوی۔ چند مشہور تصانیف: التقریر والتحبیر ذخیرۃ الفقر فی تفسیر سورۃ العصر منیۃ الناسک فی خلاصۃ المناسک۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذہب فی اخبار من ذہب: ۳۲۸/۷، اور الاعلام: ۴۹/۷

اسی طرح شارح ''مسلم الثبوت'' بحر العلوم (۱) نے بھی اس نظریہ کی سختی سے تردید کی ہے ،کہ امام احمد رحمۃ اللہ علیہ کی طرف یہ نسبت کرنا ( کہ وہ علی الاطلاق خبر واحد سے علم حاصل ہونے کے قائل ہیں ) کسی طرح بھی درست نہیں۔

(۲۲) چنانچہ موصوف رقمطراز ہیں:

"وهذا بعيد عن مثله ، فإنه مكابرة ظاهرة." (۲)

(ترجمہ): ''کہ ایسی عظیم الشان ہستیوں سے ایسے قول کا صدور ممکن نہیں ، بلکہ مخالفت وعناد ہی کی بنیاد پر اس قول کی نسبت ان کی طرف کی گئے ہے''۔

خلاصہ کلام یہ کہ امام احمدؒ کے نزدیک بھی خبر واحد علم کا فائدہ نہیں دیتی ،اور جہاں بھی اس قول کی نسبت ان کی طرف کی ہے، وہاں وہ اخبار آحاد مراد ہوں گی، جو محتف بالقرائن ہونے ، یا تلقی بالقبول کا درجہ حاصل ہونے کی بنا پر علم کا فائدہ دیتیں ہیں، چنانچہ اس بارے میں فقہاء ومحدثین، جیسے امام احمد، امام الحرمین ،امام غزالی ، امام آمدی ، امام رازی ، ابن حاجب (۳) ، ابن ہمام اور

---

۱۔ عبدالعلی بن نظام الدین بن قطب الدین انصاری لکھنوی حنفی۔ لکھنو میں پیدا ہوئے۔ والد سے علم حاصل کیا، اور سترہ سال کے عمر میں فارغ ہو گئے تھے، موصوف کو مورخین نے ان الفاظ کے ساتھ یاد کیا ہے۔ بحر العلوم ، ملک العلماء، رأسا فی الفقه والاصول، جوالا فی المنطق ،والحکمۃ، والکلام، مجتهدا فی الفروع ماہرا فی التصوف والفقه۔ ساری زندگی تدریس وتالیف میں مشغول رہے۔ وفات ۱۲۲۵ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: فواتح الرحموت الارکان الاربعہ، تنویر المنار شرح منار الاصول،۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر: ۳۱۲/۷۔ ۳۱۸

۲۔ فواتح الرحموت شرح مسلم الثبوت: ۱۴۸/۲

۳۔ ابوعمرو ابن الحاجب عثمان بن عمر بن ابی بکر کردي اسنائي مالكي ۵۷۰ھ کے اواخر میں پیدا ہوئے۔ قاہرہ میں اپنی تعلیمی سلسلہ کو شروع کیا، سب سے پہلے قرآن مجید کو حفظ کیا، اور قرأت کا کچھ حصہ علامہ شاطبی سے بھی پڑھا، قرأت سبع علی ابی الجود سے پڑھا۔ موصوف مشہور نحوی، فقیہ، اصولی، اور عربیت میں بھی کمال حاصل کیا، موصوف کو مورخین نے ان الفاظ کے ساتھ یاد کیا ہے: فقیہ، مفتی، مناظر، مبرز فی عدۃ علوم، متبحر مع ثقۃ ودین وورع وتواضع۔ مصر کے مدرسہ فاضلیہ میں تدریس کے فرائض انجام دیئے، وفات ۶۴۶ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: الکافیہ، مختصر الفقه، جامع الامہات۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: تاریخ الاسلام: ۸۴۷/۱۳۔ ۸۴۸، اور شذرات الذهب في أخبار من ذهب: ۳۵۹/۵

امیر الحاج رحمہم اللہ کی تصریحات موجود ہیں۔ (۱)

(۲۳) حضرت علامہ انور شاہ کشمیری حنفی رحمۃ اللہ علیہ (۲) رقمطراز ہیں:

" إنَّ خبر الواحد لايفيد إلاالظن فعملنابه معاملة الظن. "(۳)

(ترجمہ): ''خبر واحد چونکہ ظن کا فائدہ دیتی ہے اس لئے اس کے ساتھ ہم نے ظن والا معاملہ کیا''۔

(۲۴) علامہ شبیر احمد عثمانی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"أن أخبار الآحاد مع تجردها عن القرائن تفيد الظن، والمتواتر يفيدعلم اليقين. "(۴)

(ترجمہ): ''ایسی اخبار آحاد جوقرائن سے خالی ہوظن کا فائدہ دیتی ہیں، اور خبر متواتر علم یقینی کا''۔

---

۱۔ التقریر والتحبیر :۲/۳۴۶ روضۃ الناظر:ص۵۲ المدخل:۱/۲۰۴ شرح کوکب المنیر :۲/۳۴۸ التمہید: ۳/۸۳

۲۔ محمد انور شاہ بن مولانا محمد معظم شاہ بن شاہ عبد الکریم بن شاہ عبد الخالق کشمیری حنفی۔موصوف کی ولادت ۲۷ شوال ۱۲۹۲ھ میں بمقام وُدوان (علاقہ لولان) میں ہوئی،موصوف کے والد ماجد بہت بڑے عالم ربانی،زاہداور کشمیر کے نہایت مشہور خاندانی پیرومرشد تھے،آپ نے قرآن مجید اور بہت سی فارسی وعربی کی درسی کتابیں والد ماجد سے پڑھیں، پھر کشمیر وہزارہ کے دوسرے علماء کبار سے تحصیل کے بعد ۱۳۰۸ھ میں تکمیل کے لئے دیوبند تشریف لائے۔موصوف نہایت عظیم القدر محدث،محقق ومدقق،جامع معقول ومنقول تھے،موصوف کا جس طرح علم وفضل،تبحر،وسعت مطالعہ،زہدوتقوی بے نظیر اور نمونہ سلف تھا اس طرح قوت حافظہ بھی بے مثل تھا اور وہ گویا ان منکرین حدیث کا جواب تھا جو محدثین کے حافظ پر اعتماد نہ کر کے ذخیرہ حدیث کو مشتبہ نظروں سے دیکھتے ہیں۔وفات ۱۳۵۲ھ میں ہوئی۔چند مشہور تصانیف:فیض الباری،العرف الشذی علی جامع الترمذی،نیل الفرقدین۔مزید حالات کے لئے دیکھئے:انوارالباری شرح صحیح البخاری:۱/۲۱۸۔۲۴۲

۳۔ العرف الشذي علی جامع الترمذي:ص ۱۹۸

۴۔ فتح الملہم شرح صحیح مسلم:۱/۲۰

## کیا صحیحین کی حدیثیں علم یقینی کا فائدہ دیتی ہیں؟

علامہ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ کے موقف کی وضاحت:

ما قبل میں یہ بات بالتفصیل گزر چکی ہے، کہ خبر واحد علم کا فائدہ اس وقت دیگی، جب وہ محتف بالقرائن ہو، یا اس کو تلقی بالقبول کا درجہ حاصل ہو، اب یہاں پر یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ کیا کسی روایت کا ''صحیحین'' میں ہونے سے اس کو محتف بقرینۃ التلقی کا درجہ حاصل ہے ؟ اور پھر اس سے علم یقینی نظری حاصل ہوگا ؟ تو حافظ ابن الصلاحؒ اور ان کے متبعین کا یہ دعوی ہے کہ '' صحیحین'' کی روایات کو محتف بالقرائن ہونے کی بنا پر تلقی

بالقبول کا درجہ حاصل ہے؛ اس وجہ سے ان روایات سے علم یقینی نظری حاصل ہوتا ہے۔

چنانچہ علامہ ابن صلاح شافعی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

" وهذا القسمُ جميعهُ مقطوعٌ بِصحته ،والعلم اليقيني النظري واقع به،... إنما تلقته الأمة بالقبول سوى أحرف يسيرة تكلم عليها بعض أهل النقد من الحفاظ ." (۱)

(ترجمہ): ''یعنی وہ روایات جن کے اخراج پر شیخین متفق ہیں، اس نوع کی روایات صحت کے اعلی درجے پر فائز ہونے کی وجہ سے، ان سے علم یقینی نظری حاصل ہوتا ہے، سوائے ان چند روایات کے کہ جن پر بعض ناقدین نے کلام کیا ہے''۔

## صحیحین کی احادیث کا علم یقینی کا فائدہ نہ دینے کے حوالہ جات:

یہاں پر یہ بات ملحوظ خاطر رہے؛ کہ کسی روایت کا صحیحین میں ہونا، قطعا اس بات کے لئے کافی نہیں! کہ اس سے علم یقینی نظری حاصل ہوگا؛ کیونکہ حضرات محققین کے ہاں حدیث کی صحت کا مدار اس بات پر نہیں ہوتا کہ فلاں حدیث صحیح بخاری یا صحیح مسلم یا فلاں کتاب میں ہے، بلکہ اس کا مدار تو شروط صحت کے وجود پر ہوتا ہے، جس حدیث میں شروط صحت جس قدر مکمل ہونگی وہ حدیث صحت کے اسی مرتبہ پر فائز ہوگی۔

(۱) معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۹۷

(۱) چنانچہ علامہ قاسم بن قطلو بغا حنفی رحمۃ اللہ علیہ [۱] تصریح فرماتے ہیں:

"قـوة الـحـديـث إنما هي بالنظر إلى رجاله لا بالنظر إلى كونه في كتاب كذا." [۲]

(ترجمہ): "یعنی حدیث کی صحت کا مدار تو سند کی رجال پر ہے نہ کہ اس بات پر کہ یہ حدیث فلاں کتاب میں ہے"۔

رہی یہ بات کہ حافظ ابن صلاحؒ اور ان کے متبعین کا یہ کہنا کہ صحیحین کو "تلقی امت بالقبول" حاصل ہے، اس لئے ان کی احادیث سے علم یقینی نظری حاصل ہوتا ہے۔

تاہم ان حضرات کے اس نظریہ کو جمہور فقہاء و محدثین نے قبول نہیں کیا ہے۔

(۲) چنانچہ سلطان العلماء عز الدین بن عبد السلام شافعی رحمۃ اللہ علیہ [۳] رقمطراز ہیں:

"أن بعض المعتزلة يرون أن الأمة إذا عملت بحديث اقتضى

---

۱۔ ابو العدل علامہ زین الدین قاسم بن قطلو بغا بن عبد اللہ مصری حنفی ماہ محرم میں ۸۰۲ھ کو قاہرہ میں پیدا ہوئے ۔حفظ قرآن مجید و دیگر کتب علوم وفنون سے فارغ ہو کر اکابر علماء و محدثین عصر سے تکمیل کی، موصوف امام عصر، محدث اعظم، فقیہ کامل، جامع علوم وفنون، استحضار مذاہب میں بے نظیر تھے، مناظرہ اور اسکاتِ خصم میں ید طولی رکھتے تھے، وفات بروز جمعرات ۴ ربیع الآخر ۸۷۹ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: تاج التراجم، القول المبتکر علی شرح نخبۃ الفکر، ثقات الرجال۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذهب في أخبار من ذهب: ۷/۳۲۶، اور البدر الطالع بمحاسن من بعد القرن السابع: ۱/۴۵

۲۔ القول المبتکر علی شرح نخبۃ الفکر: ص ۷۵

۳۔ ابو محمد عبد العزیز بن عبد السلام بن حسن بن محمد بن مہذب سلمی دمشقی شافعی ۔۵۷۷ھ میں پیدا ہوئے اور اس زمانہ کے نامور علماء وفنون سے علوم وفنون کی تکمیل کی، فقہ وحدیث، اصول وکلام میں مہارت حاصل کی، موصوف علم وفضل کے ساتھ زہد وورع کے اوصاف سے بھی آراستہ تھے چنانچہ زاویہ غزالی میں تدریس اور خطابت کا عہدہ ملا، اور جامع اموی میں خطیب مقرر ہوئے، پھر قاہرہ آئے تو عہدہ قضاء سپرد کیا گیا۔ حافظ ابن کثیر لکھتے ہیں: شافعی مذہب کی سیادت ان پر ختم ہوگئی تھی گوشہ گوشہ سے ان سے فتوے طلب کئے جاتے تھے، موصوف بڑے پر لطف اور خوش مذاق تھے۔ وفات ۶۶۰ھ میں ہوئی تصانیف: الالمام فی ادلۃ الاحکام، بحار القرآن، مفاتیح الکنوز۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۱۵/۳۸۳۔۳۸۴، اور شذرات الذهب في أخبار من ذهب: ۵/۴۳۹۔۴۴۰

ذلك القطع بصحته قال: وهذا مذهب ردي .»[1]

(ترجمہ): ''بعض معتزلہ کا یہ کہنا کہ جب امت کسی حدیث پر عمل کرے تو یہ بات صحت حدیث کی قطعیت کا تقاضا کرتی ہے، فرمایا: کہ یہ مذہب لائق التفات نہیں''۔

علامہ جعفر بن ثعلب ادفوی شافعی رحمۃ اللہ علیہ[2] رقمطراز ہیں:

"إن الأمة تلقت كل حديث صحيح و حسن بالقبول وعملت به عند عدم المعارض و حينئذ لا يختص بالصحيحين وقد تلقت الأمة الكتب الخمسة أو الستة بالقبول ."[3]

(ترجمہ): ''علامہ ادفوی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امت نے ''تلقی'' صرف صحیحین کی نہیں بلکہ کتب خمسہ اور ستہ کی بھی کی ہے، جن میں صرف صحیح احادیث ہی نہیں حسن احادیث بھی داخل ہیں''۔

(۳) علامہ نووی شافعی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"وخالفه المحققون والأكثرون، فقالوا :يفيد الظن مالم يتواتر."[4]

(ترجمہ): ''جمہور محققین نے حافظ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ سے اس بارے میں

---

۱۔ التقیید والایضاح: ۲۹۶/۱، النکت علی مقدمۃ ابن الصلاح: ص ۸۹

۲۔ ابوالفضل جعفر بن ثعلب بن جعفر بن علی ادفوی شافعی۔ ماہ شعبان ۶۸۰ھ میں پیدا ہوئے حصول علم کے لئے قوص اور قاہرہ وغیرہ کا سفر کیا، اور اپنے زمانہ کے کبار فقہاء و محدثین خاص کر ابن دقیق العید سے علم حاصل کر کے بلند مرتبہ پایا، موصوف فقیہ، متقن، محدث، عالم باعمل، بہت کم پر قناعت کرنے والے دنیا سے بے رغبتی رکھنے والے تھے۔ وفات ماہ رمضان المبارک ۷۴۸ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: الامتاع فی احکام السماع، کشف القناع، الطالع السعید فی تاریخ السعید۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: الدرر الكامنة في أعيان المائة الثامنة: ۳۱۸/۱۔۳۱۹، اور شذرات الذهب في أخبار من ذهب: ۳۳۴/۶

۳۔ التعقبات علی دراسات اللبیب: ص ۳۸۵

۴۔ شرح مسلم للنووي: ۲۰/۱، تدريب الراوي في شرح تقريب النواوي: ۱۴۲/۱

اختلاف کیا ہے اور یہ فرمایا ہے کہ خبرِ واحد جب تک متواتر نہ ہو اس وقت تک ظن کا فائدہ دیتی ہے"۔

(۴) علامہ ابن نجیم حنفی رحمۃ اللہ علیہ یوں گویا ہیں:

"ثم اعلم أن قولنا إن خبر الواحد يفيد العمل دون العلم بمفهومه يشمل مارواه البخاري ومسلم فمرويهما مظنون كمروي غيرهما ،جزم ابن الصلاح وجماعة بأنه مقطوع بصحته، لأن الاجماع على قبوله وإن كان عن ظنون فظن معصوم والأكثر على خلافه"[1]

(ترجمہ): "پھر تو جان لے کہ ہمارا یہ قول کہ خبرِ واحد عمل کو ثابت کرتا ہے نہ کہ علم کو تو یہ اپنے مفہوم کے اعتبار سے صحیحین کی روایات کو بھی شامل ہے کیونکہ صحیحین کی روایات بھی دیگر روایات کی طرح ظن ہی کے درجہ میں ہیں، البتہ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ اوران کی جماعت نے اس کا دعویٰ کیا ہے کہ یہ صحت کے اعتبار سے قطعی ہیں۔ وجہ یہ ہے کہ ان کی قبولیت پر اجماع ہوا ہے اگر چہ یہ اجماع ظنون ہی پر مشتمل ہے چنانچہ ظنون کا یہ اجماع خطا سے معصوم ہے تاہم اکثر اہلِ علم اس نظریہ کے خلاف ہیں"۔

(۵) رضی الدین بن الحنبلی حنفی رحمۃ اللہ علیہ[2] حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ کے کلام کو نقل کرنے کے بعد لکھتے ہیں:

"وقد يقع أخبار الآحادمايفيد العلم النظري على

---

۱۔ فتح الغفار شرح المنار: ص۲۷۳

۲۔ رضی الدین محمد بن ابراہیم بن یوسف ابن الحنبلی حلبی حنفی موصوف ۹۰۸ھ کو حلب میں پیدا ہوئے اور علوم کی تکمیل اپنے والد ماجد اور دیگر اکابر علماء امت سے کی، آپ مشہور امام وقت، مفتن، مصنف اور مورخ تھے، وفات ۹۷۱ھ کو ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: قفو الاثر فی صفو علوم الاثر، بحر العوام فیما اصاب فیہ العوام، مزید حالات کے لئے دیکھئے: شذرات الذهب في أخبار من ذهب: ۴۲۹/۸۔۴۳۰، اور الاعلام: ۳۰۲/۴۔۳۰۳

المختار۔۔۔منهما ماأخرجه الشيخان في صحيحهما من أخبار الآحاد۔۔۔

"أن الخبر المحتف بالقرائن يفيد العلم، ومنه أحاديث الصحيحين: والمختار عندنا معشرَ الحنفية خلاف هذا المختار حتى إن خبر كل واحد فهو مفيد للظن وإن تفاوت طبقات الظنون قوةً وضعفاً"[1]

(ترجمہ): "ہر وہ خبر واحد جو محتف بالقرائن ہو علم کا فائدہ دیگی، اور اسی میں سے صحیحین کی روایات بھی ہیں: لیکن احناف کی ایک جماعت کے نزدیک مختار قول یہی ہے کہ ہر کسی کی خبر واحد ظن ہی کا فائدہ دیگی اگر چہ قوت اور ضعف کے اعتبار سے ظن کے درجات متفاوت ہوں"۔

(۶) صاحب مسلّم الثبوت "مسلم الثبوت" میں اور بحر العلوم[2] "فواتح الرحموت" میں رقمطراز ہیں:

"ابن الصلاح وطائفة من الملقبين بأهل الحديث زعموا أن رواية الشيخين محمد بن إسماعيل البخاري ومسلم بن الحجاج صاحب الصحيحين تفيد العلم النظري للاجماع على أن للصحيحين مزية على غيرهما، وتلقة الأمة بقبولهما، والإجماع قطعي، وهذا بهت، فإن من رجع إلى

---

۱۔ قفو الأثر في صفو علوم الأثر: ص ۴۹

۲۔ محب اللہ بن عبد الشکور بہاری حنفی موصوف بہار کے کڑا نامی قصبہ میں پیدا ہوئے علوم کی تحصیل وتکمیل اس وقت کے نامور علماء سے کی اور کمال حاصل کیا، سلطان عالمگیر کے زمانہ میں لکھنو آئے موصوف نے لکھنو کے عہدہ قضاء کو آپ کے سپرد کیا، موصوف، اصولی، مصنف، محقق ومدقق، جامع معقول ومنقول تھے، ۱۱۱۹ھ میں آپ کی وفات ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: مسلم الثبوت، سلم العلوم، مزید حالات کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۵/۸۳، اور ۲ نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر: ۶/۲۵۷-۲۵۹

وجدانه يعلم بالضرورة أن مجرد روايتهما لا يوجب اليقين البتة ، وقد روي فيهما أخبار متناقضة ، فلو أفادت روايتهما علما لزم تحقق النقيضين في الواقع وهذا أي ماذهب اليه ابن الصلاح وأتباعه بخلاف ما قاله الجمهور من الفقهاء والمحدثين؛ لأن انعقاد الاجماع على المزية على غيرهما من روايات ثقات آخرين ممنوع، والاجماع على مزيتهما على أنفسهما مالايفيد.“[1]

(ترجمہ): ”حافظ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ اور محدثین کی ایک جماعت نے اس بات کا دعوی کیا ہے کہ شیخین (یعنی بخاری ومسلم) کی روایات علم نظری کا فائدہ دیتی ہیں؛ کیونکہ اس بات پر اجماع ہوا ہے کہ صحیحین کو دیگر کتب پر فوقیت حاصل ہے، اور ان دونوں کتابوں کو تلقی بالقبول حاصل ہے اور اجماع قطعی ہوتا ہے۔ یہ دعوی محل نظر ہے؛ اس لئے کہ جو شخص بھی اپنے وجدان میں غور کرے بدیہی طور پر اسے معلوم ہوگا کہ محض شیخین کے روایت کرنے سے قطعی طور پر علم یقینی ثابت نہیں ہوتا، کیونکہ ان دونوں کتابوں میں بہت سے متعارض روایات موجود ہیں، اگر شیخین کی روایات علم کا فائدہ دیں تو درحقیقت نقیضین کا تحقق لازم آئے گا اور جس بات کی طرف حافظ ابن الصلاح رحمہ اللہ اور ان کے پیروکار گئے ہیں وہ جمہور فقہاء ومحدثین کے مذہب کے خلاف ہے؛ کیونکہ دیگر مستند روایتوں کے مقابلے میں صحیحین کی روایتوں کی فوقیت پر اجماع کے انعقاد کا قول قابل قبول نہیں۔ نیز صحیحین کی فوقیت پر اجماع اس کا فائدہ نہیں دیتا کہ اس سے علم یقینی حاصل ہو جائے“۔

---

۱۔ فواتح الرحموت بشرح مسلم الثبوت: ۱۵۱/۲

(۸) علامہ امیر صنعانی رحمۃ اللہ علیہ (۱) لکھتے ہیں:

"اعلم أن معنى تلقي الأمة للحديث بالقبول هو: أن تكون الأمة بين عامل بالحديث ومتأول له، ...وهذا التلقي لأحاديث الصحيحين، يحتاج مدعيه في إثبات هذه الدعوى إلى دليل، فنقول: هذه الدعوى تحتاج إلى استفسار عن طرفيها: هل المراد كل الأمة من خاصة وعامة ـ كما هو ظاهر الإطلاق ـ أو المجتهدون من الأمة؟ وهو معلوم بأن الأول غير مراد، فالمراد الثاني، وهو دعوى أن كل فرد فرد من مجتهدي الأمة تلقى الكتابين بالقول.

ولا بد من إقامة البينة على هذه الدعوى، ولا يخفى أن إقامتها عليها من المتعذرات عادة كإقامة البينة على دعوى الإجماع، فإن هذا فرد من أفراده.

وقد جزم أحمد بن حنبلؒ وغيره بأن من ادعى الإجماع فهو كاذب، وإذا كان هذا في عصره قبل عصر تأليف الصحيحين فكيف من بعده؟ مع أن هذا الإجماع بتلقي الأمة لهما لا يتم إلا بعد عصر تأليفهما بزمان حتى ينتشرا ويبلغا مشارق الأرض ومغاربها وينزلا حيث نزل كل مجتهد، مع أنه يغلب في الظن أن في العلماء المجتهدين من لا يعرف الصحيحين،

---

۱۔ ابو ابراہیم محمد بن اسماعیل بن محمد صنعاني زيدي کہلان کے شہر میں بروز جمعہ ماہ ربیع الثانی ۱۰۹۹ھ کو پیدا ہوئے اپنے والد ماجد سے علم نحو، بیان، حدیث اور اصول سیکھا۔ باقی علوم سید زید بن محمد بن الحسن سے حاصل کیا۔ موصوف کثیر التصانیف ہونے کے ساتھ مجتہد تھے۔ وفات ۱۱۸۲ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: توضیح الافکار، سبل السلام۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۳۸/۶، اور البدر الطالع بمحاسن من بعد القرن السابع: ۱۳۳/۲۔۱۳۹

فإن معرفتهما بخصوصهما ليست شرطاً في الاجتهاد قطعاً، والحاصل منع هذه الدعوى .

ثم إن سلمت هذه الدعوى في هذا الطرف ورد السؤال الاستفسار عن الطرف الثاني، وهو:هل المراد من تلقي الأمة لهذين الكتابين الجليلين معرفة الأمة بأنهما تأليف الإمامين الحافظين ؟فهذا لا يفيد إلا صحة الحكم بنسبتهما إلى مؤلفيهما ، ولا يفيد المطلوب،أو المراد تلقيها لكل فرد فرد من أفراد أحاديثهما بأنه عن رسول الله ﷺ، وهذا هو المفيد للمطلوب ،......ولكن هذه الدعوى لا يخفى عدم تسليمها في كل حديث من أحاديث الصحيحين غير ما استثنى، إذ المعصوم هو الأمة جميعا أو مجتهدوها ، ولا يتم أن كل حديث حكم المعصوم بصحته ضمنا ؛إذ ذلك فرع اطلاع كل فرد من أفراد المجتهدين على كل فرد من أفراد أحاديث الكتابين.

على أن التحقيق أن الأمة إنما عصمت عن الضلالة ، لا عن الخطأ،.....ثم إذا كان وجه أرجيحيتهما هو التلقي المذكور، فهما متلقيان على التسوية، فلا وجه لجعل ما اتفقا عليه مقدما على ما إذا انفرد كل واحد منهما، ولا يجعل ما انفرد به البخاري أرجح من حيث التلقي لاستواء الجميع فيه." (۱)

(ترجمہ): "تلقی الامۃ بالقبول" کا مطلب یہی تو ہے کہ یہ احادیث ثابت ہیں اور

ا۔ توضیح الافکار لمعانی تنقیح الانظار: ۱/۹۴۔۹۵

بعض لوگ ان پر عمل کرتے ہیں اور بعض لوگ ان میں تاویل کرتے ہیں دیکھنا یہ ہے کہ آیا یہ "تلقی"، صحیحین کی احادیث کو حاصل ہے؟ اب سوال یہ ہے کہ "تلقی امت" سے مراد جمیع امت ہے یا حضرات مجتہدین؟ ظاہر ہے کہ جمیع امت مراد نہیں لے سکتے، بلکہ تحقیق یہی ہے کہ اس سے مراد مجتہدین امت ہیں، اب یہ دیکھا جائے کہ آیا امت کے مجتہدین میں سے ہر ہر فرد نے "تلقی بالقبول" کی ہے؟ ظاہر ہے اس دعوے کے لئے دلیل کی ضرورت ہے جو عادۃً متعذر ہے، کیونکہ یہ دعوی اجماع پر اقامت بینہ کے قبیل سے ہے، امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں "من ادعی الاجماع فھو کاذب" جب صحیحین کی تالیف سے پہلے کے زمانے میں "اجماع" کا یہ حال ہو تو بعد کے زمانے میں اجماع کی کیا حیثیت ہوگی؟ پھر اگر تسلیم کرلیں کہ صحیحین کو "تلقی امت بالقبول" حاصل ہے اور امت کا اس پر اجماع ہے تب بھی یہ ماننا پڑے گا کہ پہلے صحیحین کی تالیف ہوئی پھر ان کا انتشار ہوا، مشرق و مغرب میں یہ دونوں کتابیں پہنچی ہر مجتہد ان سے واقف ہوا پھر کہیں جا کر اتفاق اور اجماع ہوا، جبکہ یہ بات ہی محل نظر ہے کہ ہر مجتہد صحیحین سے واقف ہوا ہو۔

نیز یہ سوال بھی وارد ہوتا ہے کہ تلقی امت سے کیا مراد ہے؟ اگر یہ مراد ہے کہ امت یہ جانتی ہے کہ صحیحین امام بخاری رحمہ اللہ اور امام مسلم رحمہ اللہ کی تصنیف کردہ کتابیں ہیں تو یہ مفید مطلوب نہیں اور اگر یہ مراد ہے کہ صحیحین کی ہر ہر حدیث کے بارے میں امت کو یہ یقین ہے کہ رسول اللہ ﷺ سے انکا ثبوت یقینی ہے تو یہ مفید مطلوب ضرور ہے لیکن ظاہر ہے یہ دعوی مُسلّم نہیں؛ کیونکہ صحیحین کی کم از کم دوسو دس حدیثوں پر کلام کیا گیا ہے نیز ان میں متکلم فیہ رواۃ بھی سینکڑوں ہیں، معلوم ہوا کہ امت کا اس بات پر اجماع بھی نہیں ہے کہ صحیحین کی ہر ہر حدیث متلقی بالقبول اور ثابت عن رسول اللہ ﷺ ہے۔ پھر اگر بالفرض مان لیں کہ امت کی تلقی بالقبول ہر ہر حدیث کے لئے ہے تو بھی خطا ممکن ہے، کیونکہ امت کے معصوم عن الضلالۃ ہونے کی ضمانت تو لی گئی ہے لیکن معصوم عن الخطا ہونے کی ضمانت نہیں لی گئی۔

پھر اگر ہم یہ بھی تسلیم کر لیں کہ تمام مجتہدین امت نے صحیحین کی احادیث کی تلقی بالقبول کی ہے اوراسی وجہ سے ان کی ارجحیت ثابت ہورہی ہو تو پھر تو صحیحین کے درمیان فرق نہیں ہونا چاہئے، لہذا ''ما انفرد به البخاری'' کو ''ما انفرد به مسلم'' پر ترجیح دینا درست نہیں ہونا چاہئے۔

(۹) علامہ طاہر جزائری رحمۃ اللہ علیہ نے لکھا ہے:

''وذهب بعض العلماء إلى أنَّ أخبار الآحاد إذا كانت مخرَّجة في الصحيحين أو في أحدهما، تفيد العلم قطعاً، لتلقي الأمة لهما بالقبول. وأنكر الجمهور ذلك، وقالوا: إنَّ أخبار الآحاد لا تفيد العلم قطعاً، ولو كانت مخرَّجة في الصحيحين أو أحدهما، وتلقي الأمة لهما بالقبول إنما يفيد وجوب العمل بما فيهما، بناءً على أنَّ الأمة مأمورة بالأخذ بكل خبر يغلب على الظن صدقه، ولا يفيد أنَّ ما فيهما ثابت في نفس الأمر قطعاً.''(۱)

(ترجمہ): ''بعض علماء کی رائے یہ ہے کہ جب اخبار آحاد بخاری و مسلم یا ان دونوں میں سے کسی ایک میں ہوں، تو یہ اخبار آحاد یقین کا فائدہ دیتی ہیں، اس کی وجہ یہ بیان کرتے ہیں کہ اُمت کے ہاں بخاری و مسلم کو قبولیت حاصل رہی ہے۔ لیکن جمہور یکسر اس کا انکار کرتے ہیں، اور وہ اس بات کے قائل ہیں: کہ اخبار آحاد بالکل یقین کا فائدہ نہیں دیتیں، اگرچہ اخبار آحاد بخاری و مسلم یا ان دونوں میں سے کسی ایک کے اندر کیوں نہ ہوں، اور اسی طرح امت نے بھی ان اخبار آحاد کو کیوں نہ قبول کیا ہو!!! اخبار آحاد تو صرف جو کچھ بخاری و مسلم میں ہے اس پر عمل کے واجب ہونے ہی کا فائدہ دیتیں ہیں، اس وجہ سے کہ جس حدیث کا صدق ہونا گمان پر غالب ہے ایسی ہر حدیث کے لینے کا اُمت کو حکم دیا گیا ہے، جو اخبار آحاد بخاری

۱۔ توجیہ النظر إلی اصول الأثر: ۲/۲۹۷

ومسلم میں ہیں وہ اس کا فائدہ نہیں دیتیں کہ نفس الامر میں بھی قطعی ہی ہوں“۔

(۱۰) علامہ شبیر احمد عثمانی حنفی رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

”إن اجماع الأئمة أو تلقي الأمة بالقبول إنما يفيد علم اليقين أو علم طمأنينة بالأمر الذي وقع الإجماع عليه ،أو التلقي بقبوله ، فالإجماع على قبول مطلق للخبر الواحد المستجمع لشروط الصحة،وإفادته الظن الموجب للعمل بشرط خلوه عن الموانع ـ مثلا ـ إنما يفيد حصول العلم القطعي بأن خبر الواحد مفيد للظن، ومقبول في العمليات، وأنه يحتمل السهو، والغلط ، والخطأ ، احتمالا مرجوحا ضعيفا .

پھر آگے لکھتے ہیں:

وظاهر أن هذا العلم القطعي المستفاد من الإجماع لا يحول خبر الواحدمن إفادته الظن إلى إفادته العلم اليقيني ، بل يؤكد كونه ظنياً محتملاً للخطأ لحصول الاتفاق عليه، وإلا لصار أخبار الآحاد بأسرها قطعياً، وهذا باطل بالإجماع ، فهكذا إذا أجمع العلماء علئ أخبار معينة بأنها صحيحة ،أو أصح صحاح أومستجمعة لشروط الصحة على وجه الكمال عند المحدثين ، فمحصله يرجع إلى قطعية كونها بعينها أخبار آحاد مفيد للظن ، مقبولة في العمليات ، بشرط الخلو عن العوائق ، وهذا لا يخرجها عن حَيِّزِ الظن إلى درجة العلم واليقين ،

فأحاديث الصحيحين التي ليست بمتواترة إنما تفيد الظن،

فإنها أحاد، والآحاد إنما تفيد الظن على ما تقرر، ولا فرق بين البخاري ومسلم وغيرهما في ذلك، و تلقي الأمة بالقبول إنما أفادنا وجوب العمل بما فيهما؛ وهذا متفق عليه؛ فإن أخبار الآحاد التي في غيرهما يجب العمل بها إذا صحت أسانيدها، ولا تفيد إلا الظن، فهكذا الصحيحان، وإنما يفترق الصحيحان وغيرهما من الكتب في كون ما فيهما صحيحاً لا يحتاج إلى النظر فيه، بل يجب العمل به مطلقاً، لجلالة قدر مصنفيهما، ورسوخ قدمهما في العلم، وتقدمهما في المعرفة بالصِّناعة، وجَوْدة تمييز الصحيح من غيره، وبلوغهما أعلى المراتب في الاجتهاد و الإمامة في وقتهما، وما كان في غيرهما لا يعمل به حتى ينظر وتوجد فيه شروط الصحيح.» (۱)

(ترجمہ): ''اجماع امت یا امت کی تلقی بالقبول، امر اجماعی یا تلقی بالقبول ہونے کی وجہ سے علم یقین یا طمانیتہ کا فائدہ دیتا ہے۔ جب خبر واحد جو صحت کی تمام شرائط پر مشتمل ہو اور عمل کے لئے ظن کا فائدہ دیتی ہو بشرطیکہ کوئی مانع بھی درپیش نہ ہو، تو ایسی خبر واحد قطعی طور پر ظن کا فائدہ دیتی ہے ، اعمال میں قابل اعتبار ہے، البتہ سہو، غلطی، لغزش کا کسی قدر کمزور احتمال بھی رکھتی ہے۔ اور بات بالکل واضح ہے کہ اجماع سے جو یقینی علم حاصل ہوا ہے وہ ایسا نہیں کہ خبر واحد کو بالکل ہی بدل دے کہ ظن کا فائدہ دینے کے بجائے اب یقین کا فائدہ دینے لگے، بلکہ یہ اجماع تو خبر واحد میں ظن اور خطأ کے احتمال کو مزید تقویت دیتا ہے، کیونکہ اجماع ہی انھیں امور پر ہے۔

۱۔ فتح الملہم شرح صحیح مسلم: ۱/۲۹۷-۲۹۸

اور اگر ان امور کا احتمال نہ ہوتو خبر واحد ساری کی ساری قطعی بن جائیں جوکہ بالا
جماع باطل ہے۔اگر محدثین کرام بعض خاص احادیث پر اجماع کر لیں کہ یہ
حدیثیں صحیح ہیں یا صحیح ترین روایتیں ہیں، یا یقینی طور پر صحیح کی تمام شرائط کو شامل ہےتو
یہ مقدمات زیادہ سے زیادہ یہی معنی رکھتی ہیں کہ یہ یقینی طور پرظن کا فائدہ دیتی ہیں،
اعمال میں قابل اعتبار ہیں بشرطیکہ کوئی مانع نہ ہو۔

بہر حال یہ سب کچھ خبر واحد کوظن سے نکال کر قطعیت میں داخل کرنے کے لئے کافی نہیں
ہے۔یہی وجہ ہے کہ صحیحین کی غیر متواتر روایات ظن کا فائدہ دیتی ہیں، کیونکہ وہ آحاد ہیں جوکہ فی
نفسہ ظن کا فائدہ دیتیں ہیں، اور ظن کا فائدہ دینے میں بخاری ومسلم کی تخصیص نہیں بلکہ کوئی بھی خبر
واحد ہو،ظن کا فائدہ دیگی، البتہ صحیحین کو امت میں قبولیت حاصل ہے اس لئے ان کی حدیثوں پر
عمل واجب ہے، اتنی بات تو اتفاقی ہے۔

اب صحیحین کے علاوہ اخبار آحاد اگر چہ ظن کا فائدہ دیتیں ہیں لیکن ان پر عمل سندوں کی صحت
ثابت ہونے کے بعد ہی واجب ہوتا ہے۔ صحیحین کے علاوہ اخبار آحاد کی سندوں پر غور وخوض کی
ضرورت ہوتی ہے، لیکن صحیحین کی روایتیں بغیر کسی تحقیق کے واجب العمل ہیں۔

اس کی وجہ یہ ہے کہ صحیحین کے مصنفین ایک ممتاز حیثیت کے حامل ہیں، انہیں علم حدیث
میں کامل رسوخ حاصل ہے، علم حدیث کی معرفت میں انہیں خاص ملکہ حاصل ہے، صحیح اور غیر صحیح
میں انہیں ایک مخصوص استعداد حاصل تھی، اجتہاد کے اعلی مقام پر فائز تھے، اپنے وقت کے مسلم
امام تھے۔ انہیں وجوہات کی بنا پر صحیحین کے علاوہ روایات میں صحیح کی شرائط کی چھان بین کی
جائے گی البتہ صحیحین کی روایات اس سے مستغنی ہیں۔

حافظ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ کے نظریہ کی تردید کرنے والے صرف یہی حضرات نہیں
بلکہ علامہ عراقی، محقق ابن ہمام، محقق ابن امیر الحاج، ملا علی قاری، شیخ عبدالفتاح ابوغدہ

اور علامہ عبدالرشید نعمانی رحمہم اللہ رحمۃ واسعۃ وغیرہ حضرات بھی ہیں۔ (۱)

دراصل ان تمام حضرات کا اس کو رد کرنے کا منشا یہی ہے کہ صحیحین کی غیر متواتر روایات وہ آحاد ہیں جو علم ظن کا فائدہ دیتی ہیں، اور ظن کا فائدہ دینے میں بخاری و مسلم کی تخصیص نہیں بلکہ کوئی بھی خبر واحد ہو وہ ظن ہی کا فائدہ دیگی۔

یہاں پر یہ بات بھی ملحوظ خاطر رہے کہ اوپر صحیحین کے متعلق جو کچھ عرض کیا گیا، اس سے ممکن ہے بعض اہل علم کو شبہ ہو، تو صحیحین کے متعلق جمہور کی جو رائے ہے، وہی ہمارا بھی مسلک ہے کہ یہ دونوں کتابیں صرف صحیح احادیث کا مجموعہ ہیں۔

علامہ شبیر احمد عثمانی رحمۃ اللہ علیہ نے مقدمہ ''فتح الملہم'' میں صحیحین کی حدیثوں کے مفید قطع و یقین ہونے کے نظریہ کی تردید کرنے کے بعد (جس کو ہم ماقبل میں نقل کر چکے ہیں) صحیحین کی عظمت و مقام کی بابت حضرت شاہ ولی اللہ رحمۃ اللہ علیہ کی عبارت نقل کی ہے، اس جگہ ہم بھی انہیں عبارات کو نقل کرنا مناسب سمجھتے ہیں۔

علامہ شبیر احمد عثمانی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

”ليس غرضنا مما كتبنا في هذا البحث تهوين أمر الصحيحين، أو غيرهما من كتب الحديث، بل المقصود نفي التعمق و الغلو، ووضع كل شيئ في موضعه، وتنويه شانه بما يستحقه، و نحن بحمد الله نعتقد في هذين الكتابين الجليلين، و نقول بما قال شيخ شيوخنا ومقدم جماعتنا الشاه ولي الله الدهلويؒ.

” أما الصحيحان: فقد اتفق المحدثون على أن جميع ما

---

۱۔ التقیید والایضاح لما اطلق واغلق من کتاب ابن الصلاح: ۱/۲۸۵-۲۸۶، التقریر والتحبیر مع التحریر: ۲/۳۴۶-۳۴۸، شرح شرح نخبۃ الفکر: ص ۲۲۰، تعلیق الاجوبۃ الفاضلۃ للاسئلۃ العشرۃ الکاملۃ: ص ۲۰۴، تعلیق دراسات اللبیب فی الاسوۃ الحسنۃ بالحبیب: ص ۳۳۰-۳۳۱

فیهما من المتصل المرفوع صحيح بالقطع (بالتفصيل الذي ذكرنا) وأنهما متواتران إلى مصنفيهما، وأنه كل من يهون أمرهما فهو مبتدع (مضل) متبع غير سبيل المؤمنين"(۱)

(ترجمہ): "اس بحث میں جو کچھ ہم نے لکھا، اس سے ہمارا مقصد معاذ اللہ! صحیحین، یا دوسری کتب حدیث کی کسر شان نہیں ہے، بلکہ ان کی بابت غلو کی تردید اور ہر چیز کو اس کے اصل مقام پر رکھنے اور اس کو اس کا واجبی حق دینے کی کوشش ہے، ورنہ ہم بحمد اللہ! ان دونوں عظیم الشان کتابوں کے متعلق وہی نظریہ رکھتے ہیں جو ہمارے شیخ الشیوخ اور مقتدا حضرت شاہ ولی اللہ محدث الدہلوی رحمۃ اللہ علیہ(۲) نے فرمایا ہے:

صحیحین کے متعلق محدثین کا اتفاق ہے کہ ان میں جو کچھ مرفوع متصل کے قبیل سے ہے، وہ بالکل صحیح ہے اور ان کتابوں کا ثبوت ان کے مصنفین سے بطور تواتر ہے، بلاشبہ جو شخص بھی ان کی شان گھٹائے گا وہ بدعتی، گمراہ اور مسلمانوں کے راستے کے علاوہ راستہ کی پیروی کرنے والا ہوگا"۔

مذکورہ بالا نصوص کے بعد شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ اور ان کے رفقاء کو اب قطعاً اس بات کی گنجائش باقی نہیں رہتی کہ وہ اپنے مطلق موقف کو لے کر عقائد کے باب میں صحیحین کی غیر متواتر روایات سے استدلال کا نظریہ رکھیں، کیونکہ حافظ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ اور ان کے رفقاء نے

---

۱۔ فتح الملہم شرح صحیح مسلم: ۳۰۰/۱، حجۃ اللہ البالغۃ: ۳۰۶/۱

۲۔ سراج الہند ولی اللہ احمد بن عبد الرحیم دہلوی حنفی جو شاہ ولی اللہ کے نام سے مشہور و معروف ہیں ۱۱۱۴ھ میں سونی پت میں پیدا ہوئے۔ موصوف نے علوم کی تحصیل و تکمیل اپنے والد ماجد سے کی دس سال کی عمر میں کافیہ کی شرح لکھنی شروع کی، اسی دوران علوم وفنون کی تکمیل میں لگے، حتی کے ۲۵ سال کی عمر میں مکمل فراغت حاصل کی موصوف ہندوستان کے مایہ ناز مشہور و معروف محدث جلیل وفقیہ نبیل، جامع معقول و منقول تھے، ہند میں تفسیر وحدیث کو مشتہر کرنے میں ان کا بہت بڑا حصہ ہے۔ دہلی میں ۱۱۷۶ھ میں وفات پا گئے۔ چند مشہور تصانیف: ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، حجۃ اللہ البالغہ، الفوز الکبیر۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر: ۶/ ۴۰۹۔ ۴۲۸، اور الاعلام: ۱۴۹/۱

صحیحین کی غیر متواتر روایات کے بارے میں جو کہا ہے وہ بھی چند قیودات کے ساتھ علم نظری کا فائدہ دیتیں ہیں: مثلاً ان کا یہ کہنا ہے کہ صحیحین کو تلقی بالقبول حاصل ہے ان کے قبولیت پر اجماع ہوا ہے وغیرہ، تاہم ان حضرات کے اس نظریہ کو بھی جمہور فقہاء ومحدثین نے قبول نہیں کیا ہے (جیسا کہ ہم ماقبل میں تفصیل سے عرض کر چکے ہیں) جبکہ شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ اور ان کے رفقاء ان تمام تر قیودات سے بالاتر ہو کر اخبار آحاد کو مطلقاً، خواں صحیحین کے علاوہ بھی ہوں عقائد میں مستدل بناتے ہیں، اگر دلیل کا مطالبہ ہو تو متقدمین ومتاخرین حضرات کی وہ عبارات پیش کرتے ہیں جن میں اخبار آحاد تلقی بالقبول کی بنیاد پر یا محتف بالقرائن ہونے کی وجہ سے علم کا فائدہ دیتیں ہیں، اس لئے یہ عبارات قطعاً ان کے حق میں مفید نہیں کیونکہ یہ حضرات علی الاطلاق اخبار آحاد سے علم کے حاصل ہونے کے قائل ہیں۔

قارئین کرام! آپ اس مفصل اور مدلل با حوالہ بحث سے بخوبی یہ معلوم کر چکے ہیں، کہ جمہور فقہاء، محدثین، اصولیین اور محققین کا یہی مذہب ہے کہ خبر واحد سے عقیدے کا ثبوت نہیں ہوتا، لیکن جمہور کی اس رائے کے بر خلاف حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ[1]

---

۱۔ ابو عبداللہ شمس الدین محمد بن ابی بکر بن ایوب بن سعد بن حریز زرعی دمشقی حنبلی جو ابن قیم کے نام سے مشہور ہیں۔ ۶۹۱ھ میں پیدا ہوئے۔ اپنے زمانہ کے کبار علماء کرام خاص کر امام ابن تیمیہ سے علم حاصل کیا، موصوف علامہ کے کمالات سے بہت زیادہ مستفید ہوئے اس لئے دوسرے تلامذہ سے علم وفضل میں ممتاز ہوئے، آپ علامہ کے علمی وعملی کمالات کا مظہر تھے بلکہ یوں کہنا چاہئے کہ دونوں ایک روح اور دو قالب تھے۔ موصوف اپنے دور کے بہت بڑے محدث، مفسر، فقیہ اور متکلم تھے، جب ۷۲۶ھ میں زیارت قبور، توسل، وسیلہ واستغاثہ کے مسائل کی وجہ سے ہنگامہ ہوا تو موصوف نے امام ابن تیمیہ کے خیالات ہی کی پرزور حمایت کی جس کی وجہ سے حکومت نے آپ کو بھی قید کر دیا، رہائی کے بعد درس وتدریس وتالیف میں مشغول ہو گئے، وفات ۷۵۱ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: زاد المعاد، اعلام الموقعین، کتاب الروح۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الدرر الکامنۃ في اعیان المائۃ الثامنۃ: ۳/۲۴۳۔۲۴۵، اور شذرات الذہب في أخبار من ذہب: ۶/۳۵۲۔۳۵۴

اور شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ (۱) کا موقف یہ ہے کہ اخبار آحاد سے بھی عقیدے کا ثبوت ہوتا ہے۔

جمہور نے جو تقسیم کی تھی کہ خبر واحد سے عقیدے کا ثبوت نہیں ہوگا، ہاں احکام میں برابر اس سے استدلال کیا جائے گا (کیونکہ احکام کے لئے ظنی دلائل ہی کافی ہیں)، لیکن علامہ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ اور شیخ ناصر الدین رحمۃ اللہ علیہ اس تقسیم کے مخالف ہیں۔

چنانچہ علامہ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

" اثبات الفروع بأخبار الآحاد دون الأصول وغير ذلك ، وكل تقسيم لا يشهد له الكتاب والسنة وأصول الشرع بالاعتبار ، فهو تقسيم باطل يجب اِلغاؤه ، وهذاالتقسيم أصل من أصول ضلال القوم ؛ فإنهم فرّقوا ماسمُّوه أصولاً وماسُمّوه فروعاً. " (۲)

(ترجمہ): "اخبار آحاد سے فروع کو ثابت کرنا نہ کہ اصول وغیرہ کو، اور ہر وہ تقسیم جس کی اصل قرآن، سنت اور شریعت کے اصولوں میں موجود نہ ہو، تو وہ تقسیم باطل ہے، اس کا ترک کرنا واجب ہے، اور یہی تقسیم امت کی گمراہی کے اسباب میں سے ایک رسبب ہے؛ اس لئے کہ اصول وفروع نام رکھ کر ان دونوں کے درمیان تفریق کردی ہے" (جبکہ دونوں ایک ہی ہے)۔

---

۱۔ محمد ناصر الدین البانی۔ ولادت ۱۳۳۳ھ میں ہوئی، طلب علم کے لئے حلب اور دمشق کا سفر کیا، موصوف کے والد پکے حنفی تھے، موصوف کے شاگرد رشید شیخ محمد حسن جان المدنی ؒ رقمطراز ہیں: موصوف واقعی غیر مقلد تھے۔ وہ کسی مسئلے میں بھی کسی کی تقلید نہیں کرتے تھے۔ اپنی تحقیق کی روشنی میں بہت سے مسائل میں شاذ ومتفرد رہے۔ دو سال پڑھانے کے بعد بعض شاذ فتووں کی بنا پر سعودی حکومت نے ان کی ترحیل کرائی، اور وہ واپس دمشق چلے گئے۔ موصوف تخریج احادیث میں بہت ماہر تھے، مگر فقہ، نحوی قواعد اور دیگر فنون سے ان کا خاص واسطہ نہیں تھا۔ وفات ۱۴۲۲ھ میں اردن میں جلاوطنی کے زمانہ میں راہی دار بقا ہوگئے۔ چند تصانیف: سلسلۃ الاحادیث الصحیحہ، سلسلۃ الاحادیث الضعیفہ، الحدیث حجۃ بنفسہ۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: حیات فانی زندگی کے چند ایام: ص ۵۵۔۵۸

۲۔ مختصر الصواعق المرسلۃ: ۲/۴۱۳

شیخ ناصر الدین البانی صاحب فرماتے ہیں:

"أن القول بأن أحاديث الآحاد لا يؤخذ بها في العقيدة قول مبتدع محدث، لا أصل له في الشريعة الإسلامية الغراء، وهو غريب عن هَدْيِ الكتاب وتوجيهات السنة ولم يعرفه السلف الصالح رضوان الله عليهم ولم ينقل عن أحد منهم بل ولا خطر لهم على بال." (۱)

(ترجمہ): "یہ کہنا کہ اخبارِ آحاد کو عقیدے میں نہیں لیا جائے گا، یہ ایک مخترع اور خود ساختہ قول ہے، جس کی شریعت میں کوئی اصل موجود نہیں ہے، اور قرآن کی ہدایات اور سنت کی تعلیمات کی روشنی میں یہ ایک اجنبی سی بات ہے، اور سلف صالحین تو اس کو جانتے ہی نہیں تھے، اور نہ ہی ان میں سے کسی سے بھی یہ قول منقول ہے، بلکہ ان کے دلوں میں تو اس طرح کا خیال بھی کبھی نہیں آیا ہے چہ جائیکہ ان سے یہ قول منقول ہو"۔

حالانکہ علامہ ابن تیمیہ رحمۃ اللہ علیہ (۲) ایک حدیث کا جواب دیتے ہوئے یوں گویا ہیں:

---

۱۔ اصل الاعتقاد: ص ۶۳

۲۔ ابو العباس تقی الدین احمد بن عبد الحلیم بن مجد الدین بن تیمیہ حرانی حنبلی۔ موصوف کی ولادت ۶۶۱ھ میں ہوئی۔ موصوف مشہور و معروف جلیل القدر عالم تبحر، جامع معقول و منقول حافظ حدیث، امام وقت تھے وسعت معلومات، کثرت مطالعہ اور حفظ و ذکاء مفرط میں بے مثل تھے، نہایت جری، تھے۔ بعض مسائل میں آپ نے تفرد کے ساتھ تشدد کیا جس کی وجہ سے موصوف کی سخت مخالفت ہوئی، آپ باوجود ائمہ اربعہ اور دوسرے اکابر متقدمین کے ساتھ پوری عقیدت رکھنے کے بھی عدم تقلید کے میلانات رکھتے تھے، جن سے غیر مقلدین زمانہ نے فائدہ اٹھایا، تفردات: جہت باری کا مسئلہ، قائلین وحدۃ الوجود سے سخت انحراف و اختلاف، مسئلہ طلقات ثلاثہ کو بمنزلہ طلاق واحد قرار دیتے ہیں اور حرمت نکاح تحلیل میں بھی بہت تشدد کیا، مسئلہ توسل، زیارت قبور۔ ان مسائل میں علماء وقت نے آپ کا خلاف کیا، مستقل کتابیں تردید میں لکھی گئیں۔ وفات ۷۲۸ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: منهاج السنة، فتاوی ابن تیمیہ، تعارض العقل والنقل۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: الدرر الكامنة في أعيان المائة الثامنة: ۱/۸۸۔۹۶، شذرات الذہب فی اخبار من ذہب: ۶/۲۴۱۔۲۴۷، اور الاعلام: ۱/۱۴۴

"أن هذا من أخبار الآحاد، فكيف يثبت به أصل الدين الذي لا يصلح الايمان إلا به." (۱)

(ترجمہ): "یہ تو اخبار آحاد میں سے ہے، تو اس سے ان عقائد کو کیسے ثابت کیا جا سکتا ہے جن کے بغیر ایمان معتبر نہیں"۔ "اصل الدین" سے اعتقادیات مراد ہیں۔

یہاں یہ بات یاد رہے؛ کہ شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ کے اس نظریہ کی تردید جمہور کے ان اقوال سے ہوتی ہے جن کو ہم ماقبل میں نقل کر چکے ہیں۔

تنبیہ:

اس تفصیل سے ان کے اس نظریہ کی بھی تردید ہوتی ہے کہ جمہور بھی اس کے قائل ہیں؛ کیونکہ خبر واحد علم کا فائدہ دیتی ہے؛ اس لئے اس سے عقیدے کا ثبوت ہوگا، جبکہ جمہور کے اقوال اس خبر واحد کے بارے میں ہیں جس کو تلقی بالقبول حاصل ہے نہ کہ علی الاطلاق خبر واحد کے بارے میں، جبکہ یہ حضرات علی الاطلاق خبر واحد سے عقیدے کو ثابت کرتے ہیں۔

اس لئے ضروری ہے کہ اس فرق کو ملحوظ رکھا جائے؛ کیونکہ موجودہ دور کے سلفی حضرات ان دونوں کو ایک ہی لبادہ پہنا کر عوام الناس کے سامنے پیش کرتے ہیں، اور یہ باور کراتے ہیں کہ دیکھو جمہور بھی اس کے قائل ہیں، (حالانکہ جمہور قطعاً اس کے قائل نہیں) اور اسی موقف کو عمر سلیمان الاشقر نے اپنی کتاب "اصل الاعتقاد" میں پرزور طریقے سے بیان کرنے کی کوشش کی ہے۔

جمہور کے ہاں خبر واحد سے عقیدے کا ثبوت نہیں ہوتا؛ مگر حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ کے نزدیک اس سے عقیدے کا ثبوت ہوتا ہے، اور پھر اسی کے ضمن میں موصوف نے بعض منکر اور شدید ضعف والی روایات سے بھی عقائد کو ثابت کیا ہے، اس شدت ضعف اور نکارت حدیث کے باوجود اگر کوئی حدیث ان کی مستدل بن تی ہے، تو اس کی تقویت میں بات مبالغہ کی حد تک پہنچ جاتی ہے، مثلاً وفد بنی المنتفق پر کلام کے ذیل میں ایک لمبی حدیث ذکر کی ہے، جس میں یہ الفاظ موجود ہیں۔

---

۱۔ منہاج السنۃ النبویۃ: ۲/۱۳۳

"ثم تلبثون ما لبثتم، ثم تبعث الصائحة، لعمر الٰهك! ما تدع علی ظهرها من شیئ إلا مات، والملئكة الذين مع ربك عز و جل، فأصبح ربك عز و جل يطوف بالأرض و قد خلت عليه البلاد."(۱)

(ترجمہ): "پھر جتنا ٹھہرنا تمہارے لئے مقرر ہوگا تم ٹھہروگے، پھر ایک چیخ آئے گی، اللہ تعالی کی قسم یہ چیخ زمین پر کسی چیز کو نہ چھوڑے گی مگر وہ مری ہوئی ہوگی، اور فرشتے تیرے رب کے ساتھ ہوں گے، پھر باری تعالی زمین میں چکر لگائیں گے حالانکہ شہر ویران ہو چکے ہوں گے، حافظ ابن قیمؒ نے اس حدیث کے ذریعہ سے اللہ جل شانہ کے لئے طواف فی الاض کو ثابت کیا ہے"۔

پھر اس حدیث کو صحیح وثابت قرار دینے میں پوراز ور صرف کیا ہے۔

چنانچہ فرماتے ہیں:

"هذا الحديث جليل تنادى جلالته، وفخامته، وعظمته، على أنه قد خارج من مشكاة النبوة، لا يعرف إلا من حديث عبد الرحمان بن المغيرة المدني."

(ترجمہ): "یہ ایسی شاندار حدیث ہے کہ جس کا وقار واہمیت اور عظمت اس بات کی ندا کررہا ہے کہ یہ حدیث مشکاۃ نبوت سے منقول ہے، اس حدیث کا صرف عبدالرحمان بن مغیرہ مدنی سے روایت کرنا مشہور ہے"۔

پھر عبدالرحمان بن مغیرہ کی توثیق اور ان کتابوں کے حوالوں کے ذریعہ جن میں یہ حدیث تخریج کی گئی ہے ایک طویل بحث کے درپے ہوئے ہیں، حالانکہ خود ان کے شاگرد رشید حافظ ابن کثیر رحمۃ اللہ علیہ نے لکھا ہے:

---

۱۔ زادالمعاد فی هدي خير العباد: ۲/۲۰۳

" هذا حديث غريب جداً، وألفاظه في بعضها نكارة "(۱)

حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ نے بھی عاصم بن لقیط کے ترجمہ میں لکھا ہے: " هذا حديث غريب جداً " (۲)

(جو کہ اس حدیث کے سند کے راویوں میں سے ایک راوی ہے) جبکہ حافظ ابن قیمؒ نے اس کی تائید میں کسی کہنے والے کے اس قول تک کو نقل کر ڈالا۔

" ولا ينكر هذا القول إلا جاحد أو جاهل أو مخالف للكتاب والسنة . " (۳)

(ترجمہ): ''اس قول کا کوئی ہٹ دھرم، جاہل یا کتاب وسنت کا مخالف ہی انکار کر سکتا ہے''۔

حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ نے اس طرح منکر روایت کی تائید میں اتنا زور آخر کیوں صرف کیا؟ اور پھر " هذا حديث جليل تنادى جلالته .... " جیسے بلیغ جملے بھی اس کے حق میں استعمال کئے ہیں یہ کس بات کی غمازی کرتا ہے؟ یہی کہ اس حدیث میں ''فأصبح ربك عز و جل يطوف في الأرض وخلت عليه البلاد" جیسے منکر کلمات وارد ہیں!۔

علامہ ابن تیمیہ رحمۃ اللہ علیہ اور حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ استواء کو بمعنی استقرار وجلوس لیتے ہیں، اگرچہ استواء، استقرار وجلوس کی تصریح نہیں کرتا لیکن اِن کی عبارات اس کی طرف اشارہ کرتی ہیں؟

## مقامِ محمود کی تفسیر:

چنانچہ امام ابن تیمیہ رحمۃ اللہ علیہ ''مقام محمود'' کی تفسیر میں امام مجاہد سے منقول موقوف روایت سے استدلال کرتے ہوئے رقمطراز ہیں:

---

۱۔ البدایہ والنهایہ: ۶۹،۶۸/۵

۲۔ تهذيب التهذيب: ۳/ ۳۳۱

۳۔ زاد المعاد في هدي خير العباد۲/ ۷۰۳

"أن محمداً رسول الله ﷺ يجلسه ربه على العرش معه."(۱)

(ترجمہ): "آپ ﷺ کو اللہ جل شانہ اپنے ساتھ عرش پر جلوہ افروز فرمائیں گے"۔

علامہ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ یوں گویا ہیں:

" قال القاضي: صنف المروزي كتاباً في فضيلة النبي وذكر فيه إقعاده على العرش. قال القاضي وهو قول أبي داؤد، وأحمد بن أصرم، ويحيى بن أبي طالب، وأبي بكر بن حماد، وأبي جعفر الدمشقي، وعياش الدوري، واسحاق بن راهويه، وعبد الوهاب الورّاق، وإبراهيم الأصبهاني، وإبراهيم الحربي، وهارون بن معروف، ومحمد بن إسماعيل السلمي، ومحمد بن مصعب بن العائد، وأبي صدقة، ومحمد بن بشر بن شريك، وأبي قلابة، وعلي بن سهل، وأبي عبد الله بن عبد النور، وأبي عبيد، والحسن بن فضل، وهارون بن العباس الهاشمي، ومحمد بن عمران الفارسي الزاهد، ومحمد بن يونس البصري، وعبد الله بن ابن الإمام، والمروزي، وبشر الحافي، انتهى۔

قلت: وهو قول ابن جرير الطبري، وإمام هو لاء كلهم مجاهد إمام تفسير، وهو قول أبي الحسن الدار قطني ومن شعره ﷺ

حَدِيثُ الشَّفَاعَةِ عَنْ أَحْمَدِ.... إِلَى أَحْمَدَ الْمُصْطَفى

وَجَاءَ حَدِيثُ بِإِقْعَادِهِ .... عَلَى الْعَرْشِ أَيْضاً فَلاَ نَجْحَدُه

أمروا الحديث عَلَى وَجهِهِ...... وَلَا تَدْخُلُوا فِيهِ مَا يُفْسِدُ

---

۱۔ مجموع فتاوی امام ابن تیمیہ: ۴/۳۷۴

ولاتنكروا أنه قاعده ...... ولا تنكروا أنه يقعده.''[1]

(ترجمہ): ''قاضی (ابویعلی) نے فرمایا کہ مروزی نے آپ ﷺ کے فضائل میں ایک کتاب لکھی ہے جس میں اس بات کی تصریح کی ہے کہ آپ ﷺ عرش پر جلوہ افروز ہوں گے پھر قاضی نے کہا یہی قول ابوداؤد، احمد بن اصرم یحیی بن ابی طالب، ابوبکر بن حماد، ابوجعفر الدمشقی، عیاش الدوری، اسحاق بن راہویہ، عبدالوہاب الورّاق، ابراہیم الاصبہانی، ابراہیم الحربی، ہارون بن معروف، محمد بن اسماعیل السلمی محمد بن مصعب بن العائذ، ابوصدقہ، محمد بن بشر بن شریک، ابوقلابہ، علی بن سہل، ابو عبداللہ بن عبدالنور، ابوعبید، الحسن بن فضل، ہارون بن العباس الہاشمی، محمد بن عمران الفارسی الزاہد، محمد بن یونس البصری، عبداللہ بن ابن الامام، مروزی اور بشر کا بھی ہے۔

میں (یعنی ابن قیم) کہتا ہوں اور یہی قول ابن جریر طبری اور ان سب کا امام امام تفسیر مجاہد اور ابوالحسن الدراقطنی کا بھی ہے امام دارقطنی کے اشعار:

شفاعت کی حدیث احمد سے احمد مصطفیٰ تک متصل سند سے مروی ہے

حدیث میں آپ ﷺ کے عرش پر جلوہ افروز ہونے کا ذکر ہے، لہذا ہم اس کا انکار نہیں کرتے حدیث کو اس کے ظاہری حال پر چھوڑ دو، اور اس میں ایسی کوئی تاویل نہ کرو کہ جس کی وجہ سے اس پر عمل کرنا ممکن نہ ہو

اور اس کا انکار نہ کرو کہ آپ ﷺ عرش پر جلوہ افروز ہوے ہیں، اور اس کا بھی انکار نہ کرو کہ آپ ﷺ عرش پر جلوہ افروز ہوں گے''۔

حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ نے ان اشعار کی نسبت امام دارقطنی رحمۃ اللہ علیہ کی طرف کی ہے اور اس نسبت کے باطل ہونے کو نہیں بتایا۔

---

۱۔ بدائع الفوائد: ۴/۱۴۱۸

اسی وجہ سے علامہ زاہد کوثری رحمۃ اللہ علیہ (۱) نے ''ایضاح الدلیل فی قطع حجج اہل التعطیل''[۲] میں اوران کے بعد شیخ ناصرالدین البانی رحمۃ اللہ علیہ نے سلسلة الضعیفةوالموضوعة واثرها السیئ فی الأمة [۳] میں حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ سے یہ شکوہ کیا ہے کہ موصوف نے اس بات کی تصریح کیوں نہیں کی ہے کہ یہ نسبت محل نظر ہے۔

یہی وجہ ہے کے ان حضرات نے سختی سے تردید کی ہے کہ ان اشعار کی نسبت امام دارقطنی رحمۃ اللہ علیہ کی طرف کرنا کسی طرح بھی درست نہیں البتہ موصوف نے خود اس طرح کے اشعار کہے ہیں۔

## چنانچہ موصوف فرماتے ہیں:

''وَ زَعَمْتُ أَنَّ مُحَمَّداً أَسْرَى بِهِ　　لَيْلاً اِلَيهِ فَهُوَ مِنْهُ دَانِ
وَزَعَمْتُ أَنَّ مُحَمَّداً يَومَ اللِّقَاءِ　　يُدْنِيهِ رَبُّ الْعَرْشِ بِالرِّضْوَانِ
حَتّٰى يُرَى الْمُخْتَارَ رَحِقّاً قَائِداً　　مَعَهُ عَلَى الْعَرْشِ الرَّفِيعِ الشَّانِ .''[۴]

(ترجمہ): میں یقین سے کہتا ہوں کہ اللہ تعالی شب معراج میں آپ ﷺ کو اپنے پاس لے گئے، تو حضور ﷺ اللہ جل شانہ کے قریب ہو گئے۔

---

۱۔ محمد زاہد بن الحسن بن علی کوثری حنفی نے ۱۲۹۶ھ میں پیدا ہوئے۔ موصوف مشہور ومعروف محقق مدقق، جامع العلوم والفنون تھے، ترکی کے زمانہ میں آپ وکیل المشیخۃ الاسلامیہ، معہد تخصص تفسیر وحدیث میں استاذ علوم قرآنیہ، قسم شرعی جامعہ عثمانیہ، استنبول میں استاذ فقہ وتاریخ اور دارالثقافۃ الاسلامیہ استنبول میں استاذ ادب وعربیت رہے تھے، مصطفیٰ کمال کے لادینی فتنہ کے دور میں استنبول چھوڑ کر مصر آئے اور آخر تک وہیں رہے۔ موصوف مطالعہ کتب، وسعت معلومات، خلوص، تقوی ودیانت میں بے نظیر تھے۔ وفات ۱۳۷۱ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: تانیب الخطیب، النکت الطریفہ، الوجیز فیما یبتغیہ المستجیز۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الاعلام ۱۲۹/۶، اور انوار الباری علی صحیح البخاري: ۴۴۸/۲-۴۴۹۔

۲۔ ایضاح الدلیل في قطع حجج اہل التعطیل: ۳۰/۱

۳۔ سلسلة الضعیفة والموضوعة وأثرها السیئ فی الأمة: ۲۵۶/۲

۴۔ القصیدۃ النونیۃ: ص ۲۸

میں یقین سے کہتا ہوں کہ محمد ﷺ کو قیامت کے دن، عرش کا رب اپنی خوشنودی سے قریب کرے گا۔

اور یہاں تک قرب کی نوبت پہنچ جائے گی، کہ حضور ﷺ اللہ تعالی کے ساتھ بلند عرش عظیم پر جلوہ افروز ہوں گے۔

دوسرے مقام پر موصوف لکھتے ہیں:

"بل عطلوا منه السموات العلى والعرش أخلوه من الرحمان."(۱)

لیکن لوگوں نے تو باری تعالی کو بلند آسمانوں سے جدا ہی کر دیا، اور عرش کو رحمان سے خالی ہی کر دیا۔

علامہ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ نے ان اشعار میں ان لوگوں پر نکیر فرمائی ہیں، جو باری تعالی کو عرش پر جالس و متمکن نہیں مانتے، اور کہا کہ یہ کیسے لوگ ہیں جنہوں نے عرش کو باری تعالی سے خالی مانا ہے، لیکن "زاد المعاد" میں جو علامہ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ نے باری تعالی کے طواف فی الارض کی طویل حدیث (جس کو ہم ماقبل میں ذکر کر چکے ہیں) ذکر کر کے اس کی انتہائی توثیق بھی کی ہے، تو کیا اس وقت بھی باری تعالی اپنے عرش سے الگ نہیں ہونگے؟۔

مذکورہ حضرات کے مستدلات میں سے ایک مستدل وہ روایت بھی ہے جس کو حافظ ابن جریر طبری رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی تفسیر میں امام مجاہد رحمۃ اللہ علیہ سے موقوفاً نقل کیا ہے:

"حدثنا عباد بن يعقوب الأسدي، قال: ثنا ابن فضيل، عن ليث، عن مجاهد في قوله تعالى ﴿عسى أن يبعثك ربك مقاماً محموداً﴾ قال: يجلسه معه على عرشه."(۲)

---

۱۔ القصیدۃ النونیۃ: ص۲۹

۲۔ تفسیر الطبری: ۱۳۲/۸

امام مجاہد سے اس روایت کو نقل کرنے والے چار راوی ہیں: (۱) لیث، (۲) عطاء بن السائب، (۳) ابو یحیی القتات (۴) اور جابر بن یزید۔ چنانچہ علامہ ذہبی رحمۃ اللہ علیہ [۱]، نے ان چاروں سے روایت لی ہے [۲] جبکہ تفسیر طبری میں صرف لیث کی طریق سے مروی ہے۔

## علامہ ابن جریر طبری رحمۃ اللہ علیہ کی روایت کی فنی حیثیت:

عباد بن یعقوب کے بارے میں ائمہ رجال کے اقوال:

امام ابو حاتم رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "شیخ ثقة."، ابوبکر بن خزیمہ رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں": حدثنا الثقة في روايته، المتهم في دينه ."[۳]

ابوبکر بن ابی شیبہ رحمۃ اللہ علیہ اور ہناد بن السري رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: یہ سلف کو سب وشتم کیا کرتا تھا۔

،ابن عدی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:" عباد فيه غلو في التشيع، و روى أحاديث أنكرت عليه في فضائل أهل البيت .""حوالہ بالا

ابن حبان رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:" صدوق رافضي يستحق الترك."[۴]

علامہ ذہبی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:"من غلاة الشيعة ورؤوس البدع لكنه صادق في الحديث."،(۵)

---

۱۔ ابوعبداللہ محمد بن احمد بن عثمان ترکمانی ذہبی شافعي ۔۳ ربیع الثانی ۶۷۳ھ میں پیدا ہوئے تحصیل علم اپنے زمانہ کے کبار علماء امت سے کیا۔ علامہ سبکی نے محدث العصر، خاتم الحفاظ، امام العصر لکھا ہے۔ موصوف فقہ، حدیث، تاریخ، تجوید، رجال میں بے مثال تھے۔ وفات ۳ ذی القعدۃ ۷۴۸ھ میں ہوئی ۔ چند مشہور تصانیف: سیر اعلام النبلاء، تاریخ الاسلام، تذکرۃ الحفاظ۔ مزید حالات کے لئے دیکھئے: الدرر الکامنۃ في أعیان المائۃ الثامنۃ: ۲۰۴/۳۔۲۰۵

۲۔ العلو للعلي الغفار: ۷۰/۱

۳۔ العلو للعلی الغفار: ۱۷۰/۱

۴۔ تقریب التہذیب: ۲۹۱

۵۔ الکامل فی الضعفاء: ۵۵۹/۵

ابن حبان رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "كان داعية إلى الرفض، ومع ذلك يروي المناكير عن المشاهير؛ فاستحق الترك." حوالہ بالا

امام دارقطنی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "شيعي صدوق."(۱)

علامہ خزرجی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "أحد رؤوس الشيعة وثقه أبو حاتم وابن خزيمة."۔حوالہ بالا

ان کے بارے میں ابن حبان رحمۃ اللہ علیہ نے تصریح کی ہے کہ یہ داعی الی المذہب تھے اور محققین کے نزدیک بدعتی راوی جب داعی الی المذہب ہو تو اس کی روایت کسی طرح بھی قابل قبول نہیں اور حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ نے اسی قول کو راجح قرار دیا ہے۔(۲)

## محمد بن فضیل کے بارے میں ائمہ رجال کے اقوال:

امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "كان يتشيع، وكان حسن الحديث."(۳)

یحیی بن معین رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ثقة." حوالہ بالا

امام ابوزرعہ رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "صدوق من أهل العلم." حوالہ بالا

امام ابوحاتم رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "شيخ." حوالہ بالا

امام ابوداؤد رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "كان شيعيا محترقاً" حوالہ بالا

امام النسائی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں "ليس به بأس." حوالہ بالا

ابن حبان رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ذكر في الثقات وقال: كان يغلو التشيع." حوالہ بالا

ابن سعد رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "بعضهم لا يحتج به."(۴)

---

۱۔ میزان الاعتدال: ۴۴/۴، ۴۵

۲۔ خلاصۃ تہذیب تہذیب الکمال: ص ۱۸۷

۳۔ تھذیب الکمال في أسماء الرجال: ۱۵۸/۱۷

۴۔ میزان الاعتدال: ۳۰۰/۴، ۳۰۰۱)

امام ابوحاتم رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ليس بقوي"

حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "صدوقٌ عارفٌ رُمِيَ بالتشيع. (۱)

علامہ خزرجی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "شيعي غال باطنه.". (۲)

## لیث بن ابی سلیم کے بارے میں ائمہ رجال کے اقوال:

امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "مضطرب الحديث، ولكن حدث عنه الناس. مارآيت يحيى بن سعيداً سوأرأياً في أحد منه في ليث.". (۳)

ابوبکر بن ابی شیبہ رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "كان ليث أكثر تخليطاً."، حوالہ بالا

یحیی بن معین رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ليث ضعيف إلا أنه يكتب حديثه."، حوالہ بالا

ابن عیینہ رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "يضعفه". حوالہ بالا

امام ابوزرعہ رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ليث لين الحديث، لاتقوم به الحجة عند أهل العلم بالحديث." حوالہ بالا

، امام ابن معین رحمۃ اللہ علیہ اور امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ضعيف." (۴)

محمد بن ادریس رحمۃ اللہ علیہ اور امام ابوزرعہ رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ليث لايشتغل به هو مضطرب الحديث." (۵)

اور حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "صدوق اختلط جداً ولم يتميز حديثه فترك". (۶)

---

۱۔ تقریب التہذیب: ص۵۰۲

۲۔ خلاصۃ تہذیب تہذیب الکمال: ص۳۵۶

۳۔ تہذیب الکمال: ۱۵/۴۵۱۔۴۵۳

۴۔ میزان الاعتدال: ۷/۴۴۳۔۴۴۴

۵۔ الجرح والتعدیل: ۷/۲۴۳

۶۔ تقریب التہذیب: ص۴۶۴

لیث کے علاوہ وہ رواۃ جنہوں نے یہی روایت امام مجاہد سے لی ہیں:

عطاء بن السائب کے بارے میں ائمہ رجال کے اقوال:

امام ابن معین رحمۃ اللہ علیہ ان کے بارے میں فرماتے ہیں کہ: ان کی روایت ضعیف ہے سوائے سفیان رحمۃ اللہ علیہ اور شعبہ رحمۃ اللہ علیہ کے۔ (۱)

ائمہ جرح وتعدیل کا اس بات پر تقریباً سب کا اتفاق ہے کہ اختلاط سے پہلے ان کی روایات صحیح ہیں اور اختلاط کے بعد کوئی بھی روایت درست نہیں ہے۔ کیوں کہ اختلاط کی وجہ سے بہت زیادہ سوءِ حفظ کے شکار ہو گئے تھے۔

عبدالرحمان بن دینار یا زاذان یا یزید کے بارے میں ائمہ رجال کے اقوال:

ابن معین رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ضعیف"۔ (۲)

امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے: "ليس بالقوي." حوالہ بالا

ابراہیم بن مہاجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "لم يكن بالقوي." حوالہ بالا

شریک رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "يضعفه." (۳)

،حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "لين الحديث." (۴)

ابن حبان رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ممن فحش خطؤه وكثر وهمه، حتى سلك غير مسلك العدول في الروايات." (۵)

امام مجاہد رحمۃ اللہ علیہ سے روایت کرنے والا چوتھا راوی جابر بن یزید ہیں اور یہ دو ہیں ایک جابر بن یزید الجعفی (جو کہ متروک راوی ہیں) دوسرا جابر بن یزید العجلی (جو کہ ثقہ ہیں) اور یہ بات یاد رہے! کہ یہ دونوں امام مجاہد رحمۃ اللہ علیہ کے شاگرد ہیں۔

---

۱۔ الکامل فی الضعفاء: ۷/۱۷

۲۔ میزان الاعتدال: ۷/۳۴۴، ۴۴۴

۳۔ الکامل فی الضعفاء: ۴/۲۲۱۰

۴۔ تقریب التہذیب: ص ۶۸۴

۵۔ کتاب المجروحین من المحدثین: ص ۲/۷

ہماری جستجو کے مطابق معلوم نہ ہوسکا کہ ان دونوں میں سے یہاں کون مراد ہے البتہ شیخ البانی رحمۃ اللہ علیہ نے جابر جعفی کو اس روایت کا راوی قرار دیا ہے۔(۱)

علامہ ذہبی رحمۃ اللہ علیہ مذکورہ روایت کے بارے میں تمام تر تحقیقات کرنے کے بعد یوں گویا ہیں:

" ولكن ثبت في الصحاح أن المقام المحمود هو الشفاعة الخاصة بنبينا :(۲)

(ترجمہ): ''یعنی مقام محمود کی صحیح تفسیر یہی ہے کہ اس سے مراد وہ شفاعت ہے جو آپ ﷺ کے ساتھ خاص ہے''۔

چنانچہ علامہ ذہبی رحمۃ اللہ علیہ کے اس قول کے بعد شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

"وهذا هو الحق في تفسير المقام المحمود دون شك ولاريب للأحاديث التي أشار إليها المصنف رحمه الله تعالى، وهو الذي صححه الأمام ابن جرير في تفسيره ثم القرطبي وهو الذي لم يذكر الحافظ ابن كثير غيره، وساق الأحاديث المشار إليها-بل هو الثابت عن مجاهد نفسه من طريقين عنه عند ابن جرير-وذالك الأثر عنه ليس له طريق معتبر، فقد ذكر المؤلف أنه روي عن ليث بن أبي سليم وعطاء بن السائب وأبي يحيى القتات وجابر بن يزيد-قلت: و الأولان مختلطان، والآخران ضعيفان؛ بل الأخير متروك متهم"(۳)

۱۔ سلسلۃ احادیث الضعیفۃ والموضوعۃ وأثرھا السیئ فی الأمۃ: ۲/۲۵۶
۲۔ مختصر العلو: ص ۱۷
۳۔ مختصر العلو: ص ۱۷

(ترجمہ): ''اور یہی مقام محمود کی صحیح تفسیر ہے جس میں کوئی شک وشبہ نہیں ان احادیث کی بنا پر جن کی طرف مصنف نے اشارہ کیا ہے، اور اسی کو حافظ ابن جریر طبری رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی تفسیر میں صحیح قرار دیا ہے اس کے بعد علامہ قرطبی رحمۃ اللہ علیہ نے اور حافظ ابن کثیر رحمۃ اللہ علیہ نے تو سوائے مذکورہ تفسیر کے اور کسی قول کو ذکر ہی نہیں کیا ہے، اور پھر ان احادیث کو لے کر آئے ہیں جن سے اسی کی تائید ہوتی ہے۔ یہ نہیں بلکہ خود امام مجاہد رحمۃ اللہ علیہ سے بھی یہی تفسیر دو طرق سے منقول ہے جن کو حافظ جریر طبری اپنی تفسیر میں لے کر آئے ہیں۔

اور یہ روایت امام مجاہد رحمۃ اللہ علیہ سے کسی معتبر طریق سے منقول نہیں ہے، مصنف نے اس روایت کو لیث بن ابی سلیم، عطاء بن السائب، ابویحیی القتات اور جابر بن یزید کے طریق سے نقل کیا ہے۔ میں (یعنی البانی) کہتا ہوں کہ پہلے دو مختلط راوی ہیں، اور اخیر کے دو ضعیف، بلکہ آخری راوی تو متروک اور متہم ہے''۔

پھر آگے لکھتے ہیں:

"ومن العجب حقاً أن يعتمد هذا الأثر الإمام ابن القيم رحمه الله تعالى فإنه نقل كلام القاضي أبي يعلى فيه وبعض أسماء القائلين به، ثم قال ابن القيم:قلت:وهو قول ابن جرير الطبرى ،وإمام هولاء كلهم مجاهد إمام التفسير ، وهو قول أبي الحسن الدارقطني...قلت:وقد عرفت أن ذلك لم يثبت عن مجاهد ،بل صح عنه ما يخالفه كما تقدم .وما عزاه للدار قطني لا يصح إسناده كما بيناه في الأحاديث الضعيفة ...وجعل ذلك قولا لابن جرير فيه نظر؛أن كلامه في التفسير يدور على إمكان وقوع ذلك كما سبق لا أنه وقع وتَحَقَّقَ۔(۱)

۱۔ مختصر العلو: ص ۱۹۔۲۰

(ترجمہ): ''تعجب بالائے تعجب تو حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ پر ہے کہ موصوف نے اس جیسی روایت پر اعتماد کیا ہے، چنانچہ موصوف اسی کے حق میں قاضی (ابویعلی) اور بعض ان حضرات کے نام جو اس کے قائل ہیں ذکر کرنے کے بعد فرماتے ہیں: اور یہی قول ابن جریر رحمۃ اللہ علیہ اور ان سب کے امام امام التفسیر امام مجاہد رحمۃ اللہ علیہ اور ابوالحسن دار قطنی رحمۃ اللہ علیہ کا بھی ہے۔

آگے البانی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: یہ تو آپ جان ہی چکے ہیں کہ امام مجاہد رحمۃ اللہ علیہ سے یہ روایت ثابت نہیں، بلکہ ان سے تو اس کے خلاف قول ثابت ہے جیسا کہ ماقبل میں گزر چکا۔ اور امام دار قطنی رحمۃ اللہ علیہ کی طرف نسبت کی ہے اس کی سند بھی صحیح نہیں جیسا کہ ہم بیان کر چکے ہیں، اور علامہ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ کا یہ کہنا کہ ابن جریر رحمۃ اللہ علیہ کی رائے بھی یہی ہے یہ محل نظر ہے؛ اس لئے کہ ابن جریر رحمۃ اللہ علیہ تو ایک امکانی صورت کا ذکر کرتے ہیں نہ کہ ثابت شدہ حقائق کا۔

موصوف ایک اور جگہ لکھتے ہیں:

''فاعلم أن إقعاده ﷺ على العرش ليس فيه إلا هذا الحديث الباطل، وأما قعوده تعالى على العرش فليس فيه حديث صحيح.''(۱)

(ترجمہ): ''تو جان لے کہ اللہ جل شانہ کا آپ ﷺ کو عرش پر جلوہ افروز کرنے کے بارے میں سوائے اس باطل روایت کے اور کوئی روایت نہیں، بہرحال اللہ جل شانہ کا عرش پر جلوہ افروز ہونا تو اس بارے میں بھی کوئی صحیح روایت نہیں ہے''۔

یہ تمام تفصیل اس بات سے صرف نظر کرتے ہوئے ہے کہ ان جیسی روایات اور اخبار آحاد سے عقیدہ کو ثابت کرنے کی کوشش کی جاتی ہے حالانکہ جمہور علماء امت کے نزدیک عقیدے کا

(۱) سلسلۃ احادیث الضعیفۃ والموضوعۃ وأثرها السیئ فی الأمۃ: ۲/۲۵۶

ثبوت صرف اور صرف قطعی دلائل سے ہوسکتا ہے اور اخبار آحاد قطعیت کا فائدہ دینے سے قاصر ہیں چہ جائکہ ایسی متکلم فیہ روایت قطعیت کا فائدہ دے۔

کسی بھی خبر واحد کا اعلیٰ درجہ اسے ظنیت کے اعلیٰ مقام تک تو پہنچا سکتا ہے لیکن بہر حال قطعیت اس سے حاصل نہیں ہوسکتا۔

حاصل کلام یہ ہے کہ یہ ساری بحث جواب تسلیمی کے طور پر اسنادی حیثیت سے کی گئی ہے حالانکہ عقائد کے مستدلات اسنادی مباحث سے مستغنی ہوتے ہیں۔

اسی طرح سنن ابی داؤد کی ایک حدیث ہے :

" حدثنا محمد بن الصباح البزاز، حدثنا الولید بن أبي ثور عن سماك ، عن عبد الله بن عمیرة؛ عن الأحنف بن قیس، عن العباس بن عبد المطلب قال: کنت في البطحاء في عصابة فیھم رسول الله ﷺ فمرت بھم سحابة ،فنظر إلیھا،فقال:ما تسمعون ھذه ؟ قالوا:السحاب قال: والمزن قالوا:والمزن، قال:والعنان قالوا:والعنان۔قال أبو داؤد: لم أتقن العنان جیداً۔ قال:ھل تدرون بُعد ما بین السماء والأرض؟ قالوا:لا ندري، قال:إن بُعد ما بینھما إما واحدة أو ثنتان أو ثلاث و سبعون سنة ، ثم السماء فوقھا کذلك حتی عد سبع سمٰوت ثم فوق السابعة بحرٌ أما بین أسفله وأعلاه مثل ما بین سماء إلی سماء ، ثم فوق ذلك ثمانیة أوعال بین أظلا فھم ورکبھم مثل مابین سماء إلی سماء ،ثم علی ظھورھم العرش بین أسفله وأعلاه مثل مابین سماء إلی سماء ، ثم الله تبارك وتعالی فوق ذلك." (۱)

۱۔ سنن ابی داؤد:۵/۲۳۶۔۲۳۷

یہی حدیث ''سنن ابن ماجہ''(۱) اور ''جامع الترمذی''(۲) میں بھی اسی طریق سے مروی ہے، جبکہ ''مسند احمد''(۳) میں ''عبد الرزاق عن یحیی بن العلاء عن شعیب بن خالد عن سماك بن حرب عن عبد الله بن عميرة عن العباس رضی اللہ عنہ'' کے طریق سے مروی ہے۔

دوسرا فرق یہ ہے کہ ''سنن ابی داؤد''، ''جامع الترمذی'' اور ''سنن ابن ماجہ'' میں ''عبداللہ بن عمیرہ'' اور حضرت عباس رضی اللہ عنہ کے درمیان ''احنف بن قیس'' کا واسطہ موجود ہے؛ جبکہ ''مسند احمد'' میں یہ واسطہ موجود نہیں ہے۔

## سنن ابی داؤد کی حدیث سبعۃ أعال کی فنی حیثیت:

اس حدیث کو کبار محدثین نے ضعیف قرار دیا ہے:

چنانچہ اس حدیث میں ایک راوی ہے ''عبداللہ بن عمیرہ'' ان سے صرف ''سماک'' روایت کرتے ہیں، جس کی تصریح امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے کی ہے۔(۴)

امام یحیی بن معین رحمۃ اللہ علیہ کا قول ہے سماک جیسے راویوں کی کسی راوی سے روایت کرنے سے ان کی جہالت ختم نہیں ہوتی۔(۵)

''عبداللہ بن عمیرہ'' کے بارے میں امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "لانعلم له سماعاً من الأحنف"(۶)

---

۱۔ سنن ابن ماجہ: ۱/ ۱۲۰

۲۔ جامع الترمذي: ۵/ ۳۴۸

۳۔ مسند امام احمد بن حنبل: ۱/ ۵۵۰

۴۔ المنفردات والوحدان: ص ۱۴۴

۵۔ شرح علل الترمذي: ۱/ ۸۱-۸۲

۶۔ [illegible]ریخ کبیر: ۵/ ۶۳

امام ذہبی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: " لایعرف " فیه جهالة " امام حربی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "لا أعرفه ".(۱)

دوسرا راوی ہے "ولید بن عبداللہ بن ابی ثور":

امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ اور صالح جزرہ رحمۃ اللہ علیہ نے ان کو ضعیف قرار دیا ہے۔(۲)

محمد بن عبداللہ بن نمیر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: " ،ليس بشيئ كذاب"(۲)

یحیی بن معین رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: " لم يكن بشيئ "حوالہ بالا

یعقوب بن سفیان رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: " ضعيف " (۳)

امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: " ضعيف " (۵)

امام ابوزرعہ رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "منكر الحديث يهم كثيراً "(۶)

امام ابوحاتم رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "يكتب حديثه ولا يحتج"(۷)

اسی طرح مسند احمد والی روایت میں ایک راوی ہے "یحیی بن العلاء" جن کے بارے میں امام بن معین رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "متروك " (۸)

امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: " متروك الحديث " (۹)

---

۱۔ المغنی: ۱/۵۵۷، میزان الاعتدال: ۴/۱۵۷

۲۔ تہذیب التہذیب: ۳/۵۹۴

۳۔ میزان الاعتدال: ۷/۱۳۳

۴۔ تہذیب الکمال فی أسماء الرجال: ۱۹/۴۲۴

۵۔ المجروح فی الضعفاء والمتروکین: ۲۳۲

۶۔ میزان الاعتدال: ۷/۱۳۳

۷۔ الجرح والتعدیل: ۹/۵۰۴

۸۔ لسان المیزان: ۷/۵۵۰

۹۔ الکامل فی الضعفاء: ۹/۲۳

امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "متروك الحديث"(۱)

امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "كذاب يضع الحديث"، حوالہ بالا

امام عمرو بن علی رحمۃ اللہ علیہ اور امام دارقطنی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "متروك الحديث" حوالہ بالا

ابراہیم بن یعقوب رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "شيخ واهي" حوالہ بالا

ابوعبید آجری رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ضعيف" حوالہ بالا

ابن حبان رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ينفرد عن الثقات بالمقلوبات، لا يجوز الاحتجاج به"، حوالہ بالا

ابن عیینہ رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "ضعيف"(۲)

امام ابوحاتم رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "تكلم فيه وكيع"(۳)

امام ذہبی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "تركوه"(۴)

حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "رمي بالوضع"(۵)

ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "إن الخبر باطل لانفراد يحيى بن العلاء في مسند أحمد."(۶)

"یہ حدیث یحیی بن علاء کے تفرد کی وجہ سے باطل ہے"۔

ابن العربی رحمۃ اللہ علیہ اس حدیث کے بارے میں فرماتے ہیں: "أمور تلقفت من

---

۱۔ المجموع فی الضعفاء والمتروکین: ۲۴۰)

۲۔ تہذیب الکمال: ۲۰/۱۸۶۔۱۸۷

۳۔ الجرح والتعدیل: ۹/۲۲۱

۴۔ میزان الاعتدال: ۷/۲۰۲

۵۔ الکاشف ۳/۲۶۵)

۶۔ مقالات کوثری: ص ۲۳۵

اهل الكتاب ليس لها أصل في الصحة."(۱)

"یہ ایسے امور ہیں جن کو اہل کتاب سے لئے گئے ہیں جن کا صحت سے کوئی تعلق ہی نہیں"۔

شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ اس حدیث کی حیثیت کو بتاتے ہوئے رقمطراز ہیں:

"مسند احمد" کی روایت میں ایک راوی ہے "شعیب بن خالد" جنہوں نے دوسرے روات سے سند اور متن دونوں میں مخالفت کی ہے: سند میں مخالفت: عبداللہ بن عمیرہ اور حضرت عباس رضی اللہ عنہ کے درمیان "احنف بن قیس" کو گرادیا ہے، جبکہ "سنن ابی داؤد" وغیرہ میں یہ واسطہ موجود ہے۔

متن میں مخالفت: "مسند احمد" میں " بينهما مسيرة خمسمائة سنة، و من كل سماء إلى سماء مسيرة خمسمائة سنة" کے الفاظ ہیں، جبکہ "ابوداؤد وغیرہ" میں "ان الفاظ کے ساتھ ہے:" إن بُعد ما بينهما إما واحدة أو ثنتان أو ثلاث و سبعون سنة "(۲)

امام حاکم رحمۃ اللہ علیہ کا اس حدیث کے بارے میں "هذا حديث صحيح على شرط مسلم" کہنا وہم ہے، (۳) اس لئے کہ اس حدیث کی سند میں "یحیی بن علاء" جیسے "کذاب" اور "متروک" اور "عبداللہ بن عمیرہ" جیسے "مجہول" راوی کے ہوتے ہوئے کیسے حدیث کو "صحیح علی شرط مسلم" قرار دیا جا سکتا ہے؟۔ رہی یہ بات کہ صاحب "تحفۃ الأحوذي" (۴) کا یہ کہنا کہ "امام ابو داؤد رحمۃ اللہ علیہ" نے اس حدیث کو تین طرق سے نقل کیا ہے،

---

۱۔ مقالات کوثری، ص ۲۳۵

۲۔ سنن ابی داؤد: ۲۳۶/۵۔۲۳۷

۳۔ مستدرک حاکم: ۵۴۳/۲۔۵۴۴

۴۔ محمد عبدالرحمان بن عبدالرحیم مبارک پوری سلفی ۱۲۸۳ھ میں پیدا ہوئے۔ اپنے زمانہ کے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی۔ موصوف علماء اہل حدیث کے محدث، علل حدیث کے ماہر، بڑے عابد اور تہجد گزار تھے۔ موصوف کی علمی حدیثی خدمات نہایت قابل قدر ہیں، مگر مسائل خلافیہ میں جو بیجا تعصب، تنگ نظری و ناانصافی سے کام لیا ہے وہ ان کی شایان شان نہ تھا۔ وفات ۱۳۵۳ھ میں ہوئی ہے۔ چند مشہور تصانیف: تحفۃ الاحوذی، تحقیق الکلام فی وجوب القرأۃ خلف الامام۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر: ۲۵۹/۸۔۲۶۰

جن میں سے دو قوی ہیں (۱)

صرف وہم ہی ہے؛ اس لئے کہ امام مسلم اور علامہ ذہبی پہلے یہ تصریح کر چکے ہیں کہ ''سماک'' ''عبداللہ بن عمیرہ'' سے اس حدیث کے نقل کرنے میں متفرد ہیں اور ''عبداللہ بن عمیرہ'' مجہول'' اور ''یحیی بن علاء کذاب'' اور ''متروک الحدیث'' ہے۔

''سنن ابی داؤد'' کے طریق میں ایک راوی ہے ''ولید بن ثور'' حافظ منذري رحمۃ اللہ علیہ ان کے بارے میں فرماتے ہیں: ''لا يحتج بحديثه ''. (۲)

حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ نے حافظ منذري رحمۃ اللہ علیہ کے اس قول کی تردید کرتے ہوئے کہا ہے کہ ''ولید بن ثور'' کے اور متابع بھی موجود ہیں، جیسے ''ابراہیم بن طهمان' عمرو بن ابی قیس'' وغیرہ اس کے باوجود حافظ منذری کا یہ قول ''لا يحتج بحديثه '' کہنا درست نہیں، اور اس کے بعد حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ نے اس حدیث کو صحیح ثابت کرنے کے لئے بہت زور صرف کرنے کے ساتھ ساتھ مخالفین کی مذمت بھی کی ہیں۔ (۳)

یہ بات درست ہے کہ ''ولید بن ثور'' کے متابع مل جانے کی وجہ سے جو کمی تھی وہ دور ہو گئی، لیکن حدیث کی صحت کا حکم اس وقت تک نہیں لگایا جا سکتا، جب تک ان سے اوپر جتنے بھی رواۃ ہیں ان تمام میں رواۃِ صحیح اور حسن کی شرائط نہ پائی جائیں، اور یہ صورت یہاں ممکن نہیں، اور کیوں کر ہوسکتی ہے؟ جبکہ اس حدیث کے سند میں ''سماک'' کے متفرد ہونے کے ساتھ ساتھ'' عبداللہ بن عمیرہ'' جیسے ''مجہول'' اور ''یحیی بن علاء'' جیسے ''کذاب'' اور ''منکر الحدیث''

---

۱۔ سلسلۃ الأحاديث الضعيفة والموضوعة وأثرها السيئ في الأمة: ۳/۳۹۹، ۴۰۰، تحفۃ الأحوذي شرح جامع الترمذي: ۹/۲۳۶

۲۔ سلسلۃ الأحاديث الضعيفة والموضوعة وأثرها السيئ في الأمة: ۳/۳۹۹، ۴۰۰، مختصر وشرح وتهذيب سنن أبي داؤد: ۸/۹۳

۳۔ سلسلۃ الأحاديث الضعيفة والموضوعة وأثرها السيئ في الأمة: ۳/۳۹۹، ۴۰۰، مختصر وشرح وتهذيب سنن أبي داؤد: ۸/۹۱۔۹۲

راوی موجود ہوں۔ (۱)

اس طرح کی دوسری روایت ''مسند احمد'' میں "سريج عن حكم بن عبد الملك ، عن قتادة ، عن أبي هريرة رضی اللہ عنہ"، (۲) کہ ''جامع الترمذی'' میں "عبد بن حميد، عن يونس بن محمد،عن شيبان بن عبد الرحمان ،عن قتادة ،عن أ بي هريرة رضی اللہ عنہ." (۳) کے طریق سے مروی ہے۔

''سنن ابی داؤد'' والی روایت کا (جو کہ حضرت عباس رضی اللہ عنہ کے طریق سے مروی ہے) مذکورہ روایت (جو کہ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کے طریق سے مروی ہے) کے ساتھ دو جگہ اختلاف ہے:

(۱) زمین اور آسمان کے درمیان مسافت کے بارے میں: ''سنن ابی داؤد'' میں "إن بُعد ما بينهما إما وا حدة أو ثنتان أو ثلاث و سبعون سنة" جبکہ ''مذکورہ روایت میں'' بينكم وبينها مسيرة خمس مئة سنة " کے الفاظ ہیں۔

(۲) ''سنن ابی داؤد'' والی روایت میں اللہ تعالی کی ذات کو فوقیت عرش کے ساتھ خاص کیا گیا ہے، جبکہ ''مسند احمد'' اور ''جامع الترمذی'' کی مذکورہ روایت میں اس کا ذکر نہیں ہے؛ یہ ہی وجہ ہے کہ حافظ ابن جریر طبری رحمۃ اللہ علیہ (۴) اور حافظ ابن کثیر رحمۃ اللہ علیہ نے اس روایت کو مرسلاً "عن بشر، عن يزيد، عن سعيد بن أ بي عروبة ،عن قتادة " کے طریق سے نقل کیا ہے۔

حافظ رحمۃ اللہ علیہ اس روایت کو نقل کرنے کے بعد فرماتے ہیں: "و لعل هذا هو المحفوظ ." (۵) وجہ اس کی یہ ہے کہ "سعيد بن عروبه من أثبت الناس في قتادة " ہے

---

۱۔ السلسلۃ الأحادیث الضعیفۃ والموضوعۃ وأثرھا السیئ فی الأمۃ: ۳/۳۹۹۔۴۰۰

۲۔ مسند امام احمد بن حنبل: ۳/۳۷۱ جب

۳۔ جامع الترمذي: ۵/۳۲۶۔۳۲۷

۴۔ تفسیر طبري: ۱۱/۶۷۰

۵۔ تفسیر ابن کثیر: ۴/۳۰۲

چنانچہ حافظ ابن کثیر رحمۃ اللہ علیہ نے اسی وجہ سے موصول روایت کے مقابلہ میں مرسل روایت کو ترجیح دی ہے۔

خلاصہ کلام یہ کہ اس پوری بحث سے لامحالہ یہ نتیجہ نکلتا ہے کہ ''سنن ابی داؤد'' کی '' سبعة أو عال'' والی روایت ضعیف اور منکر ہے، اگر چہ کتب تفسیر، کتب حدیث، کتب سیرت اور کتب تاریخ میں اس کی تخریج کے ساتھ ساتھ توثیق بھی کیوں نہ کی گئی ہو؟ اس لئے کہ یہ مسلمہ اصول ہے کہ حدیث کی صحت کا دارومدار سند کے رجال پر ہوتا ہے، (رجال پر کلام ماقبل میں ہو چکا) نہ کہ کسی کتاب وغیرہ پر۔

مذکورہ حضرات کے بعد شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ نے بھی اسی موقف کو اپنایا ہے چنانچہ موصوف اپنے اس نظریہ کی تائید میں '' الحديث حجة بنفسه '' نامی ایک رسالہ بھی لکھ چکے ہیں، جس میں اس بات پر زور دیا ہے کہ حدیث بنفس نفیس حجت ہے، اور یہ بھی یاد رہے کہ! حدیث وسنت کی جو بھی تعریف حضرات محدثین اور اصولیین نے کی ہے قدیم ہو، یا جدید، اس میں کوئی ایسی قید نہیں، جس سے ضعیف حدیث کو نکال باہر کیا جائے، بلکہ موصوف کے مذکورہ رسالے سے تو صاف معلوم ہوتا ہے کہ ضعیف حدیث احکام میں بھی مطلقاً قابل حجت ہے چہ جائکہ فضائل میں۔

اس کے باوجود موصوف نے ضعیف حدیث کو ساقط الاعتبار قرار دیکر موضوع کے ساتھ ساتھ رکھا ہے، حالانکہ جمہور فقہاء ومحدثین قدیماً وحدیثاً ضعیف حدیث سے فضائل میں برابر استدلال کرتے رہے ہیں، اور دوسری طرف یہ حال ہے کہ خبر واحد سے (جو کہ جمہور کے ہاں ظن کا فائدہ دیتی ہے، اور عقیدے کے ثبوت کے لئے یقین کا ہونا ضروری ہے) بھی عقیدے کو ثابت کرتے ہیں، جس پر ایمان واسلام کا دارومدار ہے۔

جمہور فقہاء، محدثین، اصولیین اور متکلمین کا یہ مختار مذہب رہا ہے، کہ خبر واحد سے ایسے عقیدے کا ثبوت نہیں ہوگا جس کا تعلق قطعیات سے ہے، جہاں تک احکام کا تعلق ہے، تو اس میں خبر واحد بلا کسی اختلاف کے قابل استدلال ہے۔

شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ اس تفریق کی تردید کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

"إن هذاالقول مخالف لجميع أدلة الكتاب والسنة التي نحتج نحن وإياهم جميعاً بها على وجوب الأخذ بحديث الآحاد في الأحكام الشريعة؛ وذلك لعمومها وشمولها لما جاء رسول الله ﷺ عن ربه سواء كان عقيدةً أو أحكاماً، ... فتخصيص هذه الأدلة بالأحكام دون العقائد تخصيص بدون مخصص، وذلك باطل، ومالزم منه با طل فهو باطل.!"(۱)

(ترجمہ): "یہ قول قرآن وسنت کے ان تمام تر دلائل کے مخالف ہے جن سے ہم اور ہمارے وہ مخالفین جو ان ہی اخبار آحاد سے احکام شرع میں استدلال کرتے ہیں، اور یہ اس وجہ سے کہ یہ اخبار آحاد ما جاء بہ رسول اللہ ﷺ سب کو شامل ہیں، چاہئے ان کا تعلق احکام سے ہو یا عقائد سے، لہٰذا ان ادلہ کو احکام کے ساتھ خاص کر دینا نہ کہ عقائد کے ساتھ، بغیر کسی مخصص کے تخصیص کرنا ہے، اور یہ باطل ہے، اور جس چیز کا دارومدار کسی باطل چیز پر ہو وہ خود باطل ہوتی ہے"۔

یہاں پر یہ بات قابل غور ہے کہ موصوف جمہور سے صرف اس وجہ سے ناخوش ہے کہ انہوں نے احکام اور عقائد کے درمیان یہ تفریق کیوں کی ہے؟ جبکہ دونوں برابر ہیں، تو ہم بتاتے چلیں، کہ آخر اس تفریق کی ضرورت کیوں پیش آئی؟۔

شریعت میں کچھ اصول ایسے ہیں جو کبھی بھی منسوخ نہیں ہوتے، جیسے اللہ تعالیٰ کی ذات وصفات کی معرفت اور دیگر ایمانیات مثلاً انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام پر، فرشتوں پر، کتب سماویہ پر، قیامت کے دن پر اور تقدیر پر ایمان رکھنا۔ یہ تمام باتیں ادیان سماویہ میں مشترک رہی ہیں۔

کچھ وہ ہیں جو حسب مصلحت زمانہ تبدیل ہوتی رہی ہیں اور مختلف رسولوں کے ادوار میں ان میں سے بعض منسوخ ہوتی رہی ہیں۔ ان کا تعلق عملی احکام سے ہے۔

۱۔ اصل الاعتقاد ص ۶۶

حضرت موسیٰ علیہ الصلوۃ والسلام کو جو احکام دیئے گئے ان میں سے بعض حضرت عیسیٰ علیہ الصلوۃ السلام کے دور میں تبدیل کر دیئے گئے، جیسے قرآن مجید میں ارشاد باری تعالیٰ ہے:
"وَلِأُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ عَلَيْكُمْ " (آل عمران:۵۰)

(ترجمہ): "اور اس لئے آیا ہوں کہ تم لوگوں کے واسطے بعضی ایسی چیزیں حلال کر دوں جو تم پر حرام کر دی گی تھیں"۔ چونکہ ہر نبوی دور کی شریعت دوسری سے مختلف رہی ہے اس لئے رب عز وجل نے فرمایا: "لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا" (المائدہ:۴۸)

(ترجمہ): "تم میں سے ہر ایک کے لئے ہم نے خاص شریعت اور خاص طریقت تجویز کی تھی"۔(بیان القرآن)

اگر اس کے باوجود ان دونوں کے درمیان تفریق کے قائل نہیں ہے، تو یقیناً یہ سوال ہوگا کہ پھر ہمیں بتائیں کہ عقائد میں بھی کبھی نسخ ہوا ہے، تو یقیناً کوئی نہیں بتا سکیں گا، اس کے باوجود خبر واحد کو عقائد میں حجت ماننا اور جمہور کے موقف سے ہٹ کر ایک نیا موقف اپنانا؛ صرف اسی وجہ سے ہے، کہ اس کے ساتھ ان کے اغراض ومقاصد وابستہ ہیں، اس کو قابل حجت مانے بغیر ان کا حصول ممکن نہیں۔

اگر جمہور تسلیم کرلیں کہ عقیدے کے ثبوت کے لئے خبر واحد کافی ہے تو پھر طرفین کے قطعی دلائل جو آپس میں متعارض ہیں، (جیسے لفظ" استوی "اسی طرح آخر رات میں باری تعالیٰ کا" نزول إلی سماء الدنیاء ") ان میں ایک فریق کے دلائل کو دوسرے فریق کے قطعی دلائل پر ترجیح کس بنیاد پر ہوگا۔ بالفاظ دیگر متروک دلائل کی قطعیت کے بارے میں یہ کہا جائے گا کہ بعض قطعی دلائل شبہ کی وجہ سے ترک بھی کیئے جاسکتی ہیں، حالانکہ قطعیت تو صرف ان ہی دلائل میں ہوتی ہے جن میں خلاف کا امکان بھی نہ ہو۔

اس کے علاوہ ایک سنگین نتیجہ یہ بھی سامنے آئے گا کہ فریقین اپنے دلائل قطعیہ کے مقابلہ میں، فریق مخالف کے عقائد سے اعراض اور انکار کی صورت میں ان کو دائرہ اسلام سے خارج

قرار دینگے۔ اب کسی کا بھی کفر کے فتوی سے بچنا ممکن نہیں رہے گا۔

رہی یہ بات کہ شیخ البانی صاحب کا یہ اشکال کرنا کہ خیر القرون اور اس کے مابعد اخبار آحاد سے عقائد کا ثبوت مسلّم حقیقت ہے کہ بلاد بعیدہ میں صحابہ کی دعوت پر لوگ ایمان لاتے تھے اور اسلامی عقائد کو اختیار کرتے تھے حالانکہ ان عقائد کا باعث صرف خبر واحد ہے؟

دراصل یہ اشکال ایک غلط فہمی کا نتیجہ ہے کیونکہ اسلامی عقائد کا ثبوت اپنی جگہ اخبار آحاد کے بغیر قطعی دلائل سے ثابت ہے، اگر چہ کسی کا کفر یا جہالت اس سے عاجز ہو۔ یہ کفر و جہالت، قطعیت پر بالکل اثر انداز نہیں ہے، تو ثابت یہ ہوا کہ کسی کے ایمان لانے اور اسلامی عقائد کو قبول کرنے سے یہ لازم نہیں آتا کہ ان کا ثبوت خبر واحد سے ہوا ہے بلکہ ان عقائد کا ثبوت قطعی دلائل سے پہلے ہی سے ثابت تھا جس سے اس کافر کا کفر یا اس جاہل کی جہالت مانع بن رہی تھی، جب یہ مانع ختم ہو گیا، تو بھی قطعیت اپنی جگہ میں ثابت ہے اس کے ثبوت میں خبر واحد کا کوئی دخل نہیں ہے یہی وجہ ہے کہ اگر کافر اسلامی عقائد سے انکار بھی کریں، تو بھی ان کی قطعیت باقی رہتی ہے۔

اگر آپ کی بات تسلیم کر لی جائے کہ ان عقائد کا ثبوت خبر واحد کے نتیجہ میں ہوا ہے، تو کفار کے ایک جم غفیر کا اسلام سے انکار کے بعد قطعیت کیسے باقی رہ سکتی ہے؟!!۔

قارئین کرام! آپ اس مفصل و مدلل باحوالہ بحث سے بخوبی یہ معلوم کر چکے ہیں کہ جمہور فقہاء، محدثین، اصولیین اور متکلمین کے نزدیک خبر واحد سے عقیدے کا ثبوت نہیں ہوتا، بلکہ عقیدے کے ثبوت کے لئے قطعی الثبوت و قطعی الدلالۃ نص چاہیئے یا خبر متواتر یا ایسی خبر واحد جسے تلقی بالقبول حاصل ہو۔

آخر میں اس بات کی وضاحت کرنی بھی ضروری ہے کہ چونکہ عقیدے سے متعلق یہ مسئلہ عموماً حنبلی علماء کی طرف سے پیش کیا گیا ہے؛ اس لئے بسا اوقات امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ کی طرف بھی اس کی نسبت کی جاتی ہے، جو کہ بالکل غلط ہے۔

## صفات باری تعالی کے بارے میں معتزلہ اور مقاتل بن سلیمان کا موقف

عقیدے کے مسئلہ میں بعض حضرات افراط وتفریط کا شکار رہے ہیں: چنانچہ ایک طرف تو "معتزلہ" نے صفات باری تعالی سے صاف انکار کیا تو دوسری طرف "مقاتل بن سلیمان" کے پیروکاروں نے اللہ تعالی کے لئے مخلوق جیسی صفات ثابت کیں۔

بے اعتدالی کے یہ دونوں پہلو مذموم اور مضر نتائج کا پیشِ خیمہ ہے۔ اب ضرورت اس بات کی تھی کہ ان کے مقابلہ میں جمہور کے "مسلکِ منصور" کو واضح کیا جائے، تا کہ ان دونوں گروہوں کے نظریہ کی تردید ہو، تو حافظ ابن رجب حنبلی رحمۃ اللہ علیہ (1) (جو کہ مشہور حنبلی اور "صاحب البيت أدرى بما فيه" کے مصداق ہیں) نے پرزور طریقے سے اس نظریہ کی تردید کرنے کے ساتھ ساتھ جمہور کے مسلک کو بھی واضح کیا ہے۔

### جمہور کا موقف:

چنانچہ موصوف لکھتے ہیں:

"والصواب ما عليه السلف الصالح من إمرار آيات الصفات وأحاديثها كما جاء ت من غير تفسيرلها ولا تكييف ولا تمثيل، ولا يصح عن أحد منهم خلاف ذلك ألبتة، خصوصا الإمام أحمد، ولا خوضاً في معانيها ولا ضرب مثل من الأمثال لها. وإن كان بعض من كان

---

1۔ ابو الفرج زین الدین عبد الرحمان بن احمد بن رجب عبد الرحمان دمشقی حنبلی۔ ربیع الاول ۷۳۶ھ میں بغداد میں پیدا ہوئے، ابتدائی تعلیم کے بعد ۷۴۴ھ میں حدیث وفقہ کی تکمیل کے لئے والد کے ساتھ دمشق آئے، یہاں شیوخ عصر سے حدیث کا سماع کیا، موصوف نے حدیث میں پختہ استعداد بہم پہنچائی اور اپنے زمانے میں علل حدیث کے سب سے زیادہ ماہر ہوئے، بڑے عابد اور تہجد گزار تھے۔ وفات ۷۹۵ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: فتح الباری، شرح علل الترمذی، ریاض الانس۔ ترجمہ کے لئے دیکھیے: الدرر الكامنة في أعيان المائة الثامنة: ۱۹۵/۲، اور فوائد جامعہ برعجالہ نافعہ: ۲۵۷۔۲۵۹

قريباً من زمن أحـمد فيهم من فعل شيئاًمن ذلك اتباعاً لطريقة مـقـاتـل، فـلا يقتدى به في ذلك،إنما الاقتداء بأئمة الإسلام كـابـن الـمبارك، ومالك، و الثوري، والأوزعي، والشا فعي، وأحمد، واسحاق، و أبي عبيد، و نحوهم.»(۱)

(ترجمہ):''اور درست بات وہی ہے جس پر سلف صالحین رہے ہیں، کہ جنہوں نے صفات باری تعالی کے بارے میں قرآن کی جو بھی آیات واحادیث وارد تھیں، ان کو جوں کہ توں بیان کردیا، نہ ان کی تفسیر بیان کی اور نہ ہی ان کی کیفیت بتائی اور نہ ہی ان کی کوئی مثال بطور تمثیل بیان کی۔اور ان میں سے کسی ایک سے بھی اس کے خلاف ثابت نہیں خصوصاً امام احمد C سے، اور نہ ان آیات واحادیث کی معانی کی گہرائی تک گئے اور نہ کوئی مثال بیان کی۔اور اگرچہ امام احمد رحمۃ اللہ علیہ کے زمانہ ہی میں کچھ لوگ مقاتل بن سلیمان کی پیروی میں ان کے عقیدے کی طرف گئے ہیں ،لہذا اس مسئلے میں ان جیسے لوگوں کی اقتداء نہیں کی جائے گی، بلکہ امام ابن مبارک، امام مالک، امام شافعی، امام ثوری، امام اوزاعی، امام احمد، امام اسحاق بن راھویہ اور ابوعبید رحم اللہ علیہم جیسے حضرات کی اقتداء کی جائے گی''۔

چنانچہ مذکورہ عبارت میں حافظ ابن رجب حنبلی رحمۃ اللہ علیہ نے امام احمد رحمہ اللہ کے بارے میں صراحت فرمائی اور صرف امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ کے ساتھ لفظ ''خصوصاً'' کی قید اس لئے بڑھائی، تاکہ کوئی یہ خیال نہ کر بیٹھے کہ امام احمد رحمۃ اللہ علیہ اس مسئلے میں جمہور سے الگ ہیں۔

عقیدہ پر تفصیلی گفتگو کے بعد قبل اس سے کہ ضعیف حدیث کی احکام اور فضائل میں عملی حیثیت کو بتایا جائے، اس سے پہلے ضعیف کی مراتب اور جرح کے درجات کا ذکر کیا جاتا ہے۔

## ضعف کے درجات:

یہ ایک اٹل حقیقت ہے کہ بنی نوع انسان کمالات وصفات میں جس قدر بھی ترقی کر جائے

(۱) بیان فضل علم السلف علی علم الخلف: ص۵۵، ۵۶)

اور اس کے ساتھ ساتھ جتنی بھی احتیاط کرلے، پھر بھی اس سے غلطیوں کا صدور ممکن ہے۔ چنانچہ حضرات محدثین نے احادیث نبوی کے بارے میں اس نقطہ نظر کو سامنے رکھ کر وہ حد بندی قائم کی ہے کہ تاریخ عالم اس کی نظیر پیش کرنے سے قاصر ہے۔

چنانچہ حدیث کی سند میں جو راوی ہوتے ہیں ان سے روایت نقل کرنے میں جو کمیاں کوتاہیاں ہوئی ہیں، ماہرین فن نے ان کے لئے مختلف الفاظ استعمال کیے ہیں۔ چنانچہ ان ہی الفاظ کو مدار بنا کر روایت کو کبھی ضعیف اور کبھی ضعیف جداً اور کبھی موضوع تک کہا جاتا ہے۔

ذیل میں اس بارے میں تفصیل نقل کی جاتی ہے۔

شیخ محمد عوامہ نے ''حدیث ضعیف'' کے چار مراتب بیان کیے ہیں: (۱) وہ ضعیف حدیث جس کا ضعف متابعت اور شواہد کے ذریعے دور ہو جائے، مثلاً: سند کے راویوں میں سے کسی راوی کے لئے "لين الحديث" "فيه لين" کے الفاظ استعمال کئے جائے، تو یہ حدیث من وجہ حسن کے قریب تر ہوگی اور من وجہ ضعیف۔ (۲) وہ ضعیف حدیث جس میں ضعف متوسط درجہ کا ہو، اس طرح کے راوی کے لئے ''ضعيف الحديث'' "مردود الحديث" اور "منكر الحديث" جیسے الفاظ استعمال ہوتے ہیں۔ (۳) وہ ضعیف حدیث جس میں ضعف شدید ہو، اس طرح کے راوی کے لئے ''متهم''، أو "متروك" استعمال ہوتے ہیں۔ (۴) موضوع روایت۔

ان کی عبارت ملاحظہ ہو:

" ينبغي أن يجعل الحديث الضعيف في هذا الباب أربعة أقسام: ١ ـ الضعيف المنجبر الضعف بمتابعة أو شاهد، وهو ما يقال أحد رواته لين الحديث، أو فيه لين، ـ ـ ـ ٢ الضعيف المتوسط الضعف، وهو مايقال في راويه: ضعيف الحديث، أو مردود الحديث، أو متروك، ـ ٣ ـ الضعيف الشديد الضعف، وهو مافيه متهم، أو متروك ـ ٤ ـ

الموضوع۔"(۱)

نیز شیخ محمود سعید ممدوح لکھتے ہیں:

"وهذا الكلام يصدق على الضعيف غير الموضوع بدرجاته الثلاث ،وهو المشبه أو اللين، والمتوسط،والشديد۔"(۲)

(ترجمہ): مذکورہ کلام حدیث ضعیف غیر موضوع کے تینوں درجوں پر صادق آتا ہے(۱)۔ضعف مشبہ یا لین،(۲)۔ضعف متوسط،(۳)ضعف شدید۔

چنانچہ جب تک راوی متروک یا فحش غلط اور کثرت غفلت کا شکار نہ ہو، اس کی روایت فضائل میں جمہور کے ہاں معتبر ہے۔

لہذا ضعیف حدیث کے مراتب ودرجات کے تفاوت سے حکم میں بھی تفاوت آئے گا۔

جرح کے درجات:

ماہرین فن نے جو الفاظ ضعیف راویوں کے بارے میں استعمال کئے ہیں اگر ان کا بغور جائزہ لیا جائے تو ان کے کل چھ درجے بن جاتے ہیں، جو درجے یہاں بیان ہونگے ان میں ادنی سے اعلی کی طرف کا لحاظ رکھا گیا ہے۔یعنی جو درجہ پہلے بیان ہوگا وہ ضعف کے اعتبار سے سب سے کم ہوگا اسی طرح آخر تک۔

(۱) راوی حدیث کے لئے ایسے الفاظ کا استعمال ہو جو نرمی اور تساہل پر دلالت کرتے ہوں جیسے:"فلانٌ ليّن الحديث،فيه مقال، أو أدنى مقال،أوضعّف، أوليس بذلك،أو ليس بالقوي"۔

(۲) راوی حدیث کے لئے ایسے الفاظ کا استعمال ہو جن میں حجت اور دلیل نہ بنانے یا اس

(۱)تعلیق قواعد فی علوم الحدیث:ص۱۰۰،۱۰۱

(۲)التعریف باوهام من قسم السنن الی صحیح وضعیف:۱/۱۳۷

سے ملتے جلتے مفہوم کی تصریح کی گئی ہو جیسے: " فلان لایحتج به، أو ضعّفوه، أو مضطرب الحدیث، أو ضعیف، له مناکیر۔"

(۳) راوی حدیث کے لئے ایسے الفاظ کا استعمال ہو جس میں کسی کی حدیث نہ لکھنے کی یا اس سے ملتے جلتے مفہوم کی تصریح کی جائے جیسے: " فلان لایکتب حدیثه، أو مردود الحدیث، أو ضعیف جداً، أو مطروح الحدیث، فلان رد حدیثه۔"

(۴) راوی حدیث کے لئے ایسے الفاظ کا استعمال ہو جس میں جھوٹ کی تہمت یا اشارہ ہو جیسے: " فلان متّهم بالکذب، أو متّهم بالوضع، أو متروك، أو یسرق الحدیث، أو ذاهب الحدیث۔"

(۵) راوی حدیث کے لئے ایسے الفاظ کا استعمال ہو جس میں جھوٹ کے ساتھ متصف ہونے کا تذکرہ ہو جیسے: "کذاب، دجال، وضاع، یکذب، یضع۔"

(۶) راوی حدیث کے لئے ایسے الفاظ کا استعمال ہو جو جھوٹ میں حد سے گزر جانے کی تصریح کریں جیسے: " فلان أکذب الناس، إلیه المنتهی في الکذب، أو رکن الکذب"[(۱)]

مذکورہ تفصیل کے بعد اس بات کی وضاحت بھی ضروری ہے کہ لفظ " منکر " کا استعمال دو متضاد حالتوں میں ہوتا ہے، اس کا اطلاق جس طرح ضعیف جداً والی روایت پر کیا جاتا ہے اسی طرح اس کا اطلاق بعض مرتبہ محض تفرد اختیار کرنے والے راوی کے لئے بھی کیا جاتا ہے۔ اور ایسے ہی منکر کا اطلاق بعض دفعہ موضوع روایت پر بھی کر دیتے ہیں، لہذا اس سلسلہ میں بہت احتیاط کی ضرورت ہے، ایسا نہ ہو کہ ایک کی جگہ دوسرا معنی مراد لیا جائے۔ نیز اس سے یہ بھی معلوم ہوتا ہے کہ ماہرین فن کی اصطلاحات کو خوب سمجھ کر اس کے بعد عملی قدم اٹھانا چاہیے۔ (مزید تفصیل کے لئے دیکھئے الرفع والتکمیل اور ظفر الامانی۔(۲)

---

(۱) تدریب الراوي في شرح تقریب النواوي: ۱/۴۰۸۔۴۱۲، امعان النظر شرح نخبة الفکر: ۲۵۶۔۲۵۷ قواعد في علوم الحدیث: ۲۵۱۔۲۵۳ الرفع والتکمیل فی الجرح والتعدیل: ۱۶۷، ۱۸۷

۲۔ الرفع والتکمیل، ۱۹۹۔۲۱۲، ظفر الاماني، ص ۳۲۶۔۳۴۶

مذکورہ تفصیل کے بعداب یہ بات بالکل واضح ہوجاتی ہے کہ اوپر ذکر کردہ اقسام میں پہلی اوردوسری قسم کی راویوں کی روایت فضائل میں قابل عمل ہے البتہ احکام میں مستقل طور پرتو حجت نہیں بن سکتی، لیکن اعتبار، متابع اور شواہد کے طور پران کولیا جاسکتا ہے، جبکہ دیگر اقسام میں سے تیسری قسم کی راویوں کی روایت بھی فضائل میں معتبر ہوگی۔اس لئے کہ ضعیف کی قسموں میں یہ بات گزرچکی ہے کہ اس طرح کے الفاظ سے موصوف راویوں کی روایت کو بعض نے ”ضعف متوسط“ کے درجہ میں رکھا ہے۔چوتھی قسم کے بارے میں حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ کی رائے ہے کہ اگر ایسے راوی کی روایت کے لئے تعدد طرق مل جائے تو یہ روایت فضائل میں قابل عمل کر بن سکتی ہے۔

موصوف کی عبارت ملاحظہ ہو:

”والذي ضعفه ناشئى عن تهمة أو جهالة إذا كثرت طرقه، ارتقى عن مرتبة المردود المنكر الذي لايجوز العمل به بحال، إلى مرتبة الضعف الذي يجوز العمل به في فضائل الأعمال“[1]

(ترجمہ): ”وہ ضعف جو راوی کی تہمت کذب، یا جہالت کی وجہ سے پیدا ہو، جب ایسی روایت کے لئے مزید طرق مل جائیں، تو یہ روایت اس مرتبہ سے جس پر عمل کرنا کسی حال میں بھی جائز نہ تھا، ترقی کر کے اس مرتبہ میں آجاتی ہے، جس پر فضائل میں عمل کرنا جائز ہے“۔

خلاصہ کلام یہ کہ توابع اور شواہد مل جانے کی وجہ سے یہ روایت اس درجے میں آجاتی ہے جو فضائل، ترغیب وترہیب میں معتبر ہے۔رہا مسئلہ پانچویں اور چھٹی قسم کا، تو یہ دونوں قسمیں کسی حال میں بھی قابل عمل نہیں بن سکتی ہیں۔

## فصل دوم:

## فضائل اوراحکام میں ضعیف حدیث کا مقام۔

جمہور فقہاء ومحدثین، متقدمین ہوں یا متاخرین، ”ضعیف حدیث“ سے فضائل، ترغیب

---

[1] الامتاع بالاربعین المتباینۃ: ص ۷۰

وترہیب میں برابر استدلال کرتے چلے آئے ہیں، جہاں تک احکام شرعیہ میں ضعیف حدیث سے استدلال کا تعلق ہے، تو جمہور فقہاء و محدثین کے طرز عمل سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ ضعیف حدیث سے حکم شرعی پر استدلال کیا جا سکتا ہے، بشرطیکہ ضعف شدید نہ ہو، یعنی سند میں کوئی "کذاب" یا متہم یا فاحش الغلط راوی نہ ہو۔ چنانچہ اسی کے پیش نظر ضعیف حدیث کی عملی حیثیت کے متعلق عموماً تین مذاہب نقل کئے جاتے ہیں اگر چہ ان تین مذاہب کا حاصل ایک ہی ہے۔ چونکہ یہ بحث اس تالیف کا براہ راست موضوع ہے، لہذا اس سلسلہ میں مکمل تفصیل نقل کی جائے گی، تاکہ قاری کے سامنے اس کی حقیقت، آنے والی تفصیل سے آشکارہ ہو جائے گی۔

## پہلا مذہب: حدیثِ ضعیف مطلقا حجت ہے:

پہلا مذہب یہ ہے کہ حدیث ضعیف مطلقا احکام وفضائل دونوں میں قابل حجت ہے۔ اس مذہب کو عموما ائمہ اربعہ، امام ابوداؤد رحمۃ اللہ علیہ اور امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ کی طرف منسوب کیا جاتا ہے، لہذا اس سلسلہ میں جملہ تفصیل پیش خدمت ہے:

### حدیث ضعیف اور ائمہ اربعہ:

امام اعظم رحمہ اللہ (1) ----------------------------

ا۔ نعمان بن ثابت بن مرزبان، موصوف ائمہ اربعہ میں سے ہیں ۸۰ھ کو پیدا ہوئے، امام موصوف نے تعلیم کا آغاز بچپن ہی سے کیا ہے: اولا: قرأت عاصم کے مطابق قرآن حفظ کیا۔ ثانیا: آپ نے نحو، ادب اور شعر پر وقت صرف کیا۔ ثالثا: آپ نے علم کلام اور علوم عقلیہ میں مہارت پیدا کی۔ رابعاً: آپ نے مذاکرۂ حدیث کے حلقوں میں شرکت کی۔ خامسا: آپ نے استنباط واستخراج مسائل اور فقہ واجتہاد کے لئے حماد کے سامنے زانوئے ادب تہ کیے۔ چالیس سال کی عمر میں امام موصوف اپنے استاد کی جگہ بحیثیت ایک مقنن، مجتہد، فقیہ، محدث اور مفسر کے تشریف فرما تھے ۱۵۰ھ کو آپ وفات پا گئے۔ چند مشہور تصانیف: الفقہ الاکبر، العالم والمتعلم، الرسالہ۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: تاریخ الاسلام: ۱۴۶/۴۔۱۵۰، شذرات الذہب في أخبار من ذہب: ۲۷۲/۱۔۲۷۴، اور تاریخ مذاہب الاسلامیہ فی السیاسیۃ والعقائد وتاریخ مذاہب الفقہیۃ: ۲۴۹، ۲۸۷c،

امام مالک رحمۃ اللہ علیہ [۱]، امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ اور امام احمد رحمۃ اللہ علیہ [۲] کا علمی مقام کیا ہے؟ اس کے بیان کرنے کی ضرورت نہیں۔ قرآن وسنت کی خدمت کا ان حضرات نے جو کارنامہ انجام دیا ہے کوئی دوسرا اس حیثیت سے اس میں شریک نہیں۔ یہاں ایک اہم سوال ہے کہ ائمہ اربعہ کا حدیث ضعیف کے ساتھ کیا رویہ رہا تھا، جس کی بنیاد پر اس بحث کو آگے لے جایا جائے۔ ائمہ اربعہ کے علاوہ امام ابوداؤد [۳] رحمۃ اللہ علیہ اور امام نسائیؒ کی طرف یہ بات منسوب کی جاتی ہے کہ یہ حضرات مطلقاً ضعیف حدیث کی حجیت کے قائل ہیں، چاہے احکام ہو یا فضائل

---

۱۔ مالک بن انس بن مالک بن ابی عامر بن عمرو اصبحی ۹۳ھ میں پیدا ہوئے، موصوف ائمہ اربعہ میں سے ہیں، آپ نے نوسو سے زائد شیوخ سے اخذ علم کیا ہے، موصوف میں طلب علم کی خواہش کے جذبات غیر معمولی طور پر ودیعت تھے، ابتدا میں ظاہری سرمایہ کچھ نہ تھا، اس لئے مکان کی چھت توڑ کر اس کی کڑیاں فروخت کر کے کتب وغیرہ خریدتے تھے، موصوف نے ۱۷ سال کی عمر میں درس دینا شروع کر دیا اور آپ نے اپنے دست مبارک سے ایک لاکھ احادیث لکھیں، آپ کا حافظہ نہایت اعلیٰ درجہ کا تھا۔ موصوف باوجود ضعف وکبرسنی کے بھی مدینہ طیبہ میں کبھی سوار ہو کر نہیں چلتے تھے کہ جس ارض مقدس کے اندر جسم مبارک رسول اللہ ﷺ ہو اس کے اوپر سوار ہو کر چلنا خلاف ادب ہے، وفات ۱۷۹ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: موطا، تفسیر غریب القرآن، النجوم۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: تذکرۃ الحفاظ: ۱/۱۵۴۔۱۵۷، شذرات الذہب فی اخبار من ذہب: ۱/۴۶۵۔۴۶۸، اور الاعلام: ۵/۲۵۷

۲۔ ابوعبداللہ احمد بن محمد بن حنبل شیبانی مروزی موصوف ائمہ اربعہ میں سے ہیں، ۱۶۴ھ کو بغداد میں پیدا ہوئے، بچپن ہی سے حصول علم میں لگے رہے اور اس سلسلہ میں سفر کی بہت سی صعوبتیں برداشت کیں، ان کے زمانے میں مامون الرشید نے ''خلق قرآن'' کا فتنہ اٹھایا۔ امام موصوف نے اس فتنہ کی خوب سرکوبی کی اور اس سلسلے میں انہیں ناقابل برداشت تکالیف کا سامنا کرنا پڑا مگر آپ صبر واستقامت کے پہاڑ ثابت ہوئے۔ ۲۸ مہینے جیل کی ہوا کھانی پڑی ۲۴۱ھ کو وفات پائی۔ چند مشہور تصانیف: مسند امام احمد بن حنبل، کتاب الزہد، الناسخ والمنسوخ، ترجمہ کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۱۱/۱۶۰۔۱۸۸: اور الاعلام: ۱/۲۰۳

۳۔ ابوداؤد سلیمان بن اشعث بن اسحاق ازدی بجستانی، آپ ۲۰۲ھ کو بجستان میں پیدا ہوئے۔ موصوف نے طلب حدیث کے لئے بصرہ، بغداد، مصر، شام، حجاز، عراق، خراسان اور جزیرہ وغیرہ کا سفر کیا، اور وقت کے تمام مشاہیر شیوخ سے علم حدیث حاصل کیا، موصوف فقیہ، محدث عالم بے بدل تھے، تقویٰ، عبادت، زہد وورع میں بھی بہت آگے تھے۔ ۱۶ شوال ۲۷۵ھ کو وفات پائی۔ چند مشہور تصانیف: کتاب السنن، ترجمہ کے لئے دیکھئے: سیر اعلام النبلاء ۱۳/۲۰۳، ۲۲۱، اور الاعلام ۳/۱۲۲

ہو یا ترغیب وترہیب اور بطور تائید علامہ ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ [1] اور حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ [2] کی عبارتیں پیش کی جاتی ہیں۔

چنانچہ امام ابوحنیفہ رحمۃ اللہ علیہ کے بارے میں علامہ ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ کی یہ عبارت بہت مشہور ومعروف ہے "الخبر الضعيف عن رسول الله ﷺ أولى من القياس، ولا يحل القياس مع وجوده" [3]

علامہ ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ کی اسی طرح کی عبارت امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ کے بارے میں بھی ہے:" ضعيف الحديث أحب إلينا من الرأي " [4] اسی طرح امام ابوداؤد رحمۃ اللہ علیہ اور امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ کی طرف یہ عبارت منسوب کی جاتی ہے:"كان مذهب النسائي أن يخرج عن كل من لم يجمع على تركه. وأبو داود كان يأخذ مأخذه، ويخرج الضعيف إذا لم يجد في الباب غيره، ويرجحه على رأي الرجال." [5]

"امام نسائی رحمۃ اللہ علیہ ہر اس راوی کی روایت کو لیتے ہیں جس کے ترک پر اجماع نہ ہوا

---

۱۔ ابو محمد علی بن احمد بن سعید بن حزم قرطبی ظاہری ۳۸۴ھ میں پیدا ہوئے، ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی اور بڑا کمال حاصل کیا، موصوف تمام علوم اسلامیہ کے زبردست عالم تھے، علامہ ذہبی لکھتے ہیں: ذکاوت اور بے پناہ ذہانت کتاب وسنت کی وسیع معلومات، مذاہب اور اقوام وملل کے ادیان، عربیت، آداب، منطق اور شعرگوئی کے ساتھ ساتھ، صداقت، دیانت، ذمہ داری، سیادت، ریاست وثروت اور کثرت کتب کا ان پر خاتمہ ہوگیا۔ موصوف کی جلالت قدر بے شبہ ہے، مگر چند کمزوریاں بھی آپ کی ایسی ہیں جو نظر انداز نہیں ہوسکتیں، مثلاً اپنی رائے پر انتہائی جمود، اپنے مخالف کی نہایت سخت الفاظ میں تجہیل وتحمیق، وغیرہ۔ وفات ۴۵۶ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: المحلی، الملل والنحل، الاحکام فی اصول الاحکام۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۱۳/۱۶۱-۱۶۲، اور تاریخ الاسلام: ۱۰/۵۴-۱۶۰

۲۔ إعلام الموقعین ۱/۶۹)

۳۔ الاحکام فی اصول الأحکام، ۷/۹۲۹

٤۔ المحلی بالآثار: ۳/ ٦١)

٥۔ ظفر الامانی بشرح سید شریف جرجانی: ص ۲۰۴، ۲۰۵

ہو۔ چنانچہ یہی طرز امام ابوداود رحمۃ اللہ علیہ کا بھی ہے، کیونکہ اگر باب میں کوئی صحیح حدیث نہ ملے تو ضعیف حدیث سے استدلال کرتے ہیں''۔ (۱)

چنانچہ علامہ ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ اور حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی نظریہ کی تائید میں درجہ ذیل آحادیث پیش کی ہیں: جیسے نماز میں قہقہہ سے نقض وضوء وصلاۃ والی حدیث، اکثر حیض دس دن والی حدیث، دس دراہم سے کم مہر والی حدیث، اسی طرح کھجور کی نبیذ سے وضوء والی حدیث، ان حضرات کا یہ کہنا ہے کہ یہ تمام احادیث ضعیف ہیں لیکن پھر بھی امام ابوحنیفہ رحمۃ اللہ علیہ نے قیاس کو چھوڑ کر ان سے استدلال کیا ہے، اسی طرح امام مالک رحمۃ اللہ علیہ کا، مراسیل اور بلاغات اور منقطع روایت سے استدلال کرنا، اور امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ نے ''صید وج'' والی حدیث اور مکہ مکرمہ میں اوقات منہیہ میں نماز کے جواز والی حدیث سے باوجود ضعیف ہونے کے استدلال کیا ہے۔

چنانچہ اس سے لامحالہ یہ نتیجہ نکلتا ہے کہ ان حضرات کے ہاں ضعیف حدیث مطلقاً حجت ہے، اس لئے تو قیاس پر مقدم کیا ہے۔

مگر یہ بات یاد رہے! کہ ان حضرات کا یہ کہنا درست نہیں اور یہ بات ان روایات کے طرق سے ناواقفیت ہی کی بنا پر کہی جاسکتی ہے، کیونکہ حافظ ابن عبدالبر رحمۃ اللہ علیہ نے ''التمہید'' میں اور حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ نے ''تلخیص الحبیر'' میں اور محقق ابن ہمام رحمۃ اللہ علیہ نے ''فتح القدیر'' میں یہ ثابت کیا ہے کہ یہ احادیث مطلقاً ضعیف نہیں ہیں، (مذکورہ کتابیں دیکھی جاسکتی ہیں)۔

چنانچہ علامہ ظفر احمد عثمانی (۲) رحمۃ اللہ علیہ اس کی مزید وضاحت کرتے ہوئے فرماتے ہیں:

---

۱۔ اعلام الموقعین: ۶۹/۱

۲۔ ظفر احمد بن لطیف عثمانی، تھانوی حنفی۔ آپ کی ولادت ۱۳۱۰ھ میں ہوئی، ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی اور بڑا کمال حاصل کیا، مورخین نے موصوف کو ان الفاظ کے ساتھ یاد کیا ہے: الثبت الحجۃ، المفسر المحدث الفقیہ الاصولی البارع الاریب المورخ الأدیب، الورع الزاہد الصوفی البصیر۔ فراغت کے بعد درس وتدریس کا سلسلہ شروع کیا اور پاک وہند کے مشہور ومعروف مدارس میں شیخ الحدیث کے عہدے پر فائز ہوئے۔ وفات ۱۳۹۴ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: اعلاء السنن، مسائل ربوانی دارالحرب، خطیب بغدادی اور منکرین حدیث۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: انوار الباری شرح صحیح البخاري: ۴۵۴/۲۔ ۴۵۵، اور مقدمہ اعلاء السنن: ۲۷۴/۱

"وبالجملة فالمراد بالضعيف في كلام أصحابنا :(إن الحديث الضعيف مقدم على القياس ):ما يسميه المتأخرون ضعيفا في ذاته حسنا لغيره إذا تأيد بالشواهد ونحوها. وإذا سبرت الأحاديث التي ذكرها ابن القيم مثالاً للضعيف الذي قدمه أبو حنيفة على القياس، وجدتها كلها حِساناً إما في ذاتها أو لغيرها، كما يتضح لك حقيقة ذلك بمطالعة كتابنا هذا ( أي إعلاء السنن )إن شاء الله تعالى ."(۱)

(ترجمہ): "خلاصہ کلام یہ ہے کہ احناف کے کلام "إنّ الحديث الضعيف مقدم على القياس" سے مراد وہ ضعیف حدیث ہے جس کا نام متاخرین ضعیف لذاتہ حسن لغیرہ رکھتے ہیں، حسن لغیرہ نام بھی اس وقت رکھا جائے گا جب شواہد وغیرہ سے تائید حاصل ہوجائے، اور جب آپ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ کی ذکر کردہ احادیث کی چھان بین کریں گے جو انہوں نے ان ضعیف احادیث کی مثال دیتے ہوئے ذکر کی ہیں جن کو امام اعظم ابوحنیفہ رحمۃ اللہ علیہ نے قیاس پر مقدم کیا ہے، تو آپ ان تمام مجموعے کو حسن لذاتہ یا حسن لغیرہ پائیں گے، یہ حقیقت آپ کے سامنے واشگاف اس صورت میں بھی ہوسکتی ہے کہ آپ ہماری اس کتاب یعنی "اعلاء السنن" کا مطالعہ کریں"۔

اسی طرح دور آخر میں مغرب کے محدث علامہ سید احمد ابن صدیق غماری رحمۃ اللہ علیہ (۲)

---

۱۔ قواعد فی علوم الحدیث: ص ۱۰۸

۲۔ ابوالخیر سید احمد بن محمد بن الصدیق بن احمد مغربی غماری۔ آپ کی پیدائش بروز جمعہ ۲۷ رمضان ۱۳۲۰ھ میں ہوئی، طلب علم کے لئے قاہرہ، شام، بلاد مغرب، سوڈان وغیرہ کا سفر کیا اور ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی، موصوف کے ترجمہ لکھنے والوں نے ان الفاظ کے ساتھ یاد کیا ہے۔ الامام الحافظ المحدث الناقد، نادرۃ العصر، فرید الدہر، ذو التصانیف والذکاء والحافظ المفرطۃ۔ موصوف کو رجال، صحیح وسقیم، مع حفظ متون حدیث، معرفت علل میں مہارت تامہ حاصل تھی، وفات ۱۳۸۰ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: المثنوی والبتار فی نحر العنید المعثار، اقامۃ الدلیل علی حرمۃ التمثیل، تحسین الخبر الوارد فی الجہاد الاکبر۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: عوارف المعارف ومعرفۃ العارف: ۱/۴۱-۵۰

کی چشم کشا عبارت بھی پیش خدمت ہے:

"إن الاحتجاج بالضعيف في الأحكام ليس هو خاصاً بالمالكية ؛بل كل الأئمة يحتجون به ،إلا أنّ بعضها قالوا فيه:تلقي بالقبول، وبعضها قالوا:انعقد الاجماع على مضمونه، و بعضها قالوا:وافقه القياس." (۱)

(ترجمہ): ''احکام میں ضعیف حدیث سے استدلال کرنا مالکیہ ہی کے ساتھ خاص نہیں بلکہ تمام ائمہ اس سے استدلال کرتے رہے ہیں، مگر انہوں نے اس وجہ سے انہیں قبول کیا ہے کہ ان کے بقول ان روایات کو تلقی بالقبول حاصل ہے، اور بعض کے متعلق کہتے ہیں کہ اس کے مضمون پر اجماع منعقد ہو چکا ہے اور بعض کے بارے میں کہتے ہیں کہ یہ قیاس کے موافق ہیں'' (ان وجوہ کی بنا پر انہوں نے ان روایات کو لیا ہے نہ کہ کسی اور وجہ سے)۔

لہذا اس سے ثابت ہوا کہ یہ قول مطلق نہیں ہے بلکہ اگر کہیں ضعیف حدیث کے مقابلہ میں محض قیاس ہی ہو اور وہ قیاس مستنبط من القرآن نہ ہو، تو اس وقت ضعیف حدیث کو ترجیح دی جائے گی۔

اس لئے کہ خبر اپنی اصلیت کے اعتبار سے صحیح ہوتی ہے اس میں شبہ اور احتمال نقل کے اعتبار سے آتا ہے، جبکہ قیاس میں احتمال اور شبہ اصل کے اعتبار سے ہوتا ہے۔

علامہ ابن حزم رحمہ اللہ کی عبارت میں لفظ "أولى" سے بظاہر اس طرف اشارہ ہے کہ تقدیم الضعیف علی القیاس قطعی فیصلہ کی حیثیت نہیں رکھتا بلکہ بعض مواقع میں یہ نتیجہ ظاہر ہوتا ہے۔

یہی وجہ ہے کہ ملا علی قاری رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"أن مذهبهم القوي تقديم الحديث الضعيف على القياس الذي يحتمل التزيف" (۲)

---

۱۔ المثوي والجار في نحر العيد المعثار: ص ۱۸۰

۲۔ مرقات المفاتيح شرح مشكاة المصابيح: ۳/۱

(ترجمہ): ''احناف کا مختار مذہب یہ ہے کہ ضعیف حدیث کو اس قیاس محض کے مقابلہ میں مقدم کیا جائے گا جو نقص کا احتمال رکھے''۔

اسی طرح علامہ عبدالعزیز فرہاروی (۱) رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" ونسب الإمام أبو حزم هذا القول( أي أن الحديث الضعيف مقدم على القياس )إلى الحنفية ولم يوجد في كتبهم ."(۲)

(ترجمہ): ''ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ نے اگرچہ اس قول کی نسبت احناف کے طرف کی ہے حالانکہ احناف کی کتابوں میں موجود نہیں ہے''۔

اگر کہیں احتیاط کا موقع ہو تو ہاں پر ضعیف حدیث سے بھی استدلال کیا جاسکتا ہے۔

موضع احتیاط میں ضعیف حدیث احکام میں بھی مستدل بن سکتی ہے:

یہی وجہ ہے کہ امام نووی رحمۃ اللہ علیہ نے بطور احتیاط بعض بیوع کی کراہت ضعیف حدیث سے بھی ثابت فرمائی ہے۔

(۱) چنانچہ موصوف رقمطراز ہیں:

" أما الأحكام كالحلال والحرام، والبيع، والنكاح، والطلاق وغير ذلك، فلا يعمل فيها إلا بالحديث الصحيح،

---

۱۔ ابوعبدالرحمان عبدالعزیز بن احمد بن الحامد قرشی فرہاروی حنفی۔ اپنے زمانہ کے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی اور بڑا کمال حاصل کیا، ذکاء ۔ اور بے پناہ ذہانت کتاب وسنت کی وسیع معلومات اور کثرت کتب کا ان پر خاتمہ ہوگیا۔ اپنے زمانے میں تمام علوم کے سب سے زیادہ ماہر ہوئے، بڑے عابد، زاہد اور تہجد گزار تھے۔ وفات ۱۲۴۱ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: کوثر النبی، البحر المحیط، النبر اس فی شرح العقائد۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر ۷/۲۷۶۔۲۷۸

۲۔ کوثر النبی: ص ۱۸

أو الحسن إلا أن يكون في احتياط في شيء من ذلك .“(۱)

(ترجمہ): ”یعنی حلال وحرام اور بیع ونکاح وطلاق وغیرہ کے لئے صحیح یا حسن درجہ کی روایت سے استدلال ہوگا، مگر کہیں ایسا موقع آجائے جہاں احتیاط کا پہلو ہو، تو ایسی صورت میں ضعیف حدیث بھی مستدل بن سکتی ہے“۔

(۲) علامہ زرکشی رحمۃ اللہ علیہ کی عبارت بھی اسی طرف مشیر ہے:

”ومما يجوز العمل فيه بالخبر الضعيف من الأحكام، ما يكون الموضعُ موضع احتياط، فيجوز الاحتجاج به ظاهراً.“(۲)

(ترجمہ): ”اور ضعیف حدیث احکام کی جن صورتوں میں مستدل بن سکتی ہے ان میں سے ایک صورت یہ بھی ہے کہ اس میں احتیاط کا پہلو ہو، تو ایسی صورت میں ضعیف حدیث مستدل بن سکتی ہے“

(۳) علامہ سیوطی رحمۃ اللہ علیہ کی رائے بھی یہی ہے:

”ويعمل بالضعيف أيضاً في الأحكام، إذا كان فيه احتياط .“ (۳)

(ترجمہ): ”اور ضعیف روایت احکام میں بھی مستدل بن سکتی ہے جبکہ احتیاط کا پہلو ہو“۔

یہاں ان تمام باتوں سے قطع نظر اتنی بات ضرور ملحوظ خاطر رہنی چاہئے کہ یہ ائمہ جس ”حدیث ضعیف“ سے استدلال کرتے ہیں وہ ضعیف الاسناد تو محدثین تک پہنچنے میں ضرور ہوتی ہے مگر ضعیف المتن نہیں ہوتی ہے۔ کثرت طرق، یا ظاہر قرآن، یا اتصال عمل، یا کسی شاہد صحیح کی اسے ضرور تائید حاصل ہوتی ہے۔

---

۱۔ الاذکار المنتخبۃ من کلام سید الابرار: ص ۱۵

۲۔ النکت علی کتاب ابن الصلاح للزرکشی: ص ۲۴۸

۳۔ تدریب الراوي في شرح تقریب النواوي: ۱/۳۵۱

اسی طرح ائمہ حضرات کے مستدلات موجودہ کتب حدیث میں، موجود اسانید کی تحقیق کی بنیاد پر ضعیف ہونے سے یہ استدلال قطعاً نہیں کیا جا سکتا ہے کہ فقہاء نے ضعیف احادیث سے استدلال کیا ہے۔ کیونکہ یہ قوی احتمال موجود ہے کہ ان حضرات کے پیش نظر یہ احادیث ان اسانید کے ساتھ نہیں ہوں گی۔

دوسری بات یہ کہ فقہ کی متداول کتابوں میں پائی جانے والی ضعیف حدیثیں ضروری نہیں کہ امام مذہب نے خود ان احادیث سے استدلال کیا ہو، بلکہ ان میں بہت سی وہ احادیث بھی ہوتی ہیں جن سے مصنّفِ کتاب اپنے طور پر استدلال کرتے ہوئے اپنے امام کے مذہب کو مبرہن و مؤید کرتا ہے، لہٰذا محض کسی فقہی کتاب کے مصنف کا کسی حدیث کو بطور دلیل پیش کرنا اس بات کی قطعی دلیل نہیں کہ مذہب کی بنیاد ضعیف حدیث پر ہے، ہوسکتا ہے کہ امام مذہب کی وہ رائے کسی ثابت نص یا سنت پر مبنی ہو۔

اسی طرح ضعیف حدیثوں میں جو ضعف آتا ہے وہ ان اسانید کے اعتبار سے ہوتا ہے جو ہمیں کتبِ حدیث میں ملتی ہے جن کے رجال عموماً امام مذہب کے مابعد زمانہ کے ہوتے ہیں۔ اور اگر وہ رجال بالفرض ان ائمہ کے معاصر یا ان سے پہلے کے ہوں تب بھی یہ ضروری نہیں کہ امام کے پاس یہ حدیث ان ہی رُوات کے طریق سے پہنچی ہو جن رُواۃ سے مرکب اسناد ہمارے سامنے ہے۔

ماقبل میں ذکر کردہ تمام عبارات کو اگر غور سے دیکھا جائے تو حدیثِ ضعیف کے بارے میں جمہور فقہاء و محدثین کی یہ یہی رائے معلوم ہوتی ہے کہ ضعیف حدیث حجت ہے تو جو لوگ بالکل ہی ضعیف حدیث کو رد کرتے ہیں یہ جمہور کے رائے کے خلاف ہوگا۔

**حدیثِ ضعیف اور قیاس کے بارے میں بعض اشکالات کے جوابات :**

(ا) علامہ ابن تیمیہ رحمۃ اللہ علیہ اور علامہ ابن القیم رحمۃ اللہ علیہ اس سے یہ ثابت کرنے کی کوشش کرتے ہیں کہ امام احمد رحمۃ اللہ علیہ کے اس قول "حدیث ضعیف ہمارے نزدیک قیاس

سے زیادہ پسندیدہ ہے'' میں حدیث ضعیف سے مراد حدیث حسن ہے، کیونکہ ''حدیث حسن'' کی اصطلاح امام ترمذی رحمۃ اللہ علیہ کی ایجاد کردہ ہے، متقدمین کے ہاں صرف ''صحیح'' اور ''ضعیف'' کی اصطلاحات تھیں۔

حالانکہ ''حدیث حسن'' کی اصطلاح متقدمین کے ہاں بھی رائج تھی۔ جیسے علی بن المدینی، امام احمد، یعقوب بن شیبہ اور امام بخاری رحمہم اللہ وغیرہ حضرات کی تصانیف میں ''حدیث حسن '' کی اصطلاح موجود ہے۔ (۱)

(۲) چنانچہ علامہ ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ اور علامہ ابن القیم رحمۃ اللہ علیہ نے وہ احادیث ذکر کی ہیں، جن سے ائمہ نے استدلال کیا ہے، اور ان احادیث کی سندیں ضعیف ہیں۔ تو اس بارے میں پوری یقین سے یہ بات نہیں کی جاسکتی کہ ائمہ کرام کو بھی یہ احادیث انہی اسانید سے پہنچی تھیں، ہوسکتا ہے ان کو ان کے علاوہ صحیح اسانید بھی پہنچی ہوں۔ اس بات سے قطع نظر کہ انہی احادیث کی موجودہ سندیں بھی تحقیق کے بعد ضعیف نہیں ہیں، بلکہ علامہ ظفر احمد عثمانی رحمۃ اللہ علیہ نے ان کو حسن ثابت کیا ہے۔ لیکن پھر بھی یہ نہیں کہا جاسکتا کہ جب نئی تحقیق سے یہ ثابت ہوگیا کہ یہ احادیث حسن ہیں، تو ائمہ کرام کے کلام میں موجود ضعیف کا مطلب حسن ہونا ہوتا ہے، جیسا کہ اس سے پہلے علامہ ابن تیمیہ رحمۃ اللہ علیہ اور علامہ ابن القیم رحمۃ اللہ علیہ کے حوالے سے گذر گیا۔ جب تک صریح طور پر ائمہ کرام سے کسی مخصوص حدیث کی مخصوص سندوں کے بارے میں ضعف پھر ان سے استدلال کرنا ثابت نہ ہو جائے۔

(۳) ایسا ہی ائمہ کرام کے کلام میں ضعیف سے مراد مطلق ضعیف بھی نہیں، چاہے ضعف شدید درجے کا ہو یا کم درجے کا ہو۔ بالکل درست بات یہ ہے کہ ان کے کلام میں موجود ضعیف سے مراد متوسط درجے کا ضعیف مراد ہے، محقق علامہ محمد عوامہ مدظلہ نے اسی قول کو راجح قرار دیا ہے۔ (۲)

۱۔ تعلیق قواعد فی علوم الحدیث، ص ۱۰۱، ۱۰۲

۲۔ تعلیق قواعد في علوم الحدیث: ص ۱۰۱، ۱۰۲

(۴) خلاصہ کلام یہ کہ ائمہ کرام کے بارے میں مذکورہ مذہب کہ ''ضعیف حدیث قیاس سے اولی ہے'' سب سے زیادہ اہتمام کے ساتھ علامہ ابن حزم رحمہ اللہ نے نقل کیا ہے، اور علامہ ابن حزم رحمہ اللہ کے بارے میں یہ بات محتاج بیان نہیں کہ وہ ''قیاس'' کی حجیت کے منکر تھے، اور اس سلسلہ میں ان کا حد سے زیادہ تشدد معروف ہے۔ جبکہ جمہور ائمہ کے نزدیک ''قیاس'' حجت شرعی ہے، ممکن ہے کہ علامہ ابن حزم رحمہ اللہ ائمہ کرام کے ان اقوال کے ذریعہ ''قیاس'' کی حجیت کو متاثر کرنے کی کوشش کررہے ہوں! کیونکہ ائمہ کرام نے قیاس کے بارے میں نہایت ہی محتاط موقف اپنا کر حدیث ضعیف اور قیاس کو اپنا اپنا مقام دیا ہے۔ کمزور دلیل کو قوی دلیل پر مقدم نہیں کیا ہے۔

مذکورہ تفصیل کے بعد اب یہ بات بالکل واضح ہوگئی کہ ائمہ اربعہ حدیث کے معاملہ میں بہت ہی محتاط رہے ہیں، لہذا اس کے باوجود اس حقیقت کو نظر انداز کر کے ائمہ اربعہ پر مخالفت حدیث کا الزام لگانا بہت ہی ناانصافی ہے۔

## کیا ائمہ اربعہ حدیث کی مخالفت کرتے ہیں؟:

بعض حضرات کی طرف سے یہ اشکال کیا جاتا ہے کہ ائمہ مجتہدین احادیث کی مخالفت کرتے ہیں، جس کی صورت یہ ہے کہ بعض مرتبہ احادیث کو چھوڑ کر اپنی رائے پر عمل کرتے ہیں، لیکن یہ اشکال درست نہیں؛ اس لئے کہ ائمہ مجتہدین کے ہاں احادیث کو پرکھنے کے لئے کچھ اصول ہوتے ہیں، چنانچہ مجتہد احادیث کو ان اصولوں پر پرکھتا ہے، جو حدیث ان اصولوں پر پوری اترتی ہے اس کو معمول بہ قرار دیتے ہیں۔

## امام ابوحنیفہ رحمتہ اللہ علیہ کے ہاں اخبار آحاد کو پرکھنے کے اصول:

امام صاحب کے ہاں اخبار آحاد کو پرکھنے کے لئے چند پختہ اور مستحکم اصول ہیں، جن کو علامہ زاہد الکوثریؒ نے مختصراً نقل کیا ہے، جو پیش خدمت ہیں:

۱۔ان اصولوں میں سے ایک اصل یہ ہے کہ روایات مرسلہ جب ثقات روایت کریں اور ان کے مقابلہ میں ان کے معارض کوئی قوی نص بھی نہ ہو، تو امام صاحب ان مراسیل روایات کو قبول کر لے تے ہیں۔

۲۔ان اصولوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ ان اخبار آحاد کو کتاب اللہ پر پیش کرتے ہیں، اگر اخبار آحاد کتاب اللہ کے مخالف ہوں، تو ان کو چھوڑ کر کتاب اللہ کو لیتے ہیں، دو دلیلوں میں سے اقوی دلیل پر عمل کرتے ہوئے؛ اس لئے کہ کتاب اللہ قطعی الثبوت اور کتاب اللہ کے ظواہر اور اس کے عمومات قطعی الدلالۃ ہیں۔

۳۔ان اصولوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ یہ اخبار آحاد سنت مشہورہ کے مخالف نہ ہوں، برابر ہے کہ سنت فعلیہ ہو یا سنت قولیہ، اگر اخبار آحاد سنت مشہورہ کے مخالف ہو، تو امام صاحب دو دلیلوں میں سے اقوی دلیل پر عمل کرتے ہوئے اخبار آحاد کو چھوڑ دیتے ہیں۔

۴۔ان اصولوں میں سے ایک اصل یہ بھی ہے کہ خبر واحد اپنی جیسی دوسری خبر واحد کی مخالف نہ ہو، اگر کہیں تعارض پیش آجائے، تو ان میں سے ایک کو دوسرے پر ان اسباب کی بناپر ترجیح دی جائے گی جو مجتہدین کے ہاں وجہ ترجیح بن سکتے ہو۔لیکن وجہ ترجیح کے اسباب میں مجتہدین کا اختلاف رہا ہے مثلاً دو راویتوں کے راویوں میں ایک راوی فقیہ ہو تو امام صاحب فقاہت کو ترجیح دے کر اس کی روایت کو قوی قرار دیتے ہیں۔

۵۔ان اصولوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ راوی کا عمل اپنی روایت کے خلاف نہ ہو، مثلاً حضرت ابو ہریرہؓ سے مروی ہے کہ "کتا برتن میں منہ مارے، تو اسے سات مرتبہ دھولو" لیکن آپ کا فتوی اس کے خلاف تین مرتبہ دھونے کا تھا؛ چنانچہ اس علت کی بناپر امام صاحب نے تین والی روایت کو ترجیح دے کر معمول بہا بنایا۔

۶۔ان اصولوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ ان اخبار آحاد کے بارے میں سلف میں سے کسی نے طعن نہ کیا ہو یعنی ان روایات پر کسی نے کلام نہ کیا ہو۔

۷۔ ان اصولوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ یہ اخبار آحاد اس عمل متوارث کے بھی مخالف نہ ہوں، جس پر صحابہ اور تابعین کے زمانے میں عمل ہوا ہے اور اس میں کسی شہر کی تعیین امام صاحب کے ہاں نہیں، جیسا کہ امام مالک رحمۃ اللہ علیہ کے ہاں تعامل مدینہ منورہ۔

اس کے علاوہ اور بھی بہت سے اصول ہیں جنہیں ''اصول فقہ'' کی کتابوں میں دیکھا جا سکتا ہے۔ (۱)

ان تمام صورتوں میں امام صاحب اقوی دلیل کو لیتے ہوئے اخبار آحاد کو چھوڑ دیتے ہیں، اس لئے ان پر ہرگز یہ اعتراض وارد نہیں ہوتا کہ انہوں نے اخبار آحاد کو چھوڑ کر احادیث رسول کی مخالفت کی ہے، کیونکہ اس صورت میں یہ تمام روایتیں معلول بن جاتی ہیں، اور حضرات فقہاء کے ہاں یہ مسلمہ قاعدہ ہے کہ احکام میں معلول روایت مستدل نہیں بن سکتی ۔

لہذا معلوم ہوا کہ بعض اوقات ضعیف حدیث بلکہ صحیح اور حسن روایت کو بھی ان اصولوں کی وجہ سے قبول نہیں کیا جاتا۔

چنانچہ امام صاحب ہوں، یا ائمہ ثلاثہ، انہوں نے جہاں کہیں بھی اخبار آحاد سے صرف نظر کیا ہے، محض اس بنیاد پر کیا کہ وہ ان اصولوں پر پورا نہیں اترتی تھیں جو ان کو پرکھنے کے لئے مسلمہ پیمانے کی حیثیت رکھتے ہیں، اس لئے ان حضرات پر ہرگز یہ الزام عائد نہیں ہوتا کہ انہوں نے احادیث رسول کی مخالفت کی ہیں؛ بلکہ جہاں معلول روایات کا قوی نص سے تعارض ہو وہاں اخبار آحاد سے استدلال نہیں کرتے جبکہ حضرات فقہاء کے ہاں یہ ایک مسلمہ اصول ہے کہ معلول احادیث احکام میں مستدل نہیں بن سکتی ہیں۔

## دوسرا مذہب حدیثِ ضعیف فضائل میں حجت ہے نہ کہ احکام میں:

دوسرا مذہب یہ ہے کہ حدیث ضعیف فضائل اور ترغیب وترہیب میں تو قابل حجت ہے، البتہ احکام میں حجت نہیں۔ یہ جمہور فقہاء، محدثین، اصولیین اور متکلمین کا مختار مذہب ہے۔

(۱) (تانیب الخطیب: ص ۲۲۲۔۲۲۵)

بلکہ علامہ نووی، علامہ ہیتمی (۱) اور ملا علی قاری رحمہم اللہ نے تو اس پر اجماع نقل کیا ہے۔

(۱) چنانچہ علامہ نووی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"قد اتفق العلماءُ على جواز العملِ بالحديث الضعيف في فضائل الأعمال."(۲)

(ترجمہ): "فضائل اعمال میں ضعیف حدیث کے عمل کے جواز پر تمام علماء کا اتفاق ہے"۔

(۲) علامہ ابن حجر مکی ہیتمی رحمۃ اللہ علیہ مزید اس کی وضاحت کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

"قد اتفق العلماء على جواز العمل بالحديث الضعيف في فضائل الأعمال؛ لأنه إن كان صحيحاً في نفس الأمر فقد أعطِيَ حقه من العمل به، وإلا لم يترتب على العمل به مَفْسَدَةَ تحليل، ولا تحريم، ولا ضياع حق، للغير." (۳)

(ترجمہ): "یعنی فضائل اعمال" میں ضعیف حدیث پر عمل کے بارے میں علماء کا اتفاق ہے؛ کیونکہ اگر وہ واقعتاً صحیح تھی تو اس کا حق اس کو مل گیا، ورنہ اس پر عمل کرنے سے نہ تو حرام کو حلال کرنا لازم آیا اور نہ اس کے برعکس، اور نہ ہی کسی غیر کے حق کا پامال کرنا"۔

---

۱۔ ابوالعباس احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی شافعی۔ رجب ۹۰۹ھ میں پیدا ہوئے یتیمی کے حالت میں علوم کی تحصیل کی اور بڑا کمال حاصل کیا۔ فراغت کے بعد مسند درس پر متمکن ہوئے۔ موصوف کو تفسیر، فقہ، اصول، کلام، اور تصوف میں ید طولی حاصل تھا۔ وفات رجب ۹۷۳ھ یا ۹۷۴ھ میں مکہ مکرمہ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: فتح المبین، الجوہر المنظم فی زیارۃ قبر النبی المکرم، فتاوی الفقہیہ۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: النور السافر ص ۳۹۰۔۳۹۶، اور شذرات الذہب ۸/۳۳۵۔۳۳۷

۲۔ الاربعین النوویہ: ص ۴

۳۔ الفتح المبین شرح الاربعین: ص ۳۲

(۳) نیز ملا علی قاری رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" فإن الحديث الضعيف معتبر في فضائل الأعمال عندَ جميعِ العلماء من أرباب الكمال." (۱)

(ترجمہ): "تمام علماء کے نزدیک فضائلِ اعمال میں ضعیف حدیث قابلِ عمل ہے"۔

چنانچہ ضعیف احادیث کا فضائلِ اعمال وغیرہ میں قابلِ عمل ہونے کے بارے میں ان حضرات سے نصوص کچھ کم نہیں، بطور نمونہ چند ایک عبارتیں پیش کی جاتی ہیں جن سے ضعیف حدیث کے فضائل میں قابلِ عمل ہونے کے بارے میں حقیقت کھل کر سامنے آجاتی ہے اور جمہور کا منصور مسلک واضح سے واضح تر ہو جاتا ہے جس میں کسی منصف مزاج کو شک وشبہ کی کوئی گنجائش باقی نہیں رہتی،

(۴) رواد ابن الجراح امیر المؤمنین فی الحدیث حضرت سفیان ثوری (۲) رحمۃ اللہ علیہ کے حوالے سے لکھتے ہیں:

"سمعت سفيان الثوري يقول: لا تأخذوا هذا العلم في الحلال والحرام إلا من الرؤساء المشهورين با لعلم الذين يعرفون الزيادة و النقصان، ولا بأس بما سوى ذلك من

---

۱۔ الاجوبۃ الفاضلۃ للاسئلۃ العشرۃ الکاملۃ: ص ۳۷

۲۔ ابو عبد اللہ سفیان بن سعید بن مسروق ثوری کوفی۔ موصوف کی ولادت کوفہ میں ۹۷ھ میں ہوئی ۔رواۃ ستہ میں سے مشہور امام حدیث، عابد و زاہد اور مقتداء امام شعبہ، ابن عیینہ، ابو عاصم اور سید الحفاظ ابن معین وغیرہ اکابر علماء نے ان کو "امیر المؤمنین فی الحدیث" کے لقب سے یاد کیا ہے۔ حدیث کی طرح فقہ میں بھی موصوف کا ایک جمچا رہا ہے، اس بناء پر ائمہ اعلام کی ایک جماعت ان کے تفقہ اور فقہی بصیرت پر شاہد رہی ہے۔ اور ائمہ حدیث نے جابجا کتب رجال میں حدیث کے ساتھ ان کی فقہی بصیرت پر روشنی ڈالی ہے۔ وفات ۱۶۱ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: الجامع الکبیر، الجامع الصغیر، الفرائض۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: تذکرۃ الحفاظ: ۱/ ۱۵۱۔ ۵۷، اور الاعلام: ۳/ ۱۰۴۔

المشايخ."[1]

(ترجمہ): "میں نے سفیان ثوری رحمۃ اللہ علیہ کو یہ کہتے ہوئے سنا کہ حلال وحرام کا علم صرف انہیں لوگوں سے حاصل کرو جو بڑے مشہور عالم ہوں، جو روایات میں کمی اور زیادتی کی پہچان رکھتے ہوں، اور حلال وحرام کے علاوہ کا علم دوسرے (ضعفاء) لوگوں سے بھی حاصل کرنے میں کوئی حرج نہیں۔ اس عبارت سے معلوم ہوا کہ ضعیف روایت فضائل اعمال میں معتبر ہے"۔

(۵) حضرت سفیان بن عیینہ[2] رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"لا تسمعوا من بَقِيَّةَ ما كان في سُنَّةٍ، واسمعوا منه ما كان في ثواب وغيره."[3]

(ترجمہ): "کہ "بقیہ" (ضعیف راوی) سے سنت (یعنی معمول بہ احکام) سے متعلق حدیثیں نہ لو! البتہ ثواب وغیرہ سے متعلق روایتیں لے سکتے ہو۔"

یہ عبارت بھی اپنے مدلول ومفہوم کے اعتبار سے بالکل واضح ہے کہ ضعیف حدیث فضائل میں قابل عمل ہے۔

---

۱۔ الكامل في الضعفاء: ۱/ ۲۵۷ شرح علل الترمذي: ۱/ ۷۴

۲۔ ابو محمد سفیان بن عیینہ بن ابی عمران میمون ہلالی کوفی۔ موصوف کی ولادت ۱۰۷ھ میں ہوئی۔ موصوف ۲۰ سال کی عمر میں کوفہ آئے اور امام اعظم سے تحصیل علم حدیث وفقہ کی۔ حدیث کی طرح فقہ کے ساتھ بھی موصوف کو ایک خاص اعتناء اور تعلق رہا، موصوف مشہور محدث، ثقہ، حافظ، فقیہ، امام، حجت اور اپنے زمانہ کے کبار واعیان میں سے تھے، جس پر ائمہ اعلام کی ایک جماعت شاہد رہی ہے۔ وفات ۱۹۸ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: کتاب الجامع، التفسیر۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے تذکرۃ الحفاظ: ۱/ ۱۹۳۔۱۹۴، اور الاعلام: ۳/ ۱۰۵، اور الجواہر المضیہ في طبقات الحنفیہ: ص ۲۵۰۔۲۵۱

۳۔ شرح علل الترمذي: ۱/ ۷۴

(۶) امام عبدہ رحمۃ اللہ علیہ حضرت عبداللہ بن مبارک [1] رحمۃ اللہ علیہ کے حوالے سے لکھتے ہیں:

"قيل لابن المبارك وروىٰ عن رجل حديثاً. فقيل: هذا رجل ضعيف! فقال: يحتمل أن يُروىٰ عنه هذا القدر أو مثل هذه الأشياء. قلت (أي ابن أبي حاتم) لعبدة: مثل أي شئي كان؟ قال: في أدب، في موعظة، في زهد." [2]

(ترجمہ): "عبداللہ بن مبارک نے رحمۃ اللہ علیہ کسی شخص سے کوئی روایت بیان کی تو انہیں کہا گیا کہ یہ آدمی (جس سے یہ روایت بیان کی ہے) تو ضعیف ہے! تو انہوں نے کہا کہ اس شخص سے اس جیسی اشیاء نقل کی جاسکتی ہیں، ابوحاتم رحمۃ اللہ علیہ کہتے ہیں کہ میں نے امام عبدہ رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھا کہ کس طرح کی اشیاء نقل کی جاسکتی ہیں؟ تو انہوں نے کہا کہ آداب میں، وعظ ونصیحت میں اور زہد میں اس سے روایتیں لی جاسکتی ہے۔"

اس سے بھی یہ بات آشکارا ہوگئی کہ ضعیف حدیث مطلقاً فضائل اعمال میں حجت ہے۔

(۷) علامہ ابن عبدالبر رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

---

۱۔ ابو عبدالرحمان عبداللہ بن مبارک بن واضح حنظلی مروزی۔ آپ کی پیدائش ۱۱۸ھ میں ہوئی۔ ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی خصوصاً امام اعظم اور امام مالک سے بڑا کمال حاصل کیا۔ موصوف میں حسب ذیل کمالات مجتمع تھے علم، فقہ، نحو، لغت، شعر، فصاحت، زہد، ورع، انصاف، قیام لیل، عبادت، حج، جہاد، شہسواری، شجاعت، جسمانی قوت، ترک لایعنی اور سخاوت۔ علوم حدیث میں موصوف کی گراں قدر خدمات کسی سے مخفی نہیں، اور نامور ائمہ اعلام جابجا اپنی کتب میں موصوف کے بے مثل کارناموں کو سراہتے ہوئے بڑی خوش اسلوبی سے ذکر کرتے ہیں۔ موصوف کی وفات ۱۸۱ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: کتاب الزہد والرقائق، مسند عبداللہ بن مبارک، کتاب الجہاد۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۱۰/۴۴۶۔۴۴۷، اور تذکرۃ الحفاظ: ۱/۲۰۲۔۲۰۴، اور الاعلام: ۴/۱۱۵

۲۔ شرح علل الترمذی: ۱/۷۴

"أهل العلم بجماعتهم يتساهلون في الفضائل فيروونها عن كل، وإنما يتشددون في أحاديث الأحكام." (۱)

(ترجمہ): "تمام اہل علم حضرات فضائل اعمال کی روایات میں تساہل سے کام لیتے ہیں؛ اس لئے ہر ایک سے روایت کرتے ہیں، اور احکام کی روایات میں تشدد سے کام لیتے ہیں"۔

(۸) امام ابوسعید عبدالرحمان بن مہدی (۲) رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"إذا روينا عن النبي ﷺ في الحلال و الحرام و الأحكام، شددنا في الأسانيد، وانتقدنا في الرجال، وإذا روينا في الفضائل، و الثواب، والعقاب: سهلنا في، الأسانيد وتسامحنا في الرجال." (۳)

(ترجمہ): "جب ہم نبی کریم ﷺ سے حلال وحرام اور احکام کی روایت کرتے ہیں تو اسانید کے بارے میں سختی برتتے ہیں اور رجال پر نقد کرتے ہیں اور جب فضائل وعقاب کی روایت کرتے ہیں، تو اسانید میں نرمی اختیار کرتے ہیں اور احادیث میں تسامح سے کام لیتے ہیں"۔

(۹) امام المحدثین ابوعبداللہ احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

---

۱۔ جامع بیان العلم وفضلہ: ص ۳۵

۲۔ ابوسعید عبدالرحمان بن مہدی بن حسان لؤلؤی۔ موصوف کی ولادت باسعادت ۱۳۵ھ میں ہوئی اپنے زمانہ کے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی اور بڑا کمال حاصل کیا، موصوف اپنے زمانہ کے امام کبیر بصرہ کے قابل فخر فقہاء وحفاظ حدیث میں سے تھے، علی بن مدینی فرمایا کرتے تھے: کہ اگر میں رکن اور مقام کے درمیان کھڑے ہو کر قسم کھاؤں کہ میں نے ابن مہدی سے زیادہ اعلم الناس نہیں دیکھا ہے تو میں حانث نہیں ہوں گا۔ موصوف بڑے عابد وزاہد تھے، وفات ۱۹۸ھ میں ہوئی۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: تاریخ مدینۃ السلام: ۱۱/۵۱۲۔۵۲۳، اور تاریخ الاسلام: ۵/۲۶۴۔۲۶۸، اور تذکرۃ الحفاظ: ۱/۲۴۱۔۲۴۲

۳۔ الاجوبۃ الفاضلۃ للاسئلۃ العشرۃ الکاملۃ: ص ۵۰۔۵۱

" إذا روينا عن رسول الله ﷺ في الحلال، و الحرام، والسنن ،والأحكام ،تشددنا في الأسانيد،وإذا روينا عن النبي ﷺ في فضائل الأعمال، وما لا يَضَعُ حكماً ولا يرفعه ، تساهلنا في الأسانيد." (۱)

(ترجمہ): "جب ہم رسول اللہ ﷺ سے حلال وحرام اور سنن واحکام کی روایت کرتے ہیں تو اسانید کے بارے میں سختی برتتے ہیں اور جب ایسی حدیث روایت کرتے ہیں جو کسی عمل فضیلت کو بتائے، یا ایسی حدیث جو نہ کسی حکم کا درجہ کم کریں اور نہ بلند کریں تو اسانید میں نرمی اختیار کرتے ہیں"۔

(۱۰) امام حاکم نیسابوری (۲) رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

" إذا روينا عن النبي ﷺ في الحلال والحرام والأحكام شددنا في الأسانيد، وانتقدنا في الرجال،وإذاروينا في الفضائل والثواب والعقاب:سهلنا في الأسانيد وتسامحنا في الرجال ."(۳)

(ترجمہ): "جب ہم نبی کریم ﷺ سے حلال وحرام اور احکام کی روایت کرتے ہیں، تو اسانید کے بارے میں

---

۱۔ الکفایۃ فی معرفۃ اصول علم الروایۃ: ۳۹۹/۱

۲۔ ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ بن محمد الحاکم نیسابوری ۳۲۱ھ کو نیسابور میں پیدا ہوئے، ابتدائی تعلیم اپنے والد ماجد سے حاصل کرنے کے بعد تکمیل علم اپنے زمانہ کے کبار علماء سے کی۔ موصوف مشہور محدث اور حافظ حدیث تھے، موصوف کو علوم حدیث میں مہارت تامہ حاصل تھی، اس لئے ان کی اکثر تصانیف حدیث اور علوم حدیث سے متعلق ہیں نیسابور میں قاضی مقرر ہوئے اور اسی وجہ سے حاکم لقب پڑھ گیا اور نیسابور ہی میں ۴۰۵ھ کو وفات پائی۔ چند مشہور تصانیف: مستدرک حاکم، معرفۃ علوم الحدیث، تاریخ نیسابور۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۲۴/۱۳۔۲۵، اور الاعلام: ۲۲۷/۶

۳۔ المستدرک علی الصحیحین للحاکم: ۶۶۶/۱

سختی برتتے ھیں ،اور رجال پر نقد کرتے ھیں، اور جب فضائل ،ثواب وعقاب کی روایت کرتے ھیں، تو اسانید میں نرمی اختیار کرتے ھیں اور احادیث میں تسامح سے کام لیتے ھیں"۔

(۱۱) علامہ خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ ابوزکریا یحیی بن محمد عنبری رحمۃ اللہ علیہ(۱) کے حوالے سے نقل کرتے ہیں:

"الخبر إذا ورد لم یحرم حلالاً، ولم یحرم حراماً، ولم یوجب حکماً، وکان في ترغیب، أو ترهیب، أو تشدید، أو ترخیص، وجب الإغماض عنه والتساهل في رواته "(۲)

(ترجمہ): "یعنی کوئی حدیث اگر حلال کو حرام اور حرام کو حلال نہ کرتی ہو اور کسی حکم کو واجب نہ کرتی ہو اور صرف ترغیب وترہیب (یعنی سختی اور رخصت) سے تعلق رکھتی ہو تو اس سے چشم پوشی کی جائے گی اور اس کے راویوں پر جرح میں تساہل سے کام لیا جائے گا"۔

ان صریح اقتباسات سے یہ معاملہ واضح ہو جاتا ہے کہ ضعیف الاسناد احادیث فضائل، ترغیب وترہیب میں قابل عمل ہیں۔

(۱۲) موفق الدین ابن قدامہ حنبلی رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

"النوافل والفضائل لا یشترط صحة الحدیث فیها ."(۳)

---

۱۔ ابوزکریا یحیی بن محمد بن عبداللہ بن عنبر بن صالح بن محمد سلمی عنبری شافعی۔ موصوف نے اپنے زمانہ کے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی۔ موصوف مشہور ومعروف مفسر اور ادیب تھے۔ موصوف ذکاوت اور بے پناہ ذہانت میں بہت مشہور تھے۔ وفات ۳۴۴ھ میں ہوئی۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: تاریخ الاسلام: ۲۹۱،۲۹۰/۸، اور طبقات الشافعیۃ الکبری: ۲/ ۳۴۳۔۳۴۴

۲۔ الکفایۃ في معرفۃ اصول الروایۃ: ۳۹۹/۱

۳۔ المغني لابن قدامہ: ۸۰۴/۱

(ترجمہ): ”نوافل اور فضائل میں صحیح حدیث کا ہونا ضروری نہیں (اس لئے کہ ان میں ضعیف روایت بھی قابل عمل ہے)“۔

(۱۳) علامہ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

” یجوز عند أهل الحديث وغيرهم التساهل في الأسانيد وروايته ما سوى الموضوع من أنواع الأحاديث الضعيفة من غير اهتمام ببيان ضعفها ------ (۱)

(ترجمہ): ”محدثین اور غیر محدثین سب کے نزدیک اسانید میں تساہل برتنا، اور ضعیف کی قسموں میں سے موضوع روایت کے ماسوا روایت کرنا، اس کے ضعف بیان کئے بغیر جائز ہے“۔

(۱۴) علامہ نووی رحمۃ اللہ علیہ یوں گویا ہیں:

” قال العلماء من المحدثين والفقهاء وغيرهم: يجوز ويستحب العمل في الفضائل والترغيب والترهيب بالحديث الضعيف ما لم يكن موضوعاً. “(۲)

”محدثین اور فقہاء وغیرہ کا کہنا ہے کہ فضائل اور ترغیب وترہیب میں ضعیف حدیث پر عمل کرنا جائز اور مستحب ہے“۔

(۱۵) علامہ ناصر الدین دمشقی رحمۃ اللہ علیہ (۳) لکھتے ہیں:

---

۱۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۱۱۰۔۱۱۱

۲۔ الاذکار المنتخبۃ من کلام سید الابرار: ص ۱۵

۳۔ ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ بن محمد بن احمد بن مجاہد قیسی دمشقی شافعی جو ابن ناصر الدین کے نام سے مشہور ہیں آپ کی پیدائش ۷۷۷ھ میں ہوئی۔ اپنے زمانہ کے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی اور بڑا کمال حاصل کیا، موصوف بلامنازعہ شام کے حافظ حدیث اور مشہور مورخ تھے، موصوف نے دار الحدیث الاشرفیہ کی مسند کو زینت بخشی۔ آپ کو ۸۴۲ھ میں دمشق کے ایک گاؤں میں شہید کر دیا گیا۔ چند مشہور تصانیف: عقود الدرر فی علوم الاثر، افتتاح القاری لصحیح البخاری۔: ترجمہ کے لئے دیکھئے: شذرات الذہب فی اخبار من ذہب: ۷/۲۴۸۔۲۴۹، اور الاعلام: ۶/۲۳۷

"وقد روي عن جم من السلف، وجمع من الخلف فيما يروى عنهم، ونقل عنهم ابن المبارك، وابن مهدي، وأحمد بن حنبل أنهم تساهلوا في رواية الحديث الضعيف الذي في إسناده مقال إذا كان في الترغيب و الترهيب، والقصص والأمثال، و المواعظ، وفضائل الأعمال، وكما تجوز رواية الحديث الضعيف الوارد في بعض هذه الأمور؛ كذلك يجوز العمل به عند الجمهور"(۱)

(ترجمہ): "سلف اور خلف کی ایک بڑی جماعت سے منقول ہے اور ان سے عبداللہ بن مبارک، عبدالرحمان بن مہدی اور امام احمد بن حنبل رحمہم اللہ نے نقل کیا ہے کہ انہوں نے تساہل برتا ہے اس ضعیف حدیث میں جس کی سند میں کلام ہو جب وہ روایت ترغیب و ترہیب، قصص، امثال، مواعظ اور فضائل اعمال میں ہو، اور جیسے ضعیف روایت کا روایت کرنا جائز ہے جو ان امور میں سے کسی امر میں وارد ہوا ایسے ہی اس پر عمل کرنا بھی جمہور کے نزدیک جائز ہے"۔

جن لوگوں نے (جیسے شیخ ناصر الدین اور شیخ عبدالرحمان معلمی) روایت اور عمل میں فرق کیا ہے کہ ضعیف روایت کو صرف روایت کرنا جائز ہے نہ کہ عمل کرنا، ان کے لئے حافظ ابن ناصر الدین دمشقی رحمۃ اللہ علیہ کی مذکورہ عبارت میں خود جواب موجود ہے جس پر ابن ناصر الدین رحمۃ اللہ علیہ نے جمہور کا مذہب نقل کیا ہے۔

(۱۲) علامہ ابن کثیر رحمۃ اللہ علیہ نظر جھکانے کی فضیلت میں چند احادیث کو ذکر کرنے کے بعد فرماتے ہیں:

"ولكن في أسانيدها ضعف، إلا أنها في الترغيب، ومثله يتسامح فيه"(۲)

۱۔ تحقیق المقال فی تخریج احادیث فضائل اعمال: ص ۱۱۳

۲۔ تفسیر ابن کثیر: ۲۸۲/۳

(ترجمہ): ”یہ تمام سندیں ضعیف ہیں، مگر یہ کہ یہ ترغیب میں ہیں، اور ان جیسوں میں تساہل برتا جاتا ہے“۔

(۱۷) علامہ طیبی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

”ویجوز عند المحدثین وغیرھم التساھل في أسانید سوی الموضوع في المواعظ، والقصص، وفضائل الأعمال.“(۱)

(ترجمہ): ”حضرات محدثین وغیر محدثین سب نے موضوع روایت کے علاوہ ضعیف حدیث میں تساہل کو جائز کہا ہے جب مواعظ، قصص اور فضائل اعمال میں ہو“۔

(۱۸) علامہ زرکشی رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

”ویجوز روایتہ والعمل بہ في غیر ذلك کالقصص و فضائل الأعمال، والترغیب والترھیب، ونقل ذلك عن ابن عبد الرحمان بن مھدي، وأحمد بن حنبل.“(۲)

(ترجمہ): ”ضعیف حدیث کو روایت کرنے کے ساتھ ساتھ اس پر عمل کرنا بھی جائز ہے عقائد اور احکام کے علاوہ جیسے فضائل اعمال، قصص اور ترغیب وترہیب میں، اور عبد الرحمان بن مہدی رحمہ اللہ اور امام احمد بن حنبل رحمہ اللہ کی یہی رائے ہے“۔

(۱۹) علامہ عراقی (۳) رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

---

۱۔ الخلاصۃ فی اصول الحدیث: ص ۴۸

۲۔ النکت علی کتاب ابن الصلاح: ص ۲۴۵

۳۔ ابو الفضل عبد الرحیم بن الحسین بن عبد الرحمان کردی عراقی شافعی موصوف عراقی کے نام سے مشہور ہیں۔ آپ کی پیدائش ۷۲۵ھ میں ہوئی۔ موصوف نے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی۔ موصوف بلاشبہ اپنے زمانہ کے حافظ حدیث تھے، موصوف کو تصنیف وتالیف میں بھی ید طولی حاصل تھا۔ وفات ۸۰۶ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: المغنی عن حمل الاسفار فی الاسفار، الالفیہ، التقیید والایضاح۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: شذرات الذہب فی اخبار من ذہب: ۱۸۲/۷۔۱۸۳، اور الاعلام: ۳۴۴/۳۔۳۴۵

"وأما غير الموضوع فجوّزوا التساهل في إسناده، وروايته من غير بيان لضعفه إذا كان في غير الأحكام والعقائد. بل في الترغيب والترهيب، من المواعظ والقصص، وفضائل الأعمال، ونحوها." (١)

(ترجمہ): "اگر حدیث ضعیف ہو لیکن موضوع نہ ہو تو محدثین اس کی اسناد میں تساہل کو جائز سمجھتے ہیں اور یہ بھی جائز قرار دیتے ہیں کہ ضعف کی تصریح کیے بغیر بیان بھی کیا جاسکتا ہے جب کہ حدیث کا تعلق احکام وعقائد سے نہ ہو بلکہ مواعظ، قصص اور فضائل اعمال میں ترغیب وترہیب سے ہو"۔

(۲۰) حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ (۲) پر تنقید کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

"فذكر في كتابه الحديث المنكر والضعيف الذي يحتمل في الترغيب والترهيب." (۳)

(ترجمہ): "علامہ ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ اپنی کتاب میں منکر اور ضعیف احادیث کو بھی لیکر آئے ہیں جو ترغیب وترہیب میں قابل عمل ہیں"۔

(۲۱) محقق ابن ہمام رحمۃ اللہ علیہ نے لکھا ہے:

---

۱۔ (شرح التبصرۃ والتذکرۃ: ۳۲۵/۱

۲۔ ابوالفرج عبدالرحمان بن علی بن بغدادی حنبلی جو ابن الجوزی کے نام سے مشہور ہیں ۵۱۰ھ میں پیدا ہوئے کبار علماء امت سے علم حاصل کیا۔ آپ مشہور واعظ، مفسر قرآن، حافظ حدیث، فقیہ، زاہد اور مورخ تھے۔ اور موصوف کو تصنیف وتالیف میں بھی ید طولی حاصل تھا، موصوف کی علمی خدمات نہایت قابل قدر ہیں مگر موصوف میں بھی ایک گونہ تشدد تھا جس پر علماء نے نکیر کی ہے۔ وفات ۵۹۷ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: زاد المسیر، تلبیس ابلیس، المنتظم۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: البدایہ والنہایہ: ۴۶۵/۱۴۔۴۷۰، شذرات الذہب فی اخبار من ذہب: ۴۳/۵۔۴۵:

۳۔ النکت علی کتاب ابن الصلاح: ۳۰۸/۲

" فالضعيف غير الموضوع،يعمل به في فضائل الأعمال "[1]

(ترجمہ): ''ضعیف روایت جبکہ موضوع نہ ہو فضائل اعمال میں قابل عمل ہے''۔

نیز موصوف رقمطراز ہیں:

" الاستحباب يثبت بالضعيف غير الموضوع "[2]

(ترجمہ): ''ضعیف حدیث جبکہ موضوع نہ ہو، اس سے استحباب ثابت ہوتا ہے''۔

(۲۲) سید شریف جرجانی[3] رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" و يجوز عند العلماء التساهل في إسناد الضعيف دون الموضوع وروايته من غير بيان ضعفه في المواعظ والقصص. "[4]

(ترجمہ): ''علماء کرام کے نزدیک موضوع روایت کے علاوہ ضعیف حدیث کی سند میں تساہل برتنا جائز ہے، اسی طرح اس کا روایت کرنا مواعظ اور قصص میں، اس کا ضعف بیان کئے بغیر''۔

---

۱۔ فتح القدیر: ۱/۳۰۳

۲۔ فتح القدیر ۲/۹۵)

۳۔ ابوالحسن علی بن محمد بن علی حسینی جرجانی حنفی جو سید شریف جرجانی کے نام سے مشہور ہیں۔ آپ کی پیدائش ۷۴۰ھ میں ہوئی اپنے زمانہ کے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی، اور کم عمری میں علوم سے فراغت حاصل کی۔ موصوف نے فراغت کے بعد درس وتدریس کا مشغلہ اختیار کیا ۔موصوف کو علوم حدیث، نحو، لغت، معانی، منطق اور تصنیف وتالیف میں مہارت کاملہ حاصل تھا۔ وفات ۸۱۶ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: التعریفات، شرح السراجیہ، مختصر جامع لمعرفۃ علوم الحدیث۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: الفوائد البہیہ في تراجم الحنفیۃ: ص ۱۲۵۔۱۲۷، اور الاعلام: ۵:۷

۴۔ ظفر الامانی بشرح سید شریف جرجانی: ص ۱۸۱

(۲۳) علامہ جلال الدین محلي [1] رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

وضوء کے دوران ہر عضو کے دھونے کے متعلق دعاء کے نقل کرنے کے بعد چند ایک روایات نقل کر کے:

" و إن كانت ضعيفة للعمل با لحديث الضعيف في فضا ئل الأعمال." [2]

(ترجمہ): "اور یہ طرق اگرچہ ضعیف ہیں لیکن فضائل اعمال میں قابل اعتبار ہیں"۔

(۲۴) علامہ سخاوی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" وسهّلو في غير الموضوع ... من غير تبيين لضعفه لكن فيما يكون في الترغيب والترهيب من المواعظ وا لقصص و فضا ئل ا لأعمال ونحو ذلك خاصةً." [3]

(ترجمہ): "اور موضوع روایت کے علاوہ میں تساہل کو جائز کہا ہے اس کا ضعف بیان کئے بغیر جب ترغیب وترہیب، مواعظ وقصص اور فضائلِ اعمال وغیرہ میں ہو"۔

(۲۵) علامہ سیوطی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

" و يعمل با لضعيف أ يضاً في ا لأحكام إذا كان فيه احتياط ." [4]

---

۱۔ جلال الدین محمد بن احمد بن ابراہیم محلی شافعی آپ کی پیدائش مصر میں ۷۹۱ھ میں ہوئی علم کی تکمیل اپنے زمانہ کے کبار علماء امت سے کیا، اور تفسیر، فقہ، کلام، اصول ،نحو، منطق وغیرہ میں بلند مقام پایہ ،موصوف زکاوت اور بے پناہ ذہانت میں گویا کہ اللہ جل شانہ کی ایک نشانی تھی۔ ورع، امر بالمعروف ،نہی عن المنکر اور دنیا سے بے رغبتی میں بھی آپ کی ذات نمایاں ہیں وفات ۸۶۴ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: شرح الجمع الجوامع، شرح المنہاج، شرح القواعد۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: شذرات الذہب فی اخبار من ذہب ۷/۴۴۲۔۴۴۳، اور الاعلام ۵/۳۳۳

۲۔ شرح الجلال المحلی علی المنهاج للنووي: ۱/۵۶

۳۔ فتح المغیث بشرح الفیۃ الحدیث: ۱/ ۳۴۹

۴۔ تدریب الراوي فی شرح تقریب النواوي: ۱/۳۵۱

(ترجمہ): ''اور ضعیف حدیث احکام میں بھی معتبر ہے جبکہ اس میں احتیاط کا پہلو ہو''۔
یہ عبارات بھی اپنے مفہوم کے لحاظ سے بالکل روشن اور بے غبار ہے مزید تشریح کی حاجت نہیں۔
(۲۶) علامہ زکریا انصاری (۱) رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" جَوَّزوا التساهل في غير موضوع من غير تبيين لضعفه إن كان في الترغيب والترهيب من المواعظ والقصص وفضائل الأعمال ونحوِها. " (۲)

(ترجمہ): ''اور موضوع روایت کے علاوہ میں تساہل کو جائز کہا ہے اس کا ضعف بیان کئے بغیر جب ترغیب وترہیب، مواعظ وقصص اور فضائل اعمال وغیرہ میں ہو''۔
(۲۷) علامہ ابن حجر مکی ہیتمی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

" قد اتفق العلماء على جواز العمل بالحديث الضعيف في فضائل الأعمال. " (۳)

(ترجمہ): ''یعنی فضائلِ اعمال'' میں ضعیف حدیث پر عمل کے بارے میں علماء کا اتفاق ہے''۔

---

۱۔ ابو یحیی زکریا بن محمد بن احمد بن زکریا انصاری خزرجی شافعی ۸۲۳ھ کو مصر میں پیدا ہوئے۔اور یہی ابتدائی تعلیم ہوئی۔ موصوف نے تفسیر، حدیث، فقہ، اصول اور ادب کی تکمیل اس دور کے نامور علماء سے کی اور سینکڑوں مشائخ وقت اور محدثین سے روایت حدیث کی اجازت حاصل کی۔ جب موصوف نے علوم دینیہ کی تحصیل کرلی تو درس وتدریس کا شغل اختیار کیا اور نہایت خوش حال زندگی بسر کی۔۔۔ عہدہ قضا پر تقرر ہوا۔ اس کے بعد نہایت عظیم الشان منصبوں پر فائز ہوئے۔ مقام امام شافعی میں تدریس کا عہدہ ملا جو اس زمانے میں سب سے بڑا عہدہ تھا۔وفات ۹۲۵ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: فتح الباقی، آداب القاضی علی مذہب الشافعی، فتوحات الالہیہ۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: النور السافر عن اخبار القرن العاشر: ۱۷۲۔۱۷۷، اور شذرات الذہب في أخبار من ذہب: ۱۷۴/۸۔۱۷۶، اور فوائد جامعہ بر عجالہ نافعہ: ص ۳۴۲۔۳۴۹

۲۔ فتح الباقي علی الفیۃ العراقي: ۳۰۴/۱

۳۔ الفتح المبین شرح الاربعین: ص ۳۲

(۲۸) علامہ ابن نجار حنبلی (۱) رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

"ويعمل بالضعيف في الفضائل." (۲)

(ترجمہ): "اور ضعیف حدیث پر فضائلِ اعمال میں عمل کیا جائے گا"۔

(۲۹) خطیب محمد بن محمد شربینی (۳) رحمۃ اللہ علیہ ایک حدیث نقل کر کے لکھتے ہیں:

"هذا الحديث منقطع، لكنه من الفضائل فيتسامح فيه." (۴)

(ترجمہ): "یہ حدیث منقطع تو ہے، لیکن فضائل میں ہونے کی بنا پر اس میں تساہل سے کام لیا جائے گا"۔

ان عبارات میں بھی یہ حقیقت واشگاف کی گئی ہے کہ ضعیف حدیث فضائل میں قابل اعتبار ہے۔

---

۱۔ ابوالبقاء تقی الدین محمد بن احمد بن عبدالعزیز فتوحی حنبلی جو ابن نجار کے نام سے مشہور ہیں موصوف کی پیدائش ۸۹۸ھ میں ہوئی تحصیل علوم اپنے والد ماجد سے کرنے کے ساتھ ساتھ اس زمانے کے ارباب علم وفضل سے کیا اور تمام علوم میں مہارت حاصل کی حتی کہ یہاں تک کہا جانے لگا کہ حنبلی مذہب کی ان پر انتہا ہوگئی، موصوف مشہور فقیہ، اصولی، شیریں کلام، عابد، زاہد اور بڑے متقی تھے، موصوف کو اہل شہر کی خواہش پر عہدہ قضاء بھی سپرد کیا گیا۔ وفات ۹۷۲ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: الکوکب المنیر، منتہی الارادات فی جمع المقنع مع التنقیح وزیادات۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: شذرات الذہب فی اخبار من ذہب: ۸/۷ ۴۵ـ۴۵۸، الاعلام: ۶/۶

۲۔ شرح الکوکب المنیر: ۲/۵۶۹

۳۔ شمس الدین محمد بن احمد شربینی قاہری شافعی۔ موصوف نے اپنے زمانہ کے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی، فراغت کے بعد درس وتدریس کا شغل اختیار کیا۔ موصوف مشہور مفسر وفقیہ تھے، زہد وورع اور کثرت عبادت میں بھی مشہور تھے۔ وفات ۹۷۷ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: تفسیر سراج المنیر، مغنی المحتاج، الاقناع فی حل الالفاظ ابی شجاع۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: شذرات الذہب فی اخبار من: ذہب ۸/۳۵۱، اور الاعلام: ۶/۶

۴۔ مغنی المحتاج شرح المنہاج: ۱/۲۳۱

(۳۰) ملا علی قاری رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" والضعيف يعمل به في فضائل الأعمال اتفاقاً . "(۱)

(ترجمہ): "اور ضعیف حدیث کا فضائل اعمال میں قابل عمل ہونا اتفاقی مسئلہ ہے"۔

(۳۱) علامہ علاء الدین حصکفی حنفی (۲) رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" فيعمل به في فضائل الأعمال. " (۳)

(ترجمہ): "ضعیف حدیث پر فضائل اعمال میں عمل کیا جائے گا"۔

(۳۲) علامہ صنعانی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" وأما غير الموضوع فجوزوا التساهل فيه وروايته من غير بيان لضعفه إذا كان في غير الأحكام و العقائد كصفات الله تعالى. " (۴)

(ترجمہ): "بہر حال موضوع روایت کے علاوہ ضعیف حدیث میں حضرات محدثین نے تساہل کو جائز قرار دیا ہے اور اس کا روایت کرنا اس کے ضعف بیان کئے بغیر جب وہ روایت احکام اور عقائد جیسے صفات باری تعالیٰ میں نہ ہو"۔

---

۱۔ الموضوعات الکبری: ص ۳۰۹

۲۔ محمد بن علی بن محمد بن علی حصکفی حنفی علاء الدین حصکفی کے نام سے مشہور ہیں ۱۰۲۵ھ میں پیدا ہوئے۔ موصوف مشہور محدث وفقیہ جامع معقول ومنقول، صاحب تصانیف کثیرہ تھے، احادیث ومرویات کے بڑے حافظ تھے، آپ کے فضل وکمال کی شہادت آپ کے مشائخ واساتذہ اور ہم عصروں نے بھی دی ہے، خصوصیت سے آپ کے شیخ خیر الدین رملی نے آپ کے کمال درایت وروایت کی بڑی تعریف کی ہے۔ وفات ۱۰۸۸ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: الدر المختار فی شرح تنویر الابصار، الدر المنتقی، افاضۃ الانوار علی اصول المنار۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۲۹۴/۶، اور انوار الباری شرح صحیح البخاری: ۳۷۵/۲

۳۔ رد المحتار علی در المختار: ۱۲۸/۱

۴۔ توضیح الافکار لمعانی تنقیح الانظار: ۱۱۱/۲

(۳۳) علامہ عبدالعزیز فرہاروی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" قال النووي، وابن جماعة ،و الطيبي، والبلقيني، والعراقي بجواز روايته الضعيف في غير الأحكام والعقائدمن غير بيان ضعفه ، كالقصص ،والمواعظ ،والترغيب، والترهيب، والفضائل۔" (۱)

(ترجمہ): "امام نووی، ابن جماعہ، علامہ طیبی، علامہ بلقینی اور حافظ عراقی نے ضعیف روایت کی روایت کرنے کو احکام اور عقائد کے علاوہ جیسے قصص، مواعظ، ترغیب وترہیب اور فضائل میں جائز قرار دیا ہے، اس کے ضعف بیان کئے بغیر"۔

(۳۴) علامہ عبدالحی لکھنوی حنفی رحمۃ اللہ علیہ نے جمہور علماء امت کا مسلک بیان کرتے ہوئے لکھا ہے:

" ويعلم أن ممن نَصَّ على قبول الحديث الضعيف في فضائل الأعمال،أحمد بن حنبل وغيره،واختاره جمع عظيم من المحدثين،و صرح به ابن سيد الناس في سيرته المسماة "بعيون الأثر"وعلي القاري في"الحظ الأوفر في الحج الأكبر" و في"كتاب الموضوعات" والسيوطي في رسالته"المقامة السندسية "ورسالة "التعظيم و المنة في أن أبوي رسول الله ﷺ في الجنة"ورسالته"طلوع الثريا بإظهار ما كان خفياً" والسخاوي في"القول البديع في الصلاة على الحبيب الشفيع"والعراقي في" ألفيته"والنووي في كتابه "الأذكار"وفي التقريب"وشراح "الألفية " كالسخاوي،وشيخ زكريا الأنصاري،وغيرهما،والحافظ

۱۔ کوثر النبی: ص ۱۸

ابـن حـجـر وابـن الهـمـام في كتا به "تحرير الأصول" وفي حـاشية الهـدا ية الـمسماة "بفتح القدير "وغير هم ممن تقدم عليهم أو تأخر."(۱)

(ترجمہ): "اور معلوم ہونا چاہیے کہ جن حضرات نے ضعیف حدیث کے فضائل اعمال میں قابل عمل ہونے کی تصریح کی ہے وہ امام احمدؒ وغیرہ حضرات ہیں، اور اسی کو حضرات محدثین کی ایک بڑی جماعت نے اختیار کیا ہے جس کی تصریح ابن سید الناس نے "عیون الاثر" میں اور ملا علی قاری نے "الحظ الاوفر فی الحج الاکبر" اور "موضوعات کبریٰ" میں اور حافظ سیوطی نے "اپنے رسائل "المقامۃ السندسیۃ" اور "التعظیم والمنۃ فی ان ابوی رسول اللہ ﷺ فی الجنۃ" اور "طلوع الثریا باظہار ما کان خفیا" میں اور حافظ سخاوی نے "القول البدیع فی الصلاۃ علی الحبیب الشفیع" میں اور علامہ عراقی نے "الفیہ" میں اور شراح "الفیہ" نے جیسے سخاوی اور شیخ زکریا انصاری وغیرہ نے، اور حافظ ابن حجر اور ابن ہمام نے اپنی کتاب "تحریر الاصول" اور "فتح القدیر" میں اور ان کے علاوہ جو حضرات ان سے پہلے کے ہوں یا بعد کے، سب نے اس بات کی تصریح کی ہے کہ ضعیف الاسناد احادیث فضائل اعمال میں معتبر ہیں"۔

نیز موصوف رقمطراز ہیں:

" و الاستحباب يثبت با لضعيف غير الموضوع ."(۲)

(ترجمہ): "اور استحباب موضوع کے علاوہ ضعیف حدیث سے بھی ثابت ہوتا ہے"۔

علامہ عبد الحی لکھنوی رحمۃ اللہ علیہ کے اس فتوی پر اس وقت کے مشہور علماء میں

۱۔ ظفر الاماني بشرح سيد شريف جرجاني: ص۱۸۹
۲۔ الرفع والتکمیل فی الجرح والتعدیل: ص۳۲

سے (۳۴) علامہ سید محمد نذیر حسین (۱) مولانا محمد عبدالربؒ (۲)، مولانا سید شریف حسین (۳)، مولانا سید احمد حسینؒ (۴) اور مولانا محمد حفیظ اللہ صاحبؒ (۵) نے بالفاظ "الجواب صحیح۔

۱۔ نذیر حسین بن جواد علی بن عظمۃ اللہ بن اللہ بخش حسینی سلفی دہلوی موصوف کی پیدائش ۱۲۲۰ھ یا ۱۲۲۵ھ میں ہندوستان کے مشہور شہر دہلی میں ہوئی، موصوف نے اپنے وقت کے ارباب کمال سے علوم کی تکمیل کی اور بڑا کمال حاصل کیا، آپ کو تفسیر اور حدیث میں کمال ومہارت تامہ حاصل تھی موصوف میں عمل، پاک دامنی، دیانت داری اور پرہیزگاری اعلی پیمانہ پر تھی موصوف نے درس وتدریس کو اپنا مشغلہ بنا رکھا تھا، وفات ۱۳۲۰ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: معیار الحق، ثبوت الحق، مجموع الفتاوی ترجمہ کے لئے دیکھئے: نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر: ۵۲۳/۸۔۵۲۶، اور انوار الباری شرح صحیح البخاری ۴۰۹/۲۔۴۱۲

۲۔ مولانا محمد عبدالرب عبدالرب بن عبدالخالق حسینی دہلوی بانی مدرسہ عبدالرب، موصوف اپنے زمانہ کے مشاہیر اہل علم میں ہونے کے علاوہ مشہور خطیب وواعظ بھی تھے، وفات ۱۳۳۵ھ میں ہوئی، تصانیف: فردوس آسیہ، ترجمہ کے لئے دیکھئے: نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر: ۲۵۷/۸

۳۔ سید شریف حسین بن نذیر حسین سلفی دہلوی ۱۲۴۸ھ میں پیدا ہوئے موصوف نے علوم کی تکمیل اپنے والد ماجد سے کی، اور برابر ان کے صحبت میں رہے یہاں تک کہ افتاء اور تدریس کی صلاحیت پیدا ہوگئی تو والد نے یہ دونوں شعبے ان کے حوالہ کیئے، موصوف پھر بھی یہ دونوں کام والد کی موجودگی میں کیا کرتے تھے، وفات ۱۳۰۴ھ میں ہوئی۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے ۸/نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر: ۱۹۳/۸

۴۔ مولانا سید احمد حسین۔ احمد حسین بن بدر الدین عثمانی حنفی موصوف نے ہندوستان کے مشہور ومعروف دینی درسگاہوں میں اپنے زمانہ کے کبار علماء امت سے علوم کی تکمیل کی۔ فراغت کے بعد درس وتدریس اور تصنیف وتالیف کا مشغلہ اختیار کیا۔ آپ ذکاوت اور بے پناہ ذہانت میں بہت مشہور تھے۔ وفات ۱۳۵۲ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: سیرۃ نور الدین محمود الزنگی، سیرۃ صلاح الدین ایوبی۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر: ۴۹/۸

۵۔ مولانا حفیظ اللہ صاحب رحمہم اللہ حفیظ اللہ بن گاما خان سلفی دہلوی موصوف کی پیدائش دہلوی میں ہوئی اور ابتدائی تعلیم بھی یہی حاصل کی، پھر حجاز کا سفر کیا اور وہاں شیخ نذیر حسین کی مجلس کو لازم پکڑا اور ان سے علم حدیث، تفسیر، فقہ حنفی اور اصول کی تکمیل کی، فراغت کے بعد تاحیات درس وتدریس اور وعظ ونصیحت کا مشغلہ اختیار کیا۔ وفات ۱۳۲۴ھ میں ہوئی۔ ترجمہ: نزہۃ الخواطر وبہجۃ المسامع والنواظر ۱۳۵/۸۔۱۳۶

والـرأي نـجـيـح" دستخط ثبت کئے ہیں جس سے مذکورہ الصدر حضرات کا بھی بالاتفاق ضعیف حدیث سے استحباب کے ثبوت کا مسلک واضح نظر آتا ہے۔

(۳۵) فقیہ الہند مولانا رشید احمد گنگوہی (۱) رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"أن الرواية الضعيفة معتبرة في فضائل الأعمال"۔ (۲)

(ترجمہ): "ضعیف روایت فضائل اعمال میں معتبر ہے"۔

(۳۶) دورِ آخر میں مغرب کے محدث علامہ عبداللہ غماری (۳) رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

"حـفـاظ الـحـديـث اتـفـقـوا على جواز العمل بالحديث

---

۱۔ رشید بن ہدایۃ احمد انصاری گنگوہی حنفی آپ کی ولادت ۱۲۴۴ھ میں ہوئی، ابتدائی تعلیم گنگوہ میں ہوئی، پھر دہلی تشریف لے گئے مولانا مملوک علی صاحب وغیرہ سے تکمیل کی اور تفسیر وحدیث حضرت شاہ عبدالغنی صاحب وغیرہ سے پڑھی، چار سال میں تمام علوم ظاہری سے کامل ومکمل ہو کر وطن واپس ہوئے اور درس وافادہ میں مصروف ہوگئے، موصوف کا درس حدیث نہایت محققانہ، محدثانہ وفقیہانہ تھا، جس کا اندازہ آپ کے درس کی تقاریر سے بخوبی ہوتا ہے، علامہ کشمیری فرمایا کرتے تھے کہ حضرت گنگوہی نہ صرف مذہب حنفی کے ماہر تھے، بلکہ چاروں مذاہب کے فقیہ تھے، میں نے ان کے سواء کسی کو نہیں دیکھا جو چاروں مذاہب کا ماہر ہو، موصوف یہ بھی فرماتے تھے کہ حضرت گنگوہی کو فقیہ فی النفس کا مرتبہ حاصل تھا۔ وفات ۱۳۲۳ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: امداد السلوک، ہدایۃ الشیعہ، زبدۃ المناسک۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۲۶/۳، انوار الباری شرح صحیح البخاری: ۳۱۲/۲۔ ۳۱۳ اور مشاہیر علماء: ۱۸۶/۱، ۱۸۸

۲۔ الکوکب الدري علی جامع الترمذي: ۱۸۵/۱

۳۔ ابوالفضل عبداللہ بن محمد بن الصدیق بن احمد حسینی غماري موصوف ۱۳۲۸ھ میں ہوئی۔ اپنے زمانہ کے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی، موصوف اپنے زمانے کے مشہور محدث، حافظ حدیث، فقیہ، اصولی، باحث، محقق، متکلم اور متفنن تھے، موصوف کو درس وتدریس اور تصنیف وتالیف میں بھی ید طولی حاصل تھا، چنانچہ بہت سے مشہور معروف دینی اداروں میں مسند درس کو زینت بخشی۔ وفات ۱۴۱۳ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: فضائل القرآن، الفتاوی، ابہج البینات فی اثبات الکرامات۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: اتمام الاعلام: ۲۶۳۔ ۲۶۴، اور تتمۃ الاعلام: ۲۳۔ ۲۶

الضعيف في فضائل الأعمال...ومعهم فقهاء المذاهب الأربعة."[1]

(ترجمہ): ''فضائل اعمال میں ضعیف حدیث پر عمل کے جواز پر حفاظ حدیث کا اتفاق ہے اور ان کے ساتھ اس مسئلہ میں چاروں مذاہب کے فقہاء بھی ہیں''۔

(۳۷) دور حاضر کے مشہور محدث و محقق شیخ محمد عوامہ مدظلہ[2] لکھتے ہیں:

"أما الحديث الضعيف: فذهب جمهورهم۔ بل جماهيرهم إلى العمل به في الأعمال...وهذا معلوم شائع."[3]

(ترجمہ): ''بہر حال ضعیف حدیث: تو جمہور اس بات کی طرف گئے ہیں کہ فضائل اعمال میں حجت ہے، اور یہ مشہور و معروف مذہب ہے''۔

نیز موصوف فرماتے ہیں:

"وبهذا يتبين أن للحديث الضعيف قيمة واعتباراً في نظر

---

۱۔ تحقیق المقال فی تخریج احادیث فضائل اعمال ص ۱۱۴

۲۔ محمد بن عوامہ حلبی حنفی موصوف حلب میں ۱۳۵۸ھ میں پیدا ہوئے موصوف نے علوم کی تکمیل بلاد عرب کے مشہور و معروف مدارس میں کبار علماء امت سے کی، جیسے مدینہ منورہ، حلب، دمش، مصر اور جدہ۔ فراغت کے بعد موصوف نے درس و تدریس، تصنیف و تالیف اور تحقیق و تعلیق و تخریج کا مشغلہ اختیار کیا اور تا وقت جاری ہے۔ موصوف نے تصنیفی، تحقیقی اور تخریجی میدان میں جو کام سرانجام دیئے ہیں وہ کسی سے مخفی نہیں۔ چند مشہور تصانیف: ادب الاختلاف فی مسائل العلم والدین، اثر الحدیث الشریف فی اختلاف الفقہاء۔ تحقیق و تعلیق و تخریج: تقریب التھذیب، الکاشف فی معرفۃ من لہ روایۃ فی الکتب الستۃ، مصنف ابن ابی شیبہ جو تقریباً ۲۶ ضخیم جلدوں میں چھپ چکی ہے، تحقیق سنن ابی داؤد جو ۶ ضخیم جلدوں میں چھپ چکی ہیں، نصب الرایۃ یہ بھی ۶ ضخیم جلدوں میں چھپ چکی ہے، پہلی جلد میں دراسہ ہے جو انتہائی وقیع مباحث اور موازنہ پر مشتمل ہے۔ تحقیق القول البدیع، وغیرہ ذلک

۳۔ اثر الحدیث الشریف فی اختلاف الائمۃ الفقہاء: ص ۳۶

أئـمتنـا السـالفين، كما رأيناه على خلاف ما يشيعه بعض الناس اليوم إذ أهدروه مطلقاً و ألحقوه بالحديث الموضوع و نظموهما في (سلسلة) واحدة .»[1]

(ترجمہ): ''اس سے یہ ظاہر ہو گیا کہ ضعیف حدیث قابل قدر و قیمت ہے، اور ہمارے ائمہ سلف کی نظروں میں قابل اعتبار تھی، جیسا کہ ہم بیان کر چکے ہیں، بخلاف اس بات کے جو بعض لوگ پھیلا رہے ہیں جنہوں نے ضعیف حدیث کو موضوع کے ساتھ ملا کر بالکل ساقط الاعتبار قرار دیا ہے اور دونوں کو ایک ہی لڑی میں پرو دیا ہے''۔

(۳۸) شیخ نور الدین عتر[2] مدظلہ العالی رقمطراز ہیں:

" يبدو أن أوسط هذه المذاهب هو أعدلها و أقواها. »[3]

(ترجمہ): ''اس سے ظاہر ہو گیا کہ درمیانہ (یعنی دوسرا) مذہب (کہ ضعیف حدیث فضائل اعمال میں معتبر ہے) سب سے زیادہ معتدل اور قوی ہے''۔

ان صریح عبارات سے بھی معلوم ہوا کہ ضعیف حدیث کی حجیت فی الفضائل ایک مسلّمہ حقیقت ہے۔

---

۱۔ اثر الحديث الشريف في اختلاف الائمة الفقهاء: ص ۴۱

۲۔ موصوف دورِ حاضر کے مشہور و معروف محقق ہیں، تحقیقی کام ہی ایسے کیے ہیں جن سے موصوف کی علمی شخصیت نمایاں ہوتی ہے، موصوف نے علوم کی تکمیل بلاد عرب کے مشہور و معروف مدارس میں کبار علماء امت سے کی، فراغت کے بعد موصوف نے تصنیفی، تحقیقی تعلقی اور تخریجی میدان میں جو کام سرانجام دیئے ہیں وہ کسی سے مخفی نہیں اور یہ تاوقت جاری ہیں۔ موصوف حاضر وقت میں حلب و دمشق کے جامع کلیۃ الشریعہ میں استاذ علوم قرآن و علوم حدیث ہیں: چند تصانیف: منہج النقد فی علوم الحدیث، تحقیق و تعلیق و تخریج: علوم الحدیث، نزہۃ النظر، ارشاد طلاب الحقائق، شرح علل الترمذي وغیرہ ذلک۔

۳۔ منهج النقد في علوم الحديث: ص ۲۷۴۔۲۷۵

## حدیث ضعیف سے استحباب کا ثبوت کے حکم اور اس پر اشکال وجواب:

یہاں ایک اہم اشکال وارد ہوتا ہے، جس کا خلاصہ یہ ہے کہ جمہور علماء ایک طرف تو فرماتے ہیں کہ ضعیف حدیث احکامات میں حجت نہیں، اور یہ کہتے ہیں کہ حدیث ضعیف سے استحباب اور جواز ثابت ہوسکتا ہے، تو استحباب اور جواز بھی تو احکام شرعیہ میں سے ایک حکم کی حیثیت رکھتے ہیں۔ پھر یہ کیسے فرماتے ہیں کہ حدیث ضعیف سے استحباب و جواز ثابت ہوگا، اس کے نتیجے میں حدیث ضعیف سے حکم شرعی کا اثبات تو ہوگیا۔ اس لئے ایک طرف یہ کہنا کہ ضعیف حدیث سے استحباب و جواز ثابت ہو جاتا ہے اور دوسری طرف یہ بتانا کہ حدیث ضعیف سے احکام ثابت نہیں ہوتے دونوں میں اس لحاظ سے بظاہر تضاد ہے۔

چنانچہ اس اشکال کا تذکرہ کرتے ہوئے علامہ دوانی رحمۃ اللہ علیہ [1] رقمطراز ہیں:

"اتفقوا على أن الحديث الضعيف لا يثبت به الأحكام الشرعية، ثم ذكروا أنه يجوز بل يستحب العمل بالأحاديث الضعيفة في فضائل الأعمال، و ممن صرح به النووي في كتبه لا سيما كتاب الأذكار، وفيه إشكال؛ لأن جواز العمل واستحبابه كلاهما من الأحكام الخمسة الشرعية، فإذا استحب العمل بمقتضى الحديث الضعيف كان ثبوته بالحديث الضعيف، وذلك ينافي ما تقرر من

---

۱۔ جلال الدین محمد بن اسعد بن محمد بکری دوانی شافعی۔ موصوف کی پیدائش ۸۲۰ھ میں ہوئی موصوف نے ارباب کمال سے علوم کی تحصیل کی۔ موصوف نے جملہ علوم خصوصاً علم معقولات میں کمال حاصل کیا اور پھر درس و تدریس اور تصنیف و تالیف کا مشغلہ اختیار کیا۔ کچھ عرصہ فارس میں عہدۂ قضاء پر فائز رہے۔ موصوف بلاشبہ امام معقولات تھے۔ وفات ۹۲۸ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: انموزج العلوم، حاشیہ شرح العقائد، شرح علی متن تہذیب المنطق۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: النور السافر عن اخبار القرن العاشر: ص۔ ۱۹۰۔۱۹۲، اور فوائد جامعہ بر عجالہ نافعہ: ص ۲۹۲۔۲۹۴

عدم ثبوت الأحکام بالحدیث الضعیفة ."(۱)

(ترجمہ): "سب کا اس بات پر اتفاق ہے کہ ضعیف حدیث سے احکام شرعیہ ثابت نہیں ہوتے، پھر یہ کہتے ہیں کہ ضعیف حدیث پر عمل کرنا جائز نہیں بلکہ مستحب ہے، اور جنہوں نے اس بات کی تصریح کی ہے ان میں سے امام نووی بھی ہے جنہوں نے اپنی کتب میں خصوصاً کتاب الاذکار میں اس کا ذکر کیا ہے، لیکن اس پر اشکال وارد ہوتا ہے، اس لئے کہ جواز عمل و استحباب دونوں احکام خمسہ شرعیہ میں سے ہیں، پھر جب ضعیف حدیث سے استحباب عمل ثابت ہوا تو اس کا ثبوت ضعیف حدیث سے ہوا، اور یہ بات اس تقریر کے منافی ہے جس میں کہا ہے کہ ضعیف حدیث سے احکام شرعیہ ثابت نہیں ہوتے"۔

## اشکال کا جواب:

اس اشکال کا مختصر جواب تو یہ ہے کہ تمام احکامات ایک درجے اور مقام کے نہیں، بلکہ ان میں فرق مراتب ہے۔فرض، واجب، سنت موکدہ، اور پھر مستحب و جواز۔اسی طرح حرام، مکروہ تحریمی، مکروہ تنزیہی اور خلاف اولی۔ اس کے بالمقابل احادیث میں بھی فرق مراتب ہے۔ حدیث متواتر، مشہور، عزیز اور غریب اسی طرح حدیث موضوع، حدیث منکر، حدیث ضعیف۔ چونکہ استحباب اور جواز احکامات کے سلسلہ میں کم درجے کے ہیں، لہذا جمہور علماء نے اس سلسلہ میں نرمی سے کام لیا اور استحباب اور جواز کے ثبوت میں حدیث ضعیف کو حجت مان لیا۔ لہذا جہاں جمہور علماء نے یہ اصول مقرر کیا ہے کہ حدیث ضعیف فضائل اور ترغیب و ترہیب میں حجت ہے اسی طرح انہوں نے یہ اصول بھی مقرر کیا کہ حدیث ضعیف سے استحباب اور جواز بھی ثابت ہوسکتا ہے۔اس طرح اشکال ختم ہو جاتا ہے۔

متقدمین علماء میں علامہ دوانی رحمۃ اللہ علیہ نے اس اشکال کو نقل کر کے جواب دینے کی

۱۔ انموذج العلوم: ص۲

کوشش کی ہے، اس سلسلہ میں ان کی عبارت نقل کی جاتی ہے۔لیکن علامہ عبدالحی لکھنوی رحمۃ اللہ علیہ نے موصوف کے کلام کو نقل کرنے کے بعد ضعیف حدیث سے استحباب ثابت ہونے کے متعلق تفصیل سے کلام کیا ہے۔

چنانچہ علامہ عبدالحی لکھنوی رحمۃ اللہ علیہ علامہ دوانی رحمۃ اللہ علیہ کے حوالہ سے لکھتے ہیں:

وقد حاول بعضهم التفصي عن ذلك ، وقال: مراد النووي أنه إذا ثبت حديث صحيح أو حسن في فضيلة عمل من الأعمال، تجوز رواية الحديث الضعيف في هذا الباب. ولا يخفى أن هذا لا يربط بكلام النووي، فضلاعن أن يكون مراده ذلك، فكم بين جواز العمل واستحبابه، وبين مجرد نقل الحديث مِنْ فَرْقٍ، على أنه لو لم يثبت الحديث الصحيح أو الحسن في فضيلة عمل من الأعمال، يجوز نقل الحديث الضعيف فيها، لا سيما مع التنبيه على ضعفه. ومثل ذلك في كتب الحديث وغيره شائع ، يشهد به من تتبع أدنى تتبع.

والذي يصلح للتعويل أنه إذا وجد حديث ضعيف في فضيلة عمل من الأعمال، ولم يكن هذا العمل مما يحتمل الحرمة والكراهة، فإنه يجوز العمل به ويستحب؛، لأنه مأمون الخطر ومرجو النفع، إذ هو دائر بين الإباحة و الاستحباب، فالاحتياط العمل به رجاء الثوب.

وأما إذا دار بين الحرمة والاستحباب، فلا وجه لاستحباب العمل به. وأما إذا دار بين الكراهة والاستحباب فمجال النظر فيه واسع، إذ في العمل دغدغة الوقوع في المكروه ،

وفي الترك مظنة ترك المستحب، فلينظر: إن كان خطر الكراهة أشد، بأن تكون الكراهة المحتملة شديدة، والاستحباب المحتمل ضعيفا، فحينئذ يرجح الترك على العمل به.

وإن كان خطر الكراهة أضعف، بأن تكون الكراهة على تقدير وقوعها كراهة ضعيفة، دون مرتبة ترك العمل على تقدير استحبابه، فالاحتياط العمل به. وفي صورة المساواة يحتاج إلى نظر تام، والظن أنه يستحب أيضا، لأن المباحات تصير بالنية عبادة، فكيف ما فيه شبهة الاستحباب لأجل الحديث الضعيف.

فجواز العمل واستحبابه مشروطان. أما جواز العمل فبعدم احتمال الحرمة، وأما الاستحباب فبما ذكرنا مفصلا. بقي ههنا شيء، وهو أنه إذا عدم احتمال الحرمة، فجواز العمل ليس لأجل الحديث، إذ لو لم يوجد، يجوز العمل أيضا؛ لأن المفروض انتفاء الحرمة.

لا يقال: الحديث الضعيف ينفي احتمال الحرمة؛ لأنا نقول: الحديث الضعيف لا يثبت به شيء من الأحكام الخمسة، وانتفاء الحرمة يستلزم ثبوت الإباحة، والإباحة حكم شرعي، فلا يثبت بالحديث الضعفيف. ولعل مراد النووي ماذكرنا؟ وإنما ذكر جواز العمل توطئة للاستحباب.

وحاصل الجواب: أن الجواز معلوم من خارج، والاستحباب أيضاً معلوم من القواعد الشرعية، الدالة على

استحباب الاحتياط في أمر الدين، فلم يثبت شيء من الأحكام بالحديث الضعيف، بل أوقع الحديث شبهة الاستحباب، فصار الاحتياط أن يعمل به، واستحباب الاحتياط معلوم من قواعد الشرع. انتهى كلام الدواني.

(ترجمہ) ''بعض نے اس اشکال سے بچنے کی پوری کوشش کی ہے اور یہ کہا ہے کہ امام نووی رحمۃ اللہ علیہ کا مقصد یہ ہے کہ جب ایک مرتبہ کسی عمل کی فضیلت کے بارے میں صحیح یا حسن حدیث موجود ہو تو اس میں ضعیف حدیث کو نقل کرنا بھی صحیح ہے۔

حالانکہ یہ بات تو بالکل واضح ہے کہ امام نووی رحمۃ اللہ علیہ کے کلام سے اس کا بالکل جوڑ ہی نہیں چہ جائیکہ امام نووی رحمۃ اللہ علیہ کا یہ مقصد ہو، کیونکہ جواز اور استحباب اور نقل حدیث کے مابین فرق واضح چیز ہے۔

تاہم یہ بات بھی تو ثابت ہے کہ اگر کسی فضیلت میں نہ صحیح حدیث ہو اور نہ حسن پھر بھی ضعیف حدیث کو فضیلت میں نقل کرنا صحیح ہے جب کہ ضعف پر تنبیہ بھی ساتھ ہو، یہ بات تو کتب حدیث میں عام طور سے ملتی ہے اور جس شخص کا کتب حدیث سے تھوڑا سا بھی لگاؤ اور تعلق ہوگا وہ اس بات سے باخوبی واقف ہوگا۔

لیکن قابل اعتماد بات یہ ہے کہ جب کسی عمل کے بارے میں کوئی ضعیف حدیث موجود ہو اور عمل بھی ایسا ہو کہ اس کو انجام دینے سے حرام اور مکروہ کا ارتکاب نہ آتا ہو، تو اس حدیث ضعیف پر عمل کرنا جائز اور مستحب ہے اس لئے کہ اس میں نقصان تو کوئی نہیں بلکہ فائدہ کی امید بھی ہے کیونکہ جب حرام اور مکروہ نہ ہو تو کم از کم اس پر عمل مباح اور مستحب ہوگا، تو نیکی کی امید سے عمل بہتر ہوا بلکہ احتیاط بھی اسی میں ہے۔

اور جب حدیث ضعیف پر عمل سے حرام کا ارتکاب لازم آتا ہو تو عمل کرنے کا کوئی راستہ نہیں، اور جب عمل کرنے سے مکروہ میں پڑ جانے کا ارتکاب لازم آتا ہو تو اس صورت میں گہری

نظر سے کام لینگے کیونکہ اگر عمل کرینگے تو مکروہ میں پڑ جانے کا خطرہ ہے ترک کر دینگے تو ذہن میں یہ بات آتی ہے کہ مستحب کو چھوڑا، لیکن عمل اور ترک عمل میں خیال اس بات کا رکھیں گے کہ اگر مکروہ میں پڑ جانے کا خطرہ زیادہ ہو اگر چہ استحباب کا احتمال بھی ہو لیکن دوسرا احتمال قوی ہو تو اس وقت ترک عمل کو ترجیح ہوگی اور عمل نہیں کیا جائے گا۔

اور اگر مکروہ کا خطرہ انتہائی کمزور ہو تو احتیاط عمل کرنے میں ہے۔ اور اگر مساوات کی صورت ہو تو اب انتہائی دقت نظر کی ضرورت ہے لیکن پھر بھی راجح بات تو یہی ہے کہ عمل کرنا بہتر اور اولی ہے؛ کیونکہ جتنے بھی مباحات ہیں، نیت سے وہ عبادات میں بدل جاتے ہیں، تو وہ کیسے عبادت نہیں بنے گا جس میں خود اولیت اور بہتریت حدیث کی وجہ سے آئی ہو۔

خلاصہ یہ کہ عمل کا جائز ہونا اور اولی ہونا مطلقاً نہیں بلکہ مشروط ہے، کہ جب حرمت کا احتمال نہ ہو اور جو بات ہم نے ذکر کی اس سے عمل اولی اور بہتر بن جاتا ہے۔ البتہ ایک بات کی گنجائش نکلتی ہے کہ جب احتمال حرمت ہو ہی نہیں تو جواز عمل حدیث کے بنیاد پر نہیں ہوگا؛ کیونکہ اگر جواز کے لئے حدیث کو بنیاد بنائیں گے اور حدیث موجود نہ ہو تو چاہیئے کہ عمل بھی جائز نہ ہو حالانکہ عمل جائز ہے، اس لئے کہ حرمت کا انتفاء جواز عمل کے لئے شرط نہیں ہے بلکہ ذہن میں رٹی ہوئی بات ہے۔

یہ اعتراض نہ کیا جائے کہ ضعیف حدیث حرمت کے احتمال کو ختم کر دیتی ہے؛ کیونکہ ضعیف حدیث سے احکام خمسہ میں سے کوئی حکم ثابت نہیں ہوسکتا، اور حرمت کے ختم ہونے سے اباحت ثابت ہوتی ہے اور اباحت ایک شرعی حکم ہے، لہذا یہ شرعی حکم ضعیف حدیث سے ثابت نہیں ہوسکتی، یہ بھی ممکن ہے کہ امام نووی c نے جواز عمل کو استحباب عمل کے لئے تمہیداً ذکر کیا ہو۔

جواب کا خلاصہ یہ ہے کہ عمل کا جائز ہونا خارج سے معلوم ہوتا ہے اور استحباب بھی ان شرعی قواعد سے معلوم ہوتا ہے جو خود دین کے معاملہ میں احتیاط پر دلیل ہے۔ لہذا حدیث ضعیف سے کوئی حکم ثابت نہ ہوا بلکہ حدیث ضعیف نے تو استحباب کا شبہ بیچ میں ڈال دیا، تو احتیاط اس درجہ میں ہو گیا کہ اس پر عمل کیا جائے اور یہ تو شرع کے قواعد سے بھی معلوم ہے کہ احتیاط کے پہلو کو لیکر عمل کرنا بہتر اور اولی ہے۔

علامہ دوانی رحمۃ اللہ علیہ کے مذکورہ جواب پر علامہ شہاب الدین خفاجی رحمۃ اللہ علیہ نے تردد کا اظہار کیا ہے، چنانچہ علامہ عبدالحی لکھنوی رحمۃ اللہ علیہ علامہ خفاجی رحمۃ اللہ علیہ کے حوالہ سے لکھتے ہیں:

"وقد تعقب الشهاب الخفاجي في "نسيم الرياض شرح شفا القاضي عياض" كلام الدواني هذا بما ليس بشيء ؛فإنه نقل أولاً عبارة "أذكار النووي" ذكر الفقهاء والمحدثون أنه يجوز ويستحب العمل في الفضائل والترغيب والترهيب بالحديث الضعيف، مالم يكن موضوعاً، وأما الأحكام كالحلال والحرام والمعاملات، فلايعمل فيها إلا بالحديث الصحيح أو الحسن، إلا أن يكون في احتياط في شيء من ذلك، كما إذا ورد حديث ضعيف بكراهة بعض البيوع أو الأنكحة؛ فإن المستحب أن يتنزه عن ذلك، ولكن لايجب، انتهت.

ثم قال: وخالف ابن العربي المالكي في ذلك فقال: إن الحديث الضعيف لايعمل به مطلقاً. وقال السخاوي في قول البديع سمعت شيخنا ابن حجر أي العسقلاني المصري مراراً يقول وكتبه لي بخطه: إنّ شرائط العمل بالضعيف ثلاثة:

الأول: متفق عليه، وهو أن يكون الضعف غير شديد، فيخرج من انفرد من الكذابين والمتهمين ومن فحش غلطه.

والثاني: أن يكون مندرجاً تحت أصل عام، فيخرج ما يخترع بحيث لا يكون له أصل أصلاً

والثالث:أن لا يعتقد عند العمل به ثبوته، لئلا ينسب إلى النبي ﷺ ما لم يقله. قال: والأخيران عن ابن عبد السلام وابن دقيق العيد،والأول نقل العلائي الاتفاق عليه .وعن أحمد أنه يعمل به إذا لم يوجد غيره. وفي رواية عنه: ضعيف الحديث أحب إلينا من رأي الرجال.وذكر ابن حزم الإجماع على أن مذهب أبي حنيفة أن ضعيف الحديث عنده أولى من الرأي والقياس،إذا لم يجد في الباب غيره.فتحصل أن في العمل بالحديث الضعيف ثلاثة مذاهب: لايعمل به مطلقاً، يعمل به مطلقاً، ويعمل به في الفضائل بشروط.

وقيد ابن الصلاح جواز رواية الضعيف باحتمال صدقه في الباطن. وهل يشترط في الاحتمال أن يكون قوياً أم لا؟ فيه خلاف، وظاهر كلام مسلم أنه إذا لم يكن قوياً لايعتدبه. انتهى.

ثم نقل الخفاجي كلام الدواني الذي نقلناه سابقاً، ثم قال: إذا أحطت خبرا بما قدمناه في كلام الحافظ السخاوي، عرفت أن ماقاله الجلال مخالف لكلامهم برمته، وما نقله من الاتفاق غير صحيح، مع ماسمعته من الأقوال. والاحتمالات التي أبداها لاتفيد سوى تسويد وجه القرطاس. والذي أوقعه في الحيرة توهمه أن عدم ثبوت الأحكام به متفق عليه، وأنه يلزم من العمل به في الفضائل والترغيب أنه يثبت به حكم من الأحكام. وكلاهما غير صحيح.

أما الأول فلأن من الأئمة من جَوَّز العمل به بشروطه، وقَدَّمَهُ على القياس. وأما الثاني فلأن ثبوت الفضائل والترغيب لا يلزمه الحكم، ألا ترى أنه لو روي حديث ضعيف في ثواب بعض الأمور الثابت استحبابها والترغيب فيه، أوفي فضائل بعض الصحابة أوالأذكارالمأثورة، لم يلزم مما ذكرثبوت حكم أصلاً، ولا حاجة إلى تخصيص الأحكام أو الأعمال كما توهم، للفرق الظاهر بين الأعمال وفضائل الأعمال.

وإذا ظهر عدم الصواب، لأن القوس في يد باريها، ظهر أنه لا إشكال، ولا خلل ولا اختال. انتهى كلام الخفاجي، عند ذكرحديث من سئل عن علم فكتمه ألجمه الله بلجام من ناريوم القيامة، الواقع في ديباجة شفاء القاضي عياض.

اور علامہ خفاجی [1] رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی کتاب ''نسیم الریاض'' میں علامہ دوانی رحمۃ اللہ علیہ کے کلام کا تعاقب کیا ہے جو خود لائق التفات نہیں، کیونکہ انہوں نے سب سے پہلے ''الاذکار للنووی'' کی عبارت ذکر کی ہے کہ فقہاء اور محدثین نے یہ بات ذکر کی ہے، کہ فضائل ترغیب اور ترہیب میں ضعیف حدیث کی بنیاد پر عمل جائز اور مستحب بن جاتا ہے، البتہ یہ بات اس وقت تک ہے کہ حدیث موضوع نہ ہو۔

رہی احکام کی بات جیسے حلال حرام اور معاملات تو ان سب کے اندر صحیح یا حسن حدیث کی

---

۱۔ احمد بن محمد بن عمر شہاب الدین خفاجی مصری حنفی آپ ۹۷۷ھ میں پیدا ہوئے۔ موصوف نے علم اپنے زمانہ کے کبار علماء امت سے حاصل کیا، موصوف بڑے مفسر، محدث، فقیہ اور جامع معقول ومنقول تھے، مصر میں ایک عرصہ دراز تک قاضی بھی رہے، وفات ۱۰۶۹ھ میں ہوئی، چند مشہور تصانیف: حاشیہ علی تفسیر البیضاوی، نسیم الریاض فی شرح شفاء القاضی عیاض، دیوان الادب فی ذکر شعراء العرب، ترجمہ کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۲۳۸/۱، انوار الباری: ۱۸۴/۲

بنیاد پر ہی عمل کیا جائے گا، ہاں جہاں احتیاط کی بات ہو وہاں احتیاط سے کام لیں گے، جیسے کسی بیع یا نکاح کی کراہت میں کوئی ضعیف حدیث آجائے تو وہاں بہتر بات یہی ہے کہ بچا جائے لیکن بچنا ضروری اور واجب نہیں۔

پھر علامہ خفاجی رحمۃ اللہ علیہ نے کہا: ابن العربی المالکی رحمۃ اللہ علیہ نے یہ کہہ کر اس کی مخالفت کی ہے کہ ضعیف حدیث پر کسی حال میں عمل نہیں ہو سکتا۔

اور حافظ سخاوی رحمۃ اللہ علیہ نے "القول البدیع" میں کہا ہے کہ میں نے اپنے شیخ حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ سے بارہا یہ سنا اور مجھے لکھ کر بھی بھیجا کہ ضعیف حدیث پر عمل کرنے کے لئے تین شرائط ہیں:

اول: یہ کہ اس حدیث کا ضعف شدید نہ ہو، لہذا اس شرط سے کذابین، متہمین اور فاحش الغلط کی وہ روایات جن کے نقل کرنے میں وہ منفرد ہوں خارج ہو گئیں۔

دوم: یہ کہ دین کے عام اصول کے تحت داخل ہو، یعنی اس کا مضمون دین کے مسلمہ اصول و قواعد کے معارض نہ ہو، موضوع روایات اس شرط سے خارج ہو گئیں۔

سوم: اس ضعیف حدیث پر عمل کرتے وقت، اس کے بعینہٖ ثبوت کا اعتقاد نہ رکھا جائے کہ یہ آپ ﷺ سے اسی طرح ثابت ہے"۔

شرط اول علامہ علائی رحمۃ اللہ علیہ سے منقول ہے جس پر سب کا اتفاق نقل کیا ہے، بقیہ دو شرطیں ابن عبد السلام رحمۃ اللہ علیہ اور ابن دقیق العید رحمۃ اللہ علیہ سے منقول ہیں۔

امام احمد رحمۃ اللہ علیہ سے یہ بات منقول ہے کہ ضعیف حدیث پر عمل اس وقت کیا جائے گا جب کوئی دوسری حدیث صحیح یا حسن موجود نہ ہو اور ان سے ایک دوسری روایت یہ بھی ہے کہ ضعیف حدیث ہمیں قیاس سے زیادہ پسند ہے۔

ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ نے تو اس پر اجماع نقل کیا ہے کہ امام ابوحنیفہ رحمۃ اللہ علیہ کا مذہب یہ ہے ضعیف حدیث ان کے نزدیک بھی رائے اور قیاس سے زیادہ قابل عمل ہے جب کہ کوئی دوسری حدیث اس باب میں موجود نہ ہو۔

لہذا خلاصہ کلام یہ نکلا کہ حدیث ضعیف پر عمل کرنے میں تین مذاہب ہیں (۱) ضعیف حدیث کسی حال میں قابل عمل نہیں (۲) ہر حال میں قابل عمل ہے (۳) فضائل میں ضعیف حدیث پر اپنی شرائط کے مطابق عمل کیا جائے گا۔

اور ابن صلاح رحمۃ اللہ علیہ نے ضعیف حدیث کے جواز کو صدق باطن کے احتمال کے ساتھ مقید کیا ہے۔ اب کیا اس احتمال کا قوی ہونا بھی ضروری ہے یا نہیں؟ یہ ایک مختلف فیہ بات ہے۔ لیکن "مسلم" کے کلام کے ظاہر سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ جب احتمال قوی نہ ہو تو اس کا اعتبار نہ ہوگا۔ اور پھر علامہ خفاجی رحمۃ اللہ علیہ نے جلال الدین دوانی رحمۃ اللہ علیہ کے سابقہ کلام کو نقل کرنے کے بعد کہا۔۔۔۔

نیز جو احتمالات اور اقوال انہوں نے ظاہر کئے ہیں ان کا کوئی فائدہ نہیں بجز صفحات کو سیاہ کرنے کے۔ اور ان کو حیرت زدہ کرنے والے درجہ ذیل دو امور ہیں۔ (۱) ان کا یہ گمان کہ ضعیف حدیث سے احکام کا ثابت نہ ہونا متفق علیہ ہے (۲) اور ضعیف حدیث پر عمل کرنے سے احکام میں سے کسی حکم کا ثابت ہونا لازم آتا ہے جبکہ یہ دونوں باتیں درست نہیں۔

پہلی بات کے درست نہ ہونے کی وجہ یہ ہے کہ بعض ائمہ نے ضعیف حدیث پر عمل کرنے کو شرائط کا لحاظ کرتے ہوئے جائز قرار دیا ہے اور اس کو قیاس پر مقدم کیا ہے دوسری بات کے درست نہ ہونے کی وجہ یہ ہے کہ ضعیف حدیث سے فضائل کے ثابت ہونے سے حکم کا ثابت ہونا لازم نہیں آتا۔

مثلاً جن امور کا استحباب ثابت ہے ان کی فضیلت یا بعض صحابہ اور اذکار ماثورہ کے فضائل میں کوئی ضعیف حدیث نقل کی جائے تو اس سے کسی حکم کا ثابت ہونا لازم نہیں آتا۔ لہذا احکام یا اعمال کی تخصیص کی ضرورت نہیں کیونکہ اعمال اور اعمال کے فضائل میں فرق ظاہر ہے۔

اور جب دوانی کی مذکورہ بات کا درست نہ ہونا ثابت ہوگیا تو معلوم ہوگیا کہ اب کوئی اشکال باقی نہیں رہا۔

علامہ عبدالحی لکھنوی رحمۃ اللہ علیہ علامہ خفاجی رحمۃ اللہ علیہ کے مذکورہ کلام کونقل کرنے کے بعد لکھتے ہیں:

أقول: العجب من الخفاجي مع سعة نظره في علوم المنقولة، زل قدمه في بحث من أبحاث المنقول، وأصاب فيه الجلال الدواني حامل رايات المعقول، مع مشاركة في المنقول. ولا عجب فلكل عالم زلة، ولكل جواد كبوة، وقد يفتح الله على عبد من عباده ماليس من أهله، ويمنع عن عبد من عباده ما هو من أهله. وإن نظرت بنظر التأمل، عرفت أن ما أورده الخفاجي على الدواني غير خال من الخلل. أما ما أورد عليه بقوله: ما نقله من الاتفاق غير صحيح... إلخ. فهو مدفوع بأن الدواني غير متفرد في دعوى الاتفاق على أنه لاتثبت الأحكام بالحديث الضعيف، بل قد ذكره غيره أيضاً. مع أنه يمكن أن يكون المراد به اتفاق الأكثر، وهو صحيح بلاريب.

على أن هذا الإيراد لايقدح في المقصود؛ فإن كثيرا ممن نص على أن الحديث الضعيف لايثبت به حكم من الأحكام، نص على قبوله في فضائل الأعمال، فيرد إشكال التناقض عليهم، ويحتاج إلى الجواب. ولا دخل في ورود الإشكال الذي تصدى الدواني لجوابه؛ لكون الأمر الأول اجماعياً بل ولا على كون الثاني اجماعياً أيضاً. ومن ههنا يظهر أنه لايمكن الخلاص عن الإشكال المذكور، بأن عدم ثبوت حكم من الأحكام بالحديث الضعيف مذهب

طا ئفة، وقبوله في الفضائل مذهب طائفة أخرى، فلا إشكال. وذلك لما ذكرنا من أن كثيراً ممن اختار الأول اختار الثاني أيضاً. مع النووي وغيره قد حكى الاتفاق على قبوله في الفضائل الأعمال، فيرد الإشكال بلاشبهة على من ذهب إلى عدم ثبوت الأحكام به.

ثم قوله: والذي أوقعه في الحيرة إلخ. غير صحيح، فإنه لادخل في الحيرة؛ لكون المسألتين اتفاقيتين، بل يكفي لها اتحاد قائلهما، وهو موجود ههنا. وعلى هذا فلا يضر قوله: وكلاهما غير صحيح، أما الأول فلأن إلخ. وأما ماذكره بقوله: وأما الثاني إلخ. فهو غير صحيح ، فإن عبارة النووي وابن الهمام، وغيرهما منادية بأعلى النداء بكون المراد بقبول الحديث الضعيف في فضائل الأعمال، هو ثبوت الاستحباب ونحوه به، لامجرد ثبوت فضيلة لعمل ثابت بدليل آخر. ويوافقه صنيع جمع من الفقهاء والمحدثين، حيث يثبتون استحباب الأعمال التي لم تثبت ( بالأحاديث الصحيحة؟) .وأيضاً لو كان المراد ما ذكره، لما كان لقولهم: يقبل الضعيف في فضائل الأعمال و في المناقب و في الترغيب وفي الترهيب، فائدة يعتدبها، إذ قبوله في فضائل الأعمال الذي ذكره، هو عين قبوله في الترغيب والترهيب. وأيضاً لا يحصل على هذا التقرير وجه اشتراط قبول الحديث الضعيف في فضائل الأعمال، با لشرطين الأخيرين، من الشروط الثلاثة التي ذكرها السخاوي

و السيوطي وغيرهما، نقلاً عن ابن حجر؛ فإنه لو كان المراد به قبوله في فضائل الأمور الثابتة المأثورة، فأي ضرورة إلى تقييده بكون ما دل عليه مندرجاً تحت أصل كلي، و بأن لا يعتقد عند العمل به ثبوته؛ فإن نفس العمل و استحبابه لما ثبت بدليل صحيح، ولم يفد الضعيف إلا ذكر فضله، لا بد أن يكون ذلك العمل مندرجاً في أصل شرعي، ويصح إعتقادثبوته 'والذي يظهربعد التأمل الصادق،هوقبول الضعيف في ثبوت الاستحباب و جوازه،فإذادل حديث ضعيف على استحبابه شيئ أو جوازه، ولم يدل دليل آخرصحيح عليه،وليس هنا ك مايعارضه ويرجح عليه ،قبل ذلك الحديث وجاز العمل بما أفاده والقول با ستحباب مادل عليه وجوازه. غاية مافي الباب أن يكون مثل هذا الاستحباب والجوازدون رتبة من الاستحباب والجواز الثابت بالأحاديث الصحيحةوالحسنةويشترط قبوله بشروط:أحدها:ماأشرنا إليه من فقدان دليل آخرأقوى منه معارضاًله؛فإن دل حديث صحيح أوحسن على كراهةعمل أو حرمته ،والضعيف على استحبابه وجوازه، فا لعمل يكون أقوى ،والقول بمفاده أحرى.

وثانيها:أن لايكون الحديث شديد الضعف ،بأن تفرد بروايته شديد الضعف، كا لكذاب،وفاحش الغلط،والمغفل،وغيرذلك،أو كثرت طرقه لكن لم يخل طريق من طرقه عن شدةالضعف،وذلك اأن يكون السند

شديد الضعف مع عدم ما يجبره نقصانه،يجعله في حكم العدم،ويقربه إلى الموضوع والمخترع،الذيلا يجوز العمل به بحال.

وثالثها:أن يكون ما ثبت به داخلاًتحت أصل كليمن الأصول الشرعية،غير مخالف لقواعدالدينية،لئلايلزم إثبات ما لم يثبت شرعاًبه،فإنه إذاكان مادل عليه داخلاًفيالأصول الشرعية غير مناقض لها،فنفس جوازه ثابت بها.والحديث الضعيف الدال عليه يكون مؤكداًله،وكذا الاستحباب؛ فإن الجائزات تصير بحسن النية عبادة، فكيف إذاوجدمافيه شبهةثبوت الاستحباب.

ورابعها:أن لايعتقد العامل ثبوته بل الخروج عن العهدة بيقين؛فإنه إن كان صحيحافينفس الأمرفذاك ،وإلالم يترتب على العمل به فساد شرع.

وقس عليه إذا دل الحديث الضعيف على كراهة عمل، لم يدل على استحبابه دليل آخر، فيؤخذ به ويعمل بمفاده احتياطا، فإن ترك المكروه مستحب، وترك المباح لا بأس فيه شرعا. و بهذا كله يظهر لك دفع الإشكال الذى تصدى للجواب عنه الدواني والخفاجي ،وسلك كل منهما مسلكا مغايرا لمسلك الآخر.

وخلاصة الكلام ،الرافع للأوهام ،هو أن ثبوت الاستحباب ،أو الكراهة التيهيفي قوة الاستحباب أوالجواز با لحديث الضعيف مع الشروط المتقدمة:لا ينافي قولهم :انه لايثبت

الأحكام الشرعية ،فان الحكم باستحباب شيء دل عليه الضعيف أو كراهته :احتياطي،والحكم بجوازشيء دل عليه تأكيد لما ثبت بدلائل أخر، فلايلزم منه ثبوت شيء من الأحكام في نفس الأمر ، ومن حيث الاعتقاد نعم لولم تلاحظ الشروط المتقدمة، لزم الاشكال ألبتة ولعلك تتفطن من هذالبيان الصريح ، والتبيان الرفيع: دفع ما يتوهم من صنيع الفقهاء والمحدثين،حيث يثبتون الاستحباب ونحوه بالأحاديث الضعيفة في مواضع كثيرة،ويستنكفون عنه في مواضع كثيرة، وهل هذا إلا تعارض وتساقط؟۔

وجه الدفع أن المواضع التي أثبتوا فيها الاستحباب بالضعيفة هي مالم يطلعوا على شدة الضعف في أحاديثها، وعلموا أن ماأفادتهاداخل تحت أصول شرعية يعتمدعليها، فاعتبروا بها. والتي استنكفوا فيها عن ذلك، وعللوا بكون الأحاديث ضعيفة، هي التي لم تدخل الأعمال الثابتة بها تحت الأصول الشرعية ، أو وجدوا في تلك الأحاديث ضعفاً شديداًفأسقطوها عن الإعتبار بالكلية۔ (۱)

میں کہتا ہوں: کہ مجھے تعجب ہے خفاجی رحمۃ اللہ علیہ پر حالانکہ وہ علوم منقولہ میں وسیع النظر ہیں کہ وہ منقول کی ایک بات میں زلت قدم کا شکار ہو گئے ہیں اور اس بارے میں جلال الدین دوانی صاحب معقولات وحامل لواء معقولات نے درست کہا۔ اور یہ کوئی تعجب کی بات نہیں کیونکہ ہر عالم لغزش کا شکار ہو سکتا ہے۔

اور کبھی اللہ تعالی اپنے بندوں میں سے کسی بندے پر ایسے علوم ومعارف کھول دیتے ہیں جن کا وہ اہل نہیں، اور جو ان علوم کا اہل ہے اس سے روک دیتے ہیں۔

---

۱۔ ظفر الامانی بشرح سید شریف جرجانی ص ۱۹۱، ۲۰۰

اگر تو غور وفکر کی نظر دوڑائے تو تجھے معلوم ہو جائے گا کہ خفاجی رحمۃ اللہ علیہ نے جو اعتراضات کئے ہیں وہ درست نہیں۔ خفاجی رحمۃ اللہ علیہ کا یہ اعتراض کہ دوانی رحمۃ اللہ علیہ نے (ضعیف حدیث سے احکام ثابت نہ ہونے پر جو اتفاق نقل کیا ہے وہ درست نہیں) تو اس کا جواب یہ ہے کہ دوانی رحمۃ اللہ علیہ اس دعوے میں متفرد نہیں بلکہ ان کے علاوہ اور علماء بھی اس کے قائل ہیں۔ حالانکہ یہ بھی ممکن ہے کہ اس اتفاق سے اکثر کا اتفاق مراد ہو اور یہ بات تو بلا شک وشبہ درست ہے۔

نیز یہ اعتراض مقصود میں مخل نہیں ہوسکتا، کیونکہ جو حضرات حدیث ضعیف سے حکم ثابت نہ ہونے کے قائل ہیں، وہیں فضائل میں ضعیف حدیث کے قابل عمل ہونے کے قائل ہیں، تو تناقض کا اشکال ان پر بھی وارد ہوگا، اور جواب کی ضرورت بھی ہوگی۔

اور دوانی جس اشکال کے جواب کے درپے ہوئے ہیں اس اشکال کے وارد ہونے میں کوئی مسئلہ نہیں، کیونکہ پہلا امر اجماعی ہے بلکہ دوسرا بھی اجماعی ہے۔

اور یہاں سے یہ بات واضح ہوتی ہے کہ مذکورہ اشکال کا درج ذیل جواب دیکر بھی اشکال ختم نہیں ہوتا، وہ جواب یہ ہے کہ حدیث ضعیف سے کسی بھی حکم کا ثابت نہ ہونا ایک جماعت کا قول ہے، اور فضائل میں اس کو قبول کرنا دوسری جماعت کا، اس لئے کوئی اشکال نہیں۔

کیونکہ ہم پہلے بیان کر چکے ہیں کہ بہت سے حضرات جو پہلی بات کے قائل ہیں وہ دوسری کے بھی قائل ہیں۔ جیسے امام نووی رحمۃ اللہ علیہ وغیرہ جنہوں نے فضائل میں ضعیف حدیث کے قبول کرنے پر اتفاق نقل کیا ہے، تو اب ان پر بھی اشکال وارد ہوگا جو ضعیف حدیث سے احکام کے ثابت نہ ہونے کے قائل ہیں۔

پھر خفاجی کا دوسرا اعتراض (والذي أوقعه في الحيرة) بھی درست نہیں، اس لئے کہ حیرت میں پڑنے کی کوئی وجہ نہیں کیونکہ دونوں مسئلے اتفاقی ہیں، بلکہ دونوں کے قائلین کا متحد ہونا کافی ہے، اور وہ یہاں پایا جاتا ہے۔

اسی بنا پر خفاجی رحمۃ اللہ علیہ کا یہ قول (و کلاھما غیر صحیح) ہمارے لئے مضر نہیں، اور خفاجی رحمۃ اللہ علیہ نے دوسرے امر کے درست نہ ہونے کی وجہ جو (و أما الثاني) سے بیان کی ہے وہ درج ذیل وجوہات کی بنیاد پر درست نہیں۔

(۱) کیونکہ امام نووی رحمۃ اللہ علیہ، ابن ہمام رحمۃ اللہ علیہ اور ان کے علاوہ محدثین کی عبارات باآواز بلند یہ پکار رہی ہے کہ فضائل میں ضعیف حدیث کے قبول کرنے سے مراد اس سے استحباب وغیرہ ثابت ہونا ہے نہ کہ کسی ایسے عمل کے لئے صرف فضیلت کا ثبوت مراد ہے جو کسی اور دلیل سے ثابت ہے۔ اور اس کی تائید بہت سے فقہاء اور محدثین کے طرز سے بھی ہوتی ہے کیونکہ وہ غیر ثابت اعمال کا استحباب ضعیف احادیث سے ثابت کرتے ہیں۔

(۲) اور اگر مراد وہی ہو جس کا تذکرہ خفاجی رحمۃ اللہ علیہ نے کیا ہے تو محدثین کے اس قول: (یقبل الضعیف في فضائل الأعمال وفي الترغیب والترھیب) کا کوئی فائدہ نہیں ہوگا، اس لئے کہ کسی اور دلیل سے ثابت شدہ اعمال کے فضائل میں ضعیف حدیث کو قبول کرنا بعینہ ترغیب وترہیب میں قبول کرنا ہے۔

(۳) اور نیز اس تقریر کے مطابق فضائل میں ضعیف حدیث کو قبول کرنے کو علامہ سخاوی اور علامہ سیوطی وغیرہ کی ذکر کردہ تین شرائط میں سے آخری دو شرطوں کے ساتھ مشروط کرنا بے فائدہ ہوتا ہے، کیونکہ اگر اس سے ثابت اور منقول امور کے فضائل میں ضعیف حدیث کو قبول کرنا مراد ہو تو پھر اس قید کی کوئی ضرورت نہیں کہ ضعیف حدیث کا مدلول کسی اصل کلی کے تحت داخل ہو، اور یہ کہ اس پر عمل کرتے وقت اس کے ثبوت کا اعتقاد نہ رکھا جائے، کیونکہ جب نفس عمل اور اس کا استحباب صحیح دلیل سے ثابت ہو جائے اور ضعیف حدیث سے صرف اس کی فضیلت کا ذکر کرنا مقصود ہو، تو پھر اس عمل کا کسی شرعی اصل کے تحت داخل ہونا بھی ضروری ہوگا اور اس کے ثبوت کا اعتقاد بھی درست ہوگا۔

اچھی طرح سوچ نے کے بعد جو بات میرے سامنے ظاہر ہوئی وہ یہ ہے کہ ضعیف حدیث کو

استحباب اور جواز کے ثبوت کے لئے قبول کیا جائے گا؛ کیونکہ جب کسی فعل کا استحباب یا جواز کسی حدیثِ صحیح سے ثابت نہیں ہے، اور حدیثِ ضعیف اس کے استحباب یا جواز پر دلالت کرتی ہے اور کوئی دلیل اس کا معارض بھی نہیں ہے، تو اس صورت میں اس حدیثِ ضعیف کو قبول کیا جائے گا، اوراس کے مقتضی پر عمل کیا جائے گا اوراس کے مدلول سے جواز یا استحباب کا قول کیا جائے گا۔

حدیثِ ضعیف سے جو استحباب اور جواز ثابت ہوتا ہے وہ اس استحباب اور جواز سے رتبہ میں کم ہے جو احادیث صحیحہ اور حسنہ سے ثابت ہے، لیکن موصوف نے اس کے لئے چار شرائط ذکر کی ہیں:

پہلی شرط: یہ ہے کہ جس حدیثِ ضعیف سے استحباب ثابت ہے اس سے زیادہ قوی حدیث اس کے معارض نہ ہو جس سے اس فعل کی حرمت یا کراہت ثابت ہوتی ہو؛ کیونکہ اس صورت میں عمل قوی حدیث پر ہوگا۔

دوسری شرط: یہ ہے کہ اس حدیثِ ضعیف کا ضعف شدید نہ ہو، بایں طور کہ اس حدیث کے روایت کرنے میں کوئی کذاب، یا فاحش غلط اور مغفل وغیرہ متفرد ہو، یا اس حدیث ضعیف کے طرق زیادہ ہیں لیکن تمام طرق میں کوئی طریق شدت ضعف سے خالی نہ ہو۔

تیسری شرط: یہ ہے کہ وہ حدیث ضعیف اصول شرعیہ میں سے کسی اصل کلی کے تحت داخل ہو، قواعد دینیہ کے مخالف نہ ہو، کیونکہ اس صورت میں نفس جواز تو اس سے ثابت ہوگا، اور حدیثِ ضعیف کے ذریعہ اس جواز کو مزید تقویت پہنچے گی، اسی طرح اس سے استحباب بھی ثابت ہوگا، کیونکہ کوئی جائز فعل جب عبادت کی نیت سے عبادت بن جاتا ہے تو پھر ثبوت استحباب کے شبہ سے کیسے عبادت نہیں بنے گا؟۔

چھوتھی شرط: اس حدیثِ ضعیف پر عمل کرنے والا صرف اس کے ثبوت کا اعتقاد نہ کرے؛ بلکہ یقینی طور پر اس حدیثِ ضعیف پر عمل کرنے کی ذمہ داری سے نکلنے کا اعتقاد رکھے؛ کیونکہ اگر یہ حدیثِ ضعیف نفس الامر میں بھی صحیح ہے پھر تو اس پر عمل ہوگیا، اور اگر نفس الامر میں صحیح نہ ہو تو اس

پر عمل کرنے میں کوئی فساد شرعی بھی مرتب نہ ہوا، کیونکہ یہ حدیثِ ضعیف قواعد شرعیہ کے تحت داخل ہے۔

اور اسی پر ایک اور مسئلے کو بھی قیاس کرلیا جائے کہ جب ضعیف حدیث کسی عمل کے مکروہ ہونے پر دلالت کرے اور اس کے استحباب پر دوسری دلیل دلالت نہ کرے، تو اس پر احتیاطاً عمل کرلیا جائے گا؛ اس لئے کہ مکروہ کا چھوڑنا مستحب ہے اور مباح کے چھوڑنے میں شرعاً کوئی حرج نہیں۔ اور اس مذکورہ تفصیل کے مطابق اس اشکال کا جواب واضح ہوگیا جس کے جواب کے لئے خفاجی اور دوانی درپے ہوئے اور ہر ایک نے دوسرے کے مخالف مسلک اختیار کیا۔

خلاصہ کلام یہ ہے کہ استحباب یا ایسی کراہت جو استحباب کی قوت میں ہو، یا جواز کا ضعیف حدیث سے سابقہ شرائط کے ساتھ ثابت ہونا محدثین کے اس قول کے منافی نہیں کہ ضعیف حدیث سے شرعی احکام ثابت نہیں ہوتے، کیونکہ کسی ایسی چیز کے استحباب یا کراہت کا حکم لگانا جس پر ضعیف حدیث دلالت کرے یہ احتیاطی حکم ہے اور کسی ایسی چیز کے جواز کا حکم لگانا جس پر ضعیف حدیث دلالت کرے یہ دیگر دلائل سے ثابت شدہ احکام کی تاکید ہوتی ہے، لہذا اس سے نفس الامر اور اعتقاد کی رو سے کسی حکم کا ثابت ہونا لازم نہیں آتا، ہاں اگر سابقہ شرائط کا لحاظ نہ رکھا جائے تو یقیناً اشکال لازم آئے گا۔

فقہاء کرام کی صنیع سے ایک اشکال پیدا ہوسکتا ہے کہ حضرات فقہاء کرام اکثر مواضع میں احادیثِ ضعیفہ سے استحباب وغیرہ احکامات ثابت کرتے ہیں جبکہ دوسرے بہت سے مقامات میں احادیثِ ضعیفہ سے استحباب وغیرہ احکامات ثابت کرنے میں بیزاری کا اظہار کرتے ہوئے نظر آتے ہیں،

لیکن اس کا جواب یوں دیا جاتا ہے کہ جہاں پر یہ حضرات احادیثِ ضعیفہ سے استحباب ثابت کرتے ہیں یہ احادیث ان حضرات کے نزدیک شدید ضعیف نہیں ہوتیں، اور ان کا مدلول اصول شرعیہ کے تحت داخل ہوتا ہے۔

اور جہاں پر ان احادیثِ ضعیفہ سے استحباب ثابت نہیں کرتے وہاں یا تو وہ احادیث ان کے نزدیک شدید ضعیف ہوتی ہیں، یا ان کا مدلول اصول شرعیہ میں سے کسی اصل شرعی کے تحت داخل نہیں ہوتا۔ لہٰذا اس تقریر سے یہ اشکال خود رفع ہو گیا۔

اس کے ساتھ ساتھ یہ بھی بتاتے چلیں کہ جہاں جہاں بھی حضرات فقہاء نے ضعیف حدیث سے جواز و استحباب کو ثابت کیا ہے تو متصلاً اس بات کی بھی تصریح کی ہے کہ اس سے وہ احکام ثابت نہیں ہوں گے جن کا تعلق حلت، حرمت، بیع، نکاح اور طلاق وغیرہ سے ہے۔

چنانچہ امام نووی رحمۃ اللہ علیہ ضعیف حدیث سے جواز و استحباب ثابت فرمانے کے بعد رقمطراز ہیں:

" وأما الأحكام كالحلال، والحرام، والبيع، والنكاح، والطلاق، وغير ذلك فلا يعمل فيها إلا بالحديث الصحيح أو الحسن. "(۱)

(ترجمہ): ''اور بہر حال احکام جیسے حلال وحرام، بیع، نکاح اور طلاق وغیرہ اس میں صرف صحیح یا حسن حدیث پر ہی عمل کیا جائے گا''۔

اسی طرح حافظ ابن حجر مکی ہیتمی رحمۃ اللہ علیہ نے فضائلِ اعمال میں ضعیف حدیث کے قبول کرنے پر جو استدلال کیا ہے اس کا مقتضاء بھی یہ ہے:

" قد اتفق العلماء على جواز العمل بالحديث الضعيف في فضائل الأعمال، أنه إن كان صحيحاً في نفس الأمر فقد أعطي حقه من العمل به، وإلا لم يترتب على العمل به مفسدة تحليل ولا تحريم ولا ضياع حق للغير. "(۲)

(ترجمہ): ''یعنی فضائل اعمال'' میں ضعیف حدیث پر عمل کے بارے میں علماء کا اتفاق

---

۱۔ کتاب الاذکار المنتخبۃ من کلام سید الابرار: ص ۱۵

۲۔ الفتح المبین شرح الاربعین: ص ۳۲

ہے، کیونکہ اگر وہ واقعتاً صحیح تھی تو اس کا حق اس کو مل گیا، ورنہ اس پر عمل کرنے سے نہ تو حرام کو حلال کرنا لازم آیا اور نہ اس کے برعکس اور نہ ہی کسی غیر کے حق کا پامال کرنا"۔

چنانچہ حضرات فقہاء نے ضعیف حدیث کو ان ہی دو وجوہ کے سبب احکام میں نا قابل عمل قرار دیا ہے، کیونکہ اس پر عمل کرنے سے یا تو تحلیل وتحریم کا مفسدہ لازم آئے گا یا غیر کے حق کا ضیاع لازم آئے گا۔ چنانچہ اس سے حضرات فقہاء کی منقبت و منزلت کا اندازہ ہوتا ہے اور کیوں نہ ہو؟ جبکہ سید الکونین حضرت محمد مصطفی ﷺ کی بعثت کا مقصد اصلی بھی یہی تفقہ فی الدین ہی تھا۔

صلوۃ اوابین چونکہ مستحب ہے اور اس کا ثبوت درجہ ذیل حدیث سے ہے۔

## ضعیف حدیث سے استحباب کی مثال:

جامع الترمذی کی وہ حدیث ہے جو صلوۃ اوابین سے متعلق ہے:

"عن أبي هريرةؓ قال: قال رسول الله ﷺ: من صلى بعد المغرب ست ركعات، لم يتكلم فيما بينهن بسوء، عدلن له بعبادة ثنتي عشرة سنة۔ قال أبو عيسى وقد رُوِيَ عن عائشةؓ عن النبي ﷺ قال: من صلى بعد المغرب عشرين ركعة، بنى الله له بيتاً في الجنة۔ قال أبو عيسى حديث أبي هريرةؓ حديث غريب لا نعرفه إلا من حديث زيد بن الحبان، عن عمر بن أبي خثعم قال: وسمعت محمد بن إسماعيل يقول: عمر بن عبد الله بن أبي خثعم منكر الحديث وضعّفه جداً۔"(۱)

۱۔ جامع الترمذي: ۱/۴۵۶

"قال الكشميريؒ لم يصح فيها حديث وحديث الباب أيضاً ضعيف، والعمل به مع ضعفه۔"(۱)

امام ترمذی رحمۃ اللہ علیہ صلوۃ اوابین کے بارے میں حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ کی روایت ذکر کرنے کے بعد فرماتے ہیں کہ یہ روایت صرف زید بن الحباب عن عمر بن ابی خثعم کے طریق سے مروی ہے اور میں نے امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ سے عمر بن ابی خثعم کے بارے میں سنا کہ انہوں نے ان کو "منکر الحدیث" کہنے کے ساتھ ان کی نہایت تضعیف بھی کی ہے۔

علامہ انور شاہ کشمیری رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ اس باب میں کوئی حدیث صحیح نہیں اور مذکورہ حدیث بھی ضعیف ہے، لیکن اس کے باوجود اس پر عمل ہے۔

## تیسرا مذہب ضعیف حدیث مطلقاً حجت نہیں

تیسرا مذہب یہ ہے کہ حدیث ضعیف مطلقا حجت نہیں ہے۔ اس مذہب کو عموماً امام یحیی بن معین، امام بخاری، امام مسلم، علامہ ابن حزم، ابوبکر ابن عربی، امام ابن تیمیہ اور علامہ شوکانی رحمہم اللہ وغیرہ کی طرف منسوب کیا جاتا ہے، لہٰذا اس سلسلہ میں جملہ تفصیل پیش خدمت ہے:

یحیی بن معین رحمۃ اللہ علیہ (۲) کے موقف کی وضاحت:

---

۱۔ العرف الشذي على جامع الترمذي: ص ۱۰۱

۲۔ امام یحیی بن معین ابوزکریا یحیی بن معین بن عون بن زیاد بن بسطام غطفانی بغدادی۔ موصوف کی ولادت ۱۵۸ھ میں ہوئی۔ موصوف نے اپنے زمانہ کے ارباب علم وفضل سے علوم دینیہ کی تکمیل کی موصوف علوم حدیث اور رجال کے فن شناس امام ہیں وہ اپنے زمانے کے یگانۂ روزگار محدث اور امام جرح وتعدیل تھے، ائمہ اعلام کا ان کی جلالت شان پر اتفاق ہے۔ موصوف فن اسماء رجال میں اپنا ثانی نہیں رکھتے تھے، چنانچہ امام احمد بن حنبلؒ فرمایا کرتے تھے کہ ہم میں سے ابن معین رجال کے سب سے بڑے عالم ہیں۔ خود ان سے یہ منقول ہے کہ میں نے اپنے ہاتھ سے دس لاکھ حدیثیں لکھی ہیں، موصوف کی ایک سعادت یہ بھی ہے کہ جس تختہ پر آپ ﷺ کو غسل دیا گیا تھا، اسی پر انہیں بھی غسل دیا گیا۔ وفات ۲۳۳ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: التاریخ والعلل، معرفۃ الرجال، الکنی والاسماء۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: تاریخ مدینۃ السلام: ۲۶۳/۱۶۔۲۷۶، اور تذکرۃ الحفاظ: ۱۴/۲۔۱۵، اور الاعلام: ۱۷۲/۸۔۱۷۳

ابن سید الناس (۱) نے اپنی کتاب ''عیون الأثر'' میں (۲) امام یحیی بن معین کا مذہب مطلقاً رد ہی نقل کیا ہے، حالانکہ ان کا مذہب بھی جمہور کے موافق ہے، شواہد درج ذیل ہیں:

(۱) شیخ احمد محمد نور سیف نے ''مقدمہ تاریخ ابن معین'' میں لکھا ہے کہ: یحیی بن معین کی، محمد بن اسحاق کے متعلق جو رائیں منقول ہیں، ان سے قطعاً یہ ظاہر نہیں ہوتا کہ ان کی حدیثیں مطلقاً قابل ترک ہیں، چنانچہ ابن اسحاق کے متعلق فرمایا: ''ثقة ولكن ليس بحجة'' ابن اسحاق کے شاگرد ''زیاد بن عبداللہ بن البکائی'' کے متعلق فرمایا: ''ليس بشئي''، ''لا بأس به في المغازي، وأما في غيرها، فلا''. معلوم ہوا ان کے نزدیک مغازی وغیرہ میں تو ابن اسحاق اور ان کے شاگرد مقبول ہیں، احکام میں نہیں۔ (۳)

(۲) ''عن ابن أبي مريم، قال سمعت ابن معين يقول: ادريس بن سنان يكتب من حديثه الرقائق.'' (۴)

(ترجمہ): ''ابن ابی مریم فرماتے ہیں، کہ میں نے ابن معین سے سنا کہ ادریس بن سنان کی حدیث رقائق (آداب وفضائل) کے باب میں قابل قبول ہے، جبکہ یہ ضعیف ہیں''۔

---

۱۔ ابو الفتح محمد بن محمد بن محمد بن احمد یعمری شافعی جو ابن سید الناس کے نام سے مشہور ہیں۔ آپ کی پیدائش ۶۷۱ھ میں ہوئی۔۔ موصوف نے علوم کی تکمیل اس وقت کے مشہور و معروف علماء امت سے کی، موصوف نے فراغت کے بعد درس و تدریس اور تصنیف و تالیف کا مشغلہ اختیار کیا اور مشہور مدارس جیسے ظاہریہ میں مسند حدیث پر فائز ہوئے۔ موصوف مشہور حافظ حدیث، مورخ، ادیب اور شاعر تھے۔ وفات ۷۳۴ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: عیون الاثر، نور العیون۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے طبقات الشافعیۃ الکبری ۵/۱۵۰۔۱۵۳، اور الدرر الکامنۃ فی اعیان المائۃ الثامنۃ ۴/۱۳۰۔۱۳۲

۲۔ عیون الاثر ۱/۱۵

۳۔ تاریخ ابن معین: ۱/ ۱۰۷

۴۔ الکامل فی الضعفاء: ۲/۳۴

(۳) ”قال ابن معین في موسی بن عبیدة یکتب من حدیثه الرقائق .“(۱)

(ترجمہ): ”یحیی بن معین موسی بن عبید (ضعیف روای) کے متعلق فرماتے ہیں کہ ان سے رقائق (آداب وفضائل) کے باب میں روایت لی جاسکتی ہے“۔

(۴) حافظ سخاوی رحمۃ اللہ علیہ نے جن لوگوں سے (عقائد واحکام میں تشدد وفضائل وغیرہ میں تساہل) نقل کیا ہے، ان میں یحیی بن معین رحمۃ اللہ علیہ بھی ہیں۔(۲)

امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ(۳) کے موقف کی وضاحت:

علامہ جمال الدین قاسمی(۴) رحمۃ اللہ علیہ نے ”قواعد التحدیث“(۵) میں امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ کا مذہب مطلقاً رد ہی نقل کیا ہے اور یہ نتیجہ انہوں نے صحیح بخاری کی شرائط اور اس میں کسی ضعیف حدیث کو داخل کتاب نہ کرنے سے نکالا ہے، لیکن یہ بات درست نہیں، بلکہ اس مسئلہ میں امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ کا موقف بالکل جمہور کے موافق ہے۔

---

۱۔ شرح علل الترمذي: ۱/۴۷ ۲۔ فتح المغیث بشرح الفیۃ الحدیث: ۲/۱۵۱

۳۔ ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بن ابراہیم المغیرہ بن بردزبہ جعفی بخاری۔ موصوف کی ولادت ۱۲ شوال ۱۹۴ھ میں ہوئی ہے۔ آپ تحصیل علم وفقہ کے لئے مختلف دور دراز شہروں میں پہنچے ہیں اور بڑے بڑے محدثین وفقہاء سے علم حاصل کیا ہے، ان رحلات کے دوران فاقے بھی کئے اور پتے اور گھاس کھا کر گزارا کیا، بعض اوقات اپنا لباس تک فروخت کر دینے کی نوبت بھی آئی، زندگی کے ایک بڑے حصے میں سالن استعمال نہیں کیا یہی وجہ ہے کہ امام بخاری c اس عظیم مرتبہ پر پہنچے کہ بڑے اور چھوٹے سب ان کی تعریف میں رطب اللسان نظر آتے ہیں۔ موصوف کا حافظہ بھی بے مثال تھا، جس کی نظیر ملنی مشکل ہے۔ موصوف نے حدیث رسول کی جو خدمت کی ہے وہ کسی سے مخفی نہیں، آپ میں یہ تمام اوصاف موجود تھے: احتیاط وتقوی، حسن سلوک اور ایثار، بے نفسی، حدیث پر عمل اور شوق عبادت۔ وفات ۲۵۶ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: الجامع الصحیح، الأدب المفرد، تاریخ کبیر۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: تاریخ مدینۃ السلام: ۲/۳۲۲۔۳۵۷، اور الأعلام: ۶/۳۴

۴۔ جمال الدین بن محمد سعید بن قاسم سلفی ۱۲۸۳ھ میں پیدا ہوئے۔ موصوف اپنے زمانہ میں شام کے امام اور ادیب تھے۔ وفات ۱۳۳۲ھ میں ہوئی ہے۔ چند مشہور تصانیف: قواعد التحدیث، دلائل التوحید، محاسن التاویل۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۲/۱۳۵

۵۔ قواعد التحدیث: ص ۱۱۳

جہاں تک صحیح بخاری کا تعلق ہے تو اولاً: اس میں امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ نے صرف صحیح حدیثوں کا التزام کیا ہے، لہذا اس میں کسی ضعیف حدیث کا نہ ہونا اس بات کو مستلزم نہیں کہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ کے نزدیک ضعیف حدیث سرے سے نا قابل عمل ہے، جیسا کہ کسی حدیث کا اس میں نہ ہونا اس بات کو مستلزم نہیں کہ وہ غیر صحیح ہے، چنانچہ خود آپ نے احادیث آداب واخلاق کا ایک گراں قدر مجموعہ ''الادب المفرد'' کے نام سے مرتب فرمایا ہے جس کی شروط یقیناً ان کی ''الجامع الصحیح'' سے بہت فروتر ہے، حتی کہ محافظِ سنت کے لئے (شیخ ناصر الدین البانی صاحب) ''صحیح الادب المفرد'' اور ''ضعیف الادب المفرد'' جیسے عمل کی مشقت اٹھانی پڑی۔

اس کتاب میں امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ نے فضائل اور ترغیب وترہیب کے بارے میں بیسیوں حدیثیں ضعیف نقل کی ہیں اور ان کا ضعف واضح بھی نہیں کیا ہے یعنی یہ بھی نہیں بتلایا ہے کہ یہ حدیث ضعیف ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ فضائل اور ترغیب وترہیب میں عام طور پر محدثین کے یہاں ضعیف احادیث پر عمل تھا، حتی کہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ فضائل کے باب میں بلا تکلف ضعیف احادیث سے استدلال کرتے ہیں۔

محدثِ شام شیخ عبدالفتاح ابوغدہ حنفی رحمہ اللہ (1) فرماتے ہیں:

---

۱۔ ابوغدہ عبدالفتاح بن محمد بن بشیر حمي: موصوف ۱۳۳۶ھ کو حلب میں پیدا ہوئے، اور یہی ابتدائی تعلیم ہوئی۔ موصوف نے تفسیر، حدیث، فقہ، اصول اور ادب کی تکمیل اس دور کے نامور علماء سے کی اور سینکڑوں مشائخ وقت اور محدثین سے روایت حدیث کی اجازت حاصل کی۔ جب موصوف نے علوم دینیہ کی تحصیل کرلی تو درس وتدریس، تصنیف وتالیف، تحقیق وتعلیق اور تخریج کا مشغلہ اختیار کیا۔ فراغت کے بعد مشہور ومعروف دینی اداروں میں مسند درس کو زینت بخشی۔ موصوف مشہور محدث، فقیہ اور محقق تھے، آپ کی علمی خدمات نہایت قابل قدر ہیں۔ وفات ۱۴۱۷ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: صفحات من صبر العلماء، لمحات من تاریخ السنۃ وعلوم الحدیث، الاسناد من الدین، قیمۃ الزمن عند العلماء شیخ کی بیسیوں حدیث اور رجال کی کتابوں پر تحقیقات ارباب علم اور اہل ذوق سے داد تحسین حاصل کرچکی ہیں جن میں چند مشہور یہ ہیں: سنن نسائی، لسان المیزان، خلاصۃ الخزرجي۔ اس کے علاوہ بیسیوں کتابوں پر شیخ کی نہایت وقیع تعلیقات اوہ حواشی ہیں جن میں سر فہرست: الرفع والتکمیل، الأجوبۃ الفاضلۃ، توجیہ النظر، ثلاث رسائل، اربع رسائل اور خمس رسائل ہیں۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: اتمام الاعلام: ۲۴۵۔۲۴۶

"جرى الإمام البخاري ؒ في كتابه "الأدب المفرد" فأورد فيه جملة كبيرة من الأحاديث والآثار الضعيفة مستدلا بها في الباب وقد يكون الباب قاصرا عليها ، وفي رواتها الضعيف ، والمجهول ،ومنكر الحديث، والمتروك وأشباه ذلك ."(۱)

(ترجمہ): "اسی طرح امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ نے بھی اس کتاب میں ضعیف احادیث وآثار کی ایک بڑی مقدار تخریج کی ہے، بلکہ بعض ابواب تو آباد ہی ضعیف احادیث سے ہیں، اور آپ نے ان سے استدلال کیا ہے، چنانچہ اس کے رجال میں، مجہول، منکر الحدیث اور متروک ہر طرح کے پائے جاتے ہیں"۔

نیز موصوف دوسری جگہ رقمطراز ہیں:

"مشى عليه البخاري في "الأدب المفرد "، مشى عليه شيخه الإمام أحمد في كتابه "الزهد" و قبله الإمام عبد الله بن المبارك في كتابه الزهد وغيرهما ممن ألفوا في الفضائل والرقائق كما هو معلوم مشهور."(۲)

(ترجمہ): "حضرت امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ نے الادب المفرد میں فضائل کے باب میں ضعیف احادیث کے قبول کرنے کا جو طرز اپنایا ہے یہی طریقہ ان کے شیخ امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ کا بھی تھا، جیسا کہ ان کی کتاب الزہد سے واضح ہے اور یہی طریقہ ان سے پہلے حضرت عبداللہ بن مبارک رحمۃ اللہ علیہ کا بھی تھا، جیسا کہ ان کی کتاب الزہد والرقائق سے واضح ہے، اسی طرح جن لوگوں نے بھی زہد و رقائق کے بارے میں کتابیں تالیف کی ہیں، جیسا کہ یہ بات مشہور ومعروف ہے۔

۱۔ تعليق ظفر الاماني بشرح سيد شريف جرجاني: ص۱۸۲

۲۔ تعليق ظفر الاماني بشرح سيد شريف جرجاني ص۱۸۵

(ان تمام محدثین نے فضائل میں ضعیف حدیث سے استدلال کیا ہے۔)

ہم ان کی مثالیں ''الادب المفرد'' سے ان شاء اللہ تعالی آگے ذکر کریں گے۔

اس پوری بحث سے لامحالہ یہ نتیجہ نکلتا ہے کہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ کا موقف بالکل جمہور کے موافق ہے۔

امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ (۱) کے موقف کی وضاحت:

علامہ جمال الدین قاسمی رحمۃ اللہ علیہ نے ''قواعد التحدیث''(۲) میں امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ کا مذہب بھی مطلقاً ردہی نقل کیا ہے اور دلیل یہ دی ہے کہ انہوں نے مقدمہ میں ضعیف ومنکر احادیث کے روایت کرنے والوں کی سخت مذمت کی ہے۔ اور اپنی صحیح میں ضعیف حدیث کا اخراج نہیں کیا ہے، حالانکہ ان کا مذہب بھی جمہور کے موافق ہے، شواہد درج ذیل ہیں:

(۱) امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ کی اس مذمت سے یہ کہاں ثابت ہوتا ہے کہ ضعفاء سے روایت

---

۱۔ امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ ابو الحسین مسلم بن الحجاج بن مسلم بن ورد قشیری نیسابوری۔ موصوف کی ولادت ۲۰۲ھ میں ہوئی۔ موصوف نے اپنے زمانہ کے نامور علماء اور سینکڑوں مشائخ وقت اور محدثین سے علم حاصل کیا، تحصیل علم کے سلسلہ میں بارہا بصرہ تشریف لے گئے۔ امام موصوف کے زمانہ میں سینکڑوں ائمہ فن پیدا ہو چکے تھے جس میں بہت سے شیوخ کو امام موصوف کی استاذی کا شرف حاصل ہے، تاہم موصوف کو فطری قابلیت اور قوت حافظہ نے اس قدر گرویدہ بنالیا تھا کہ ابن راہویہ نے پیشن گوئی فرمائی، خدا جانے کس بلا کا یہ شخص ہوگا۔ ابوزرعہ اور ابوحاتم نے ان کی امامت حدیث کی گواہی دی ہے اور انہیں محدثین کا پیشوا تسلیم کیا ہے، موصوف صحیح وسقیم حدیث کی پہچان میں اپنے تمام اہل عصر میں ممتاز تھے۔ پوری زندگی میں نہ کسی کی غیبت کی اور نہ ضرب وشتم۔ وفات ۲۶۱ھ میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: صحیح مسلم، کتاب الوحدان، کتاب التمییز۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: تاریخ مدینۃ السلام: ۱۵/۱۲۱۔۱۲۵، اور البدایہ والنہایہ: ۱۱/۲۶۹۔۲۷ کا موقف:

۲۔ قواعد التحدیث: ص ۱۱۳

کرنا مطلقاً ناجائز ہے، انہوں نے تو صحیح حدیثوں کو جمع کرنے والے پر یہ بات ضروری قرار دی ہے کہ وہ مشہور ثقہ راویوں کی حدیثوں کو تلاش کر کے جمع کرے، ضعیف حدیث کے علی الاطلاق مردود ہونے پر ان سے کوئی صراحت منقول نہیں ہے۔

(۲) امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی صحیح میں ''عطاء بن السائب، لیث بن ابی سلیم، یزید بن ابی زیاد، ابان بن صمعہ، محمد بن اسحاق اور محمد بن عمرو بن علقمہ جیسے متکلم فیہ رواۃ کی روایات لی ہیں ہم تو ان جیسے راویوں کی روایات فضائل میں قابل عمل قرار دے رہے ہیں، چنانچہ امام مسلمؒ کے اس صنیع سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ ان کے نزدیک ضعیف حدیث فضائل میں قابل عمل ہے۔

(۳) امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے بعض ضعفاء کی حدیثیں صحیح میں متابعات وشواہد کے طور پر لی ہیں، چنانچہ ''مقدمہ صحیح'' میں راویان کے بارے میں اختیار کردہ منہج بیان کرتے ہوئے لکھا ہے:

" إنا نعمد إلى جملة ما أسند من الأخبار عن رسول الله ﷺ فنقسمها على ثلاثة أقسام، وثلاثة طبقات من الناس .. فأما القسم الأول: فإنا نتوخّى أن نقدم الأخبار التي أسلم من العيوب من غيرها وأنقى. من أن يكون ناقلوها أهل استقامة في الحديث، واتقان لما نقلوا. لم يوجد في رواياتهم اختلاف شديد. ولا تخليط فاحش .. فإذا نحن تقصينا أخبار هذا الصنف من الناس، أتبعناها أخباراً يقع في أسانيدها بعض من ليس بالموصوف بالحفظ والاتقان ـ كالصنف المتقدم قبلهم. فأما ما كان منها عن قوم عند أهل الحديث متهمون أوعند الأكثر منهم. فلسنا نتشاغل بتخريج حديثهم. " (۱)

۱۔ مقدمہ الجامع الصحیح للامام مسلم: ۱/۱۱۱)

امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے اس عبارت میں حدیثوں کی تین قسمیں بنانے کے ساتھ ساتھ رواۃ کی بھی تین قسمیں بنائی ہیں۔

(۱) وہ حدیثیں جو حفاظ متقنین کی روایت سے ہیں۔

(۲) وہ حدیثیں جو ایسے لوگوں کی روایت سے ہیں جو حفظ واتقان میں متوسط اور بظاہر جرح سے محفوظ ہیں۔

(۳) وہ حدیثیں جو ضعفاء اور متروکین کی روایت سے ہیں۔

اس تیسرے طبقہ میں امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے چوتھے طبقے کی طرف اشارہ کیا ہے جو ان کی عبارت "أو عند الأكثر منهم." اور "وكذلك من الغالب على حديثه المنكر أو الغلط." کے مفہوم مخالف سے سمجھ میں آرہا ہے۔ اگرچہ امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے اس پر تصریح نہیں فرمائی ہے اور یہ وہ طبقہ ہے جو بعض کے نزدیک ضعیف ہے اور بعض کے نزدیک ثقہ۔

اور ایسے ہی وہ رواۃ بھی جن کی اکثر یا تمام روایات ثقہ رواۃ کے مخالف نہ ہوں۔ اسی طرح وہ رواۃ بھی جو کثرت اغلاط کے شکار نہ ہوں اس طبقے میں داخل ہیں۔

مذکورہ طبقے کے رواۃ سے بھی امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے روایت لی ہے جس کی تصریح شارح مسلم قاضی عیاض [1] رحمۃ اللہ علیہ نے کی ہے، اور علامہ شبیر احمد عثانی رحمۃ اللہ علیہ نے اس کو "فتح الملہم" میں نقل کیا ہے:

---

۱۔ ابوالفضل عیاض بن موسی بن عیاض بن عمرو بن موسی یحصبی سبتی ۴۹۶ھ میں مقام سبت میں پیدا ہوئے اور یہیں نشوونما پائی۔ موصوف نے اول اپنے شہر کے علماء ومشائخ سے استفادہ کیا۔ پھر اندلس کی طرف سفر کیا اور وہاں کے علماء ومشائخ سے علم حدیث اور دیگر فنون حاصل کئے۔ موصوف علوم حدیث، نحو، فقہ، کلام عرب اور معرفت ایام وانساب میں مہارت کلیہ رکھتے تھے۔ وفات ۵۴۴ھ میں مراکش میں ہوئی۔ چند مشہور تصانیف: اکمال المعلم شرح صحیح مسلم، مشارق الانوار، الالماع فی ضبط الروایۃ وتقیید السماع۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: تاریخ الاسلام: ۱۱/۴۳۳-۴۳۴، اور تذکرۃ الحفاظ: ۴/۶۷-۶۹

" ثم أشاره إلى ترك حديث من أجمع العلماء أواتفق الأكثر منهم على تهمته، و بقي من اتهمه بعضهم وزكاه بعضهم، فلم يذكره هنا، ووجدته ذكر في أبواب كتابه حديث الطبقتين الأولين، وأتى بأسانيد الثانية منها على طريق الاتباع للأولى، والاستشهاد، أوحيث لم يجد في الباب للقسم الأول شيئاً، وذكر أقواماً تكلم فيهم قوم وزكاهم آخرون ممن ضعف رواتهم ببدعة، فعندي أنه أتى بطبقاته الثلاث في كتابه على ماذكر، ورتب في مقدمة كتابه، وبينه في تقسيمه، وطرح الرابعة كما نص عليه"[1]

امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے جن تین طبقات کا ذکر کیا ہے، ان میں آخری طبقہ ان رواۃ کا ہے جن کے متہم ہونے پر تمام یا اکثر علماء کا اتفاق ہے، اس سے پہلے ایک طبقہ ہے جس کا ذکر امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی عبارت میں نہیں کیا ہے، اور وہ، وہ لوگ ہیں جن کو بعض نے ضعیف کہا ہیں اور بعض نے ان کی توثیق کی ہیں۔

یہ کل چار طبقے ہوئے ، میں نے امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ کو پایا کہ وہ پہلے دونوں طبقوں کی حدیثیں لاتے ہیں، اس طرح کے باب میں اولاً طبقہ اولی کی حدیث کو لیکر آتے ہیں پھر مزید تقویت کے لئے طبقہ ثانیہ کی حدیثیں ذکر کرتے ہیں اور جب کسی باب میں طبقہ اولی سے کوئی حدیث ان کے پاس نہیں ہوتی تو طبقہ ثانیہ ہی کی حدیث پر اکتفاء کر لیتے ہیں، پھر کچھ ایسے لوگوں کی حدیثیں بھی لیکر آتے ہیں جن کی بعض نے تضعیف اور بعض نے توثیق کی ہوتی ہے، میرے (قاضی عیاض) نزدیک حق بات یہ ہے کہ امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی اس کتاب "الجامع الصحیح"، میں ان تینوں طبقوں سے روایت لی ہیں، رہے چوتھے طبقے کے لوگ تو ان کی روایت کو آپ نے نہیں لیا ہے۔

---

۱۔ فتح الملہم شرح صحیح مسلم: ۱/۱۵۵۔۵۶

نیز موصوف فرماتے ہیں:

"پھر میں نے اپنی اس رائے کو ماہرین علم حدیث کے سامنے پیش کیا تو سب نے میری اس رائے کی تصویب کی۔"(۱)

قاضی عیاض رحمۃ اللہ علیہ نے جو توجیہ کی ہے، علامہ نووی رحمۃ اللہ علیہ بھی اس کو پسند فرماتے ہوئے رقمطراز ہیں:

" و هذا الذي اختاره ظاهر جداً ."(۲)

(ترجمہ): "اور قاضی عیاض نے جس رائے کو اختیار کیا ہے یہ بالکل ظاہر ہے"۔

امام ذہبی رحمۃ اللہ علیہ کی عبارت بھی اسی طرف مشیر ہے:

" قلت :بل خرج حديث الطبقة الأولى ، وحديث الثانية إلا النزر القليل مما يستنكره لأهل الطبقة الثانية .ثم خرج لأهل الطبقة الثالثة أحاديث ليست بالكثيرة في الشواهد و الاعتبارات ،والمتابعات ، وقل أن خرج لهم في الأصول شيئاً ،....وهم كعطاء بن السائب ، وليث ، ويزيد ابن زياد ، وأبان بن صعمة ، ومحمد بن إسحاق ، ومحمد بن عمرو بن علقمة ، وطائفةِ أمثالهم."(۳)

(ترجمہ): "میں کہتا ہوں کہ طبقہ اولی وثانیہ کی حدیثیں مساویانہ طور پر لیتے ہیں، ثانیہ کی معدودے چند کو چھوڑ کر جس میں وہ کسی قسم کی نکارت سمجھتے ہیں، پھر متابعات و شواہد کے طور پر طبقہ ثالثہ کی حدیثیں لیتے ہیں، جن کی تعداد بہت زیادہ نہیں، اصول میں تو ان کی حدیثیں شاید و باید ہی لیتے ہیں، یہ عطاء بن السائب، لیث بن ابی سلیم،

---

۱۔ مقدمہ صحیح مسلم مع شرح النووي: ۲۸/۱

۲۔ حوالہ سابق: ۲۹/۱

۳۔ سیر اعلام النبلاء: ۵۷۵/۱۲

یزید بن ابی زیاد، ابان بن صمعہ، محمد بن اسحاق اور محمد بن عمرو بن علقمہ اور ان کی حیثیت کے لوگ ہیں۔"

علامہ شبیر احمد عثمانی رحمۃ اللہ علیہ نے بھی فتح الملہم میں " بحث المصنف وصنيع مسلم في صحيحه من رواية بعض الضعفاء ." (۱) کے تحت قاضی عیاض رحمۃ اللہ علیہ کی اس رائے کو نقل کیا ہے اور پھر اس پر کوئی نکیر نہیں فرمائی ہے۔ چنانچہ اس سے معلوم ہوا کے ان کہ ہاں بھی یہی درست ہے۔

ان تصریحات سے معلوم ہوا کہ امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ کے نزدیک رواۃ احادیث کے اصل میں چار طبقات ہیں، تین کو تو انہوں نے صراحتاً بیان فرمایا اور ایک کو ضمناً بیان کیا ہے، نیز یہ کہ ان تینوں طبقوں کی احادیث کو "الجامع الصحیح" میں نقل کیا ہے، رہے چوتھے طبقے کے لوگ تو ان کی روایت کو آپ نے نہیں لیا ہے۔

"مقدمہ مسلم" کی عبارت سے بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ "طبقہ ثالث" وہ ہے جس کے رواۃ جمیع یا اکثر کے نزدیک متہم اور متروک ہیں، مگر شارحین مسلم نے اس کو چوتھا طبقہ بنایا ہے جیسا کہ قاضی عیاض رحمۃ اللہ علیہ " وطرح الرابعة " سے اس طبقے کی طرف اشارہ کیا ہے جس کے بارے میں امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ "فلسنا نتشاغل" کہہ رہے ہیں۔

لیکن حقیقت میں "طبقہ ثالث" وہ ہے جسے ہم نے اوپر ذکر کیا؛ کیونکہ امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے تین طبقات سے تو روایت لی ہیں جیسا کہ موصوف نے

" إنا نعمد إلى جملة ما أسند من الأخبار عن رسول الله ﷺ فنقسمها على ثلاثة أقسام و ثلاثة طبقات من الناس ."(۲)

۱۔ فتح الملہم شرح صحیح مسلم: ۱۵۵/۱

۲۔ مقدمہ الجامع الصحیح لامام مسلم: ۱/۱۱۱

سے اشارہ کیا ہے۔ جبکہ جسے ہم "طبقہ رابعہ" قرار دے رہے ہیں اس کے بارے میں تو امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے صاف طور پر "فلسنا نتشا غل" کا اعلان فرمادیا ہے۔

توابع وشواہد کے بارے میں جو کچھ بھی کہا گیا ہے اور اس کا جو بھی مقام ومرتبہ ہے، تاہم امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ نے پوری کتاب کا نام "المسند الصحیح المختصر من السنن، بنقل العدل عن العدل عن رسول الله ﷺ" رکھا ہے۔(۱)

چنانچہ محدثِ شام شیخ عبدالفتاح ابوغدہ الحنفی رحمۃ اللہ علیہ نے بھی "ثلاث رسائل" کی تعلیقات میں اس پر تنبیہ فرمائی ہے۔(۲)

اس پوری بحث سے لامحالہ یہ نتیجہ نکلتا ہے کہ امام مسلم رحمۃ اللہ علیہ کا موقف بالکل وہی ہے جو جمہور کا ہے۔

## علامہ ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ کے موقف کی وضاحت:

علامہ جمال الدین قاسمی رحمۃ اللہ علیہ نے "قواعد التحدیث"(۳) میں علامہ ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ کا مذہب بھی مطلقاً رد ہی نقل کیا ہے، لیکن ان کا مذہب بھی جمہور کے موافق ہے۔

علامہ ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ کے متعلق اہل علم کو معلوم ہے کہ وہ پکے ظاہری تھے، لیکن ان کو بھی بہت سے مسائل میں ضعیف حدیث کو قبول کرنا پڑا، اپنی مشہور کتاب "المحلی" میں ایک جگہ رقمطراز ہیں:

"وهذا الأثر وإن لم يكن مما يحتج بمثله فلم نجد عن رسول الله ﷺ غيره وقد قال أحمد بن حنبل: ضعيف

۱۔ تحقیق اسمی الصحیحین واسم جامع الترمذی: ص ۳۲۔۵۱

۲۔ ثلاث رسائل: ص ۱۸۶

۳۔ قواعد التحدیث: ص ۱۱۳

الحديث أحب ألي من الرأي .»(1)

(ترجمہ): ''یعنی ہم نے جس حدیث سے استدلال کیا ہے اس جیسی حدیث کو اگر چہ حجت نہیں بنا یا جا تا مگر ہمیں اس کے علاوہ حضور ﷺ کی کوئی دوسری حدیث ملی نہیں اور امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ کا قول ہے، ضعیف حدیث مجھے رائے سے زیادہ پسند ہے''۔

علامہ ابن حزم رحمۃ اللہ علیہ کی یہ غیر مقلدیت بھی دیکھئے! کہ ضعیف حدیث سے استدلال کرنے کے لئے وہ امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالی کی تقلید کر رہے ہیں، ایک طرف ان کی کتابوں میں تقلید کے خلاف ایک طوفاں ہے اور دوسری طرف امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ کی تقلید کا قلادہ بھی اپنے گلے میں علی الاعلان ڈالا جا رہا ہے۔ معلوم ہوا کہ تقلید کے بغیر کوئی چارہ کار نہیں۔

چنانچہ اس سے امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ کے اس قول کا بھی مطلب سمجھ میں آتا ہے، جو لوگ اس سے حسن درجہ والی روایت مراد لیتے ہیں ان کے لئے'' وإن لم يكن مما يحتج بمثله'' والے جملہ سے فرار کی کوئی سبیل نہیں!

## قاضی ابو بکر ابن العربی رحمۃ اللہ علیہ کے موقف کی وضاحت:

علامہ سخاویؒ نے ''فتح المغیث''(2) میں قاضی ابو بکر ابن العربی رحمۃ اللہ علیہ کا مذہب مطلقاً رد ہی نقل کیا ہے، لیکن ان کا مذہب بھی جمہور کے موافق ہے۔ جہاں تک ''احکام القرآن'' کی عبارت ہے، (3) جس میں موصوف نے اپنے تلامذہ کو وصیت کی ہے کہ ایسے احادیث سے شغف نہ رکھو جن کی سندیں صحیح نہ ہو، لیکن اس سے یہ کہاں ثابت ہوتا ہے کہ ضعفاء سے روایت کرنا مطلقاً ناجائز ہے، انہوں نے تو صحیح حدیثوں کو جمع کرنے کی ترغیب دی ہے کہ وہ مشہور ثقہ راویوں کی حدیثوں کو تلاش کر کے جمع کریں، ضعیف حدیث کے علی الاطلاق مردود ہونے پر ان سے کوئی صراحت تو ملی نہیں جس سے ثابت ہو کہ ان کے نزدیک فضائل اعمال میں ضعیف حدیث قابل عمل نہیں، البتہ اس کے برعکس ثابت ہے۔

---

۱۔ المحلی بالآثار: ۶۱/۳

۲۔ فتح المغیث بشرح الفیۃ الحدیث: ۱۵۴/۲

۳۔ احکام القرآن لابن العربی: ۵۸۰/۲

۱۔ مرسل حدیث جو جمہور محدثین و شافعیہ کے نزدیک ضعیف ہے، مالکیہ کے نزدیک اس سے استدلال درست ہے، وہ خود اس بات کو نقل کرتے ہیں:

"المرسل عندنا حجة في أحكام الدين من التحليل والتحريم، وفي الفضائل، وثواب العبادات، وقد بينا ذلك في أصول الفقه"(۱)

(ترجمہ): "مرسل حدیث مالکیہ کے نزدیک تمام احکام دین میں حجت ہے، اور اس کے ساتھ ساتھ فضائل اعمال میں بھی، اور اس بات کو ہم اصول فقہ میں بیان کر چکے ہیں"۔

۲۔ ضعیف حدیث کے فضائل اعمال میں معمول بہ ہونے کی صراحت خود فرماتے ہیں:

"روى أبو عيسى حديثاً مجهولاً فإن شئت فشمّته وإن شئت فلا؛ وهو إن كان مجهولاً فإنه يستحب العمل به، لأنه دعاء بخير؛ وصلة للجليس؛ و تودد له"(۲)

(ترجمہ): "یعنی اگر چہ یہ حدیث ایک مجہول کی روایت سے ہے: کہ اگر آپ چاہو تو چھینک کا جواب دو، اور اگر چاہو تو جواب نہ دو، لیکن اس پر عمل کرنا مستحب ہے، کیونکہ اس میں خیر کی دعاء اور ہمنشین کی دل جوئی اور اس سے تعلق و محبت کا اظہار ہے"۔

چنانچہ مذکورہ بحث کو مد نظر رکھتے ہوئے یہ کیسے کہا جا سکتا ہے کہ موصوف مطلقاً عدم جواز کے قائل ہیں۔

## امام ابن تیمیہ رحمۃ اللہ علیہ کے موقف کی وضاحت:

امام ابن تیمیہ رحمۃ اللہ علیہ بھی فضائل اعمال وغیرہ میں ضعیف حدیث پر عمل کے مسئلہ میں جمہور سے الگ نہیں ہو سکے، اس دعوی کا بین ثبوت ان کی کتاب "الکلم الطیب" ہے، اس میں ضعیف حدیثوں کی تعداد کتنی ہے؟ اس کا جواب شیخ ناصر الدین البانی صاحب دیں گے، جنہوں نے "صحیح الکلم الطیب" اور "ضعیف الکلم الطیب" میں خط امتیاز قائم کرنے کا کارنامہ انجام دی ہے۔

اس سے قطع نظر ضعیف حدیث کے فضائل اعمال میں معمول بہ ہونے کی صراحت موصوف خود فرماتے ہیں:

---

۱۔ عارضۃ الاحوذی شرح جامع الترمذی ۲/۲۳۷

۲۔ عارضۃ الاحوذی شرح جامع الترمذي: ۱۰/۲۰۵

" فإذا رُوي حديث في فضل بعض الأعمال المستحبة،وثوابها، وكراهة بعض الأعمال وعقابهافمقادير الثواب والعقاب وأنواعه إذا روي فيها حديث لا نعلم أنه موضوع جازت روايته و العمل به ..فالحاصل أن هذا الباب يروى و يعمل به في الترغيب و الترهيب ."(۱)

(ترجمہ):"جب کوئی روایت بعض اعمالِ مستحبہ کی فضیلت وثواب اور بعض اعمال کی کراہت اور عقاب میں روایت کی جائے، پھر ثواب وعقاب اوران کی انواع کی مقدار کے بارے میں کوئی ایسی روایت کی جائے اور ہمیں علم نہ ہو کہ یہ روایت موضوع ہے تو اس روایت کے بیان کرنے کے ساتھ ساتھ اس پر عمل کرنا بھی جائز ہے"۔

حاصل کلام یہ کہ ترغیب وترہیب کے باب میں اس قسم کی روایت کا روایت کرنے کے ساتھ ساتھ اس پرعمل کرنا بھی جائز ہے۔

## علامہ شوکانی رحمۃ اللہ علیہ کے موقف کی وضاحت:

اگر چہ علامہ شوکانی (۲) رحمۃ اللہ علیہ کی کتاب "الفوائد المجموعہ"(۳) کی عبارت سے پتہ چلتا ہے کہ ان کے نزدیک ضعیف حدیث مطلقاً نا قابل عمل ہے، لیکن ان کی اہم ترین تصنیف "نیل الاوطار" کی یہ عبارت اس کی نفی کرتی ہے:

---

۱۔ مجموع فتاوی امام ابن تیمیہ: ۶۵/۱۸، ۶۶

۲۔ ابوعبداللہ محمد بن علی بن محمد عبداللہ شوکانی یمنی صنعانی سلفی۔موصوف ۱۱۷۳ھ میں پیدا ہوئے۔موصوف بڑے محدث شہیر، مقتداء وپیشوائے فرقہ اہل حدیث گزرے ہیں، اکابر محدثین زمانہ سے علوم کی تکمیل کی تحصیل کمالات کے بعد آپ سے بکثرت علماء نے استفادہ کیا، ۱۲۲۹ھ میں موصوف صنعا یمن کے قاضی القضاۃ بھی مقرر ہوئے تھے۔موصوف تقلید کو ناجائز کہتے تھے۔وفات ۱۲۵۰ھ میں ہوئی۔چند مشہور تصانیف: نیل الاوطار، تفسیر فتح القدیر، تحفۃ الذاکرین، الفوائد المجموعہ۔ترجمہ کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۲۹۸/۶، اور انوار الباری شرح صحیح البخاري: ۲۹۳/۲

۳۔ الفوائد المجموعہ فی الأحادیث الموضوعۃ: ص ۲۸۳

"والآيات و الأحاديث المذكورة في الباب تدل على مشروعية الاستكثار من الصلاة بين المغرب و العشاء والأحاديث وإن كان أكثرها ضعيفاً فهي منتهضة لمجموعها لا سيما في فضائل الأعمال" (۱)

(ترجمہ): "اس کا مطلب یہ ہے کہ مغرب وعشاء کے درمیان نوافل کی کثرت سے متعلق اکثر حدیثیں اگر چہ ضعیف ہیں، لیکن ان کی مجموعی حیثیت اس قابل ہے کہ ان پر عمل کیا جائے، خاص کر فضائل اعمال میں"۔

مذکورہ عبارت سے بظاہر یہ معلوم ہوتا ہے کہ مغرب اور عشاء کے مابین نوافل کے بارے میں جو کہ صلاۃ اوابین کے نام سے مشہور ہے بہت سی روایات مروی ہیں، حالانکہ امام ترمذی اس کے بارے میں فرماتے ہیں:

"عن أبي هريرةؓ قال: قال رسول اللهﷺ: من صلى بعد المغرب ست ركعات، لم يتكلم فيما بينهن بسوء، عدلن له بعبادة ثنتي عشرة سنة۔ قال أبو عيسى وقد رُوِيَ عن عائشةؓ عن النبيﷺ قال من صلى بعد المغرب عشرين ركعة بنى الله له بيتاً في الجنة۔ قال أبو عيسى حديث أبي هريرةؓ حديث غريب لا نعرفه إلا من حديث زيد بن الحباب، عن عمر بن أبي خثعم قال: وسمعت محمد بن إسماعيل يقول: عمر بن عبد الله بن أبي خثعم منكر الحديث وضعّفه جداً۔"(۲)

"قال الكشميريؒ لم يصح فيها حديث وحديث الباب أيضاً ضعيف والعمل به مع ضعفه۔"(۳)

---

۱۔ نیل الاوطار شرح منتقی الاخبار: ۳/۶۷

۲۔ (جامع الترمذی ۱/۴۵۶)

۳۔ العرف الشذی علی جامع الترمذی: ۱۰۱

امام ترمذیؒ مذکورہ روایت کے بارے میں فرماتے ہیں کہ یہ روایت صرف زید بن الحبان عن عمر بن ابی خثعم کے طریق سے مروی ہے اور میں نے امام بخاریؒ سے عمر بن ابی خثعم کے بارے میں سنا کہ انہوں نے ان کو "منکر الحدیث" کہنے کے ساتھ ان کی نہایت تضعیف بھی کی ہے۔

علامہ انور شاہ کشمیریؒ فرماتے ہیں کہ اس باب میں کوئی حدیث صحیح نہیں اور مذکورہ حدیث بھی ضعیف ہے، لیکن اس کے باوجود اس پر عمل ہے۔

نیز موصوف کی کتاب "تحفۃ الذاکرین" کا مطالعہ کرنے والا شخص تو ہمت ہی نہیں کرسکتا کہ ان کی طرف زیر بحث مسئلہ میں خلاف جمہور رائے کا انتساب کرے، کیونکہ اس میں بہت سے احادیث ضعیف ہیں۔

یہ صرف چند اقوال اور چند کتابوں کے نام پیش کیے گئے جن میں ائمہ، فقہاء اور محدثین کرام کا ضعیف حدیث کے متعلق منہج اور عمل بیان کیا گیا ہے، ورنہ کتب فقہ، کتب اصول، کتب حدیث اور کتب رجال سے کئی مثالیں مزید پیش کی جاسکتی ہیں۔

ماقبل میں ذکر کردہ تمام عبارات ومعروضات سے یہ حقیقت آشکارا ہوگئی کہ ضعیف حدیث جب تک موضوع نہ ہو چند شرائط کے ساتھ جبکہ احکام وعقائد سے متعلق نہ ہو، تو اجماعی طور پر پوری امت کے نزدیک قابل عمل ہے، اور امام نوویؒ، ابن حجر ہیتمیؒ اور ملا علی قاریؒ نے جو اجماع کا دعوی کیا تھا وہ بظاہر بالکل درست معلوم ہوتا ہے، لہذا یہ کہنا کہ ضعیف احادیث حجت نہیں سراسر ائمہ مجتہدین اور محققین کے مذہب نیز فنِ حدیث کی باریکیوں سے ناواقفیت کی دلیل ہے! حقیقت یہ ہے کہ ہر دور میں ضعیف احادیث سے استدلال کیا جاتا رہا ہے اور حضرات محدثین ان ضعیف احادیث کو اپنی کتابوں میں درج کرتے چلے آئے ہیں اور حضرات فقہاء ان سے بعض مقامات پر استدلال کرتے رہے ہیں اور پوری امت بالاتفاق ان پر عمل کرتی چلی آرہی ہے۔

لہذا ضعیف احادیث کا مطلقاً انکار کردینا اور انہیں قابل عمل نہ سمجھنا سخت غلطی ہے امت مرحومہ اس فکری انتشار کی متحمل نہیں ہوسکتی۔ اس امت کو پہلے ہی دین اسلام کے بارے میں شکوک وشبہات سے دوچار کیا جارہا ہے اور دینِ اسلام پر سے ان کا اعتماد ختم کردینے اور اس کی

ازلی وابدی اور روشن تعلیمات سے محروم کر دینے اور سلف سے ان کا تعلق ختم کر دینے کے لئے طرح طرح کی سازشوں کے جال پھیلائے جا رہے ہیں۔

ایسے میں امت کو دین اسلام کی طرف راغب کرنے اور ان کی ڈوبتی ناؤں کو سہارا دینے اور اسلامی تعلیمات سے ان کا رشتہ مضبوط کرنے کی ضرورت ہے۔

ان حالات میں قرآن کریم کے بعد احادیث رسول اللہ ﷺ ہی سے رہنمائی حاصل کی جا سکتی ہے، اگر ضعیف احادیث کا مطلقاً انکار کر دیا جائے تو امت، احادیث نبویہ کے ایک بڑے ذخیرے سے محروم ہو جائے گی۔

## کیا صحتِ سند صحتِ متن کو مستلزم ہے؟:

سند کا مقام شریعت مطہرہ میں بہت ہی اہمیت کا حامل ہے، اسی وجہ سے کہا گیا "لولا الإسناد لقال من شاء ما شاء." (۱) اگر سند نہ ہوتی تو جس کے جی میں جو آتا کہہ جاتا، اور جب چاہتا آپ ﷺ کی طرف نسبت کرتا۔ لیکن اس کے باوجود صحت وضعف وغیرہ کے پرکھنے کا مدار صرف سند کو قرار دینا صحیح نہیں، اس لئے کہ بعض سندیں بالکل صحیح ہوتی ہیں لیکن ان کا متن صحیح نہیں ہوتا، اور ایسی بھی کئی صورتیں ہیں کہ جن کی سندیں تو مجروح ہیں لیکن متن بالکل صحیح ہے، لہٰذا صرف سند کو مدار بنانا صحیح نہیں۔

(۱) چنانچہ علامہ ابن الصلاح رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"وليس من شرطه أن يكون مقطوعاً به في نفس الأمر.. فليس ذلك قطعاً بأنه كذب في نفس الأمر."(۲)

(ترجمہ): "اور یہ ضروری نہیں کہ یہ حدیث نفس الامر میں بھی صحیح ہو۔ ایسا ہی یہ بھی ضروری نہیں کہ یہ حدیث نفس الامر میں بھی غیر صحیح ہو"۔

---

۱۔ جامع الترمذي:۶/۲۳۲

۲۔ معرفة انواع علم الحديث: ص۸۰)

(۲) علامہ ابن کثیر رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

" والحكم بالصحة أو الحسن على الإسناد، لا يلزم منه الحكم بذلك على المتن، إذ قد يكون شاذاً أو معللاً. "(۱)

(ترجمہ): "یعنی سند پر صحیح یا حسن کا حکم لگانا اس بات کو مستلزم نہیں کہ متن پر بھی صحیح یا حسن کا حکم لگایا جائے، اس لئے کہ متن کبھی شاذ ہوتا ہے کبھی معلل"۔

(۳) محقق ابن ہمام رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"فإن ضعف الإسناد غير قاطع ببطلان المتن بل ظاهر فيه، فإذا تأيد بمايدل على صحته من القرائن كان صحيحاً. "(۲)

(ترجمہ): "کسی حدیث کے سند کا ضعیف ہونے سے یقینی طور پر یہ معلوم نہیں ہوتا کہ اس کا متن بے اصل ہو اور ظاہر یہی معلوم ہوتا ہے، چنانچہ جب ایسے قرائن مل جائے جن سے اس حدیث کی صحت کی تائید ہو جائے تو یہ حدیث صحیح شمار ہوگی"۔

دوسری بات روایات پر صحت وضعف کا حکم لگانا خود ایک امر اجتہادی ہے۔

(۴) علامہ ظفر احمد عثمانی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

" أن تضعيف الرجال و توثيقهم، و تصحيح الأحاديث و تحسينها أمر اجتهادي. ولكل وجهة. "(۳)

(ترجمہ): "رجال کی تضعیف وتوثیق، اور احادیث کی تصحیح وتحسین ایک امر اجتہادی ہے اور ہر ایک کے لئے ایک جہت ہے"۔

لہٰذا عین ممکن ہے کہ ایک راوی ایک کے نزدیک ضعیف ہو اور دوسرے کے ہاں ثقہ ہو، اور اس جیسی مثالوں سے اسماء رجال کی کتابیں بھری پڑی ہیں، اسی طرح ایک حدیث ایک کے

۱۔ اختصار علوم الحدیث مع الشرح الباعث الحثیث: ص۴۳

۲۔ فتح القدیر: ۲/۸۷

۳۔ قواعد في علوم الحدیث: ص۴۹

نزدیک ضعیف ہو اور دوسرے کے ہاں صحیح یا حسن ہو۔ صرف اس وجہ سے ضعیف حدیث کو چھوڑ دینا کہ فلاں نے اس کو ضعیف کہا ہے، کہاں کی عقلمندی ہے؟! ممکن ہے کہ یہ حدیث صحیح یا حسن درجہ کی ہو، لیکن چونکہ فضائل اعمال، مناقب، ترغیب وترہیب سیر ومغازی کی احادیث کے ذریعہ غفلت سے بیداری اور دین پر عمل کا جذبہ پیدا ہوتا ہے، اس لئے پورے شدّومد سے ان کے خلاف کر کے اعمال کی حیثیت گھٹانے کا فریضہ انجام دیا گیا۔

یہاں تک ضعیف حدیث کی اسنادی حیثیت سے بحث کی گئی ہے، اب اس امر کی وضاحت بھی ضروری ہے کہ یہی ضعیف حدیث اگر فقہاء ومحدثین میں متلقی بالقبول ہو جائے تو ضعف کے باوجود اسے احکام میں بھی مستدل بناتے ہیں، معلوم یہ ہوا کہ حدیث کی دیگر اقسام کی طرح احکام میں حجت بننے سے صرف اسنادی ضعف مانع ہے، اگر قرائن قویہ سے اس ضعف کی تلافی ہو جائے تو احکام میں بھی حجت بن سکتی ہے حتی کہ مقطوع کے لئے بھی ناسخ بن سکتی ہے! اور اگر قرائن نہ بھی ہوں تو بھی فی نفسہ فضائل وغیرہ میں جمہور کے ہاں بلاتردد قابل تحمل ہے۔

## تلقی بالقبول کی حیثیت:

تلقی بالقبول کی وجہ سے ایسی احادیث بھی صحت کا درجہ پا لیتی ہیں جنہیں حضرات محدثین اسنادی حیثیت سے صحیح قرار نہیں دیتے، چنانچہ اس بارے میں چند ایک معروضات نظر قارئین ہیں:

(۱) ''علامہ ابن عبدالبر رحمۃ اللہ علیہ ''الاستذکار'' میں امام بخاری اور امام ترمذیؒ کا یہ قول ''حدیث'' ''ھوالطھور ماء ہ'' کی سند اہل علم کے نزدیک صحیح نہیں ہے'' (جبکہ امام بخاری اور امام ترمذی کے نزدیک صحیح ہے) نقل کر کے لکھتے ہیں:

"لكن الحديث عندي صحيح؛لأن العلماء تَلَقَّوهُ بالقبول."[۱]

(ترجمہ): ''لیکن یہ حدیث میرے نزدیک بھی صحیح ہے: اس لئے کہ اسے علماء کی تلقی بالقبول حاصل ہے''۔

۱۔ الاستذکار لمذاہب فقہاء الامصار: ۱/۱۹۸

نیز موصوف ''التمہید'' میں حدیث " الدینار أربعة و عشرون قیراطاً . " پر بحث کرتے ہوئے رقمطراز ہیں:

" وفي قول جماعة العلماء ،و إجماع الناس على معناه، غِنىً عن الإسنادفيه ." (۱)

(ترجمہ): ''علماء کی ایک جماعت کا اس کے مطابق عمل کرنا اور لوگوں کا اس کے معنی پر اجماع ہونا، اس حدیث کو سند سے مستغنی کر دیتے ہیں''۔

(۲) حافظ ابن قیم رحمۃ اللہ علیہ ''تلقین میت'' کے بارے میں ایک حدیث نقل کر کے فرماتے ہیں:

"فهذا الحديث و إن لم يثبت، فاتصال العمل به في سائر الأمصار،والأعصار من غير إنكار كافٍ في العمل به"(۲)

(ترجمہ): ''یہ حدیث اگرچہ ثابت نہیں ہے لیکن تمام شہروں اور زمانوں میں بغیر کسی نکیر کے اس پر عمل متصل چلا آرہا ہے جو عمل کرنے کے لئے کافی ہے''۔

(۳) علامہ ابن کثیر رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

" ثم وقفت بعد هذا على كلام لشيخنا العلامة ابن تيمية أنه نقل القطع بالحديث الذي تلقته الأمة بالقبول عن جماعات من الأئمة ، منهم القاضي عبد الوهاب المالكي، و الشيخ أبو حامد الاسفرائني، والقاضي أبو الطيب الطبري، و الشيخ أبو اسحاق الشيرازي من الشافعية ، وابن حامد، و أبو يعلى ابن الفراء، وأبو الخطاب، وابن الزاغوني، وأمثالهم من الحنابلة،وشمس الأئمة السرخسي من الحنفية ، قال:وهو قول أكثر أهل الكلام من الأشعرية وغيرهم كأبي

---

۱۔ التمہید لما فی الموطا من المعانی والاسانید: ۱۴۵/۲۰

۲۔ کتاب الروح: ص ۱۷

إسحاق الاسفرائني، وابن فورك وقال: و هو مذهب أهل الحديث قاطبةً ومذهب السلف عامةً، و هو معنى ما ذكره ابن الصلاح استنباطاً فوافق فيه هؤلآء الأئمة."(۱)

(ترجمہ): "امام ابن تیمیہ رحمۃ اللہ علیہ کا ایک مضمون میری نظر سے گزرا، جس میں انہوں نے ائمہ کی ایک بڑی جماعت سے نقل کیا ہے کہ جب کسی حدیث کو تلقی بالقبول حاصل ہو جائے تو وہ علم یقینی کا فائدہ دیتی ہے، منجملہ ان علماء کے شوافع میں سے قاضی عبدالوہاب مالکی، شیخ ابو حامد اسفرائنی، قاضی ابو الطیب طبری، شیخ ابو اسحاق اسفرائنی، حنابلہ میں سے ابن حامد، ابو یعلی، ابن الفراء، ابو الخطاب، ابن زاغونی وغیرہ ہیں، احناف میں شمس الائمہ سرخسی کا بھی یہی مذہب ہے کہ جس حدیث کو تلقی بالقبول حاصل ہو وہ علم یقینی کا فائدہ دیتی ہے۔ پھر فرمایا: اہل کلام میں سے اکثر اشاعرہ جیسے ابو اسحاق اسفرائنی، ابن فورک وغیرہ کا بھی یہی مذہب ہے، مزید یہ کہ تمام محدثین اور سلف کا بھی یہی مذہب ہے۔ یہ وہی بات ہے جسے ابن صلاح رحمۃ اللہ علیہ نے بطور استنباط بیان کیا اور ان ائمہ کی موافقت کی"۔

(۴) علامہ زرکشی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

"أن الصحة توجد أيضا من أهل الحديث با لقبول و العمل به، وإن لم يوقف له على إسناد صحيح"(۲)

(ترجمہ): "حدیث کے صحیح ہونے کی ایک صورت یہ بھی ہے کہ محدثین کے ہاں اسے تلقی بالقبول حاصل ہونے کے ساتھ ساتھ اس پر عمل بھی ہوا ہو، اگرچہ اس کی کوئی صحیح سند نہ ہو"۔

(۵) حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"ومن جملة صفات القبول أن يتفق العلماء على العمل

۱۔ اختصار علوم الحدیث مع شرح الباعث الحثیث ص ۳۴

۲۔ النکت علی کتاب ابن الصلاح: ص ۴۷

بمدلول حديث ؛ فإنه يقبل حتى يجب العمل به، و قد صرح بذلك جماعة من أئمة الأصول. "(۱)

(ترجمہ): ''کسی حدیث کے مقبول ہونے کی وجوہات میں سے ایک وجہ یہ بھی ہے کہ اہل علم اس حدیث کے مدلول پر عمل کرنے میں متفق ہوں؛ چنانچہ جس حدیث کی یہ حالت ہو وہ مقبول ہے اور اس پر عمل کرنا واجب ہے، اور اس اصول کی تصریح ائمہ اصول حدیث کی ایک پوری جماعت نے کی ہے''۔

(٦) محقق ابن ہمام رحمۃ اللہ علیہ حدیث'' طلاق الأمة ثنتان وعدتها حيضتان '' کے بارے میں بعض محدثین کی تضعیف نقل کر کے ان کی تردید کرتے ہوئے رقمطراز ہیں:

" و مما يصح الحديث أيضاً عمل العلماء على وفقه، و قال الترمذي عقيب روايته: حديث غريب، والعمل عليه عند أهل العلم من أصحاب رسول الله ﷺ وغيرهم، وفي "الدار قطني" قال القاسم و سالم: عمل به المسلمون۔ وقال مالك: شهرة الحديث بالمدينة تغني عن صحة سنده انتهى و الله أعلم. "(۲)

(ترجمہ): ''علماء کا کسی حدیث کے مطابق عمل کرنا بھی تصحیح حدیث کا سبب ہے، امام ترمذی رحمۃ اللہ علیہ اس حدیث کو روایت کرنے کے بعد فرماتے ہیں: (اگرچہ) حدیث غریب ہے لیکن صحابہ اور تابعین کے اہل علم حضرات نے اسی پر عمل کیا ہے، ''دارقطنی'' میں ہے۔ ''قاسم اور سالم نے کہا ہے'' مسلمانوں کا عمل اسی پر ہے۔ امام مالک فرماتے ہیں: مدینے میں حدیث کی شہرت اس کی سند کی صحت سے مستغنی کر دیتی ہے''۔

(۷) علامہ سخاوی رحمۃ اللہ علیہ نے لکھا ہے:

" وكذا إذا تلقت الأمة الضعيف بالقبول، يعمل به على الصحيح، حتى أنه ينزل منزلة المتواتر في أنه ينسخ

۱۔ الأجوبة الفاضلة للأسئلة العشرة الكاملة: ص ۲۳۱

۲۔ فتح القدير: ۳/ ۳۴۹

المقطوع به ..ولهذا قال الشافعي في حديث"لا وصية لوارث"إنه لا يثبته أهل الحديث،ولكن العامة تلقته با لقبول وعملوا به حتى جعلوه نا سخاً لآية الوصية ."(۱)

(ترجمہ): "اسی طرح جب ضعیف حدیث کو تلقی بالقبول حاصل ہو جائے تو اس پر حدیث صحیح کی طرح عمل کیا جائے گا، بسا اوقات اسے تواتر کے مرتبے میں قرار دیکر قطعیات کو بھی منسوخ کیا جاتا ہے، اسی وجہ سے امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ نے حدیث" لاوصیۃ لوارث" کے بارے میں فرمایا ہے کہ یہ حدیث اگر چہ محدثین کے نزدیک کسی صحیح سند سے ثابت نہیں، لیکن عامۃ المسلمین نے اسے تلقی بالقبول سے نوازا ہے اور اسے آیت وصیت کے لئے ناسخ قرار دیا"۔

(۸) علامہ سیوطی رحمہ اللہ یوں گویا ہیں:

"قال بعضهم:يحكم للحديث بالصحة إذا تلقاه الناس بالقبول وإن لم يكن له إ سنادصحيح."(۲)

(ترجمہ): "بعض محدثین کہتے ہیں کہ جب کسی حدیث کو لوگوں کے عمل سے تائید (تلقی بالقبول) حاصل ہو جائے تو اگر چہ اس کی سند صحیح نہ بھی ہو تب بھی اس پر" صحت" کا حکم لگا دیا جائے گا"۔

(۹) علامہ اکرم سندھی رحمہ اللہ رقمطراز ہیں:

"وهذا التلقي وحده أقوى في إضا فة العلم من مجرد كثرة الطرق القا صرة عن التواتر ."(۳)

(ترجمہ): "تلقی بالقبول علم یقین کا فائدہ دینے میں ان کثرت طرق سے زیادہ قوی ہے جو تواتر تک نہ پہنچے ہوں"۔

۱۔ فتح المغیث بشرح الفیۃ الحدیث:۱۵۴-۱۵۳/۲
۲۔ تدریب الراوی فی شرح تقریب النواوی:۶۶/۱
۳۔ امعان النظر شرح نخبۃ الفکر:ص ۳۴

(۱۱) علامہ عبدالحی لکھنوی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"و كذا إذا تلقت الأمة الضعيف بالقبول يعمل به على الصحيح، حتى إنه ينزل منزلة المتواتر في أنه ينسخ المقطوع به، ولهذا قال الشافعيؒ في حديث لا وصية لوارث إنه لا يثبته أهل الحديث ،ولكن العامة تلقته بالقبول و عملوا به حتى جعلوه ناسخاً لآية الوصية ، أو كان في موضع احتياط "(۱)

(ترجمہ): "اسی طرح جب ضعیف حدیث کو تلقی بالقبول حاصل ہو جائے تو اس پر حدیث صحیح کی طرح عمل کیا جائے گا، بسا اوقات اسے تواتر کے مرتبے میں قرار دیکر قطعیات کو بھی منسوخ کیا جاتا ہے، اسی وجہ سے امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ نے حدیث "لا وصیۃ لوارث" کے بارے میں فرمایا ہے کہ یہ حدیث اگرچہ محدثین کے نزدیک کسی صحیح سند سے ثابت نہیں، لیکن عامۃ المسلمین نے اسے تلقی بالقبول سے نوازا ہے اور اسے آیت وصیت کے لئے ناسخ قرار دیا۔ اسی طرح ضعیف حدیث موضع احتیاط میں بھی قابل قبول ہوتی ہے۔

(۱۲) حضرت علامہ انور شاہ کشمیری رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

" وذهب بعضهم إلى أن الحديث إذا تأيّد بالعمل ارتقى من حال الضعيف إلى مرتبة القبول و هو الأوجه عندي. "(۲)

(ترجمہ): "بعض محدثین کہتے ہیں کہ جب ضعیف حدیث کی تائید عمل سے ہو جائے تو وہ مرتبہ ضعف سے درجہ قبول تک ترقی کر جاتی ہے اور یہی میرے نزدیک صحیح ہے"۔

اس ساری بحث سے یہ ثابت ہوا کہ ضعیف حدیث کو جب تلقی بالقبول حاصل ہو جائے تو اسے صحیح قرار دیا جائے گا، لہٰذا اب یہ حدیث اس تلقی بالقبول کی وجہ سے بمنزلہ متواتر بن جائے گی۔

---

۱۔ الأجوبة الفاضلة للأسئلة العشرة الكاملة: ص ۵۱۔۵۲

۲۔ فيض الباري شرح صحيح البخاري: ۴۰۹/۳

## حدیثِ ضعیف میں شروط ثلاثہ کی حیثیت:

حدیثِ ضعیف کی مقبولیت کے لیے علماء نے کچھ شرائط مقرر کیے ہیں، متقدمین کے ہاں بھی اس کے مقبولیت کے لیے شرائط تھیں، تاہم متاخرین نے اس کے شرائط کی مزید تنقیح کی، سب سے پہلے حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ نے منقح انداز میں اس کے لیے باقاعدہ تین شرائط مقرر کئے، جسے بہت مقبولیت ملی، اور بعد میں اسی کو کتابوں میں نقل کیا جانے لگا۔ جن کے ذریعہ نہ صرف حدیث ضعیف کو ایک مقام مل جاتا ہے بلکہ اس کے ذریعہ سے پیدا ہونے والے کسی شرعی مشکل کا بھی تدارک ہوجاتا ہے۔ یعنی حدیث ضعیف کا بالکل ترک بھی لازم نہیں آتا، اور وہ کسی بڑی شرعی بات کے لیے بنیاد بھی نہیں بنے گی۔

چونکہ یہ شرائط سب سے پہلے حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ سے منقول ہیں، اسی وجہ سے علامہ سیوطی رحمۃ اللہ علیہ نے لکھا ہے کہ ان تین شرائط میں سے سوائے ایک شرط کے باقی کو علامہ ابن صلاح رحمۃ اللہ علیہ اور علامہ نووی رحمۃ اللہ علیہ نے ذکر نہیں کیا ہے، وہ لکھتے ہیں:

"لم یذکر ابن الصلاح، والمصنف هنا، و في سائر کتبه لما ذکر، سوی هذا الشرط: و هو کونه في الفضائل ونحوها"(1)

(ترجمہ): "علامہ ابن صلاح رحمۃ اللہ علیہ اور علامہ نووی رحمۃ اللہ علیہ نے سوائے اس شرط کے کہ فضائل اعمال وغیرہ میں ہو اور کسی شرط کا ذکر نہیں کیا ہے، بلکہ امام نووی رحمۃ اللہ علیہ نے تو اپنی تمام تصانیف میں سوائے مذکورہ شرط کے اور کوئی شرط ذکر ہی نہیں کی ہے"۔

البتہ ان میں ہر شرط بذات خود ضعیف حدیث پر کس قدر موثر ہے یہ بحث تفصیل کی مقتضی ہے۔

### تین شرائط:

حافظ سخاوی رحمۃ اللہ علیہ نے حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ کے حوالے سے نقل کیا ہے کہ ضعیف حدیث پر عمل کرنے کے لئے تین شرائط ہیں:

---

۱۔ تدریب الراوي في شرح تقریب النواوي: ۱/۳۵۱.

"سمعت شيخنا ابن حجرأي العسقلاني المصري مراراً يقول و كتبه لي بخطه: إنَّ شرائط العمل بالضعيف ثلاثة:الأول: متفق عليه،و هو أن يكون الضعف غير شديد، فيخرج من انفردمن الكذابين والمتهمين ومن فحش غلطه .والثاني: أن يكون مندرجاً تحت أصل عام ، فيخرج ما يخترع بحيث لا يكون له أصل أصلاً .والثالث:أن لا يعتقد عند العمل به ثبوته، لئلا ينسب إلى النبي ﷺ ما لم يقله. قال: وا لأخيران عن ابن عبد السلام وابن دقيق العيد،والأول نقل العلائي الاتفاق عليه."(۱)

(ترجمہ):"میں نے اپنے شیخ حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ سے بارہا یہ سنا اور مجھے لکھ کر بھی بھیجا کہ ضعیف حدیث پر عمل کرنے کے لئے تین شرائط ہیں:

اول: یہ کہ اس حدیث کا ضعف شدید نہ ہو، لہذا اس شرط سے کذابین، متہمین اور فاحش الغلط کی وہ روایات جن کے نقل کرنے میں وہ منفرد ہوں خارج ہو گئیں۔

دوم: یہ کہ دین کے عام اصول کے تحت داخل ہو، یعنی اس کا مضمون دین کے مسلمہ اصول وقواعد کے معارض نہ ہو، موضوع روایات اس شرط سے خارج ہو گئیں۔

سوم: اس ضعیف حدیث پر عمل کرتے وقت، اس کے بعینہ ثبوت کا اعتقاد نہ رکھا جائے کہ یہ آپ ﷺ سے اسی طرح ثابت ہے"۔ شرط اول: علامہ علائی (۲) رحمۃ اللہ علیہ سے منقول ہے جس پر سب کا اتفاق نقل کیا ہے، بقیہ دو شرطیں ابن عبد السلام رحمہ اللہ اور ابن دقیق العید رحمہ اللہ

---

۱۔ القول البدیع فی الصلاۃ علی الحبیب الشفیع: ص۴۹۶، ۴۹۷

۲۔ ابوسعید خلیل بن کیکلدی علائی شافعی ۶۹۴ھ میں پیدا ہوئے۔ آپ تحصیل علم وفقہ کے لئے مختلف دور دراز شہروں میں پہنچے ہیں اور بڑے بڑے محدثین وفقہاء سے علم حاصل کیا ہے۔ موصوف مشہور حافظ حدیث، فقیہ، متکلم، ادیب، اور شاعر تھے۔ موصوف کو معرفت رجال، علل اور متون میں بھی ید طولی حاصل تھا، اور اپنا اثر، تنقیح الفهوم فی صیغ العموم۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: طبقات الشافعیۃ الکبریٰ ۲۴۸/۵۔۲۴۹، اور شذرات الذهب فی اخبا مثل نہیں چھوڑا۔ وفات ۷۶۱ھ میں ہوئی ہے۔ چند مشہور تصانیف: جامع التحصیل، الاشباہ والنظائر من ذہب: ۳۸۱/۶۔۳۸۲

سے منقول ہیں''۔

شرط اول: جس کے بارے میں علامہ علائی رحمہ اللہ کے حوالے سے حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ نے نقل کیا ہے کہ یہ شرط اتفاقی ہے، البتہ شیخ محمد عوامہ صاحب مدظلہ العالی نے ''القول البدیع'' کی تعلیق میں (۱) اس امر میں دعوی اتفاق کے بارے میں تردد کا اظہار کیا ہے، اس کے بعد موصوف نے علامہ سخاوی رحمہ اللہ کی اس عبارت کی طرف اشارہ کیا ہے۔

علامہ سخاوی رحمہ اللہ صلوۃِ حاجت کے تحت ایک حدیث ذکر کر کے اس پر کلام کرنے کے بعد یوں فرماتے ہیں:

"و في الجملة هو حديث ضعيف جداً يكتب في فضا ئل الأعمال." (۲)

(ترجمہ): ''یعنی من جملہ یہ حدیث ضعیف جداً ہے لیکن پھر بھی فضائل اعمال میں معتبر ہے''۔

شیخ محمد عوامہ مدظلہ العالی نے اپنی عبارت میں جس امر کی طرف اشارہ کیا ہے بعض اعلام متقدمین کی نصوص سے بھی یہی بات مستفاد ہوتی ہے۔

چنانچہ امام بیہقی رحمہ اللہ رقمطراز ہیں:

"وضرب لا يكون راويه متهماً بالوضع ، غير أنه عرف بسوء الحفظ و كثرة الغلط في رواياته ، أو يكون مجهولاً لم يثبت من عدالته و شرائط قبول خبره مايوجب العمل. فهذا الضرب أن الأحاديث لايكون مستعملاً في الأحكام، ..وقد يستعمل في الدعوات والترغيب و الترهيب." (۳)

(ترجمہ): ''رواۃ کی ایک قسم وہ ہے کہ راوی متہم بالکذب تو نہیں ہوتا، البتہ سوءِ حفظ کا شکار ہے جس کی وجہ سے روایات میں ان سے بکثرت غلطیوں کا صدور ہوتا رہتا

۱۔ القول البدیع فی الصلاۃ علی الحبیب الشفیع: ص ۴۹۷
۲۔ القول البدیع فی الصلاۃ علی الحبیب الشفیع: ص ۴۵۳
۳۔ دلائل النبوۃ: ۱/۳۴

ہے، یا مجہول ہے جس کی عدالت معلوم نہیں اور نہ وہ اوصاف ان میں موجود ہیں جن کی وجہ سے روایت کو قبول کیا جاتا ہے۔

تو ایسے رواۃ سے جو روایات مروی ہوں وہ احکام میں مستدل تو نہیں بن سکتیں، البتہ فضائل ،ترغیب وترہیب میں ان روایات پر عمل کیا جائے گا"۔

امام ابن ابی حاتم (1) رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

"و منهم الصدوق الورع المغفل الغالب عليه الوهم، و الخطاء، و الغلط ،و السهو،فهو يكتب من حديثه الترغيب ،و الترهيب و الزهدو الآداب."(2)

(ترجمہ): "یعنی راوی کی ایک قسم ایسی ہوتی ہے کہ اس میں صدق ورع کی صفت تو ہوتی ہے مگر مغفل ہوتا ہے، وہم کا اس پر غلبہ رہتا ہے، غلطی اور بھول چوک اس پر غالب رہتی ہے اس طرح کے راویوں کی روایتیں ترغیب وترہیب اور زہد وآداب میں قبول کی جائیں گی"۔

اس بحث سے لامحالہ یہ نتیجہ نکلتا ہے کہ جس طرح یہ ایک اتفاقی بات ہے کہ موضوع روایات کسی درجہ میں بھی قابل عمل نہیں اسی طرح یہ بات بھی اتفاقی معلوم ہوتی ہے کہ ضعیف احادیث جبکہ ان میں ضعف شدید نہ ہو، فضائل میں بلا اختلاف قابل عمل ہیں۔

اس تفصیل سے ہم ہرگز یہ ثابت کرنا نہیں چاہتے کہ پہلی شرط کا لحاظ فضائل اعمال میں رکھنا

---

1۔ ابو محمد عبد الرحمان بن محمد بن ادریس بن منذر حنظلی رازی شافعی جو ابن ابی حاتم سے مشہور ہیں ۲۴۰ھ میں پیدا ہوئے۔ تحصیل علوم اپنے والد ماجد سے کرنے کے ساتھ ساتھ اس زمانے کے ارباب علم وفضل سے کیا۔ موصوف اپنے زمانے کے مشہور محدث، حافظ حدیث فقیہ، مورخ اور ابدال تھے، موصوف معرفت رجال اور علل کے بھی مسلم امام تھے۔ وفات ۳۲۷ھ میں ہوئی ہے۔ چند مشہور تصانیف: الجرح والتعدیل، کتاب العلل، کتاب المراسیل۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: الانساب: ۳۲۶/۲۔۳۲۷، اور معجم البلدان: ۱۲۰/۳

2۔ الجرح والتعدیل: ۷/۱

ضروری نہیں، بلکہ اس بات کی طرف اشارہ کرنا مطلوب ہے کہ ائمہ حدیث نے ضعفِ شدید کے باوجود تحملِ روایت کی طرف میلان کا اظہار کیا ہے اور ان کے صنیع میں بہت سے مقامات پر اس کا مشاہدہ کیا جاسکتا ہے۔

یہاں پر یہ بات بھی یاد رہے کہ! چونکہ بعض علماء نے موضوع کو بھی ضعیف کے عنوان میں داخل کیا ہے اس لئے اگر ضعفِ شدید سے مراد موضوع ہو تو روایت "ماسوی الموضوع والعمل به" میں آجائے گا، اور اس صورت میں مذکورہ شرط اتفاقی ہوگی۔

تاہم راجح اور قابل اعتماد مذہب جمہور کا ہے کہ ضعفِ شدید پر مشتمل روایت فضائل میں بھی معتبر نہیں، البتہ اس تفصیل سے یہ بات اب بخوبی سمجھ میں آجائے گی کہ ضعف خفیف پر مشتمل روایت کی قبولیت پر تنقید کرنا اور اس کو مختلف فیہ امر بنانا، جمہورِ اعلام امت کے موقف کے خلاف اور ان کے صنیع سے کج روی ہے، بس یہی وہ نکتہ ہے جس کی وضاحت اس خاص تناظر میں ہمیں کرنی تھی۔

## شرط ثانی کی حیثیت

مذکورہ شرط ہی کی بنیاد پر شیخ ناصر الدین البانی صاحب نے ضعیف حدیث کے فضائل میں بھی ناقابل اعتبار ہونے پر استدلال کیا ہے، چونکہ موصوف کے ہاں ضعیف حدیث موضوع حدیث ہی کی طرح ہے، اس لئے جب موضوع حدیث اصل عام کے تحت داخل ہی نہیں تو ضعیف حدیث بھی داخل نہیں ہوگی۔

مگر موصوف کا یہ استدلال غلط ہے، کیونکہ مذکورہ شرط اس لئے نہیں لگائی گئی ہے کہ اس کے ذریعہ ضعیف حدیث کو نکال باہر کیا جائے، بلکہ اس شرط سے مقصود موضوع روایات کو نکالنا ہے۔
حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے خود اس کی تصریح کی ہے: "والثاني: أن يكون مندرجاً تحت أصل عام، فيخرج ما يخترع بحيث لا يكون له أصل أصلاً" دوم: یہ کہ دین کے عام اصول کے تحت داخل ہو، یعنی اس کا مضمون دین کے مسلمہ اصول وقواعد کے معارض نہ ہو، موضوع

روایات اس شرط سے خارج ہوگئیں۔

دوسری بات یہ ہے کہ مذکورہ شرط ہی کی وجہ سے ضعیف حدیث کوتقویت مل چکی ہے جیسا کہ شیخ محمود سعید ممدوح اس کے بارے میں لکھتے ہیں:

"وهذا واضح؛لأن الضعيف يحمل أمارة ضعيفة،فإذااندرج تحت أصل عام، تقوى به، وصار صالحاً للاحتجاج بالهيئة المجموعةمن الأصل العام ومن الدليل الخاص۔"(۱)

(ترجمہ): "یہ واضح سی بات ہے کہ حدیثِ ضعیف میں علامات ضعف پائی جاتی ہیں، پس جب یہ حدیثِ ضعیف اصل عام کے تحت داخل ہو جائے تو اس کوقوت حاصل ہوجاتی ہے، اصل عام اوراس دلیل خاص کی ہیئت مجموعہ سے اور استدلال کرنے کی اس میں صلاحیت پیدا ہوجاتی"۔

اس کی وجہ یہ ہے کہ علامات ضعیفہ اصل عام کے تحت داخل ہونے کی وجہ سے قوی ہوگئی ہیں۔ جہاں تک اصل عام کے تحت داخل ہونے کا مسئلہ ہے تو وہ ضعیف ہی کے ساتھ خاص نہیں؛ بلکہ ہر روایت کے لئے یہ ضروری ہے کہ وہ اصل عام کے تحت داخل ہوں ورنہ وہ روایت معمول بہ نہیں بن سکتی اگرچہ حضرات محدثین کی رو سے وہ صحیح کیوں نہ ہو؟۔

## شرط ثالث کی حیثیت

حدیث ضعیف کی قبولیت کے لیے تیسری شرط یہ لگائی گئی ہے کہ "عمل کرتے وقت ثبوت کا اعتقاد نہ رکھے"۔ محدثین کی اس شرط کا کیا مقصد ہے؟ اس کو غور سے سمجھنے کی ضرورت ہے۔ بعض حضرات نے اس کا غلط معنی لیکر اس شرط کا مطلب بالکل عجیب مراد لیا ہے، چونکہ یہ غور طلب ہے لہذا کسی قدر تفصیل کے ساتھ اس کو واضح کیا جاتا ہے۔

چونکہ یہ تین شرائط اپنی موجودہ صورت کے اعتبار سے سب سے پہلے حافظ ابن حجر رحمہ اللہ

۱۔ التعریف باوھام من قسم السنن الی صحیح وضعیف:۱۳۱/۱

سے نقل کی جاتی ہیں، لہذا سب سے پہلے ان کا حوالہ پیش کیا جاتا ہے۔ علامہ سخاوی رحمہ اللہ نے اپنے استاذ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ سے جو عبارت نقل کی ہے وہ درج ذیل ہے:

"والثالث: أن لا يعتقد عند العمل به ثبوته لئلا ينسب الى النبي ﷺ ما لم يقله".(۱)

(ترجمہ): "تیسری شرط یہ ہے کہ "حدیث ضعیف پر عمل کرنے والا عمل کرتے وقت اس حدیث کے ثبوت کا اعتقاد نہ رکھے، تاکہ حضور ﷺ کی طرف ایسی بات منسوب نہ کرے جو حضور ﷺ نے ارشاد نہیں فرمائی ہے"۔

(۱) حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے یہ بات زیادہ تفصیل کے ساتھ اپنی کتاب "تبيين العجب بما ورد في فضل رجب" میں تحریر فرمائی ہے۔

چنانچہ موصوف ارشاد فرماتے ہیں:

"وينبغي مع ذلك: اشتراط أن يعتقد العامل كون ذلك الحديث ضعيفا، وأن لا يشهر ذلك، لئلا يعمل المرء بحديث، فيشرع ما ليس بشرع. أو يراه بعض الجهال فيظن أنه سنة صحيحة"(۲)

(ترجمہ): "ان شرائط کے ساتھ ایک شرط یہ بھی مناسب ہے کہ اس حدیث ضعیف پر عمل کرنے والا اس حدیث کے ضعیف ہونے کا اعتقاد رکھے، اور اس حدیث کو زیادہ شہرت نہ دے، تاکہ ایسا نہ ہو کہ کوئی حدیث ضعیف پر عمل کرے اور کسی غیر مشروع بات کو شریعت بنائے۔ یا کوئی جاہل اس حدیث کو دیکھے اور اس کو سنت صحیحہ سمجھ بیٹھے"۔

(۲) علامہ عبدالحی لکھنوی رحمہ اللہ لکھتے ہیں:

---

۱۔ القول البدیع فی الصلاۃ علی الحبیب الشفیع: ص ۴۹۶، ۴۹۷

۲۔ تبیین العجب بما ورد فی فضل رجب: ص ۱۱

" أن لا يعتقد العامل ثبوته بل الخروج عن العهدة بيقين،فإنه إن كان صحيحا في نفس الأمرفذاك ،وإلالم يترتب على العمل به فساد شرع. "(۱)

(ترجمہ) ''اس حدیثِ ضعیف پر عمل کرنے والا صرف اس کے ثبوت کا اعتقاد نہ کرے بلکہ یقینی طور پر اس حدیثِ ضعیف پر عمل کرنے کی ذمہ داری سے نکلنے کا اعتقاد رکھے؛ کیونکہ اگر یہ حدیثِ ضعیف نفس الامر میں بھی صحیح ہے پھر تو اس پر عمل ہوگیا، اور اگر نفس الامر میں صحیح نہ ہو تو اس پر عمل کرنے میں کوئی فسادِ شرعی بھی مرتب نہ ہوا، کیونکہ یہ حدیثِ ضعیف قواعدِ شرعیہ کے تحت داخل ہے''۔

(۳) شیخ محمود سعید ممدوح اس شرط کی تشریح کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

"الشرط الثالث: قولهم أن لا يعتقد عند العمل به ثبوته للنبي ﷺ، والاعتقاد هنا يعني الظن بمعنى إدراك الطرف الراجح، وهذا الشرط مع دقته لا يمنع العمل بالحديث الضعيف ؛ فالحديث الضعيف لم يترجح فيه جانب الظن أو الوهم فيتوقف فيه، وقد يزيد أحد الجانبين تبعا لدرجة ضعف الحديث، فلمّا لم يترجح جانب الظن كان الصواب عدم اعتقاد أي ظن نسبته لرسول الله ﷺ، و كذا لما لم يترجح جانب الوهم ،كان الصواب أيضا عدم نفي النسبة، فالاحتمال قائم سلبا وإيجابا. وهذا الكلام يصدق على الضعيف غير الموضوع بدرجاته الثلاث وهوالمشبه أو اللين، والمتوسط، والشديد. فالأول جانب الظن، فاحتمال الصواب فيه راجح، وحصل التوقف لغصة أو شبهة

ا۔ ظفر الأماني بشرح سید شریف جرجانی: ص ۱۸۷۔

احتیاطا. والثاني استوى فيه الطرفان. والثالث غلب فيه الوهم باحتمال الخطأ ولم يصل لحد الترك. ولما كان الأمر كذلك فيجوز العمل به لتقوية الأمارة الضعيفة بدرجاتها التي فيه بالأصل العام المتقدم في الشرط الثاني، ولكن يتوقف في نسبته للنبي ﷺ من باب الاحتياط فقط لاسيما في النوعين الأول والثاني، ولايلزم من التوقف في النسبة منع العمل، فالقياس معمول به ولكن لاينسب للنبي ﷺ، فتدبر. (۱)

(ترجمہ): ''حضرات محدثین کا یہ کہنا: "أن لايعتقد عند العمل به ثبوته للنبي ﷺ" یہاں اعتقاد سے مراد ظن ہے بمعنی طرف راجح یعنی طرف راجح کا ادراک، عمل بالحدیث الضعیف کی یہ شرط باجود دقت کے حدیث ضعیف پر عمل کرنے سے مانع نہیں ہے، کیونکہ حدیث ضعیف میں نہ ظن غالب راجح ہوتا ہے اور نہ وہم اور کبھی کبھار حدیث کے ضعف کے تابع ہوکر کوئی ایک جانب راجح ہوجاتی ہے۔ لیکن جب حدیث ضعیف میں ظن غالب راجح نہیں ہے تو درست بات یہ معلوم ہوتی ہے کہ آپ ﷺ کی طرف اس کی نسبت کا اعتقاد نہ رکھا جائے، ایسا ہی جب حدیث ضعیف میں وہم بھی راجح نہیں ہے تو اس اعتبار سے بھی درست یہی معلوم ہوتا ہے کہ آپ ﷺ کی طرف نسبت کرنے کی نفی بھی نہ کی جائے، لہذا ایجاباً اور سلباً دونوں اعتبار سے احتمال موجود ہے۔

مذکورہ کلام حدیث ضعیف غیر موضوع کے تینوں درجوں پر صادق آتا ہے۔ ''ضعف مشبہ یالین، ضعف متوسط اور ''ضعف شدید''۔ پہلی قسم میں جانب ظن راجح ہوتا ہے لہذا درستگی کا احتمال

۱۔ التعریف باوہام من قسم السنن الی صحیح وضعیف: ۱/ ۱۳۷، ۱۳۸۔

اس میں راجح ہے، اور احتیاطاً کسی شبہ سے اس میں توقف کیا جاتا ہے، اور دوسری قسم میں دونوں جانب برابر رہتے ہیں، اور تیسری صورت میں احتمال خطا کی وجہ سے اس میں وہم غالب ہوتا ہے اور حد ترک تک نہیں پہنچا ہوتا۔

اور جب معاملہ ایسا ہے تو ضعیف حدیث پر عمل کرنا جائز ہے؛ کیونکہ اس میں علامات ضعیفہ اصل عام کے تحت داخل ہونے کی وجہ سے قوی ہوگئیں، لیکن اس کی نسبت حضورﷺ کی طرف کرنے میں احتیاطاً توقف کیا جائے گا خصوصاً پہلی دو قسموں میں، اور حضورﷺ کی طرف نسبت کرنے میں توقف کی وجہ سے یہ لازم نہیں آئے گا کہ اس پر عمل بھی نہ کیا جائے؛ کیونکہ قیاس پر عمل کیا جاتا ہے لیکن اس کی نسبت حضورﷺ کی طرف نہیں کی جاتی ہے۔''

مذکورہ عبارات سے مقصود یہی ہے کہ ضعیف حدیث کی فنی اور عملی حیثیت افراط وتفریط کا شکار نہ ہو۔ یہی وجہ ہے کہ حضراتِ محدثین ''حدیث'' کے معاملہ میں بہت ہی محتاط رہے ہیں، چنانچہ کسی ایک محدث کے بارے میں کبھی بھی یہ ثابت نہیں کیا جاسکتا ہے کہ ان سے ''حدیث رسول'' میں کذب واقع ہوا ہے، لہذا اسی احتیاط کی بنیاد پر شرط ثالث لگائی گئی ہے، مذکورہ شرط اس لئے نہیں لگائی ہے کہ حضراتِ محدثین کے ہاں ضعیف حدیث سرے سے ثابت ہی نہیں، بلکہ اس سے مقصود احتیاط ہے اور یہ مسلمہ اصول ہے کہ شریعت میں احتیاط ہی کو مدِ نظر رکھا جاتا ہے۔ ورنہ ضعیف حدیث اصل عام کے تحت داخل ہونے کی وجہ سے پہلے سے قابل عمل بن چکی ہے۔

مگر افسوس ہے! کہ شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی روایتی تحقیق کی بنیاد پر مذکورہ شرط ہی کی بنا پر حدیث ضعیف کو فضائل میں بھی نا قابل عمل قرار دیا ہے۔

شروط ثلاثہ کی افادیت ایک واضح امر ہے، شرط اول کی اہمیت خود واضح ہے۔ شرط ثانی یعنی اصل عام کے تحت ہونا بھی ضروری ہے، اس لئے کہ ضعیف حدیث باوجود فضائل، ترغیب و ترہیب پر مشتمل ہونے کے کسی اصل عام یا صحیح روایت کے خلاف ہو جس میں تطبیق بھی ممکن نہ ہو، تو ضعیف حدیث کو ترک کر دیا جائے گا۔

شرط ثالث سے مقصود بھی یہی ہے کہ ضعیف حدیث کی فنی اور عملی حیثیت افراط کا شکار نہ ہو۔

## کیا ضعیف حدیث کو بیان کرتے ہوئے ضعف کا بیان کرنا ضروری ہے؟

### پہلا مسلک:

حفاظِ حدیث نے ضعیف حدیث پر عمل کے لئے بیان ضعف کو ضروری قرار نہیں دیا ہے؛ بلکہ ان کے ہاں تو بیان ضعف کے غیر مطلوب ہونے پر تصریحات موجود ہیں:

(۱) چنانچہ حافظ ابن صلاح رحمہ اللہ لکھتے ہیں:

"یجوز عند أهل الحدیث وغیرهم التساهل في الأسانید وروایته ما سوی الموضوع من أنواع الأحادیث الضعیفة من غیر اهتمام ببیان ضعفها ---"(۱)

دیگر حضرات کی مکمل عبارات پیچھے مذہب ثانی میں ملاحظہ فرمائیں۔

(ترجمہ): "محدثین اور غیر محدثین سب کے نزدیک اسانید میں تساہل برتنا، اور ضعیف کی قسموں میں سے موضوع روایت کے ماسوا روایت کرنا، اس کے ضعف بیان کئے بغیر جائز ہے۔

(۲) علامہ عراقی رحمہ اللہ لکھتے ہیں:

"من غیر بیان لضعفه." (۲)

(ترجمہ): "ضعیف روایت ضعف بیان کئے بغیر قابل عمل ہے"۔

(۳) علامہ زکریا انصاری رحمہ اللہ رقمطراز ہیں:

"من غیر تبیین لضعف" (۳)

(ترجمہ): "بغیر ضعف بیان کئے روایت ضعیف فضائل میں معتبر ہے"۔

---

۱۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۱۱۰۔۱۱۱

۲۔ شرح التبصرۃ والتذکرۃ: ۱/۳۲۵۔

۳۔ فتح الباقي علی ألفیۃ العراقي: ۱/۳۰۴

(۴) علامہ طیبی رحمہ اللہ گویا ہیں:

"من غير بيان ضعفه ." (۱)

(ترجمہ): "ضعف بیان کئے بغیر ضعیف حدیث معتبر ہے"۔

(۵) سید شریف جرجانی رحمہ اللہ نے لکھا ہے:

"من غير بيان ضعفه ." (۲)

(ترجمہ): "روایت ضعیف بغیر ضعف بیان کئے قابل معتبر ہے"۔

(٦) علامہ ابن الوزیر الیمانی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

"من غير بيان لضعفه ."(۳)

(ترجمہ): "حدیث ضعیف ضعف بیان کئے بغیر معتبر ہے"۔

(۷) علامہ سخاوی رحمہ اللہ یوں گویا ہیں:

"من غير تبيين لضعفه ." (۴)

(ترجمہ): "ضعیف روایت فضائل میں بغیر ضعف بیان کئے معتبر ہے"۔

(۸) علامہ سیوطی رحمہ اللہ لکھتے ہیں:

"من غير بيان ضعفه ."(۵)

(ترجمہ): "بغیر ضعف بیان کئے روایتِ ضعیف فضائل میں معتبر ہے"۔

ان کے علاوہ اس بارے میں ان حضرات سے نصوص کچھ کم نہیں، مگر نمونے کے طور پر چند اقوال کو قارئین کی نظر کیا گیا ۔

جمہور کے مسلکِ منصور کے برخلاف بعض حضرات ہر صورت میں بیانِ ضعف کو ضروری

---

۱۔ الخلاصة في اصول الحديث: ص ۴۸

۲۔ ظفر الاماني بشرح سيد شريف جرجاني: ص ۱۸۱

۳۔ توضيح الافكار لمعاني تنقيح الانظار: ۲/۱۱۱

۴۔ فتح المغيث بشرح الفية الحديث: ۲/۱۵۱

۵۔ تدريب الراوي في شرح تقريب النواوي ۱/۵۳۰

قرار دیتے ہیں:

## کیا ضعیف حدیث کو بیان کرتے ہوئے ضعف کا بیان کرنا ضروری ہے؟

دوسرا مسلک:

(۱) چنانچہ احمد شاکر صاحب (۱) لکھتے ہیں:

"و الذي أراه أن بيان الضعف في الحديث واجب في كل حال." (۲)

(ترجمہ): ''میرے نزدیک ضعیف حدیث میں ضعف کو بیان کرنا ہر صورت میں ضروری ہے''۔

(۲) شیخ ناصر الدین البانی صاحب فرماتے ہیں:

"لا يجوز رواية الحديث الموضوع إلا مع بيان وضعه، و كذلك الحديث الضعيف عند أهل التحقيق" (۳)

(ترجمہ): ''جس طرح موضوع روایت کا موضوع ہونے کے تصریح کئے بغیر بیان کرنا جائز نہیں، اسی طرح ضعیف روایت کا بھی ضعف بیان کئے بغیر بیان کرنا محققین کے نزدیک جائز نہیں''۔

(۳) فوزی بن عبدہ رقمطراز ہیں:

---

۱۔ احمد بن محمد شاکر بن احمد بن عبد القادر سنہ ۱۳۰۹ھ میں پیدا ہوئے۔ موصوف اپنے والد ماجد کے ہمراہ مصر، سوڈان اور اسکندریہ گئے اور ان میں اس زمانہ کے کبار علماء وقت سے علوم دینیہ کی تکمیل کی، موصوف کو تفسیر اور حدیث میں مہارت تامہ حاصل تھی، فراغت کے بعد درس و تدریس اور تصنیف و تالیف کا مشغلہ اختیار کیا۔ وفات ۱۳۷۷ھ کو قاہرہ میں ہوئی ہے۔ چند مشہور تصانیف: شرح مسند امام احمد بن حنبل، الباعث الحثیث شرح اختصار علوم الحدیث، عمدۃ التفسیر، نظام الطلاق فی الاسلام۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: الاعلام: ۲۵۳/۱

۲۔ الباعث الحثیث شرح اختصار علوم الحدیث: ص ۸۶

۳۔ حکم العمل بالحدیث الضعیف فی فضائل اعمال: ص ۴۰

"قسم یحث علی عمل مشروع : و هو داخل تحت نصوص أخری صحیحة ، فهذا یجوز روایته ،مع بیان ضعفه"(۱)

(ترجمہ): "ضعیف حدیث کی ایک قسم وہ ہے جو کسی مشروع عمل پر ابھارے: اور یہ حدیث دوسرے نصوص صحیحہ کے تحت بھی داخل ہو، تو ایسی روایت کا ضعف بیان کرنے کے ساتھ روایت کرنا جائز ہے"۔

چنانچہ ان احادیثِ ضعیفہ کے ساتھ سلف وخلف کا کیا رویہ رہا؟ اور آج ان کے بارے میں کیا رویہ اپنایا گیا ہے۔ درحقیقت سلف سے اعتماد اٹھا دیا گیا جس کے سبب یہ رویہ اختیار کیا گیا؛ اور کیوں نہ ہو؟ کہ آج عدم اعتمادی کی یہ لہر تمام اطراف عالم میں پھیل چکی ہے جس کے سبب سے ہر طرف انتشار ہی انتشار ہے، اور یہ حضرات بزبان حال یہ کہہ رہے ہیں" نحن رجال وهم رجال" لہذا جو کچھ وہ کر کے چلے گئے ہم بھی وہ سب کچھ کر سکتے ہیں، بلکہ یہاں تک کہا جا رہا ہے کہ جو فیصلے وہ نہیں کر سکے آج ہم وہ فیصلے بھی کر سکتے ہیں! اس لئے کہ اس وقت تمام کتب مطبوع نہیں تھیں جو آج مطبوع ہیں۔

اسی طرح ان کے پاس وہ وسائل اور ذرائع موجود نہیں تھے جو آج کے دور میں موجود ہیں، چنانچہ ان امور کے پیش نظر اب ہر فیصلہ آسان ہے؛ لہذا اس کے بعد ہمیں نہ کسی کے قول کی طرف رجوع کرنے کی ضرورت ہے اور نہ ہی کسی کا قول ہمارے لئے قابل اعتماد ہے۔

بھلا جن لوگوں کی زندگی کا مشغلہ حدیث کی نشر واشاعت ہو اور اسی خدمت کی بجا آوری میں اس دنیائے فانی سے رحلت فرما گئے ہوں۔ چاہئے تو یہ تھا کہ ان کے بنائے ہوئے اصول و ضوابط "لکل فن رجال " کے اصول کے مطابق قابل عمل اور زیادہ قابل بھروسہ ہوتے! مگر افسوس ہے کہ ان تمام رکاوٹوں کو درمیان سے ہٹا کر ان اصولوں کے پیچھے چل پڑے جو ان کی عقل

---

۱۔ حکم العمل بالحدیث الضعیف فی فضائل اعمال: ص ۵۰

اورھوائے نفس کے ترازو میں پورے اترے ہوں، اوراپنے بنائے ہوئے اصول ان کوزیادہ قابل عمل نظرآئے ، اورآج بھر پور کوشش اس بات کی کی جارہی ہے کہ من گھڑت اصول وضوابط کو رواج دیا جائے ،لیکن ۔

ایں خیال است و محال است وجنون

کیونکہ اصل تو وہی ہے جسے حضرات فقہاء ومحدثین نے اختیار کیا اوران کے قول وعمل سے جس کا ثبوت ملتاہے اوراسی کے اپنانے میں دونوں جہاں کی خیروعافیت ہے۔

## ضعیف حدیث اورتعامل محدثین:

یہ ایک اٹل حقیقت ہے کہ حدیث کی کوئی بھی کتاب یا حدیث کا کوئی بھی مجموعہ ایسانہیں ہے کہ جس میں ضعیف احادیث کو نہ لیا گیا ہو۔

چنانچہ بطور تائید چند کتابوں کے نام ملاحظہ فرمائیں:

الموطألالإمام مالك بن أنس ( المتوفى سنة ١٧٩ھ) كتاب الزهد،لامام عبد الله بن مبارك (المتوفى سنة ١٨١ھ) مسند الطيالسي،للإمام سليمان بن داؤد الطيالسي (المتوفى ٢٠٤ھ)،مصنف عبد الرزاق ،للإمام عبد الرزاق بن همام (المتوفى سنة ٢١١ھ)،مصنف ابن أبي شيبة،للإمام عبد الله بن محمد ابن أبى شيبة المتوفى (سنة ٢٣٥ھ)، مسند الإمام أحمد بن حنبل،للإمام أحمدبن محمدبن حنبل (المتوفى ٢٤١ھ)، كتاب الزهد للإمام هناد بن سري كوفي ( المتوفى سنة ٢٤٣ھ)، الأدب المفرد للإمام البخاري (المتوفى سنة ٢٥٦ ھ) سنن الدارمي ، للإمام عثمان بن سعيد الدارمي (المتوفى سنة ٢٨٠ھ)، كتاب الزهد ، للإمام عبد الله بن محمدابن ابي الدنيا (المتوفى سنة ٢٨١ھ)، كتاب السنة

،للإمام عمرو بن أبی عاصم الشيباني( المتوفی سنہ ٢٨٧ھ) ، كتاب السنة، للإمام عبد الله بن أحمد بن حنبل( المتوفی سنہ ٢٩٠ھ) مسند البزار، للإمام أبوبكر أحمد بن عمرو البزار(المتوفی ٢٩٢)، فضائل القرآن للإمام ابوبكر جعفر بن محمد بن الحسن الفريابي (المتوفی سنہ ٣٠١ھ)، عمل اليوم والليلة ، للإمام أحمد بن شعيب النسائي( المتوفی سنہ ٣٠٣ھ)،مسند أبو يعلى ،للإمام أحمد بن علي الموصلي (المتوفی سنہ ٣٠٧ھ)، كتاب السنة ، للإمام أبو بكر أحمد بن محمد الخلال (المتو فی سنہ ٣١١ھ)، نوادر الاصول في أحاديث الرسول ، محمد بن علي الحكيم الترمذي(المتوفی سنہ ٣٢٠ھ)،المعجم الكبير ، للإمام سليمان بن أحمد الطبراني (المتوفی سنہ ٣٦٠ھ)، كتاب الشريعة، للإمام محمد بن الحسين الآجري (المتوفی سنہ ٣٦٠ھ)، كتاب عمل اليوم والليلة للإمام ابن السني (المتوفی سنہ ٣٦٤ھ) ،سنن دارقطني ، للإمام أبي الحسن علي بن عمر الدارقطني (المتوفی سنہ ٣٨٥ھ)، المستدرك، للإمام أبو عبد الله محمد بن عبد الله الحاكم (المتوفی سنہ ٤٠٥ھ)،حلية الأولياء وطبقا ت الأصفياء ،أبو نعيم أحمد بن عبد الله( المتوفی سنہ ٤٣٠ھ)، السنن الكبرى، للإما م أبو بكر محمد بن الحسين البيهقي (المتوفی سنہ ٤٥٨ ھ) ،جامع بيان العلم وفضله ، للإمام أبو عمر يوسف بن عبد الله ابن عبد البر (المتوفی سنہ ٤٦٣ھ)، الفقيه والمتفقه ، أبو بكر أحمد بن علي الخطيب البغدادي (المتوفی سنہ ٤٦٣ھ)،احياء العلوم الدين، للإمام محمد بن

محمد الغزالي (المتوفی سنہ ٥٠٥ھ)،تلبیس ابلیس ،عبد الرحمان بن علي الجوزي (المتوفی سنہ ٥٩٧ھ) ، کتاب الترغیب و الترهیب للإمام الحافظ عبد العظیم بن عبد القوي المنذري ( المتوفی سنہ ٦٥٦ ھ )، کتاب المحرر، شمس الدین محمد بن أحمدابن قدامه المقدسي (المتوفی سنہ ٧٤٤ھ)، کتاب المنتقی ، مجدالدین عبد السلام بن عبد الله ابن تیمیه(المتوفی سنہ ٦٥٢ھ)،الکلم الطیب، أبو العباس أحمد بن عبد الحلیم ابن تیمیه(المتوفی سنہ ٧٢٨ھ)، کتاب الکبائر، شمس الدین محمد بن أحمد الذهبي (المتوفی سنہ ٧٤٨ھ)، خلاصة الأحکام من مهمات السنن وقواعد الإسلام ، محی الدین یحی بن شرف النووي (المتوفی سنہ ٦٧٦ھ)،مدا رج السالکین، شمس الدین محمدبن أبی بکر ابن قیم الجوزیه (المتوفی سنہ ٧٥١ھ) کتاب تحفة المحتاج ، عمر بن علي بن أحمد إبن الملقن(المتوفی سنہ ٨٠٤ھ)،بلوغ المرام من أدلة الأحکام ، احمد بن عليبن حجر العسقلاني(المتوفی سنہ ٨٥٢ھ)،القول البدیع ، شمس الدین محمدبن عبد الرحمان السخاوي (المتوفی سنہ ٩٠٢ھ)، الجامع الصغیر في أحادیث النذیر البشیر،عبد الرحمان بن أبی بکر السیوطي(المتوفی سنہ ٩١١ھ)،نزل الأبرار بالعلم الماثور من الأدعیة والأذکار،محمد صدیق حسن خان القنوجي (المتوفی سنہ ١٣٠٧ھ)،تحفة الذاکرین ، أبو عبد الله محمدبن علي الشوکاني (المتوفی سنہ ١٢٥٠ھ)۔

یہ تمام کتابیں ضعیف احادیث کے فضائل میں معتبر ہونے کی تائید کرتی ہیں، جہاں اتنے محدثین ضعیف حدیث کو یکے بعد دیگرے اپنی کتابوں اور تعامل میں ذکر کرتے رہے ہوں تو وہاں کیونکر یہ ممکن ہوسکتا ہے کہ ایک مخصوص طبقے کی ریشہ دوانیوں کی زد میں آ کر ضعیف حدیث سے کلی طور پر ہاتھ دھو لئے جائیں؟۔

لہذا ضعیف الاسناد احادیث کو ناقابل عمل قرار دینا اور جمہور فقہاء و محدثین کی نہج کو چھوڑ کر کوئی نئی روش اختیار کرنا کہاں کی دانش مندی ہے؟!۔ کیونکہ افراط و تفریط کی روش انسان کو معیارِ حق سے کوسوں دور لے جاتی ہے۔

## چند ایک معتبر کتابوں کے اندر ضعیف روایات کی مثالیں:

(ا) مسند امام احمد بن حنبل

(۱)۔ "عن أبي أمامة ـ رضي الله عنه ـ عن النبي ﷺ ما من مسلم ينظر إلى محاسن امرأة ثم يغض بصره إلا أحدث الله له عبادةً يجد حلاوتها."[۱]

اس روایت پر شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ تبصرہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں: (ترجمہ): "یہ روایت ضعیف جداً ہے کیونکہ اس میں ایک راوی ہے عبید اللہ بن زحر جس کے بارے میں ابن حبان رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں: "منکر الحدیث جداً"، ثقات سے موضوع روایات بیان کرتے ہیں، امام نسائی رحمہ اللہ اور امام دار قطنی رحمہ اللہ فرماتے ہیں: متروک، امام ذہبی رحمہ اللہ فرماتے: ليس بحجة"۔[۲]

(۲) عن معاذ بن جبل ـ رضي الله عنه ـ قال: قال لي رسول الله ﷺ مفاتيح الجنة شهادة أن لا إله إلا الله."[۳]

۱۔ مسند امام أحمد بن حنبل: ۲۶۴/۷، رقم الحدیث: ۲۲۶۳۴

۲۔ سلسلۃ الأحادیث الضعیفۃ والموضوعۃ وأثرها السیئ فی الأمۃ: ۱۷۶/۳، رقم الحدیث: ۱۰۶۴

۳۔ مسند امام أحمد بن حنبل: ۳۵۳/۷، رقم الحدیث: ۲۲۴۵۳

اس روایت پر شیخ ناصر الدین البانی صاحب تبصرہ کرتے ہوئے فرماتے ہیں:
(ترجمہ): "یہ روایت ضعیف ہے اس لئے کہ اس میں ایک راوی ہے شہر بن حوشب (حضرت معاذؓ سے روایت کرتے ہیں) امام بزار رحمہ اللہ فرماتے ہیں کہ شہر بن حوشب کا سماع حضرت معاذ رضی اللہ عنہ سے نہیں ہے (خود البانی صاحب ان کے بارے میں رقمطراز ہیں) کہ یہ سند ضعیف ہے، شہر بن حوشب کے سیء الحفظ ہونے کی وجہ سے، علاوہ ازیں یہ روایت منقطع بھی ہے جس کی تصریح امام بزار رحمہ اللہ نے کی ہے۔ دوسرا راوی اسماعیل بن عیاش ثقہ ہے، لیکن شامیین کے علاوہ سے روایت کرنے میں ضعیف ہے، اور یہ روایت غیر شامیین سے ہے، کیونکہ ان کا شیخ، ابن ابی حسن مکی ہے"۔ (۱)

(۳) "عن معاذ ـ رضي الله عنه ـ قال: قال لنا رسول الله ﷺ: استعيذوا بالله من طمع يهدي إلى طبع، ومن طمع يهدي إلى غير مطمع، ومن طمع حيث لا طمع." (۲)

اس روایت پر شیخ ناصر الدین البانی صاحب تبصرہ کرتے ہوئے رقمطراز ہیں:
(ترجمہ): "یہ روایت عبد اللہ بن عامر الاسلمی کی وجہ سے ضعیف ہے؛ اس لئے کہ امام احمد، امام نسائی اور امام دار قطنی رحمہم اللہ نے ان کو ضعیف قرار دیا ہے، امام یحییٰ بن معین رحمہ اللہ فرماتے ہیں: "لیس بشيء"، امام علی بن مدینی رحمہ اللہ سے ان کے بارے میں سوال کیا گیا؟ تو فرمایا کہ ہمارے نزدیک ضعیف ہے، ضعیف ہے"۔ (۳)

چنانچہ یہی طرز و انداز امام عبد اللہ بن مبارک رحمہ اللہ اور امام دار قطنی رحمہ اللہ وغیرہ

۱۔ سلسلۃ الأحادیث الضعیفۃ والموضوعۃ وأثرہا السیئ فی الأمۃ: ۳/۲۷۷ رقم الحدیث: ۱۳۱۱
۲۔ مسند إمام أحمد بن حنبل: ۷/۳۵۱ رقم حدیث: ۲۲۳۷۱
۳۔ سلسلۃ الأحادیث الضعیفۃ والموضوعۃ وأثرہا السیئ فی الأمۃ: ۳/۵۵۲ رقم الحدیث: ۱۳۷۳

حضرات نے اپنایا ہے اور اپنی اپنی کتابوں میں ان روایات ضعیفہ کو درج کیا ہے۔اسی وجہ سے امام الجرح والتعدیل ابو محمد عبدالرحمان بن ابی حاتم رحمہ اللہ نے اپنی مایہ ناز کتاب "الجرح والتعدیل" میں اسی مسئلے کی تائید کے لئے مستقل باب قائم کیا ہے: "باب:في الآداب والمواعظ أنها تحتمل الرواية عن الضعاف." [1] پھر امام عبداللہ بن مبارک رحمہ اللہ کا وہ قول نقل کیا ہے جو پہلے اقوال کے ضمن میں بیان ہو چکا۔

(۲) "الادب المفرد":

اس کتاب میں امام بخاری رحمہ اللہ نے فضائل اور ترغیب وترہیب کے بارے میں پچاسو حدیثیں ضعیف نقل کی ہیں اور ان کا ضعف واضح بھی نہیں کیا ہے۔یعنی یہ بھی نہیں بتلایا ہے کہ یہ حدیث ضعیف ہے۔

(١) "عن أبي سعيد الخدري ـرضي الله عنه ـ،عن النبي ﷺ قال:خصلتان لا يجتمعان في مؤمن، البخل،و سوء الخلق." [۲]

اس روایت پر شیخ ناصر الدین البانی صاحب تبصرہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

(ترجمہ): "یہ روایت ضعیف ہے، اس لئے کہ اس میں ایک راوی ہے صدقۃ بن موسی جو سوءِ حفظ کا شکار رہا ہے، اور علامہ مناوی رحمہ اللہ نے بھی "فیض القدیر" میں یہی لکھا ہے: کہ یہ حدیث اسی سبب سے ضعیف ہے، علامہ ذہبی رحمہ اللہ فرماتے ہیں: کہ صدقہ ضعیف ہے، امام یحیی بن معین رحمہ اللہ اور دوسرے حضرات نے ان کو ضعیف قرار دیا ہے، حافظ منذری رحمہ اللہ فرماتے ہیں: ضعیف، حافظ ابن حجر رحمہ اللہ فرماتے ہیں: "صدوق له أوهام"۔ [۳]

---

۱۔ الجرح والتعدیل:۱/۳۱۹

۲۔ الأدب المفرد:۱/۱۴۷رقم الحدیث:۲۸۲

۳۔ سلسلۃ الأحادیث الضعیفۃ والموضوعۃ وأثرھا السیئ فی الأمۃ:۳/۲۴۵رقم الحدیث:۱۱۱۹

(۲) "عن عبد الله بن أبي أوفى - رضي الله عنه - عن النبي ﷺ قال: إن الرحم لا تنزل على قوم فيهم قاطع رحم." (۱)

اس کے بارے میں شیخ ناصر الدین البانی صاحب فرماتے ہیں: (ترجمہ): "یہ حدیث ضعیف جداً ہے، اس لئے کہ اس میں ایک راوی سلیمان بن زید المحاربی ہے جن کے بارے میں یحیی بن معین رحمہ اللہ فرماتے ہیں "لیس بثقة، كذاب، ليس يسوى حديثه فلساً"، امام نسائی رحمہ اللہ فرماتے ہیں: "متروك الحديث"، امام ابوحاتم رحمہ اللہ فرماتے ہیں: "ليس بقوي"، علامہ ہیثمی رحمہ اللہ فرماتے ہیں: "رواه الطبراني، وفيه أبوادام المحاربي وهو كذاب." (۲)

(۳) "عن رجل من بلي أتيت رسول الله ﷺ مع أبي فناجني أبي دوني قال: فقلت لأبي: ما قال لك؟ قال: إذا اردت أمراً فعليك بالتؤدة حتى يريك الله منه المخرج أو حتى يجعل الله لك مخرجاً." (۳)

اس پر شیخ ناصر الدین البانی صاحب تبصرہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

(ترجمہ): "یہ روایت بھی ضعیف ہے سعد بن سعید کی وجہ سے؛ اور یہ ابن قیس عمرو الانصاری ہے، حافظ ابن حجر رحمہ اللہ فرماتے ہیں: صدوق سيء الحفظ، امام احمد رحمہ اللہ علیہ اور امام ذہبی رحمہ اللہ نے ان کو ضعیف قرار دیا ہے"۔ (۴)

چنانچہ اوپر ذکر کردہ مثالوں سے یہ بات اچھی طرح معلوم ہوگئی کہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ اس کتاب میں کس نہج پر چلے ہیں حتی کہ محدث شام شیخ عبد الفتاح ابوغدہ رحمہ اللہ نے یہاں تک

---

۱۔ الأدب المفرد: ۱/۳۶ رقم الحدیث: ۶۳

۲۔ سلسلۃ الأحادیث الضعیفۃ والموضوعۃ وأثرھا السيئ فی الأمۃ: ۶۵۳/۳ رقم الحدیث ۱۴۵۶

۳۔ الأدب المفرد: ۴۷۹/۲ رقم الحدیث: ۸۸۸

۴۔ سلسلۃ الأحادیث الضعیفۃ والموضوعۃ وأثرھا السيئ فی الأمۃ: ۳۳۲/۵ رقم الحدیث: ۲۳۰۷

لکھا ہے:" وقد يكون الباب قا صراً عليها ."(۱)

(ترجمہ): " کہ کبھی کبھار پورے باب میں صرف ضعیف حدیثیں ہی ہوتی ہے"۔

چنانچہ اسی منہج کو امام بیہقی ،امام حاکم اور امام طبرانی رحمہم اللہ وغیرہ حضرات نے اپنایا ہے اور اپنی اپنی کتابوں میں ان احادیث ضعیفہ کو درج کیا ہے۔

یہی وجہ ہے کہ خطیب بغدادی رحمہ اللہ نے اپنی شہرہ آفاق کتاب " الكفاية في معرفة اصول الرواية " میں اسی مسئلے کی تائید کے لئے مستقل باب قائم کیا ہے:"باب التشددفي أحاديث الأحكام والتجوز في فضائل الأعمال."(۲)

## (۳) المنتقی الأخبار

(۱) "عن أنس -رضي الله عنه -قال: رأيت رسول الله ﷺ يتوضأ وعليه عمامة قطرية، فأدخل يده تحت العمامة، فمسح مقدم رأسه ، ولم ينقض العمامة ." (۳)

(ترجمہ): " یہ روایت ضعیف ہے اس لئے کہ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے لکھا ہے کہ اس کی سند میں کلام ہے، اور حضرت انس رضی اللہ عنہ سے روایت کرنے والا ابا معقل راوی مجہول ہے"۔ (۴)

(۲) "عن أنس -رضي الله عنه - قال احتجم رسول الله ﷺ فصلى ولم يتوضأ ولم يزد على غسل محاجمه ."(۵)

" یہ روایت ضعیف ہے؛ کیونکہ حافظ ابن حجر رحمہ اللہ نے لکھا ہے کہ اس کی سند میں

۱۔ تعلیق ظفر الامانی بشرح سید شریف الجرجاني: ص۱۸۲
۲۔ الكفايه في معرفة اصول الرواي: ۱/۳۹۸
۳۔ المنتقی: ۱/۱۳۳رقم الحدیث: ۱۹۰
۴۔ المنتقی: ۱/۱۳۳رقم الحدیث: ۱۹۰
۵۔ حوالہ سابق: ۱/۱۵۶رقم الحدیث: ۲۴۱

صالح بن مقاتل ہے اور یہ ضعیف ہے، اور امام نووی رحمہ اللہ نے ان کو ضعفاء میں شمار کیا ہے"۔حوالہ بالا

(۳) "عن أبي سعيد ـ رضي الله عنه ـ قال: اشتريت كبشاً أضحي به فعدا الذئب فأخذ الإلية قال: فسئل عن النبي ﷺ ؟ فقال ضَحِّ به ."(۱)

(ترجمہ): "یہ روایت بھی ضعیف ہے؛ وجہ اس کی یہ ہے کہ اس کے سند میں ایک راوی جابر الجعفی ہے جو نہایت ضعیف ہے، امام نسائی رحمہ اللہ علیہ نے ان کے بارے میں لکھا ہے کہ یہ متروک ہے، امام بخاری رحمہ اللہ علیہ نے ان کے بارے میں کہا ہے کہ یہ متہم بالکذب ہے"۔حوالہ بالا

(۴) المحلی بالآثار

(۱) "عن زينب بنت جابر الأحمية أن رسول الله ﷺ قال لها في امرأة حجت معها مصمة: قولي لها تتكلم، فإنه لا يحتج لمن لم يتكلم ." (۲)

اس روایت پر شیخ ناصر الدین البانی صاحب تبصرہ کرتے ہوئے رقمطراز ہیں: (۳)

(ترجمہ): "یہ روایت ضعیف ہے؛ اس لئے کہ اس کی سند میں عبد السلام اور ان کے والد عبد اللہ بن جابر ہیں جن کے بارے میں ابن قطان رحمہ اللہ علیہ نے یہ تصریح کی ہے کہ یہ دونوں غیر معروف ہیں"۔

---

۱۔ حوالہ سابق: ۳۶۱/۲ رقم الحدیث: ۱۱۲۱

۲۔ المحلی بالآثار: ۲۰۸/۵

۳۔ سلسلة الأحاديث الضعيفة والموضوعة وأثرها السيئ في الأمة: ۱۵۷/۳ رقم الحدیث: ۱۰۴۲

چنانچہ اسی منہج کو امام ابن تیمیہ، امام ابن قیم، حافظ ابن صلاح، امام نووی، حافظ عراقی، حافظ ابن حجر، حافظ سخاوی اور حافظ سیوطی رحمہم اللہ وغیرہ حضرات نے اپنایا ہے اور اپنی کتابوں میں ان ضعیف روایات کو درج کیا ہے۔

یہی وجہ ہے کہ آداب واخلاق، زہد ورقائق اور فضائل وترغیب وترہیب پر تصنیف کا سلسلہ دوسری صدی ہجری: جبکہ حدیث نبوی کی باضابطہ تدوین ابھی مکمل نہیں ہوئی تھی شروع ہو گیا تھا، اور آج تک قائم ودائم ہے۔

## فضائل وترغیب وترہیب پر لکھی جانے والی کتابیں:

(۱) كتاب الزهد للإمام عبد الله بن مبارك (المتوفى ١٨١ھ)، تحقيق: حبيب الرحمان الأعظمي، ناشر دار الكتب العلميه بيروت لبنان

(۲) كتاب الدعاء للإمام محمد بن فضيل الكوفي (المتوفى ١٩٥ھ)، تحقيق :عبد العزيز بن سليمان بن ابراهيم، ناشر مكتبة الرشد الرياض، طبع اول ١٤١٩ھ

(۳) كتاب الزهد للإمام هناد بن سري الكوفي (المتوفى ٢٤٣ھ)، تحقيق: عبد الرحمان بن عبد الجبار، ناشر دار الخلفاء كويت، طبع اول ١٤٠٦ھ

(٤) الأدب المفرد للإمام البخاري (المتوفى ٢٥٦ھ)، تحقيق و تخريج : الشيخ ناصر الدين الألباني ، ناشر مكتب المعارف الرياض، طبع اول ١٤١٩ھ۔

(٥) كتاب الزهد للأمام أبو بكر أحمد بن عمرو ابن أبي عاصم الشيباني (المتوفى ٢٨٧ھ)، تحقيق:عبد العلي عبد الحميد حامد، ناشر دار الريان قاهره، طبع دوم ١٤٠٨ھ

(٦) فضائل القرآن للإمام أبو بكر جعفر بن محمد بن الحسن الفريابي (المتوفی سنہ ٣٠١ھ)، تحقيق: يوسف عثمان فضل الله جبريل، طبع اول سنہ ١٤٠٩ھ

(٧) فضائل القرآن للإمام أحمد بن شعيب النسائي (المتوفی سنہ ٣٠٣ھ)، تحقيق: فاروق حماد، ناشر الدار البيضاء دار الثقافه، طبع اول سنہ ١٤٠٠ھ

(٨) كتاب الدعاء للإمام الطبراني (المتوفی سنہ ٣٦٠ھ)، تحقيق: مصطفى عبد القادر عطا، ناشر دار الكتب العلميه، طبع اول سنہ ١٤١٣ھ

(٩) كتاب عمل اليوم والليلة للإمام ابن السني (المتوفی ٣٦٤ سنہ)، تحقيق: كوثر البرني، ناشر دار القبله جده

(١٠) كتاب الترغيب في الدعاء، للإمام أبو محمد عبد الغني بن عبد الوحد المقدسي المتوفی سنہ ٤٠٠ھ، تحقيق: فواد احمد مرلي، ناشر دار ابن حزم، طبع اول سنہ ١٤١٤ھ

(١١) فضائل الأوقات للإمام البيهقي (المتوفی سنہ ٤٥٨ھ)، تحقيق: عدنان عبد الرحمان مجيد القيسي، ناشر مكتبة المناره مكة المكرمه، طبع اول، سنہ ١٤١٠ھ

(١٢) كتاب الزهد الكبير للإمام البيهقي، تحقيق: عامر أحمد حيدر، ناشر موسسة الكتب الثقافيه بيروت، طبع سوم سنہ ١٩٩٦ء

(١٣) كتاب الزهد والرقائق أبو بكر أحمد بن علي خطيب البغدادي المتوفی ٤٦٣ھ، تحقيق: عامر حسن صبري، ناشر دار البشائر الاسلامي بيروت، طبع اول سنہ ١٤٢٠ھ

(۱۴) كتاب الترغيب و الترهيب للحافظ عبد العظيم بن عبد القوي المنذري (المتوفى سنه ٦٥٦ ه)، إبراهيم شمس الدين، ناشر دار الكتب العلميه، طبع اول ١٤١٧ ه

(١٥) كتاب الأذكار للإمام النووي (المتوفى ٦٧٦ه، تحقيق د: حامد محمد الطاهر، نا شر دار الفجر للتراث قاهره.

چنانچہ اس موضوع پر لکھی جانے والی کتابوں کی فہرست بہت طویل ہے، اس لئے بطور مثال چند کتابوں کے نام لکھے گئے، تا کہ ہر ذی فہم آدمی بآسانی یہ سمجھ سکے کہ اس موضوع کو کتنی اہمیت دی گئی ہے اور ان ضعیف روایات پر کس قدر اہتمام سے عمل ہوا ہے۔

## کیا حدیثِ ضعیف کو صیغہ تمریض سے بیان کرنا ضروری ہے؟:

مذکورہ ابحاث کے بعد یہ مسئلہ بالکل واضح ہو جاتا ہے کہ ضعیف الاسناد روایات کے ساتھ حضرات فقہاء ومحدثین کا معاملہ کیسا رہا ہے، چنانچہ یہی وجہ ہے کہ صیغہ تمریض کا لحاظ بھی عموماً نہیں رکھا گیا، جس کے بارے میں حافظ ابن الصلاح رحمہ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

"إذا أردت رواية الحديث الضعيف بغير إسناد فلا تقل فيه: قال رسول الله ﷺ كذا و كذا، وما أشبه هذا من الألفاظ الجازمة بأنه ﷺ قال ذلك، وإنما تقول فيه: روي عن رسول الله ﷺ كذا و كذا، أو بلغنا عنه كذا و كذا، أو ورد عنه، أو جاء عنه، أو روى بعضهم، وما أشبه ذلك."(1)

(ترجمہ): "جب ضعیف حدیث بغیر سند کے بیان کرنے کا ارادہ ہو تو یوں نہ کہو کہ آپ ﷺ نے اسی طرح فرمایا ہے، اور اسی طرح اس کے مشابہ جو جزم والے الفاظ ہیں۔

---

۱۔ معرفۃ انواع علم الحدیث: ص ۲۱۱

(جیسے قال أو روىٰ وغیرہ) کہ آپ ﷺ نے یوں فرمایا ہے، بلکہ یوں کہو کہ آپ ﷺ سے یوں مروی ہے، یا آپ ﷺ سے ہم تک یوں پہنچی ہے، یا آپ ﷺ سے اسی طرح نقل ہوئی ہے، یا آپ ﷺ سے یوں آئی ہے، یا بعض نے روایت کیا ہے، اوراسی طرح جو الفاظ صیغہ تمریض کے مشابہ (جیسے قیل ،روي) ہیں"۔

یہاں یہ بات واضح رہے کہ یہ حکم بناء براحتیاط ہے جو ضعیف کی دونوں قسموں کو شامل ہے، خواہ اس کا تعلق احکام سے ہو یا فضائل سے ہو۔

چنانچہ علامہ زرکشی رحمہ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

"ماذكر من أنه لايجوز رواية الضعيف إلا بصيغة التمريض شامل للضعيف الذي يمتنع العمل به ، وهو الأحكام ، والذي شرع العمل به، وهو في الفضائل، وهو الظاهر ، ومن الناس من جزم بقال في الضعيف إذا كان من فضائل الأعمال ، والأحوط المنع."(۱)

(ترجمہ): "اوپر جو کہا کہ ضعیف روایت کو صرف تمریض کے صیغے کے ساتھ ہی روایت کیا جائے یہ اس ضعیف کو بھی شامل ہے، جس پر عمل نہیں کیا جاتا، اور وہ احکام میں وارد ہونے والی ضعیف احادیث ہیں، اور اس ضعیف کو بھی شامل ہے جو فضائل میں وارد ہوتی ہے، جس پر عمل کرنا جائز ہے، البتہ بعض لوگ تساہل کا شکار ہو کر فضائل میں وارد ہونے والی ضعیف احادیث کو بھی صیغہ جزم سے نقل کر دیتے ہیں، حالانکہ احتیاط یہی ہے کہ ایسا نہ کیا جائے"۔

حضرات محدثین کرام کا یہ کہنا کہ ضعیف حدیث کو بیان کرتے ہوئے جزم کے صیغے استعمال نہ کئے جائیں یہ اس وجہ سے ہے کہ ضعیف حدیث کا ثبوت جس سند سے ہوتا ہے، وہ فن اصول

۱۔ النکت علی مقدمۃ ابن الصلاح: ص ۲۴۸، ۲۴۹

حدیث کے مطابق اس بات کی مقتضی ہے کہ اس حدیث کا انتساب رسول اللہ ﷺ کی جانب جزم کے صیغوں سے نہ ہو اور احتیاط اسی میں ہے کہ اس کا لحاظ رکھا جائے، لیکن اس کے باوجود اگر ضعیف حدیث کو صیغہ جزم سے نقل کیا گیا تو یہ خلافِ احتیاط ہوگا، یہی وجہ ہے کہ حضرات محدثین اور فقہاء نے اس قاعدے پر بعض مرتبہ عمل نہیں کیا اور احادیثِ ضعیفہ کو صیغہ جزم ہی سے نقل کیا ہے، یہ تعامل خود اس بات کی طرف مشیر ہے، کہ صیغہ جزم سے ضعیف حدیث کو نقل کیا جا سکتا ہے تاہم احتیاط اسی میں ہے کہ اس امر کو ملحوظ خاطر رکھا جائے۔

## حدیث ضعیف اور موضوع میں فرق کی دس وجوہات:

ماقبل میں جتنی بھی بحثیں گزری ہیں ان تمام سے یہ امر بالکل واضح ہو چکا ہے کہ ضعیف اور موضوع کے درمیان ادنیٰ سی بھی مناسبت نہیں، لہٰذا ان دونوں کو ایک ساتھ ذکر کرنا کسی طرح بھی جائز نہیں، اس کے علاوہ اور بھی امتیازات (جو ان دونوں کے درمیان ہے) ذکر کیے جاتے ہیں تا کہ بات اچھی طرح واضح ہو جائے اور سمجھنے والا اس کو بآسانی سمجھ سکے۔

(۱) حدیثِ ضعیف اور موضوع میں پہلا فرق یہ ہے کہ حدیثِ ضعیف کی نسبت حقیقت میں رسول اللہ ﷺ کی طرف ہوتی ہے (اگرچہ اس کو رواۃ کے حالات کے غیر موافق ہونے کی وجہ سے ضعیف کہا جاتا ہے) برخلاف روایتِ موضوع کے کہ اس کی نسبت حقیقتاً رسول اللہ ﷺ کی طرف نہیں ہوتی، اولاً تو اس کی نسبت رسول اللہ ﷺ کی طرف کر دی جاتی ہے مگر جانچ پڑتال کے بعد اس کا موضوع ہونا ثابت ہو جائے تو اس کو من گھڑت قرار دیکر اس کے اصل قائل کی طرف منسوب کر دیا جاتا ہے؛ لہٰذا ان دونوں کے ساتھ ایک جیسا معاملہ کرنا اور دونوں کو ایک ہی حکم کے تحت داخل کرنا صحیح اور جائز نہیں ہے۔

(۲) دوسرا فرق یہ ہے کہ حدیثِ ضعیف کے ضعف کا سبب سند میں کسی راوی کا ساقط ہو جانا ہے، یا پھر کسی راوی سے بشری غلطی کا صادر ہو جانا ہے، (جو انسانی فطرت میں سے ہے) جیسے حافظہ کا خراب ہونا، یا کمزور ہونا، یا اوہام کا شکار ہونا، وغیرہ، بخلاف موضوع روایت کے کہ اس

کے ترک کرنے کا سبب کذب ہے اور پھر اس کذب کو رسول اللہ ﷺ کی طرف منسوب کرنا ہے جو ایک ناجائز اور حرام عمل ہے۔

(۳) تیسرا فرق یہ ہے کہ حدیث ضعیف کے جواز روایت پر امت کا اجماع ہو چکا ہے، یہی وجہ ہے کہ اکثر محدثین نے روایات ضعیفہ کو اپنی کتابوں میں جمع کر دیا ہے، حتی کہ جنہوں نے صحت کا التزام کیا ہے انہوں نے بھی ضعیف احادیث کو لیا ہے، بخلاف موضوع روایات کے کہ ان کو مطلقاً بیان کرنا جائز نہیں ہے بلکہ ان کے من گھڑت ہونے پر آگاہ کرنا ضروری ہے، تاکہ لوگ ان سے بچ سکے۔

(۴) چوتھا فرق یہ ہے کہ علماءِ امت نے فضائل اور ترغیب وترہیب میں احادیث ضعیفہ پر عمل کرنے کو بالا جماع جائز قرار دیا ہے، بخلاف روایات موضوعہ کے کہ وہ فضائل میں بھی قابل عمل نہیں ہیں بلکہ علماء نے دین کے کسی بھی باب میں ان جیسی روایات پر عمل کو حرام قرار دیا ہے۔

(۵) پانچواں فرق یہ ہے کہ ماہرین علماءِ فن کا احادیث ضعیفہ کے، فضائل، رقائق، ترغیب و ترہیب میں قابل عمل ہونے پر کوئی اختلاف نہیں، بخلاف روایاتِ موضوعہ کے کہ ان کو موضوع (گھڑا ہوا ہونا) بتائے بغیر نقل کرنا بھی جائز نہیں عمل کرنا دور کی بات ہے!۔

(٦) چھٹا فرق یہ ہے کہ حدیث ضعیف کو نقل کرنا اور اس پر عمل کرنا، یہ صحابہ کرام (رضوان اللہ تعالی علیہم) خیر القرون کے زمانے کے علماء سے لے کر آج تک ایک اتفاقی اور اجماعی مسئلہ رہا ہے؛ البتہ موضوع روایت پر کسی نے بھی عمل نہیں کیا ہے؛ کیونکہ اس پر عمل کرنا حرام اور ناجائز ہے۔

(۷) ساتواں فرق یہ ہے کہ اگر حدیث ضعیف سے استدلال نہ کیا جائے تو اس سے جمیع علماء امت کی مخالفت کرنا لازم آئے گا، بلکہ ایک قسم کا ان میں طعن ہوگا؛ کیونکہ انہوں نے اس درجہ کی روایات کو اپنی کتابوں میں صحیح اور حسن درجہ کی روایات کے ساتھ جمع کیا ہے، اور ان کے ضعف کو بھی بیان نہیں کیا ہے باوجود اس کے کہ وہ لوگ بہت زیادہ محتاط اور تقوی وورع والے تھے، اور

ہم سے کہیں زیادہ خدا تعالی سے ڈرنے والے، اور دین کا درد رکھنے والے اور اسی پر حریص تھے
ہاں روایاتِ موضوعہ کے کہ ان پر عمل نہ کرنے کی صورت میں اس قسم کی کوئی خرابی لازم نہیں آتی۔

(۸) آٹھواں فرق یہ ہے کہ اگر حدیثِ ضعیف اور موضوع کو ایک ہی لڑی میں پرو دیا جائے اور دونوں کے ساتھ ایک ہی معاملہ کیا جائے تو اس سے جمیع امت محمدیہ جو کہ نمونہ امم ہے، کی مخالفت لازم آئے گی جنہوں نے روایت کرنے کے ساتھ ساتھ اس پر عمل بھی کیا ہے، حالانکہ شارع علیہ الصلاۃ والسلام نے غیر مؤمنین کے راستے پر چلنے سے اور اسی طرح طریق شذوذ اختیار کرنے سے منع فرمایا ہے۔

(۹) نواں فرق یہ ہے کہ حضرات محدثین کرام نے حدیثِ ضعیف کے ضعف کو بیان کرنے میں تساہل کو جائز قرار دیا ہے، برخلاف موضوع روایت کے کہ اس کے موضوع ہونے کو بیان کیے بغیر اسے روایت کرنے سے منع کیا ہے۔

(۱۰) دسواں فرق یہ ہے کہ فقہاء کے نزدیک کسی مسئلہ میں حدیثِ ضعیف سے استدلال کرنا بنسبت قیاس کے زیادہ بہتر سمجھا جاتا ہے، اس لئے کہ یہاں ایسا قرینہ پایا جاتا ہے جو اس بات پر دلالت کرتا ہے کہ اس قول کی نسبت شارع علیہ الصلوۃ والسلام کی طرف کی جاتی ہے، برخلاف روایاتِ موضوعہ کے کہ ان سے کسی صورت میں بھی استدلال درست نہیں ہے۔ [1]

حاصل یہ کہ موضوع اور ضعیف کے درمیان اتنے واضح اور کثیر فروق کے بعد بھی دونوں کو آپس میں خلط ملط کرنا بہت ناانصافی ہے، اور تحقیق سے عدم مناسبت کی دلیل ہے، کاش! کہ شیخ ناصر الدین البانی صاحب اپنی تصانیف میں حکم لگانے میں صرف اس شدید ضعیف حدیث "کہ جس کا تدارک ممکن نہ ہو" اور موضوع پر اکتفاء کر لیتے تو کیا ہی اچھا ہوتا!! مگر موصوف کا ان تینوں کو (یعنی موضوع، ضعف شدید، اور ضعف خفیف) ایک ہی درجہ دینا بہت بڑی اور صریح غلطی ہے جس سے صرف نظر نہیں کیا جا سکتا!

---

۱۔ ملخص خطورۃ مساواۃ الحدیث الضعیف بالموضوع: ص ۱۰۵۔۱۰۸

باب ثالث:

# ضعیف حدیث کے بارے میں منفی پہلو

تمہید:

سنن کا ایک بہت بڑا ذخیرہ ہے جسے حضراتِ محدثین ضعف سے موسوم کرتے ہیں۔اس ضعف کا منشاء یہی ہے کہ اس سند میں بعض راوی ناقدینِ امت کے نزدیک صحت کے معیار پر پورے نہیں اترتے۔

چنانچہ ان احادیث کے بارے میں محدثین کا ہمیشہ سے ایک معتدل ومحتاط موقف رہا ہے۔ اس کے دائرہ کار کو صرف اعمال کی ترغیب اور منہیات سے تنبیہ تک محدود رکھا گیا۔

اس مقدماتی زاویے میں احادیثِ ضعیفہ کو خاص فنی انداز سے قابل عمل سمجھا گیا ہے علما متقدمین ومتاخرین اس پر متفق نظر آتے ہیں۔

البتہ احکام وعقائد میں احادیثِ ضعیفہ کو درخور اعتناء نہیں سمجھا گیا، ہاں اگر قرائن، حدیث کے ضعف کو تقویت سے بدل دیں تو وہ احکام میں بھی حجت بن سکتی ہیں۔

بہر حال مذکورہ خلاصہ کے بعد ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ محض سند میں کسی راوی کا ضعف شریعت کے اتنے بڑے ذخیرے کو بیکار بنانے کے لئے کافی نہیں ہے؛ کیونکہ ضعاف کا مجموعہ ترغیب وترہیب میں خود ایک قوی دلیل ہے۔

البتہ احکام کی تعیین میں حسن وصحیح جیسی روایات سے ان ضعاف کا تقابل وتعارض بھی نہیں کیا جائے گا بلکہ قابلِ عمل صرف صحاح وحسان ہی ہونگیں۔

ناقدینِ امت نے شریعتِ مطہرہ کی جو حد بندی فرمائی ہے اس میں نہ تو خس وخاشاک کی گنجائش رہتی ہے اور نہ ہی مقصوداتِ شریعت میں کوئی تقصیر واقع ہوتی ہے۔ بالفاظ دیگر دقیق مقبول فنی معیار کے مطابق انہوں نے ذخیرہ احادیث میں ایک مجموعہ کو ضعاف کہا جو کہ ترغیب وترہیب

کے پہلو سے مطلوب ہے اور ایک مجموعہ کو موضوع قرار دیا، جس کی شریعت میں کوئی حیثیت نہیں ۔یہی وہ حد بندی ہے جو " بینهما برزخ لا یبغیان " کا مصداق ہیں۔اور جس طرح موضوعات پر عمل اور ان سے حجت ان حدود سے تجاوز ہے،اسی طرح ان ضعاف احادیث کو موضوعات کا مرتبہ دیکر بالکل ساقط الاعتبار کر دینا بھی حدود مطلوبہ سے کوسوں دوری ہے۔

ہمارے زمانے کا ایک طبقہ اسی افراط وتفریط کا شکار اور حدود و معیار شریعت سے بالکل بے نیاز نظر آتا ہے حتی کہ "کتب سنن" کو بھی دو حصوں میں بانٹ دیا "صحیح سنن ابی داؤد، ضعیف سنن ابی داؤد، صحیح جامع الترمذی، ضعیف جامع الترمذی، " ھلم جراً "۔صدیوں سے ائمہ کرام اپنی کتابوں میں گزشتہ ذکر کردہ منہج کے پابند رہے ہیں کیا اس تقسیم کے بعد اسلاف پر اعتماد برقرار رہتا ہے؟۔افسوس تو یہ ہے کہ ان تمام عنوانات میں "ضعیف" سے مراد ایسی احادیث ہیں جو بالکل ساقط الاعتبار اور ناقابل التفات ہیں۔

چنانچہ صحیح منہج وہی ہے جو پہلے بیان کر دیا گیا ہے کہ ناقدین امت نے صحاح وحسان ضعاف، موضوعات کو نہ صرف متعین کیا ہے بلکہ اس سے بڑھ کر ان تمام احادیث کے عملی مقام کو بھی واضح کیا ہے۔

اس عملی مقام کو ان تمام تر اصطلاحات میں ملحوظ رکھنا "اعتدال" اور "راستی" ہے۔"افراط و تفریط" کی روش انسان کو معیار حق سے کوسوں دور لے جاتی ہے۔

## فصل اول:

## فضائل اعمال، ترغیب وترہیب کی کتابوں پر اعتراض واشکالات کا جائزہ

اللہ تعالی نے ان کتب فضائل، ترغیب وترہیب کو وہ مقبولیت عطا فرمائی کہ محتاج بیان نہیں، اور موافق ومخالف ہر ایک کو تسلیم ہے کہ کوئی بھی دینی کتاب ( کلام اللہ شریف کے علاوہ) اس کثرت سے نہیں پڑھی جاتی، جیسے یہ کتب ورسائل پڑھے اور سنے جاتے ہیں۔

دنیا کی روایت ہے کہ ہر پھل دار درخت پر ڈھیلے مارے جاتے ہیں، سورج جو اپنی بھرپور ضیا پاشی سے عالم کو منور کرتا ہے، چشم کے لئے اس کی تابانی یکسر ناقابل برداشت ہوتی ہے، چنانچہ ان کتبِ فضائل، ترغیب و ترہیب پر بھی مختلف حلقوں کی جانب سے اعتراضات کی بوچھاڑ ہوئی، طرح طرح کی نکتہ چینیاں کی گئیں، ہمیں اس حقیقت سے قطعاً انکار نہیں کہ روئے زمین پر خدا کی کتاب کے علاوہ کوئی کتاب نقص و خلل سے محفوظ نہیں، بڑے بڑے اصحاب علم سے ان کی گراں قدر تصنیفات میں کچھ نہ کچھ فروگزاشتیں ہوئی ہیں۔ کتب کی مجموعی خوبیوں کے مقابلہ میں وہ کچھ حیثیت نہیں رکھتیں ہیں، اور نہ ہی علمی حلقوں نے انہیں کوئی حیثیت دی ہے۔

یہاں پر اس بات کی وضاحت کرنی بھی ضروری ہے کہ ان کتابوں کے نقاد عموماً وہ لوگ ہیں جو مسلکی اختلاف رکھتے ہیں، کینہ، بغض، حسد نے انہیں دوآتشہ بنادیا ہے۔ چنانچہ ان کی تنقیدوں کا مدار عقلیت پسندانہ رجحان ہے۔ نصوصِ حدیث کو اپنی نام ونہاد عقل سلیم کے خلاف قرار دے کر یا اپنی عقل نارسا کے بموجب قرآن سے معارض قرار دیتے ہوئے ٹھکرادینے کے قائل ہیں، خواہ ثبوت واستناد کے اعتبار سے ان کی حیثیت کتنی ہی مضبوط ہو، اور خواہ علماءِ امت نے اس کی کتنی ہی معقول توجیہات بیان کی ہوں۔

آج کی دنیا پروپیگنڈے کی دنیا ہے پروپیگنڈے کے زور سے سیاہ کو سفید بنانا کوئی مسئلہ ہی نہ رہا، اہلِ علم کے نزدیک یہ تنقیدیں شکوک وشبہات وسوسے، اور اوہام کی نشرواشاعت کے علاوہ کوئی حیثیت نہیں رکھتیں۔

جب ایک سادہ لوح قاری کے پاس یہ شکوک وشبہات ”علمی نقد“ کی صورت میں پیش ہوں تو وہ یقیناً غلط فہمی کا شکار ہوگا اور ناقدین کا مقصد بھی سوائے اس کے اور کچھ نہیں۔

کتبِ فضائل پر اشکالات واعتراضات، علمی میدان میں تحقیق اختلاف کا نتیجہ نہیں ہیں؛ بلکہ یہ اختلاف خاص اہداف کے لئے پیش خیمہ ہوتا ہے۔ عامۃ الناس کے سامنے تحقیق کے خوبصورت لیبل کے ساتھ اس کو پیش کیا جاتا ہے اور نصوص کی ملمع سازی بروئے کار لاکر عوام کی سطح ذہنی سے

فائدہ اٹھایا جاتا ہے ۔ تاکہ انہیں اپنے اہداف اور موقف کی جھوٹی سچائی پر اطمینان دلایا جاسکے۔مزید برآں ان کی سینہ زوری دیکھئے! اپنے شاذ موقف کو علماء امت کا متفقہ مذہب قرار دیتے ہیں!۔

بہر حال! حاصل یہ ہے کہ یہ ''تحقیق'' کے نام پر ایک ''مشنری منہج'' ہے، جسے اختلافِ محض کہ کر نظر انداز نہیں کیا جاسکتا کیونکہ اس ''منہج'' کی ضربیں اسلامی بنیادوں پر پڑ رہی ہیں۔اور یہ حضرات کسی بھی طرح اپنی ذات مقدسہ کو متقدمین علماء سے کم نہیں سمجھتے بلکہ اپنی کھوکھلی تحقیقات کی زد میں اسلافِ امت پر بے اعتمادی کا ایسا ماحول قائم کرتے ہیں کہ خدا کی پناہ! ایسا لگتا ہے کہ شریعت کی ازسر نو تشکیل وتہذیب کی ضرورت ہے، تاکہ سابقہ ''گمراہیوں'' اور ''خس وخاشاک'' سے اسے پاک کردیا جائے ،اور اس ہدف کے حصول میں معاصرین میں سے جو آڑے آئے ان کے خلاف پروپیگنڈے، اوہام اور تشکیک کی ایسی فضاء بنائی جاتی ہے کہ ان کو سانس لینا مشکل ہو جاتا ہے۔

## فصل دوم:

## ضعیف حدیث کے بارے میں منفی رویوں کا تنقیدی جائزہ

یہ ایک اٹل حقیقت ہے کہ جمہور فقہاء ومحدثین حدیثاً وقدیماً فضائل میں ضعیف احادیث سے برابر استدلال کرتے رہے ہیں، مگر ایک عرصہ سے ضعیف الاسناد احادیث کو نا قابل اعتبار قرار دینے کے لئے نت نئے دلائل پیش کئے جاتے ہیں، اور یہ پروپیگنڈہ کیا جارہا ہے کہ ضعیف الاسناد احادیث مردود ہیں ان پر عمل کرنا درست نہیں۔

یہ علمی دنیا میں ایک نیا فتنہ ہے۔نام نہاد سلفیت خصوصاً البانیہ سے تعلق رکھنے والے شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ نے اس کی خوب آبیاری کی ،اور ان کے شاگردوں اور شیخ کی فکر سے متاثر دوسرے لوگوں نے اس کو عام کردیا۔

جیسا کہ: امام بخاری، امام احمد، امام ابن معین، امام ابوحاتم رازی، وغیرہ رحمہم اللہ۔ یہ ایک

یہ رویہ حدیثِ نبوی سے تعلق ومحبت کے بالکل خلاف ہے جس کے نتائج نہایت خطرناک ہیں، اس سے نہ صرف یہ کہ سلف سے بداعتمادی پیدا ہوتی ہے جن کا ضعیف احادیث کے بارے میں مثبت رویہ تھا بلکہ خود روایات نبویہ ہی کے ایک بڑے ذخیرے پر ہاتھ صاف کئے جانے کے مترادف ہے۔

جہالت اور علمی انحطاط کا یہ عالم ہے کہ اس ضعیف مسلک کو علم و تحقیق ہی کے نام پر بڑے زور وشور سے پیش کیا جاتا ہے!

چنانچہ شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

”من المصائب العظمى التي نزلت با لمسلمين منذ العصور الأولى، انتشار ا لأحاديث ا لضعيفة و الموضو عة بينهم، لا أستثني أحدا منهم ، ولو كا نوا علماء هم ،إلا من شا ء ا لله، منهم من أئمة الحديث و نقاده ؛كا لبخاري ، و أحمد،و ابن معين،وأبي حاتم الرازي، وغيرهم.وقد أدى انتشا رها إلى مفا سد كثيرة : منها : ما هومن ا لأمور الاعتقادية الغيبية ، و منها: ما هو من ا لأمور التشريعية، وسيرى ا لقاري الكريم ا لأمثلة ا لكثيرة ، لما ندعيه في كثير من ا لأحاديث ا لآتية إن شاء ا لله تعا لى . “ (۱)

(ترجمہ): ”ضعیف اور موضوع احادیث کا اسلامی معاشرے میں رواج پانا ان چند بڑے مصائب میں سے ایک ہے جن کا شکار قرون اولی ہی سے مسلمان ہوتے چلے آرہے ہیں! اور میں (یعنی البانی) مسلمانوں میں سے کسی ایک کو بھی ایسا نہیں سمجھتا جو اس مصیبت کا شکار نہ ہوا ہو، یہاں تک کہ اہل علم بھی اس سے مستثنیٰ نہیں، سوائے ان چند ائمہ حدیث اور نقادین (احادیث کو پرکھنے والے) کے جو اس فتنے کا شکار نہیں ہوئے، اور اللہ تعالی نے ان کی اس سے حفاظت فرمائی،

۱۔ سلسلة الأحاديث الضعيفة والموضوعة وأثرها السيء في الأمة: ۱/۴۷

اٹل حقیقت ہے کہ ضعیف اور موضوع احادیث کا مسلمانوں میں رواج پانا کئی مفاسد کو جنم دیتا ہے، جن میں سے بعض کا تعلق اعتقادی امور سے ہے، اور بعض کا تشریعی امور سے، چنانچہ میرے اس دعوے کی حقیقت آنے والی احادیث کی مثالوں کو ملاحظہ کرنے سے آشکارا ہو جائے گی''۔

شیخ ناصر الدین البانی صاحب نے اپنی اس عبارت میں موضوع روایات کے ساتھ ضعیف الاسناد احادیث کو بھی نشانہ بنایا اس پر طرفہ تماشہ یہ کہ شیخ موصوف اقرار کر رہے ہیں کہ ''ضعیف الاسناد احادیث کا چرچا قرون اولی سے چلا آ رہا ہے'' اور بقول ان کے اس ''کارخیر'' میں اس وقت کے اہل علم بھی برابر کے شریک تھے! ان کے بقول صرف چند ناقدین ہی اس سے مستثنی ہیں ،موصوف بھول گئے کہ جس چیز کا رواج قرون اولی سے ہو، اور اہل علم بھی اس پر عمل پیرا رہے ہوں ! اس کے بارے میں مثبت خیال کر لینا چاہئے تھا ! ضعیف الاسناد احادیث کو موضوع روایات کے ساتھ خلط ملط کر کے رد کرنے کی موصوف کی یہ روش بہت ہی نا مناسب ہے !موصوف جن حضرات محدثین کو مستثنی قرار دیتے ہیں خود ان کی اپنی کتابوں میں ضعیف الاسناد احادیث بطور استدلال واستشہاد مذکور ہیں! جن کو موصوف نے تختہ مشق بنا کر دو ٹکڑوں میں تقسیم کر دیا ہے۔

۔شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ نے ضعیف حدیث کے ساتھ جو رویہ رکھا وہ ان کے پیروکاروں کے ہاں بحث وتحقیق کا انتہائی اعلی درجہ سمجھا جاتا ہے۔

اس لئے وہ اپنی تحقیق وتالیف میں تقریباً وہی باتیں دہراتے ہیں جن کا ذکر شیخ موصوف اپنی کتابوں میں کر چکے ہیں ان کے دائرہ سے نکلنا گویا ایک قسم کا ابتداع یا ارتداد مسلکی خیال کرتے ہیں۔

چنانچہ ''الحدیث الضعیف وحکم الاحتجاج بہ''، ''المجموعۃ فی الاحادیث الضعیفہ والموضوعہ'' اور ''حدیث کی اہمیت اور ضرورت'' نامی کتابوں میں جمہور کے مسلکِ منصور کے برخلاف شیخ ناصر الدین البانی صاحب کے موقف کی ترجمانی کی گئی ہے۔

مذکورہ کتابوں میں سے صرف ایک کتاب پر ہم مختصر سا تبصرہ کرینگے۔

## کتاب ''الحدیث الضعیف وحکم الاحتجاج بہ'' پر ایک نظر:

گزشتہ سالوں میں ضعیف حدیث کے موضوع پر ڈاکٹر عبدالکریم خضیر کی " الحدیث الضعیف و حکم الاحتجاج بہ '' نام سے ایک کتاب منظر عام پر آچکی ہے جو موصوف کا ابن سعود یونیورسٹی سے ایم فل کا مقالہ ہے۔اس مقالہ میں موصوف نے مذکورہ بالا شخصیت ہی کے مسلک کو الفاظ و تعبیر کے

فرق کے ساتھ بیان کیا ہے تحقیق کے اصولوں کے برخلاف جو نظریہ پہلے سے موصوف طے کر چکے تھے اسی کو قوت بہم پہنچانے کے لئے بھرپور کوشش کی ہے۔

چنانچہ موصوف ایک جگہ لکھتے ہیں:

" الحدیث الضعیف لا یحتج بہ علی الاطلاق"(۱)

(ترجمہ): ''ضعیف روایت مطلقاً قابل عمل نہیں''۔

ضعیف الاسناد روایات کے بارے میں اس قدر سخت موقف کسی پیش رو نے اختیار نہیں کیا ہے موصوف کے مقالے کا عنوان ضعیف حدیث کے بارے میں لکھنے کا تھا اور موصوف نے حکم موضوع کا لکھ دیا! آخر تمام تر حضرات محدثین نے موضوع اور ضعیف نامی دو الگ الگ اصطلاحات کا استعمال کیوں کیا؟ جس کو اب خضیر صاحب ایک بنا کر پیش کر رہے ہیں۔

ادھر تو موصوف آپے سے باہر نکل کر ضعیف و موضوع کو ایک صف میں کھڑا کر رہے ہیں جبکہ دوسری جگہ وہ خود اپنے خلاف دلیل دیتے ہوئے لکھتے ہیں:

"أنهم قد يروون عن الضعفاء أحاديث الترغيب و الترهيب، وفضائل الأعمال و القصص و أحاديث الزهد ومكارم الأخلاق و نحو ذلك مما لا يتعلق بالحلال و الحرام و سائر الأحكام، و هذا الضرب من الحديث يجوز عند أهل الحديث و غيرهم التساهل فيه، و رواية

۱۔ (الحدیث الضعیف وحکم الاحتجاج بہ: ص۲۰۴

ماسوی الموضوع منه و العمل به ." (۱)

(ترجمہ) ''فقہاء و محدثین ترغیب و ترہیب، فضائلِ اعمال و قصص و مکارمِ اخلاق و زہد اور اس جیسے ابواب میں، جن کا تعلق حلال و حرام اور دیگر احکام سے نہ ہو، ضعیف راویان سے بھی روایت کرتے ہیں؛ اس قسم کی احادیث میں تساہل برتنا فقہاء اور محدثین سب کے نزدیک جائز ہے چنانچہ جب تک روایت موضوع نہ ہو اس حدیث کا روایت کرنا اور اس پر عمل کرنا جائز سمجھتے ہیں''۔ (جبکہ فرقہ البانیہ اس کے لئے تیار نہیں !!)

کس قدر افسوس کی بات ہے کہ! ایک جگہ علی الاطلاق اس کو موضوع کے ساتھ جوڑ رہے ہیں، پھر دوسری جگہ جمہور کا مسلک اس کے خلاف لکھ رہے ہیں جو بالکل واقعہ کے مطابق ہے، پھر شاذ لوگوں کی اتباع کرتے ہوئے جمہور سے انحراف کر کے یوں فیصلہ صادر فرما رہے ہیں۔

"أن الراجح هو التسوية بين أحاديث الأحكام و الفضائل" (۲)

(ترجمہ): ''راجح قول یہی ہے کہ ضعیف حدیث دونوں (یعنی احکام اور فضائل) میں قابل عمل نہیں ہے''۔

جب جمہور نے دوسرے قول کو ترجیح دی ہے، تو موصوف کو اس کے برخلاف ترجیح کا اختیار کس نے دیا ہے؟ دوسری جگہ موصوف نے یہ لچر لوچ دلیل دی ہے:

"لاتفاق علماء الحديث على تسمية الضعيف بالمردود" (۳)

(ترجمہ): ''ضعیف حدیث اس لئے مردود ہے کہ حضرات محدثین نے اس کو مردود کے نام سے موسوم کیا ہے''۔

---

۱۔ الحدیث الضعیف وحکم الاحتجاج بہ: ص ۳۴۲

۲۔ الحدیث الضعیف وحکم الاحتجاج بہ: ص ۳۴۲

۳۔ الحدیث الضعیف وحکم الاحتجاج بہ: ص ۲۹۹

لیکن سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ جن حضرات محدثین نے اپنی کتابوں میں ایک خاص ترتیب بیان کرنے کی پابندی کرتے ہوئے ضعیف الاسناد روایات کی تعریف اوراحکام، مردود کے عنوان کے تحت بیان کئے ہیں ضعیف کے ساتھ ان کا اپنا معاملہ کیا رہا؟ موصوف اس پر کچھ روشنی ڈال سکتے ہیں؟

ضعیف جب وجہ حصر بیان کرتے ہوئے صحیح کی قسیم بن جائے تو ظاہر بات ہے کہ مردود کے اقسام میں ہی اس کا ذکر کیا جائے گا مگر یہ مردود تو صحیح کے مقابلہ میں ہونے کی وجہ سے ہے، عملاً بھی مردود ہی کہا جائے۔ ایسا ہرگز نہیں۔

موصوف کا ایک طرف جمہور کا مسلک بیان کرکے اس کو مسترد کردینا اور پھر اس کے خلاف فیصلہ صادر فرمانا کس بات کی غمازی ہے؟ یہی کہ ان کے نزدیک جمہور علماء امت کے فیصلے پرکاہ کے برابر بھی حیثیت نہیں رکھتے! اور خود اپنا حال تو یہ ہے کہ تضاد در تضاد پر مبنی عبارات نقل کرتے چلے جارہے ہیں۔

چنانچہ ایک اور جگہ موصوف رقمطراز ہیں:

"ولیس معنی هذا ردّ الحدیث الضعیف بالکلیة ، بل یمکن أن یعمل به في غیر مجال الاحتجاج"(۱)

(ترجمہ): "اور اس کا یہ مطلب نہیں کہ ضعیف حدیث کلی طور پر مردود ہے، بلکہ مقام استدلال کے علاوہ اس پر عمل کرسکتے ہیں"۔

موصوف اپنی اس کتاب میں بہت تذبذب کا شکار نظر آتے ہیں۔

چنانچہ ایک اور جگہ موصوف یوں رقمطراز ہیں:

"أن ما نسب إلی جمیع الفقهاء من الاحتجاج بالضعیف في الأحکام لوجوده في کتبهم، غیر صحیح ؛ لوجود الأحادیث الموضوعة فیها، ولا قائل بالاحتجاج به "(۱)

---

۱۔ الحدیث الضعیف وحکم الاحتجاج بہ ص:۳۰۰

۲۔ الحدیث الضعیف وحکم الاحتجاج بہ:۴۰۵

(ترجمہ): ''تمام فقہاء کے بارے میں یہ کہنا کہ وہ احکام میں ضعیف روایت سے استدلال کے قائل ہیں کیونکہ ان کی کتابوں میں ضعیف روایات موجود ہیں درست نہیں، اس لئے کہ ان کی کتابوں میں تو موضوع روایات بھی ہیں اور اس کا کوئی بھی قائل نہیں کہ موضوع روایت سے استدلال کرنا درست ہے''۔

موصوف کی یہ دلیل ان کی کمزوری اور فہم وادراک سے دوری کو بتاتی ہے، کیونکہ موصوف کئی جگہ یہ اقرار کر چکے ہیں کہ حضرات فقہاء نے ضعیف روایت سے استدلال کیا ہے اور اس کی مثالیں بھی دی ہیں یہ مثالیں آپ کو کتاب میں جگہ جگہ ملیں گی اور اس بات کی بھی تصریح کر چکے ہیں کہ یہ ان حضرات کا نرا عمل ہی نہیں بلکہ مذہب بھی ہے۔

دوسری بات یہ کہ موضوع روایات کا ذکر نادانستہ ہے۔ موصوف یہ کبھی بھی ثابت نہیں کر سکتے کہ ان حضرات نے موضوع روایت سے عمداً (دیدہ دانستہ) استدلال کیا ہے اور اس طرح کا الزام موصوف کی حیثیت کو اور زیادہ مجروح کرتا ہے۔

اس کے باوجود محقق موصوف کا یہ تاویل کرنا کہ چونکہ یہ حضرات موضوع روایات کو بھی بسا اوقات مقام استدلال میں بیان کر جاتے ہیں اس لئے ضعیف کے ساتھ بھی مثبت تعامل سے اس کی حیثیت پر استدلال نہیں کیا جا سکتا کس قدر عجیب بات ہے۔

کیا موصوف عمداً (دیدہ دانستہ) کرنے اور خطاً (نادانستہ) کرنے میں بھی فرق نہیں سمجھتے؟

بریں عقل و دانست بباید گریست۔

موصوف ایک اور جگہ دادِ تحقیق دیتے ہوئے رقمطراز ہیں:

"أن التفريق بين الفضائل و الأحكام تفريق بين المتماثلات ؛إذ الكل شرع ، والشرع متساوي الأقدام "[1]

---

۱۔ الحديث الضعيف وحكم الاحتجاج به: ص ۴۰۵

(ترجمہ): ''فضائل اور احکام کے درمیان تفریق کرنا درحقیقت ایک ہی نوع سے تعلق رکھنے والی اشیاء میں تفریق کرنا ہے کیونکہ بات فضائل کی ہو یا احکام کی یہ سب شریعت کا حصہ ہے (چنانچہ شریعت میں درجہ بندی نہیں) بلکہ سب برابر ہیں''۔

یہ تو بالکل ایک واضح سی بات ہے جسے ایک ان پڑھ دیہاتی بھی سمجھتا ہے کہ شریعت کے تمام احکام برابر نہیں بلکہ اس میں درجہ بندی ہے خود حضرات محدثین کے ہاں متواتر، صحیح لذاتہ، صحیح لغیرہ، حسن لذاتہ، حسن لغیرہ وغیرہ اصطلاحات کا استعمال ہے، یہ صرف لفظی فرق نہیں بلکہ قوت استدلال وترجیح میں بھی بڑا فرق آتا ہے۔

کیا موصوف فضائل واحکام کے تاریخی واقعاتی فرق کو یکمشت نظر انداز کر کے عقیدہ، عبادات، معاملات وغیرہ میں بھی باہمی فرق رتبی کا انکار کرینگے؟ صرف اس وجہ سے کہ یہ سب ایک ہی شریعت کا حصہ ہیں؟ کیا احادیث میں معاملات ومعاشرات سے متعلق بے احتیاطیوں پر عقیدہ کی طرح وعیدیں وارد نہیں؟ موصوف کا اس سے انکار کر دینا ان کی علمی شخصیت کو نمایاں کرتا ہے۔

کیا موصوف حسن لغیرہ نامی اصطلاح سے واقف نہیں، موصوف بتائیں کہ حسن لغیرہ مقبول کے اقسام میں سے نہیں؟ کیا اس سے استدلال نہیں کیا جاتا؟ کیا حسن لغیرہ ضعیف روایات کے مجموعہ کے علاوہ کسی اور چیز کا نام ہے؟ جس طرح آحاد کا مجموعہ تواتر تک پہنچ کر نہایت بلند مقام پا لیتا ہے تو جو شخص غیر متواتر روایات کو تسلیم نہ بھی کرے تو اصولی طور پر اس کے لئے اس کی گنجائش نہیں رہتی؛ کیونکہ آحاد ہی کے راستہ سے تواتر تک پہنچا جاتا ہے، اسی طرح ضعیف کا مجموعہ بشروطہا حسن لغیرہ تک پہنچ جاتا ہے۔

لہذا جو شخص حسن لغیرہ کو مقام دیتا ہے وہ شخص ضعیف سے صرف نظر نہیں کر سکتا کہ یہیں سے حسن لغیرہ کی راہ نکلتی ہے۔

## حدیثِ ضعیف کے بارے میں ایک جدید موقف اور اس کا جائزہ:

ضعیف روایات کے بارے میں جمہور سے ہٹ کر یہ نیا موقف اپنے لوگوں نے بھی اپنایا ہوا ہے۔

چنانچہ "حدیثِ ضعیف پر عمل کرنے میں مفاسد" نامی رسالہ کے ٹائٹل پر لکھا ہے:

"عام طور پر مشہور ہے کہ فضائل میں حدیث ضعیف پر عمل کرنا جائز ہے۔ اس رسالہ میں ... حدیث، اصول حدیث ونصوص فقہ سے ثابت کیا گیا ہے کہ یہ حکم عام نہیں! بلکہ اس کے لئے بہت سے قیود وشرائط ہے جو اس زمانے میں مفقود ہیں لہذا اب فضائل میں بھی حدیث ضعیف پر عمل کرنا جائز نہیں"۔ (۱)

مذکورہ فتوی میں "قیود وشرائط ہیں" تک کی عبارت سے کسی قدر اتفاق کیا جا سکتا تھا، مگر آگے "اس زمانے میں مفقود ہیں" کی عبارت لگا کر، اس کے بعد "اب فضائل میں بھی حدیث ضعیف پر عمل کرنا جائز نہیں" فرما کر وہی بات کی گئی جو شیخ ناصر الدین البانی رحمۃ اللہ علیہ کے متعلقین کرتے رہے ہیں۔

جنہوں نے عربوں کا مزاج بطور خاص بگاڑا۔ اب حدیث دیکھنی ہے تو اس کے لئے "سلسلة الأحاديث الصحيحة" کے نام سے "مجموعہ حدیث" تیار ہے اور اسی پر اعتماد کیا جائے گا اور بس! شیخ ناصر الدین البانی صاحب کی تصحیح احادیث نے محدثین کی اصطلاح "متفق علیہ" کی جگہ لے لی!۔ امتِ مسلمہ میں ناقدین آتے رہے، محدثین آتے رہے، بھانت بھانت کا فرق رکھنے والے پیدا ہوئے، مگر حدیث رسول کے معاملہ میں اس قسم کی زمانی ترتیب قائم کرنے کا کسی کو بھی خیال نہیں آیا!

ناقدین حدیث نے رجال پر بحث کی، روایات کی تحسین وتضعیف پر بحث کی، تاہم اسی طرح کا خیال کسی کو بھی نہیں آیا کہ حدیث رسول کی زمانی تقسیم بھی ہو سکتی ہے!! امت مسلمہ میں

۱۔ حدیث ضعیف پر عمل کرنے میں مفاسد: ص ۲

منفرو تنقیدیں کبھی بھی درجہ سند نہیں پا سکی ہیں۔

یاد رہے! کہ "ضعیف الاسناد روایات" خالص فنی اصطلاح ہے جس کا جداگانہ مفہوم ہے، جو صحیح اور حسن کے مقابلہ میں ہے پھر اس کی قسمیں ہیں، درجات کا فرق ہے، اور "موضوع" والی اصطلاح سے تعبیر اور حکم دونوں میں الگ ہے، یہ اردو زبان کا محاورہ نہیں!

مگر اس کے باوجود اس کو بھی اردو زبان کا ایک لفظ سمجھ کر داد تحقیق دی ہے، اور اصولی اور فنی امور سے ہٹ کر اس پر تنقید کی ہے! "غور کرنے کی بات ہے کہ جو فضائل احادیث ضعیفہ سے ثابت ہیں ان کے بارے میں آخر کوئی قوی روایت کیوں نہیں ملتی؟ کچھ عقل سے کام لیا جائے۔ رسول اللہ ﷺ نے ایسی روایات کو عام مجامع میں کیوں بیان نہیں فرمایا؟ اگر بیان فرمایا تھا تو جو راوی قوی تھے انہوں نے ان روایات کو کیوں نہیں لیا"؟ (۱)

اہل فن محققین کے نزدیک یہ بات مسلم ہے کہ روایت کا ضعیف ہونا راوی اور متن کی مختلف نسبی کمزوریوں کی وجہ کی بنیاد پر ہوتا ہے۔

بعض جسمانی استعداد سے تعلق رکھتی ہیں، اور اکثر خالص فنی کمزوریاں کہلاتی ہیں جو عوامی لب ولہجے میں بتائی نہیں جاسکتیں! اور ہر ایک کمزوری کا سدِّ باب کرنے کے لئے بھی بیسیوں طریقے اور اصول بتائے گئے ہیں۔

اوپر ذکر ہو چکا کہ یہ خالص فنی مسئلہ ہے اردو زبان کا محاورہ نہیں! اس لئے کوئی ضروری نہیں کہ "ثقہ قوی راوی" کی تمام روایتیں صحیح اور حسن ہی ہو۔ ایسا ہی یہ خیال کر لینا بھی غلط ہے کہ "ضعیف راوی" کی تمام روایتیں ضعیف ہوتی ہیں، ایسا ہرگز نہیں!

پھر یہ ارشاد فرمانا کہ:

"کچھ عقل سے کام لیا جائے کہ رسول اللہ ﷺ نے ایسی روایات کو عام مجامع میں کیوں نہیں بیان فرمایا"؟

---

۱۔ روایات ضعیفہ اور تحصیل فضائل ص ۶

نہایت ہی عجیب ہے! کیونکہ اس عبارت سے یہ لازم آرہا ہے کہ یہ ضعیف روایتیں صحابہ میں سے بھی چند افراد بیان کرتے تھے! نعوذ باللہ من ذلک! حالانکہ صحابی کا موجود ہونا ثقاہت اور اعتماد کے لئے کافی ہوتا ہے۔

مجامع عام تھے یا خاص، اس میں بیٹھنے والے لوگ صحابہ ہی ہوتے تھے! کوئی شخص کبھی بھی یہ ثابت نہیں کرسکتا کہ کسی منافق کی کوئی روایت کتب حدیث میں بطور روایت نبوی موجود ہے! اسی طرح یہ کہنا کہ:

''اگر بیان فرمایا تھا تو جو راوی قوی تھے انہوں نے ان روایات کو کیوں نہیں لیا''؟ بھی مثل سابق عجیب ہے! کیونکہ رسول اللہ ﷺ کی مجلس میں بیٹھنے والے صحابہ تھے جو سب کے سب باجماع امت عدول ہیں۔

ضعیف روایات میں صحابہ کا ذکر ہوتا ہے، تابعین کا بھی ہوتا ہے پر ضعف کی باتیں تابعین کے بعد شروع ہوتی ہیں اکا دکا ہی تابعین میں کسی کو ضعیف ٹھیرایا گیا ہے۔

البانیہ سے تعلق رکھنے والے شیخ ناصر الدین البانی صاحب نے جمہور اہلسنت والجماعت سے ہٹ کر حدیث کی دو قسمیں بیان کی ہیں ''صحیح'' اور ''ضعیف'' اور اسی پر انہوں نے اپنی کتاب " سلسلة الأحاديث الضعيفة و الموضوعة و أثرها السيئ في الأمة " کی بنیا در کھی ہے۔

مذکورہ بالا رسالہ ''روایاتِ ضعیفہ اور تحصیلِ فضائل'' میں بھی اسی نئی تقسیم کو اختیار کیا گیا ہے۔

چنانچہ ارشاد فرماتے ہیں:

''ان وسائط کی دو قسمیں ہیں (۱) قوی جو قابل اعتماد ہیں۔ (۲) ضعیف جو نا قابل اعتماد ہیں۔ جو فضائل روایات ضعیفہ سے ثابت ہیں آخر ان کے بارے میں کوئی قوی روایت کیوں نہیں ملتی؟ تھوڑی سی عقل سے کام لیں، اس بات کو سمجھنے کے لئے تھوڑی سی بھی عقل کافی ہے۔''(۱)

---

۱۔ روایات ضعیفہ اور تحصیل فضائل: ص ۶

یہ بات قابل غور ہے کہ مسئلہ عقل کا نہیں، علم و نقل کا ہے، عامیانہ نہیں، فنی اور اصطلاحی ہے، ''اصول حدیث'' منقول، واقعاتی بنیادوں پر قائم ہیں جس میں احتمال آفرینی کے لئے کوئی جگہ نہیں۔

یہ کہنا بالکل کافی نہیں ہوگا کہ مذکورہ بالا رسالہ ایک مجمع عام میں بیان کردہ وعظ ہے؛ اس لئے کہ شدید ضرورت کے وقت علمی موضوعات کو محاورہ کی زبان میں بیان کیا جا سکتا ہے۔ متعلقہ موضوع کی فنی رعایت کے ساتھ پھر مجمع میں علماء کرام کی بھی ایک بڑی تعداد موجود رہتی تھی، پھر اس رسالہ کو سند کا بھی درجہ حاصل ہے۔

چنانچہ وعظ کہنے سے پہلے ارشاد فرمایا:

''آج روایات ضعیفہ سے متعلق کچھ کہنے کا ارادہ ہے اس مضمون کو جلد از جلد شائع کریں اور زیادہ سے زیادہ ہاتھوں تک پہنچائے۔''(۱)

موصوف کی اس روش کو ان کے بعد والوں نے بھی اپنا رکھا ہے۔

چنانچہ ضرب مؤمن میں ''آپ کے مسائل کا حل'' کے تحت ایک سائل کے جواب میں تحریر ہے:

''والدین پر محبت بھری نگاہ ڈالنے سے حج کا ثواب ملنے والی حدیث مشہور تو بہت ہے مگر تلاش و جستجو سے محققین کی جس تحقیق تک ہم مطلع ہو سکے اس کے مطابق یہ حدیث ضعیف ہے؛ لہذا جب تک اس حدیث کا صحیح ہونا ثابت نہ ہو جائے اس حدیث کو بیان کرنے سے اجتناب کرنا چاہئے۔''(۲)

اس میں موصوف نے ضعیف حدیث کو فضائل میں بیان کرنے کی اجازت نہیں دی، اور ضعف شدید کا تذکرہ بھی نہیں کیا، حالانکہ اس بارے میں جمہور علماء امت کا فیصلہ مشہور و معروف (جیسا کہ ماقبل میں مفصل گزر چکا) ہے کہ ''ضعیف روایت فضائل میں معتبر ہیں۔''

---

۱۔ روایات ضعیفہ اور تحصیل فضائل: ص ۵

۲۔ ضرب مؤمن شمارہ نمبر: ۴۰ جلد نمبر: ۱۱

سو حدیث پر عمل کرنے کے لئے اس کے صحیح ہونے کی شرط لگانا اور ضعیف یا حدیث حسن کو نا قابل اعتبار سمجھنا سلف کا مذہب نہیں، بلکہ جواب میں اختیار کئے گئے انداز سے معلوم ہوتا ہے کہ حدیث حسن بھی قابل اعتناء نہیں! صرف حدیث صحیح ہی قابل اعتبار ہے۔

ہمارے ایک ساتھی نے اس بارے میں موصوف کو توجہ بھی دلائی کہ وہ جس انداز کو لے کر چل رہے ہیں وہ جمہور سے میل نہیں کھاتا، مگر بزعم خویش تحقیق کے مقابلہ میں کوئی بات کسی کو راس نہیں آتی۔

جس کا جواب موصوف نے ان الفاظ کے ساتھ دیا: ''ضرب مؤمن کے اس مسئلہ کا ان عبارات اور تحقیقات سے قطعاً تعارض نہیں جو آپ نے نقل کی ہیں؛ کیونکہ ان عبارات کا مطلب صرف اتنا ہے کہ اگر کوئی عالم اور شریعت کے اصول سے واقف شخص محض احتیاط کی حد تک کسی ضعیف حدیث پر عمل کرنا چاہے تو اس کے لئے جائز ہے، جو شخص یہ احتیاط اور حدود کی رعایت نہیں کر سکتا جیسا کہ آج کل کے عوام، تو ان کے سامنے ضعیف احادیث بیان کرنا حکمت اور اصول کا تقاضا نہیں، بلکہ بیان نہ کرنا اصول کا تقاضا ہے۔'' (۱)

مناسب تو یہ تھا کہ توجہ دلانے کے بعد موصوف جمہور فقہاء و محدثین ہی کے مسلک کو اپناتے جس کے برحق ہونے کا موصوف کو بھی اقرار ہے۔

چنانچہ موصوف ایک جگہ یوں رقمطراز ہیں:

''ایسے حالات میں امت کو سلف صالحین سے کاٹ کر مزید گمراہی اور افتراق وانتشار میں ڈالنے کا وقت نہیں، بلکہ سلف صالحین سے جوڑنے کا وقت ہے جو صدیوں سے امت مسلمہ میں مسلم حیثیت کے حامل سمجھے جاتے رہے، جن کے علم وتقوی پر بجا طور پر امت کے بڑے بڑے فقہاء و محدثین کو اعتماد رہا ہے، یہی اس امت کو پستی سے نکالنے کا واحد ذریعہ ہے۔'' (۲)

---

۱۔ ضرب مؤمن شمارہ نمبر: ۴۰ جلد نمبر: ۱۱

۲۔ ضرب مؤمن شمارہ نمبر: ۱۲ جلد نمبر ۳۲

مگر باوجود اس کے موصوف جو نظریہ پہلے سے طے کر چکے تھے اسی کو قوت بہم پہنچانے کے لئے امام مسلم رحمہ اللہ علیہ کے مقدمہ میں موجود عبارت کو پیش کیا ہے۔ جس میں امام موصوف نے لکھا ہے:

" إذا لأخبار في أمر الدين إنما تأتي بتحليل، أو تحريم، أو أمر، أو نهي، أو ترغيب، أو ترهيب. فإذا كان الراواي لها ليس بمعدن للصدق والأمانة. ثم أقدم على الرواية عنه من قد عرفه، ولم يبين ما فيه لغيره ممن جهل معرفته، كان آثماً بفعله ذلك غاشاً لعوام المسلمين؛ إذ لا يؤمن على بعض من سمع تلك الأخبار أن يستعملها، أو يستعمل بعضها. ولعلها أو أكثرها أكاذيب، لا أصل لها، مع أن الأخبار الصحاح من روايات الثقات. و أهل القناعة أكثر من أن يضطر إلى نقل من ليس بثقة. لا مقنع." (۱)

حالانکہ اس کا مطلب احتیاط برتنا اور ثقات کی روایات کو ترجیح دینا ہے اور ان پر اعتماد کرنا ہے۔ اس تنقید کا نشانہ متہم بالکذب اور متروک رواۃ ہیں۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ جو روایتیں یا راویان نسبتاً کمزور ہیں وہ مردود اور نا قابل اعتبار ہیں۔ اور پھر جس چیز کا رواج قرون اولی سے ہو اور اہل علم بھی اس پر عمل پیرا رہے ہوں اس کے بارے میں مثبت خیال کر لینا چاہئے تھا۔

رہا مسئلہ امام مسلم رحمہ اللہ علیہ کے موقف کا، تو اس کو ہم مذہب ثالث میں تفصیلاً عرض کر چکے ہیں وہاں دیکھ لیا جائے، تا کہ بخوبی اس بات کا اندازہ ہو جائے کہ امام مسلم رحمہ اللہ علیہ کا موقف کیا ہے؟۔

اسی طرح "رہنمائے خطابت" میں لکھا ہوا ہے:

" آیات کی وضاحت کے لئے موضوع سے "براہ راست" متعلق صحیح اور حسن

۱۔ مقدمہ الجامع الصحیح للامام مسلم: ۱۱/۱

احادیث پیش کیجیے، ضعیف اور موضوع احادیث سے گریز کیجیے۔"(۱)

یہ بطور احتیاط اور مشورہ ہے، تو کوئی بات نہیں مگر ضعیف اور موضوع روایات کو ایک ہی درجہ دینا کہاں کا انصاف ہے؟ آخر اصطلاح میں فرق کیوں رکھا گیا ہے؟ جو حکم میں فرق نہ ہو! جس زمانے میں احادیث ہر طرف شائع اور ذائع تھیں اور حضرات محدثین کو اس بات پر فخر تھا کہ ہمیں لاکھوں حدیثیں یاد ہیں۔

"امام احمد بن حنبل رحمہ اللہ علیہ کے بارے میں امام ابوزرعہ رحمۃ اللہ علیہ کا بیان ہے کہ امام موصوف کو دس لاکھ حدیثیں یاد تھیں۔"(۲)

ضیف الاسناد روایات کے بارے میں امام موصوف ہی کا قول مشہور اور معروف ہے:

" إذا روينا عن رسول الله ﷺ في فضائل الأعمال تساهلنا في الأسانيد" (۳)

(ترجمہ): "یعنی جب ہم رسول اللہ ﷺ سے فضائل اعمال وغیرہ میں روایت کرتے ہیں تو ان کی اسانید میں نرمی اختیار کرتے ہیں"۔

اکابر محدثین، ناقدین اور فن شناس لوگوں کی موجودگی میں ضعیف روایات کے بارے میں نرم رویہ اپنایا گیا۔ تو پھر آج اس طرح کے خواہ مخواہ کے تشدد سے کسی کو کیا سوجھی؟! ہماری غرض و منشا ہرگز یہ نہیں کہ صحیح اور حسن درجہ والی روایات کو چھوڑ کر ضعیف الاسناد روایات پر ہی دارومدار ہو، بلکہ مقصود یہ ہے کہ ضعیف الاسناد روایات کو ان کا وہ مقام دیا جائے جو جمہور علماء اپنے قول و عمل سے دیتے چلے آئے ہیں۔

ضعیف الاسناد روایات کو موضوع کے ساتھ ملا کر بدعت کا ارتکاب نہ کیا جائے بلا وجہ جمہور سے ہٹ کر کوئی روش نہ اپنائی جائے، اصولِ حدیث کی فنی باتیں اس لئے نہیں کہ روایات نبوی کا

---

۱۔ رہنمائے خطابت: ص ۲۰۵

۲۔ تاریخ مدینۃ السلام: ۴/۴۱۹

۳۔ الکفایۃ فی معرفۃ اصول علم الروایۃ: ۱/۳۹۹

انکار کیا جائے، بلکہ اس کا مقصد یہ ہے کہ غیر نبوی روایات ''من گھڑت'' اس میں نہ در آئیں۔

چنانچہ حضرت علامہ انور شاہ کشمیری رحمۃ اللہ علیہ رقمطراز ہیں:

" کان الاسناد لئلا يدخل في الدين ما ليس منه ، لا ليخرج من الدين ما ثبت منه من عمل أهل الاسناد. "(۱)

(ترجمہ): ''سند و رجال کا سلسلہ ضروری قرار دیا تا کہ کوئی غیر چیز دین کا حصہ بن کر در نہ آئے، اس لئے نہیں کہ سند و رجال کی آڑ میں ثابت شدہ امور کو ہی دین سے نکال باہر کیا جائے''۔

(پھر حسن کی اصطلاح میں حسن لغیرہ بھی تو موجود ہے وہ ضعیف روایات نہیں تو اور کیا ہیں؟ جس سے احکام میں بھی استدلال کیا جاتا ہے چہ جائیکہ فضائل میں!)

شیخ ناصر الدین البانی صاحب کے مسلک و مشرب اور طرز و انداز کو اپنایا جائے تو بات جمہور اہلسنت والجماعت کے دائرہ سے نکل جائے گی۔ شیخ ناصر الدین البانی صاحب اور ان کے متبعین نے متقدمین کے نادر و متروک نظریات کو عوام کے سامنے اچھا اچھال کر پیش کیا اور اس کو تحقیق کا نام دے کر خوب پروان چڑھایا، اور اسی کو ''مہارت فن'' سمجھ بیٹھے حالانکہ فن اور تحقیق سے اس کا دور کا واسطہ بھی نہیں۔ پھر ان حضرات کے متعلقین نے ملکر بزرگوں کے شاذ اقوال و آراء کو سمجھنے کے بجائے ان سب کا مجموعہ بنا کر ایک الگ مسلک بنا ڈالا۔ بھلا ذرا سوچئے تو سہی!! جن حضراتِ محدثین نے ایک ایک حدیث کے لئے راتوں اور دنوں کا سفر کیا، خشکی کو طے کیا، بیابان کی خاک چھانی، سمندروں کو پار کیا، مال لٹایا، فاقہ برداشت کیا!! اس راہ میں انہوں نے جو تکلیفیں اٹھائی ہیں ان کا اس زمانے میں تصور بھی نہیں کیا جا سکتا!

۱۔ معارف السنن: ۱۷۹/۶

محدثین اور ائمہ جرح وتعدیل کی تگ ودو پر مشتمل تین ائمہ کے واقعات:

(١) "كان مالك بن أنس يقول: إن هذا الأمر لن ينال، حتى يذاق فيه طعم الفقر، وَ ذَكَرَ ما نزل بِربَيعة من الفقر في طلب العلم حتى باع خشب سقفِ بيته في طلب العلم، و حتى كان يأكل ما يلقىٰ على مزابل المدينة من الزبيب و عصارة التمر."(١)

(ترجمہ): "امام مالک بن انس رحمۃ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے کہ علم اس وقت تک حاصل نہیں ہوسکتا جب تک کہ فقر کا مزہ نہ چکھ لے اور اپنے استاد محترم حضرت ربیعۃ الرای رحمۃ (٢) اللہ علیہ کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا کہ تحصیل علم کے زمانے میں میرے استاد محترم کو چھت کی کڑیاں اور شہتیر تک بیچنے پڑے! اور اس حال سے بھی گزرنا پڑا کہ مزبلہ (جہاں آبادی کی خس وخاشاک ڈالی جاتی ہے) سے منقی اور کھجور کے ٹکڑے چن چن کر کھاتے!

(٢) "كان مَعِينٌ على خراج الري، فمات فخلف لابنه ألفَ ألف درهم و خمسين ألف درهم، فأنفقه كله على الحديث حتى لم يبق له نعل يلبسه" (٣)

---

١۔ جامع بیان العلم وفضلہ: ١/٣٤٢

٢۔ ابو عثمان ربیعۃ بن ابی عبد الرحمان فروخ الرای۔ موصوف نے علم کے حصول کے لئے بہت سے مصائب جھیلے ہیں، موصوف کو چھت کی کڑیاں اور شہتیر تک بیچنے پڑے! اور اس حال سے بھی گزرنا پڑا کہ مزبلہ (جہاں آبادی کی خس وخاشاک ڈالی جاتی ہے) سے منقی اور کھجور کے ٹکڑے چن چن کر کھائے، آپ بلاشبہ امام، فقیہ، مجتہد، حافظ حدیث، عابد، زاہد، متقی اور بڑے ذکی وفطین تھے۔ موصوف کی وفات کے بعد امام مالک نے فرمایا کے فقہ کی حلاوت چلی گئی۔ موصوف سے ایک جم غفیر نے ستفادہ کیا۔ وفات ١٣٦ھ میں ہوئی ہے۔ ترجمہ کے لئے دیکھئے: الاکمال: ٤/١٣١-١٣٢، وفیات الاعیان: ١/٣٢٩-٣٣٠، اور تاریخ مدینۃ السلام: ٩/٤١٤-٤٢٢

٣۔ تاریخ مدینۃ السلام: ١٦/٢٦٥

(ترجمہ): ''امام ابن معین رحمۃ اللہ علیہ کے والد صاحب، مقام ری سے خراج وصول کرنے پر مامور تھے دس لاکھ پچاس ہزار دراہم چھوڑ کر اللہ تعالی کو پیارے ہو گئے تھے یہ ساری رقم ابن معین رحمۃ اللہ علیہ نے تحصیل حدیث پر صرف کر دی! اور ایسا وقت بھی ان پر آیا کہ جوتی تک پہننے کو میسر نہ تھی؛ اور ننگے پاؤں چلتے پھرتے تھے''!۔

(۳) " كان عمر بن حفص الأشقر يقول: كنا مع محمد بن إسماعيل بالبصرة نكتب الحديث ففقدناه أياماً فطلبناه، فوجدناه في بيت وهو عريان و قد نفدما عنده و لم يبق معه شيئ فاجتمعنا و جمعنا له الدراهم، حتى اشترينا له ثوباً و كسوناه، ثم اندفع معنا في كتابة الحديث "[1]

(ترجمہ): ''مشہور محدث عمر بن حفص الاشقر جو امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ کے رفیق درس تھے فرماتے ہیں کہ ہم لوگ بصرہ میں حدیثیں لکھا کرتے تھے، کئی دنوں سے ہم نے امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ کو حلقہ درس سے غائب پایا۔ چنانچہ ہم چند ساتھی ان کی جگہ تلاش کرتے کرتے جہاں وہ مقیم تھے وہاں پہنچے، معلوم ہوا کہ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ ایک اندھیری کوٹھڑی میں پڑے ہوئے ہیں دریافت کرنے پر معلوم ہوا کہ ان کے پاس لباس نہیں (جو ہے وہ اس قدر پھٹا ہوا ہے کہ اس میں تستر نہیں ہوتا) ہم سب نے ملکر چندہ کیا اور ان کو کپڑے خرید کر دیئے تب وہ پہن کر حلقہ درس میں آنے جانے لگے''!۔

اس طرح ان حضرات نے روایات کی حفاظت کی خاطر سب کچھ داؤ پر لگا دیا مگر احادیث رسول اللہ ﷺ کو ہاتھ سے جانے نہیں دیا یہ انتہائی عشق اور محبت کی دلیل ہے کہ اپنے پیارے محبوب ﷺ کی احادیث کی حفاظت کے لئے اپنا تن من لگا دیا۔

---

۱۔ (تاریخ مدینۃ السلام ۲/۳۳۲)

اور پھر ان حضرات کے سامنے " من کذب علي متعمداً فليتبوأ مقعده من النار. "(۱) والی حدیث بھی ہر وقت مستحضر تھی اور ان حضرات کو اس بارے میں خوب علم تھا کہ اس کا کیا مطلب اور مفہوم ہے؟ اس کے باوجود ان حضرات کا احادیث ضعیفہ کے بیان کرنے اور اپنی اپنی تصانیف میں درج کرنے سے یہ بات واضح ہو جاتی ہے کہ احادیث ضعیفہ، ذخیرہ حدیث میں شامل اور آپ ﷺ کے فرمودات کا حصہ ہیں۔

چنانچہ محدث شام شیخ عبدالفتاح ابوغدہ رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

" أن المحدثين القدامیٰ النقاد الأئمة، كعبدالله بن المبارك، و أحمد بن حنبل، والبخاري، وأبي داؤد، والترمذي، و النسائي، وابن ماجه، وتلك الطبقة التي في عصرهم، كانوا يوردون الحديث الضعيف في كتبهم المؤلفة للعمل والاحتجاج ، ولا يتحاشونها أويرونها منكراً من القول ومهجوراً، كما يزعمه بعض الزاعمين اليوم. "(۲)

(ترجمہ): "محدثین ائمہ متقدمین، جیسے عبداللہ بن مبارک، امام احمد بن حنبل، امام بخاری، امام ابوداؤد، امام ترمذی، امام نسائی، امام ابن ماجہ، اور وہ حضرات جو ان کے زمانے کے تھے! اپنی کتابوں میں ضعیف احادیث بھی ذکر کیا کرتے تھے، تا کہ ان پر بھی عمل کیا جائے ، اور ان سے مسائل شرعیہ میں دلیل پکڑی جائے ۔ ضعیف احادیث سے ان کو پرہیز نہیں تھا، اور نہ ان احادیث ضعیفہ کو وہ منکر اور متروک سمجھتے تھے، جیسا کہ آج کل کے بعض مدعیوں کا دعویٰ ہے"۔

اور پھر شیخ ابوغدہ رحمۃ اللہ علیہ نے ضعیف حدیث کا دفاع کرتے ہوئے حافظ مغرب ابن عبدالبر رحمہ اللہ علیہ کی کتاب "التمہید" سے ان کا یہ کلام نقل کیا ہے:

---

۱۔ الجامع الصحیح للامام البخاري: ص۳۴

۲۔ تعلیق ظفر الاماني بشرح سید شریف الجرجاني: ص۱۸۶

"ورب حديث ضعيف صحيح المعنى."(۱)

(ترجمہ): "یعنی بہت سی حدیثیں سند کے اعتبار سے ضعیف تو ہوتی ہیں، مگر معنی کے اعتبار سے صحیح ہوتی ہیں"۔

لہذا نجات اور سلامتی کا راستہ ہی وہی ہے جس پر حضرات سلف صالحین گامزن اور عمل پیرا تھے، اور انہی کے دامن سے وابستہ رہنا ہی فلاح وکامیابی کی ضمانت ہے۔

### ایک ضروری تنبیہ:

ان تمام تر تفصیلات کے بعد آخر میں اس امر کی وضاحت بھی ضروری ہے کہ مثبت پہلو کا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ موضوع اور ضعیف جداً روایات کو بھی یہ کہہ کر کہ ضعیف روایت فضائل میں قابل عمل ہے معمول بہا قرار دیا جائے، جیسا کہ اہل بدعت کرتے رہے ہیں، ایسا کرنا کسی کے لئے بھی صحیح نہیں!! یہ ایک اٹل حقیقت ہے کہ ہر زمانہ کے لوگ اس کوتاہی کا شکار رہے ہیں جس کی واضح مثال حضرات محدثین کا ہر زمانے میں کتب مشتہرہ کی تصنیف وتالیف کرنا ہے اور کیوں نہ ہو؟ کہ آپ ﷺ نے جتنے اہتمام سے "من كذب علي متعمداً فليتبوأ مقعده من النار."(۲) بیان فرمایا ہے، شاید ہی کسی اور امر کو بیان فرمایا ہو۔

اس روایت کا طرّہ امتیاز یہ ہے کہ اسے عہد رسالت کے ہمہ گیر ایام میں بیان کیا جاتا رہا ہے، چنانچہ اس کے نقل کرنے والوں میں متقدمین ومتاخرین صحابہ برابر نظر آتے ہیں جو مختلف اَدوار، مختلف اَمکنہ، مختلف پس منظر کے ساتھ اس روایت کو بیان کرتے ہیں۔

اس سے سید البشر ﷺ کی وہی دور اندیشی کا بھی اندازہ ہوتا ہے کہ "آپ ﷺ نے ہر زمانہ میں رخنہ دین کے اس چور دروازہ کو کس قدر اہتمام سے بند رکھوایا تھا" یہی وجہ ہے کہ صحابہ کی جماعت ﴿وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ﴾ (المائدہ:۵۴) کے اوّلین وحقیقی مصداق ہے اس کے باوجود کسی ایک صحابی کے بارے میں یہ ثابت نہیں ہے کہ ان سے حدیث رسول میں "کذب" واقع ہوا ہے۔

---

۱۔ التمهيد لما في الموطا من المعاني والاسانيد: ۱/۵۸

۲۔ الجامع الصحيح للامام البخاري: ص ۳۴

اسی طرح جو حضرات بکثرت موضوع اور ضعیف جداً روایات نقل کرنے میں مشہور ہیں، یا وہ کتابیں جن میں بکثرت موضوع اور ضعیف جداً روایات موجود ہیں، ان سے اجتناب کرنا بھی ضروری ہے، ایسا نہ ہو کہ تھوڑی سی بے احتیاطی مذکورہ وعید میں داخل کردے۔ رہا یہ مسئلہ کہ یہ حضرات ان روایات کو اپنی تصانیف میں کیوں لیکر آتے ہیں؟ تو اس کا جواب یہ ہے کہ ان حضرات کا مقصود روایات کو جمع کرنا تھا؛ اس لئے ان کتابوں سے احادیث کو لینے والے پر ضروری ہے کہ وہ چھان بین کرکے لے۔

ہمارے زمانے میں ایک بڑی تعداد میں بے اصل، غیر معتمد، موضوع روایتیں پورے اعتماد سے بیان کی جاتی ہیں اور جب ان سے دریافت کیا جائے تو عوام کے ہاں تو کسی بھی معتمد شخصیت کا نام لینا صحت کی کسوٹی ہے جبکہ علماء کرام کے ایک بڑے طبقے کے ہاں کسی بھی مطبوع کتاب کا حوالہ بری ہونے کے لئے کافی ہے، حالانکہ اہل علم جانتے ہیں کہ اکثر یہ حوالہ جات یا تو کتب مواعظ سے ہوتی ہیں، یا ایسی کتابیں ہوتی ہیں جن میں نہ تو سند مذکور ہوتی ہے اور نہ ہی اس پر فنی اسنادی بحث ہوتی ہے، اب چونکہ یہ کتابیں حسب مؤلف مختلف مقام رکھتی ہیں اسلئے آنکھ بند کرکے ہر مؤلف کی ذکر کردہ روایت پر اعتماد نہیں کیا جاسکتا ۔

لہذا خاص طور پر ایسی کتب جو زیادہ موضوعات کا مرجع بنتی ہوں، ان کے بارے میں دیانۃً ہر صاحب علم کو محتاط رہنے کی ضرورت ہے، ائمہ متقدمین ومتاخرین نے اکثر ایسی کتب میں مذکور روایتوں کی تخریج اور فنی مقام کی توضیح کی ہوتی ہے اس لئے ان تصریحات کے ساتھ ان روایتوں کی تحقیق کیے بغیر چارہ کار نہیں۔

ایک دوسری کوتاہی بعض اردو مترجمین کی طرف سے عام طور پر دیکھنے میں آئی ہے کہ کسی بھی دلچسپ معلوماتی، مرغوب روایتوں پر مشتمل کتاب کا ترجمہ افادہ عامہ کی نیت سے کردیا جاتا ہے۔ حالانکہ کتاب کی روایتوں کا ایک معتد بہ حصہ یا تو درجہ اعتبار سے ساقط ہوتا ہے یا متروک، موضوع روایتوں پر مشتمل ہوتا ہے۔

اس لئے کسی بھی موضوع کا "افادہ عامہ" جتنی اہمیت کا حامل ہے اس سے زیادہ اس کا معتبر ہونا ضروری ہے۔ اور یہ اعتبار بھی فنی حیثیت کا ہونا چاہئے؛ کیونکہ عین ممکن بلکہ واقع ہے کہ کسی بھی اجنبی روایت کو سنکر فوراً ضعیف کہہ دیا جاتا ہے حالانکہ وہ روایت بعض دفعہ صحیح ہوتی ہے اور بعض دفعہ موضوع بھی ہوتی ہے تو "ضعیف" کا اطلاق دونوں کی تعبیر سے کوسوں دور ہے۔ اس لئے کما حقہ ایسے خاص مقامات اور خاص تناظر میں روایتوں کی تحقیق کرنی بھی ضروری ہے۔

خاتمہ:

اس پوری بحث وتمحیص سے مندرجہ ذیل امور ثابت ہوئے۔

۱۔ متروک اور منکر روایت کہ (جس میں ضعف شدید کی تصریح ہو)، کے علاوہ باقی تمام ضعیف روایات جمہور کے ہاں فضائل میں قابلِ عمل ہیں۔

۲۔ عقائد کے باب میں اخبارِ آحاد کا کوئی اعتبار نہیں۔ یعنی ان اخبار سے عقیدہ کو ثابت نہیں کیا جاسکتا۔

۳۔ احادیث ضعیفہ فضائل میں جمہور امت کے ہاں معتبر اور قابل عمل ہیں۔

۴۔ ضعیف حدیث کو اگر تلقی بالقبول حاصل ہوجائے تو یہ تلقی اس روایت کو سند سے مستغنی کر دیتی ہے، اور پھر یہ روایت احکام میں بھی مستدل بن سکتی ہے۔

۵۔ یہ قول کہ "احکام میں ضعیف روایت کا اعتبار نہیں" اپنے اطلاق پر نہیں۔

۶۔ احادیث ضعیفہ کا بغیر ضعف بتائے بیان کرنا جائز ہے۔

۷۔ ضعیف احادیث میں جب تک ضعف شدید نہ ہو قابل عمل ہے۔

۸۔ موضع احتیاط میں ضعیف حدیث احکام میں بھی مستدل بن سکتی ہے۔

۹۔ ہر چھوٹی بڑی بات کے لئے صحیح الاسناد احادیث نہیں ملتیں اور نہ ہی یہ بات ضروری ہے۔

۱۰۔ جن حضرات کی طرف مطلقاً عدم جواز کا قول منسوب ہے اس کی بھی تردید ہوتی ہے۔

۱۱۔ ان حضرات کے نظریہ کی بھی تردید ہوتی ہے جو احکام اور فضائل کے درمیان تفریق کے قائل نہیں۔

۱۲۔ ان حضرات کے نظریہ کی بھی تردید ہوتی ہے جو ضعیف کے بارے میں تساہل سے صرف روایت کرنا مراد لیتے ہیں نہ کہ عمل کرنا۔

۱۳۔ اسی طرح ان حضرات کے نظریہ کی بھی تردید ہوتی ہے جو امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ کے قول "ضعيف الحديث أحب إلينا من الري" سے حسن درجہ والی روایت مراد لیتے ہیں۔

۱۴۔ اسی طرح ان حضرات کے نظریہ کی بھی تردید ہوتی ہے جو احادیث ضعیفہ کے بارے میں تشدد سے کام لیتے ہیں۔

۱۵۔ اس سے یہ بات بھی ثابت ہوگئی کہ حضرات محققین کے ہاں آرائے شاذّہ کا کوئی اعتبار نہیں۔

۱۶۔ اسی طرح یہ بات بھی ثابت ہوگئی کہ احادیث ضعیفہ ذخیرہ حدیث ہی کا ایک بڑا کا حصہ ہے۔

لہذا ان تمام باتوں کے بعد ہم آخر میں یہی کہیں گے کہ نقد حدیثی اور جرح وتعدیل کے قواعد ومباحث اور خدمات کی حیثیت ووقعت کو باقی رکھتے ہوئے ضعیف احادیث کو ان کا وہ مقام دیا جائے جو فنی ہے علمی ہے اور سلف کے ہاں تھا۔

آخر میں اہل علم حضرات سے یہ گزارش ہے اگر کہیں کوئی غلطی نظر آجائے تو مطلع فرمائیں۔ عین نوازش ہوگی۔

اللہ تعالی تمام مسلمانوں کو حضرات سلف صالحین کے دامن سے وابستہ رکھے آمین۔

وصلى الله تعالى على خير خلقه أفضل المرسلين وخاتم النبيين محمد صلى الله تعالى عليه وعلى اله وأصحابه و ذريته أجمعين إلى يوم الدين۔ آمين

راقم الحروف

محمد انور بن عالمگیر کوہستانی

فاضل ومتخصص فی الحدیث جامعہ فاروقیہ کراچی

۲۸/۷/۱۴۳۵ھ بمطابق ۲۸/۵/۲۰۱۴م

# فہرست آیات



| نمبر شمار | آیات کریمہ | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| ۱ | ﴿أتحدثو نهم بما فتح الله عليكم﴾ | ۳۹ |
| ۲ | ﴿و من أصدق من الله حديثا﴾ | ۳۹ |
| ۳ | ﴿فليأتوا بحديث مثله﴾ | ۴۰ |
| ۴ | ﴿ألله نزل أحسن الحديث﴾ | ۴۰ |
| ۵ | ﴿ فجعلنلهم أحا ديث﴾ | ۴۰ |
| ۶ | ﴿واذ كروا نعمت الله عليكم وماأنزل-----﴾ | ۴۵ |
| ۷ | ﴿أليوم أكملت لكم دينكم وأتممت عليكم نعمتي﴾ | ۴۵ |
| ۸ | ﴿وأما بنعمة ربك فحدث﴾ | ۴۶ |
| ۹ | ﴿هل أ تاك حديث ضيف ابراهيم المكر مين﴾ | ۴۶ |
| ۱۰ | ﴿هل أتاك حديث موسى﴾ | ۴۶ |
| ۱۱ | ﴿و اذأ سرّالنبي إلى بعض ازوا جه حديثا﴾ | ۴۶ |
| ۱۲ | ﴿ أمابنعمة ربك فحدث﴾ | ۴۸ |
| ۱۳ | ﴿ألم يجدك يتيما فا وى﴾ | ۴۸ |
| ۱۴ | ﴿فأماالیتم فلا تقهر﴾ | ۴۸ |
| ۱۵ | ﴿ووجدك ضالا فهدى﴾ | ۴۸ |
| ۱۶ | ﴿ وأما بنعمة ربك فحدث﴾ | ۴۸ |

| | | |
|---|---|---|
| ۱۷ | ﴿ووجدك عائلًا فأغنى﴾ | ۴۹ |
| ۱۸ | ﴿أما السائل فلا تنهر﴾ | ۴۹ |
| ۱۹ | ﴿وما اتكم الرسول فخذوه وما نهكم عنه فانتهوا﴾ | ۱۰۱ |
| ۲۰ | ﴿فليحذر الذين يخالفون عن أمره أن تصيبهم فتنة ــ﴾ | ۱۰۱ |
| ۲۱ | ﴿من يطع الرسول فقد أطاع الله﴾ | ۱۰۲ |
| ۲۲ | ﴿يأيها الذين امنوا إن جاء كم فاسقٌ بنبإفتبينوا﴾ | ۱۰۶ |
| ۲۳ | ﴿إذقالوا لنبيٍ لهم ابعث لنا ملكا﴾ | ۱۱۱ |
| ۲۴ | ﴿عسى أن يبعثك ربك مقاماً محموداً﴾ | ۱۴۹ |
| ۲۵ | ﴿ولاحل لكم بعض الذي حرم عليكم﴾ | ۱۶۶ |
| ۲۶ | ﴿لكل جعلنا منكم شرعة و منهاجا ”﴾ | ۱۶۶ |
| ۲۷ | ﴿ولا يخافون لومة لائم﴾ | ۳۰۹ |

# فہرستِ آحادیث


| ۱ | من حدث عني بحديث يرى أنه | ۴۰ |
| --- | --- | --- |
| ۲ | قلت يارسول ا لله من أسعد الناس -- | ۴۰ |
| ۳ | من حدث عني حديثا وهو يرى أ نه كذب | ۴۰ |
| ۴ | من سن في الاسلام سنّة حسنةً | ۵۶ |
| ۵ | إنما ا لأعمال بالنيات. | ۵۷ |
| ۶ | عليكم بسنتي وسنة الخلفاء الرا شدين المهديين | ۵۹ |
| ۷ | تركت فيكم أمرين لن تضلو ا | ۵۹ |
| ۸ | عليكم بسنتي وسنة الخلفاء الرا شدين المهديين | ۰۶ |
| ۹ | النكاح من سنتي | ۰۶ |
| ۱۰ | أن رسول الله ﷺ نهى عن المزا بنة | ۶۹ |
| ۱۱ | قال رسول الله ﷺ:إن وليتمو ها | ۷۱ |
| ۱۲ | قال رسول الله ﷺ للمملوك طعا مه | ۷۲ |
| ۱۳ | لا تحمدوا إسلام إمرئ، حتى | ۷۵ |
| ۱۴ | رحم الله حار س الحرس | ۷۸ |
| ۱۵ | كان رسو ل الله ﷺ .... يقنت في الفجر | ۸۰ |
| ۱۶ | كلوا البلح با لتمر، كلوا الخلق با لجديد ، | ۸۱ |
| ۱۷ | قمت وراء أ بي بكروعمروعثمان | ۸۵ |
| ۱۸ | قال رسول الله ﷺ: أسبغوا الوضوء | ۸۷ |
| ۱۹ | كان النبي ﷺ يتحنث في غار حرا | ۸۸ |
| ۲۰ | للعبد ا لمملوك الصالح أجران | ۸۸ |

| ۲۱ | إذا لقيتم المشركين في طريق فلا تبدأ وهم | ۸۹ |
|---|---|---|
| ۲۲ | قال : سبعة يظلهم الله في ظله يوم لا ظل إلا ظله | ۹۰ |
| ۲۳ | سمعت رسول الله ﷺ يقول: لا تجلسوا | ۹۱ |
| ۲۴ | قال رسول الله ﷺ شيبتني هود وأخواتها | ۹۲ |
| ۲۵ | سئل رسول الله ﷺ عن الز كوة فقال | ۹۳ |
| ۲۶ | : قال رسول الله ﷺ لتؤدن الحقوق إلى أهلها | ۹۴ |
| ۲۷ | أن رسول الله ﷺ احتجر في المسجد | ۹۵ |
| ۲۸ | قال النبي ﷺ ألا هل عسى رجل يبلغه الحديث | ۱۰۲ |
| ۲۹ | كنت في البطحاء في عصا بة فينارسول الله ﷺ | ۱۵۷ |
| ۳۰ | قال رسول الله ﷺ: من صلى بعد المغرب ست ركعات | ۲۳۰ |
| ۳۱ | عن النبي ﷺ ما من مسلم ينظر | ۲۷۳ |
| ۳۲ | قال لي رسول الله ﷺ مفا تيح الجنة شها دة | ۲۷۴ |
| ۳۳ | قال لنارسول الله ﷺ استعيذوا با لله | ۲۷۴ |
| ۳۴ | عن النبي ﷺ قال:خصلتان لا يجتمعان | ۲۷۵ |
| ۳۵ | عن النبي ﷺ قال:إن الرحم | ۲۷۶ |
| ۳۶ | رأيت رسول الله ﷺ مع أبي فنا جني | ۲۷۶ |
| ۳۷ | رأيت رسول الله ﷺ يتو ضأ وعلى | ۲۷۷ |
| ۳۸ | قال احتجم رسول الله ﷺ فصلى | ۲۷۸ |
| ۳۹ | قال:اشتريت كبشاً أضحي به | ۲۷۸ |
| ۴۰ | أن رسول الله ﷺ قا لها في امرأة | ۲۷۸ |
| ۴۱ | من كذب علي متعمداً فليتبوأ مقعده من النار | ۳۰۸ |

# فہرست اعلام



| | | |
|---|---|---|
| 1 | ابوبکر بن مسعود (کاسانی) | 113 |
| 2 | احمد بن الحسین (بیہقی) | 57 |
| 3 | احمد بن عبد الحلیم (امام ابن تیمیہ) | 207 |
| 4 | احمد بن عبد الرحیم (شاہ ولی اللہ) | 144 |
| 5 | احمد بن علی (ابوبکر جصاص) | 141 |
| 6 | احمد بن علی (ابن حجر) | 108 |
| 7 | احمد بن علی (خطیب) | 43 |
| 8 | احمد بن محمد (امام طحاوی) | 79 |
| 9 | احمد بن محمد (امام احمد) | 73 |
| 10 | احمد بن محمد (ابن حجر ہیتمی) | 177 |
| 11 | احمد بن محمد (خفاجی) | 189 |
| 12 | احمد بن محمد شاکر | 219 |
| 13 | اسماعیل بن کثیر (ابن کثیر) | 270 |
| 14 | امیر کاتب (اتقانی) | 56 |
| 15 | جعفر بن ثعلب (ادفوی) | 59 |
| 17 | جمال الدین بن محمد (قاسمی) | 129 |
| 18 | حسین بن عبد اللہ (طیبی) | 45 |
| 19 | خلیل بن کیکلدی (علائی) | 259 |
| 20 | ربیعۃ بن عبد الرحمان | 307 |

| | | |
|---|---|---|
| 21 | رشید بن ہدایۃ (گنگوہی) | 208 |
| 22 | زکریا بن محمد (انصاری) | 202 |
| 23 | زین الدین بن ابراہیم (ابن نجیم) | 120 |
| 24 | سفیان بن ثوری | 190 |
| 25 | سفیان بن عیینہ | 191 |
| 26 | سلیم بن ایوب (رازی) | 100 |
| 27 | سلیمان بن عبدالقوی (طوفی) | 123 |
| 28 | سید احمد بن محمد (غماری) | 180 |
| 29 | سید شریف حسین بن نذیر حسین (دہلوی) | 207 |
| 30 | شبیر احمد بن فضل الرحمان (عثمانی) | 50 |
| 31 | شعبۃ بن الحجاج | 78 |
| 32 | طاہر بن محمد صالح (جزائری) | 39 |
| 33 | ظفر احمد بن لطیف (تھانوی) | 179 |
| 34 | عبدالحی بن عبدالحلیم (لکھنوی) | 53 |
| 35 | عبدالرحمان بن احمد (ابن رجب) | 170 |
| 36 | عبدالرحمان بن ادریس (ابن ابی حاتم) | 261 |
| 37 | عبدالرحمان بن علی (ابن جوزی) | 199 |
| 38 | عبدالرحمان بن کمال الدین (سیوطی) | 49 |
| 39 | عبدالرحمان بن مہدی | 193 |
| 40 | عبدالعزیز بن احمد (البخاری) | 124 |

| | | |
|---|---|---|
| 41 | عبدالعزیز بن احمد (فرہاروی) | 182 |
| 42 | عبدالعزیز بن عبدالسلام (عزالدین) | 128 |
| 43 | عبدالفتاح بن محمد (ابوغدہ) | 236 |
| 44 | عبدالقادر بن احمد (ابن بدران) | 122 |
| 45 | عبدالعلی بن نظام الدین (بحرالعلوم) | 126 |
| 46 | عبداللہ بن احمد (نسفی) | 114 |
| 47 | عبداللہ بن احمد (ابن قدامہ) | 114 |
| 48 | عبداللہ بن مبارک | 192 |
| 49 | عبداللہ بن محمد غماری | 208 |
| 50 | عبدالملک بن عبداللہ (امام الحرمین) | 110 |
| 51 | عبدالوہاب بن علی (سبکی) | 117 |
| 52 | عثمان بن عبدالرحمان (ابن الصلاح) | 56 |
| 53 | عثمان بن علی (زیلعی) | 117 |
| 54 | عثمان بن عمر (ابن حاجب) | 126 |
| 55 | علی بن سلطان (ملاعلی قاری) | 44 |
| 56 | علی بن محمد (ابن حزم) | 178 |
| 57 | علی بن محمد (بزدوی) | 110 |
| 58 | علی بن محمد سید شریف (جرجانی) | 200 |
| 59 | عیاض بن موسی (قاضی عیاض) | 240 |
| 60 | قاسم بن قطلو بغا | 128 |

| | | |
|---|---|---|
| 61 | مالک بن انس (امام مالک) | 177 |
| 62 | محب اللہ بن عبدالشکور (بہاری) | 131 |
| 63 | محمد بن ابراہیم (ابن جماعہ) | 100 |
| 64 | محمد بن ابراہیم (ابن الحنبلی) | 130 |
| 65 | محمد بن ابی بکر (ابن قیم) | 142 |
| 66 | محمد بن ابی نصر (حمیدی) | 70 |
| 67 | محمد بن احمد (سرخسی) | 111 |
| 68 | محمد بن احمد (ذہبی) | 152 |
| 69 | محمد بن احمد (محلی) | 201 |
| 70 | محمد بن احمد (ابن نجار) | 203 |
| 71 | محمد بن احمد (شربینی) | 203 |
| 72 | محمد بن ادریس (امام شافعی) | 72 |
| 73 | محمد اسعد (دوانی) | 211 |
| 74 | محمد بن اسماعیل (امام بخاری) | 235 |
| 75 | محمد بن اسماعیل (امیر صنعانی) | 133 |
| 76 | محمد اکرم بن عبدالرحمان (سندھی) | 62 |
| 77 | محمد انور شاہ بن معظم شاہ (کشمیری) | 126 |
| 78 | محمد ناصر الدین (البانی) | 143 |
| 79 | محمد بن عبداللہ (زرکشی) | 119 |
| 80 | محمد بن جریر (طبری) | 54 |

| | | |
|---|---|---|
| 81 | محمد زاہد بن الحسن (کوثری) | 150 |
| 82 | محمد عبد الرحمان بن عبد الرحیم (مبارک پوری) | 163 |
| 83 | محمد بن عبد الرحمان (سخاوی) | 44 |
| 84 | محمد بن عبد اللہ (امام حاکم) | 69 |
| 85 | محمد بن عبد اللہ (ابن العربی) | 112 |
| 86 | محمد بن عبد اللہ الدمشقی (ابن ناصر الدین) | 196 |
| 87 | محمد بن عبد الواحد (ابن ہمام) | 119 |
| 88 | محمد بن عثمان (امام آمدی) | 123 |
| 89 | محمد بن علی (ابن دقیق العید) | 70 |
| 90 | محمد بن علی (علاء الدین حسکفی) | 204 |
| 91 | محمد بن علی (شوکانی) | 247 |
| 92 | محمد امین بن محمود (امیر بادشاہ) | 121 |
| 93 | محمد عوامہ | 209 |
| 94 | محمد بن عمر (امام رازی) | 113 |
| 95 | محمد بن محمد (امام غزالی) | 55 |
| 96 | محمد بن محمد (ابن سید الناس) | 234 |
| 97 | محمود بن احمد (بخاری) | 115 |
| 98 | مسعود بن عمر (تفتازانی) | 118 |
| 99 | مسلم بن الحجاج | 238 |
| 100 | نذیر حسین بن جواد علی (دہلوی) | 207 |

| نمبر | نام | صفحہ |
|---|---|---|
| 101 | نعمان بن ثابت (امام ابوحنیفہ) | 176 |
| 102 | نورالدین عتر | 210 |
| 103 | یحی بن شرف (امام نووی) | 52 |
| 104 | یحی بن معین (ابن معین | 233 |
| 105 | یحی بن محمد (عنبری) | 195 |
| 106 | یوسف بن عبداللہ (ابن عبدالبر) | 109 |

# مصادرومراجع:

ا

(١) قرآن حکیم

(٢) الإبهاج في شرح المنهاج ،علي بن عبد الكافي ،نا شر دار الكتب العلميه ، الطبعةالأولى ١٤٠٤ھ

(٣) أثر الحديث الشريف في اختلاف الأئمة الفقهاء ، الشيخ محمد عوامه، نا شر مكتب دار البشائر الإسلاميه ، الطبعة الرابعة ١٤١٨ھ

(٤) الأجوبة الفاضله للأسئلة العشرة الكامله ، محمد عبد الحى اللكهنوي الحنفى، تحيقق: الشيخ عبد الفتاح أبو غدة ، نا شر مكتب المطبوعات الإسلاميه حلب ، الطبعة السادسة ١٤٢٦ھ

(٥) المجموعة فى الأحاديث الضعيفة والموضوع، أبو سلمان سراج الإسلام حنيف، ناشردار الكتب محله جنگی قصه خوانی پشاور

(٦) أحكام القرآن للجصاص ، تحقيق: محمد الصادق قمحاوي ، ناشر دار إحياء التراث العربي ،الطبعة ١٤٠٥ھ

(٧) أحكام القرآن ، لأبي بكر محمد بن عبد الله بن العربي المالكي ، تحقيق: علي محمد البجاوي ، ناشر مطبعة عيسى البابي الحلبي مصر، الطبعة ١٣٨٧ھ

(٨) الأحكام في أصول الأحكام ، لأبي محمد علي بن حزم الظاهر ي ، تحقيق: زكريا علي يوسف ، ناشر مطبعة النور بالرياض ، الطبعةالأولى ١٣٨٧ھ۔

(٩) اختصار علوم الحديث ، إسماعيل بن كثير ، مع شرح البا عث الحثيث أحمد محمد شاكر ، ناشر مكتبه دار الكتب العلميه بيروت لبنان الطبعة

الرابعة ۱٤۲٥ھ۔

(۱۰) الأدب المفرد ، محمد إسماعيل البخاري ، تحقيق و تخريج : الشيخ ناصرالدين الباني ، ناشر مكتب المعارف الرياض،الطبعة الأولى ۱٤۱۹ھ۔

(۱۱) الأذكار المنتخبة من كلام سيد الأبرار ، أبو زكريا يحيى بن شرف النووي ، تحقيق د: حامد محمد الطاهر ، نا شر دار الفجر للتراث قاهره ۔

(۱۲) الاستذكار لمذاهب فقهاء الأمصار ، لأبي عمر يوسف بن عبد البر ، تحقيق و تصحيح : عبد الرزاق المهدي ، ناشر دار إحياء التراث العربى الطبعة ۱٤۲۱ھ۔

(۱۳) أصل الاعتقاد ، عمر سليمان الأشقر ، ناشر الدار السلفيه الكويت، الطبعة الأولى ۱۳۹۹ھ۔

(۱٤) أصول السرخسي للسرخسي،ناشر دار الكتب العلميه،الطبعة الألى ۱٤۱٤ھ

(۱٥) إعلاء السنن،ظفر أحمد عثماني ،تحقيق وتعليق: محمد تقي عثماني، ناشر ادارة القرآن والعلوم الاسلاميه اردوبازار كراچى ،الطبعة الألى ۱٤۲۷ھ

(۱٦) إعلام الموقعين ،محمدبن أبي بكر ابن قيم الجوزيه، تحقيق:محمدمعتصم بالله البغدادي، ناشروحيدي كتب خانه پشاور

(۱۷)الأعلام قاموس تراجم لأشتهر الرجال والنساء من العرب والمستعربين والمستشرقين،خير الدين الزركلي ،ناشر دار العلم للملايين بيروت لبنان ،الطبعة الأولى ۲۰۰٥ء

(۱۸) الإكمال في رفع الارتياب عن المؤتلف والمختلف فى الأسماء والكنى والأنساب ، علي بن هبت الله بن ماكولا، ناشر دار الكتب العلميه ، الطبعة الأولى ۱۴۱۱ھ

(۱۹) إمعان النظر شرح نخبة الفكر، قاضي محمد أكرم سندهي ، تحقيق وتعليق: أبو سعيد غلام مصطفى قاسمي ، ناشر شاه ولى الله اكادمي۔

(۲۰)الامتاع بالأربعين المتبانيه السماع للحافظ ابن حجرالعسقلاني، تحقيق:أبو عبد الله محمدحسن محمد حسن إسماعيل الشافعي ،ناشر دار الكتب العلميه بيروت لبنان ،الطبعة الأولى ۱۹۹۷ء

(۲۱)الأنساب ،عبد الكريم بن محمد السمعاني ، ناشر دار الكتب العلميه، الطبعة الأولى ۱۴۱۹ھ

(۲۲)أنوار الباري شرح صحيح البخاري ،مجموعة افادات محمد أنور شاه الكشميري ،جمع وترتيب سيد يحمد رضا بجنوري ،ناشر اداره تاليفات اشرفيه، الطبعة الأولى ۱۴۲۵ھ

(۲۳)أنموذ ج العلوم ، محمد بن أسعد الدواني ، ناشر مكتبه مصطفائى هند وستان۔

(۲۴)إيضاح الدليل في قطع حجج أهل التعطيل ،محمدبن إبراهيم بن جماعه،تحقيق :وهبي سليمان غاوجيي الأباني ، ناشر دار السلام ،الطبعة الأولى ۱۹۹۰ء

ب

(۲۵)البحر الرائق شرح كنز الدقائق لابن نحيم ، ضبط وتخريج: شيخ زكريا عميرات ، ناشر دار الكتب العلميه،الطبعة الأولى ۱۴۱۸ھ

(۲۶)البحر المحيط في أصول الفقه بدر الدين محمد بن عبد الله الزركشي،تحقيق: محمد محمد تامر،ناشر دار الكتب العلميه،الطبعة ۱۴۲۱ھ

(۲۷)بدائع الفوائد ،محمدبن أبي بكرابن قيم الجوزيه، تحقيق :هشام عبد العزيز

عطا، عادل عبد الحميد ،أشرف أحمد العدوي ،ناشر مكتبه نزارمصطفى الباز مكة المكرمه،الطبعة الأولى ١٤٠٦ھ

(٢٨)بدائع الصنائع في ترتيب الشرائع للكاساني، تحقيق:علي محمدمعوض شيخ عادل أحمد الموجود ،ناشر دار الكتب العلميه،الطبعة الأولى ١٤١٨ھ

(٢٩)البدر الطالع بمحاسن من بعد القرن السابع ، محمد علي الشوكاني ، مطبعة السادة مصر قاهره ، الطبعة الأولى ١٣٤٨ھ

(٣٠)بستان المحدثين ،شاه عبد العزيز ،ناشر ایچ ایم سعید کمپنی ادب منزل پاکستان چوك كراچی

(٣١)البدايه والنهايه ، إسماعيل بن كثير ، تحقيق و تخريج د: رياض عبد الحميد مراد ، ناشر دار ابن كثير ،الطبعة الأولى ١٤٢٨ھ

(٣٢)بيان فضل علم السلف على الخلف ، زين الدين أبي الفرج عبد الرحمان بن أحمد البغدادي ،تحقيق و تعليق: محمد نا صر الأعجمي ، نا شر دار البشا ئر الإسلاميه ،الطبعة ١٤٢٤ھ۔

ت

(٣٣)تاج التراجم في من صنف من الحنفية قاسم بن قطلوبغا ،تحقيق:إبراهيم صالح، دار الما مون بيروت، الطبعة الأولى ١٤١٢ھ

(٣٤)تاريخ ا بن معين ، يحيى بن معين ، تحقيق وتخريج : الشخ أحمد محمد نور سيف ، ناشر مركز البحث العلمي و إحياء التراث الإسلامي مكه مكرمه ، الطبعة ١٣٩٩ھ۔

(٣٥)تاريخ الأدب العربي ، كارل بروكلمان ، ناشر دار الكتب الإسلامي، الطبعة ١٤٢٦ھ

(٣٦)تاریخ الإسلام ووفیات المشاهیر والأعلام،محمدبن أحمد الذهبي،تحقیق:مصطفی عبد القادرعطا،ناشر دار الکتب العلیمه ،الطبعة الأولی ١٤٢٦ھ
(٣٧)تاریخ الکبیر ، محمد بن إسماعیل البخاري ، تحقیق : مصطفی عبد القادر أحمد عطا ، ناشر دار الکتب العلمیه ،الطبعة الثانیة ١٤٢٩ھ۔
(٣٨)تاریخ مدینة السلام ، أحمدبن علي البغدادي ، ناشر مکتبه دار الکتب العلمیه بیروت لبنان۔
(٣٩)تاریخ مذاهب الإسلامیه فی السیاسیه والعقائد وتاریخ المذاهب الفقهیة،امام أبو زهره،ناشر دار الفکر العربي
(٤٠)التا صیل الشرعي لقواعد المحدثین ، عبد الله شعبان ، نا شر مکتبه دار السلام ،الطبعة الأولی ١٤٢٦ھ
(٤١)تانیب الخطیب ، علامه محمد زاهد الکوثري ، ناشر مکتبه اسلامیه کوئٹه
(٤٢)الطبقات السنیة في تراجم الحنفیه،تقی الدین بن عبد القادرتیمي، تحقیق:عبد الفتاح محمد الحلو،، ناشردار الرفاعي ،الطبعة الأولی ١٤١٣ھ
(٤٣)تبیین العجب بما ورد فی فضل رجب ، حافظ ابن حجر،تحقیق :إبراهیم بن إسماعیل
(٤٤)تبیین الحقائق شرح کنز الدقائق فخر الدین عثمان بن علي الزیلعي ،ناشر دار الکتب الاسلامیي قاهره ،الطبعة ١٣١٣ھ
(٤٥)التبیین ،عمیربن أمیراتقانيغازي ، تحقیق ودراسه د: صابر نصر مصطفی عثمان ، الطبعة الأولی ١٤٢٠ھ
(٤٦)تحفة الأحوذي بشرح جامع الترمذي، أبو العلی محمد عبدالرحمان بن

عبدالكريم مبارك پوري ، تحقيق : عبد الرحمان محمد عثمان ، ناشر المكتبة السلفيه مدينه منوره ،الطبعة الثانية سنة ١٤٢٤ھ

(٤٧)تحفة الأشراف بمعرفة الأطراف مع النكت الظراف على الأطراف، جمال الدين أبي الحجاج يوسف بن مزي ، تحقيق:عبد الصمد شرف الدين ،ناشر دار القيمه بهيونڈی بمبی الهند،الطبعةالأولى سنة ١٣٩٦ھ

(٤٨)تحقيق اسمى الصحيحن و اسم جامع الترمذى ، الشيخ عبد الفتاح ابو غده ، ناشر مكتب المطبوعات الاسلاميه حلب

(٤٩)تحقيق المقال في تخريج أحاديث فضائل اعمال ، لطيف الرحمان قاسمي البهراجئ ، ناشر مكتبه الحرمين دبی ، الطبعة سنة ١٤٢٥ھ-

(٥٠)تدريب الراوي في شرح تقريب النواوي ، جلال الدين عبد الرحمان السيوطي، تحقيق: أبو قتيبه نظر محمد الفاريابي ، ناشر دار طيبه ،الطبعة سنة ١٤٢٥ھ

(٥١)التدليس وأحكامه ، وآثاره النقديه ، صالح بن سعيد عومار الجزائري ، ناشر دار ابن حزم ، الطبعةالأولى سنة ١٤٢٢ھ

(٥٢)تذكرة الحفاظ ،محمدبن أحمد الذهبي،تحقيق:شيخ زكريا عميرات، ناشر دار الكتب العلميه ،الطبعة الثانية سنة ١٤٢٨ھ

(٥٣)التعريفات ، سيد شريف جرجاني ، ناشر دار المنار

(٥٤) التعريف بأوهام من قسم السنن إلى صحيح وضعيف ، محمود سعيد ممدوح،ناشر دار البحوث للدراسات الإسلاميه وأحياء التراث دبی،الطبعة الأولى سنة ١٤٢١ھ

(٥٥)تفسير الطبري المسمى جامع البيان في تاويل القرآن ، أبو جعفر محمدبن

جرير الطبري ، ناشر دار الكتب العلميه ، الطبعة الرابعة ١٤٢٦ھ

(٥٦)تفسير ابن كثير ، إسماعيل بن كثير ، ناشر سهيل اكيڈمی لاهور

(٥٧)التفسير الكبير للإمام الرازي ،ناشر دار إحياء التراث العربي بيروت، الطبعة الثانية ١٤١٧ھ

(٥٨)تقريب التهذيب،أحمد بن علي بن حجر،دراسة و تحقيق:محمد عوامه،ناشر دارالرشيد سوريا حلب،الطبعة الرابعة ١٤١٨ھ

(٥٩)التقرير و التحبير ، ابن أمير الحاج ، تحقيق و تخريج : عبد الله محمود محمد عمر ، ناشر دار الكتب العلميه ، الطبعة الأولى ١٤١٩ھ

(٦٠)التقييد والإيضاح لما أطلق أاغلق من كتاب ابن الصلاح للحافظ العراقي: تحقيق:اسامه عبد الله خياط، ناشر دار البشائر الإسلايه،الطبعة الأولى ١٤٢٥ھ

(٦١)التمهيدلما فی الموطا من المعاني والأسانيد ، أبو عمر يوسف بن عبد الله ابن عبد البر ، تحقيق : مصطفى بن أحمد العلوي محمد عبد الكريم البكري ، ناشر المكتبة التجارية مصطفى احمد الباز مكه مكرمه

(٦٢)التمهيد ، محفوظ بن أحمد بن الحسن ، تحقيق : محمدبن علي بن إبراهيم ، ناشر المحبث العلمي و أحياء التراث الإسلامي ،الطبعة الأولى ١٤٠٦ھ

(٦٣)توجيه النظرإلى أصول الأثر ، الشيخ طاهر الجزائري ، تحقيق و تعليق : الشيخ عبد الفتاح أبوغده ، ناشر مكتب المطبوعات الإسلاميه حلب ،الطبعة الأولى ١٤١٦ھ۔

(٦٤)توضيح الأفكار لمعاني تنقيح الأنظار ، محمد بن إسماعيل الصنعاني ، تحقيق : محمد محی الدين عبد الحميد ، ناشر دار أحياء التراث العربي ،الطبعة الأولى ١٤١٨ھ۔

(٦٥)تهـذيـب التهـذيب ، أبو الفضل أحمدبن علي بن حجر العسقلاني ، تحقيق : شيـخ عـادل الـمـوجـود ، شيخ علي محمد معوض ، ناشر دار الكتب العلميه، الطبعة الأولى ١٤٢٥ھ

(٦٦)تهـذيب الكمال في أسماء الرجال ، جمال الدين أبي الحجاج يوسف المزي ، تـقـديـم و تحقيق : سهيل زكار ، أحمد علي عبيد و حسن أحمد آغا ، ناشر دار الفكر ،الطبعة ١٤١٤ھ

(٦٧)تيسـر التـحـريـر شرح التحرير،محمد بن أمين البخاري المعروف بامير بادشاه ،ناشر دار الفكر

ث

(٦٨)ثـلاث رسـائـل فـي عـلـم مـصطلح الحديث :تحقيق وتعليق: شيخ عبد الفتاح أبوغده ، ناشر مكتبه دار البشائر الاسلاميه ،الطبعة الأولى ١٤١٧ھ

ج

(٦٩)جـامع بيان العلم وفضله ، تحقيق: أبو الأشبال الزهيري ، ناشر دار ابن الجوزيه ، طبع هفتم ١٤٢٧ھ

(٧٠)جـامـع التـرمـذي ، أبـو عيسـى مـحـمدبن عيسى الترمذي ، تحقيق وتعليق و تخريج : بشار عواد معروف ، ناشر دار الغرب الإسلامي ، طبع دوم ١٩٩٩ء

(٧١)الـجـرح والتـعـديـل ، أبـو محمد عبد الرحمان بن أبي حاتم الرازي ، تحقيق: مصطفى عبد القادر عطا ، ناشر دار الكتب العلميه بيروت لبنان ،الطبعة الأولى ١٤٢٢ھ

(٧٢)الـجـامـع الـصـحيـح لـلإمـامـا البـخاري،محمد بن إسماعيل البخاري،ناشر، دارالسلام الرياض

(٧٣)الجامع الصحيح للإمام مسلم،مسلم بن الحجاج القشيري،تحقيق وترتيب:محمد فواد عبد الباقي،ناشر دار الكتبالعلمية

(٧٤)الجواهر والدررفي ترجمة شيخ الإسلام ابن حجر، محمد بن عبد الرحمان السخاوي، ناشر لجنة احياء التراث الإسلامي مصر

(٧٥)الجواهر المضيه في طبقات الحنفيه ، محمد عبد الحي اللكهنوي ، ناشر قديمى كتب خانه آرام باغ كراچى

ح

(٧٦)حجة الله البالغه ، شاه ولى الله محدث الدهلوي ، تعليق : محمود طعمة حلبيي ، ناشر قديمى كتب خانه كراچى

(٧٧)حدیث کی ضرورت اور اہمیت،خلیل الرحمان چشتی، ناشر الفوز اکیڈمی،اسلام آباد

(٧٨)حكم العمل بالحديث الضعيف في فضائل الأ عمال ، فوزي بن محمد العوده ، ناشر دار الصميعي ،الطبعة الأولى ١٤١٧ھ

خ

(٧٩)خطورةمساواة الحديث الضعيف بالموضوع،خليل بن إبراهيم ،ناشر دار القبله

(٨٠)الخلاصة في أصول الحديث، حسين بن عبد الله ،تحقيق:صبيحي السامرائي ،ناشرمطبعة الإرشاد،بغداد،الطبعة١٣١٩ھ

د

(٨١)دراسات اللبيب فى الأسوة الحسنة با لحبيب ، محمد معين السندهي، تحقيق وتعليق : علامه عبد الرشيد النعمانيي، ناشر مكتبه مطبعة العرب كراچى

(٨٢) الدرر الكامنة في أعيان المائة الثامنة ،أحمد بن علي بن حجر، تحقيق :شيخ عبد الوارث محمد علي ،ناشر دارالكتب العلميه ،الطبعة الأولى ١٤١٨ھ

(٨٣)دلائل النبوه ، أبو بكر أحمد بن الحسين بن علي البيهقي ، تحقيق: عبد المعلى قلعجي ، ناشر دار الكتب العلميه ، الطبعة الأولى ١٤٠٥ھ

ر

(٨٤)رد المحتار على در المختار، محمد أمين بن عمروا لشامي ، ناشر ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى.

(٨٥)الرسالة ،محمدبن إدريس الشافعي ، تحقيق:شيخ خالد السبع العلمي ،شيخ زهير شفيق الكبي ،ناشر دار الكتاب العربى بيروت ،الطبعة الأولى ١٤٢٦ھ

(٨٦)الرفع والتكميل فى الجرح والتعديل، محمد عبد الحي الكهنوي ، ناشر متبع علوي هندوستان

(٨٧)الرفع والتكميل فى الجرح والتعديل،عبد الحي اللكهنوي،تحقيق:عبد الفتاح ابو غده،ناشرالدعوة الاسلامية پشاور

(٨٨)روضة الناظر وجنة المناظر ، عبد الله بن أحمد بن قدامه، ناشر دارالكتب العلميه ،الطبعة الثانية ١٤١٤ھ

(٨٩)رهنمائے خطابت ، محمد طاهر شاه ، ناشر مكتبه الفلاح كراچى،الطبعة الأولى ١٤٢٨ھ

(٩٠) روايات ضعيفه اور تحصيل فضائل ،رشيد أحمد بن محمدسليم،ناشر الرشيد كراچى ،الطبعة الأولى ١٤٢٣ھ

ز

(٩١)زاد المعادفي هدي خير العباد ،محمدبن أبي بكرابن قيم،تحقيق :شيخ عبد

الرزاق المهدي ، ناشر وحيدى كتب خانه پشاور

س

(٩٢)سلسلة الأحاديث الضعيفة والموضوعة وأثرها السيئة فى الأمة،محمدناصرالدين الباني، ناشر مكتبه المعارف الرياض،الطبعة الثانية ١٤٠٨ه

(٩٣) السنة ومكانتهافى التشريع الاسلامي،مصطفى السباعي، ناشردار الوراق

(٩٤)سنن الدارقطني ،علي بن عمرالدارقطني، تعليق وتخريج:مجدى بن منصوربن سيدالشوري،ناشردار الكتب العلميه،الطبعة الثانية ١٤٢٤ه

(٩٥)سنن أبي داؤد،سليمان بن أشعث،تحقيق:محمدعوامه،ناشر دارالقبله مكه مكرمه،الطبعة الثانية ١٤٢٥ه

(٩٦)سنن ابن ماجه، محمدبن يزيد قزويني، تحقيق:محمودمحمدمحمودحسن نصار،ناشر دارالكتب العلميه،الطبعة الأولى ١٤١٩ه

(٩٧)سير أعلام النبلاء،محمدبن أحمدالذهبي، تحقيق وتخريج :شعيب الأرنوط، ناشر مؤسسة الرسالة ،الطبعة الرابعة ١٤٠٦ه

ش

(٩٨)شرح التبصرة والتذكرة ،عبد الرحيم بن حسين العراقى،تحقيق:ماهر ياسين الفحل، عبد اللطيف،ناشر دارالكتب العلميه،الطبعة الأولى ١٤٢٤ه

(٩٩) شرح الديباج المهذب في مصطلح الحديث،محمدملاحنفي،

(١٠٠)شرح شرح نخبة الفكر ،علي بن سلطان محمد ملاعلي قاري ،ناشر قديمى كتب خانه آرام باغ كراچى

(١٠١)شذرات الذهب في أخبار من ذهب، ابن عباد حنبلي ، تحقيق :مصطفى

عبد القادر عطا،ناشر دارالکتب العلمیه،الطبعة ١٤١٩ه

(١٠٢)شرح عقائد النسفیه ،سعد الدین تفتازان ، ناشر المصباح لاهور

(١٠٣) شرح علل الترمذي ،ابن رجب حنبلي ،تحقیق نور الدین عتر ،الطبعة الأولی ١٣٩٨ه

(١٠٤)شرح فقه أکبر ،ملاعلی قاری ،ناشر قدیمی کتب خانه آرام باغ کراچی

(١٠٥) شرح الکوکب المنیر، محمد بن أحمدالفتوحي، تحقیق،محمد زهیلی ، تریسه حماد،ناشر دار الفکر دمشق،الطبعة الأولی ١٤٠٠ه

(١٠٦)شرح الجلال المحلي علی المنهاج،جلال الدین محلي ،ناشر دارإحیاء التراث العربي

(١٠٧)شرح مشکل الآثار،أحمدبن محمد الطحاوی، تحقیق و تخریج:شعیب الارنوط ،ناشر مؤسسة الرسالة،الطبعة الثانیة ١٤٢٧ه

ص

(١٠٨) الصحاح تاج اللغه وصحاح العربیه، إسماعیل بن حمادجوهري ،تحقیق:أحمدعبد الغفورعطار،ناشر دار العلم للملایین بیروت لبنان،الطبعة الرابعة١٤٠٧ه

ض

(١٠٩)ضرب مؤمن

(١١٠)ضعیف حدیث پر عمل کرنے میں مفاسد ،رشید أحمد ،ناشر کتاب گهر کراچی ،الطبعة الأولی ١٤٢٦ه

(١١١)الضوء اللامع لأهل القرن التاسع ،محمدبن عبد الرحمان السخاوي ،ناشر مکتبة الحیات بیروت

ط

(١١٢)طبقات الشافعية الكبرى ،عبد الوهاب بن علي السبكي،تحقيق:مصطفى عبد القادرعطا ،ناشر دار الكتب الكلميه ،الطبعة الأولى ١٤٢٠ھ

ظ

(١١٣)ظفر الأماني ، عبد الحي لكهنوي، تحقيق وتعليق ،عبد الفتاح ابو غده،ناشر مكتب المطبوعات الإسلاميه حلب،الطبعة الثالثة ١٤١٦ھ

ع

(١١٤)عارضة الأحوذي شرح جامع الترمذي، قاضي أبو بكر بن العربي،ناشر مكتبه الصاوى مصر الطبعة ١٣٥٣ء

(١١٥)العرف الشذي على جامع الترمذي ، محمد أنورشاه الكشميري ، ناشر الجامعة العربية أحسن العلوم گلشن اقبال کراچی

(١١٦)العلو للعلى الغفار ،محمدبن أحمد الذهبي ،تحقيق:أبو محمد أشرف عبد المقصود، ناشر مكتبة اضواء السلف الرياض ،الطبعة الأولى ١٩٩٥ء

(١١٧)عيو ن الاثر ،ابن سيد الناس ،ناشر مكتبة القدسي ،طبع اول ١٣٨٠ھ

ف

(١١٨)فانی زندگی کے چند ایام ، محمد حسن جان، ناشر القاسم اکیڈمی جامعه أبو هريره نوشهره

(١١٩)فتح الباري شرح صحيح البخاري،أحمد بن علي بن حجر، تحقيق وتعليق :عبد العزيز بن باز ،محمد فواد عبد الباقي،ناشر قديمى كتب خانه

(١٢٠)فتح الباقي على ألفية العراقي،شيخ زكريا الأنصاري ،
تحقيق:ماهر ياسين الفحل ،عبد اللطيف ،ناشر دار الكتب العلميه ،الطبعة الأولى

١٤٢٢ھ

(١٢١)فتح الغفار بشرح المنار المعروف بمشكاة الأنوارفي أصول المنارلابن نجيم ،ناشر مكتبه اسلاميه ميزان ماركيٹ كوئٹه، الطبعةالأولى ١٤٢٢ھ

(١٢٢)فتح القدير شرح هدايه ،محقق ابن همام ، ناشر مكتبه رشيديه سر كى روڈ كوئٹه

(١٢٣)فتح المغيث بشرح الفية الحديث،محمدبن عبد الرحمان السخاوي ، دراسه و تحقيق:عبد الكريم خضير ،محمدبن عبد الله ،ناشر مكتبة دار المنهاج ،الطبعة الثانية ١٤٢٨ھ

(١٢٤)الفتح المبين شرح الأربعين،أحمدبن حجرالهيتمى ،ناشر دارإحياء التراث العربي مصر

(١٢٥)الفصل للوصل المدرج فى النقل،أحمدبن علي خطيب بغدادي ، تحقيق:محمود نصار ،ناشر دار الكتب العلميه ،الطبعة الأولى ١٤٢٤ھ

(١٢٦)فتح الملهم ، علامه شبير أحمد عثماني ، تعليق : مفتى رفيع عثماني ، ناشر مكتبه دار العلوم كراچى ،الطبعة الأولى ١٤٢٤ھ

(١٢٧)فواتح الرحموت بشرح مسلم الثبوت،عبد العلي محمدبن نظام الدين الأنصاري، ناشر قديمى كتب خانه آرام باغ كراچى

(١٢٨)فوائد جامعه برعجالئه نافعه،عبد الحليم چشتى ،ناشر مير محمد كتب خانه كراچى

(١٢٩)الفوائد البهيه في تراجم الحنفيه ،محمد عبد الحي الكهنوي، ناشر قديمى كتب خانه

(١٣٠)الفوائد المجموعه فى الأحاديث الموضوعة،محمدبن علي

الشوكاني،تحقيق:عبد الرحمان المعلمي ،ناشر دار الكتب العلميه،الطبعة ١٤١٦ھ

(١٣١)فيض الباري على صحيح البخاري ،محمدأنورشاه كشميري، ناشر خضر راه بك ڈپو ديوبند الهند

ق

(١٣٢)القسيدة النونيه،ابن قيم الجوزيه ، ناشر دار الباز مكته المكرمه ،دار المعرفه بيروت لبنان

(١٣٣)قفو الاثرفي صفو علوم الأ ثر ،محمدبن إبراهيم بن الحنبلي ، تحقيق :عبد الفتاح أبو غده ،ناشر مكتب المطبوعات الإسلاميه حلب،الطبعة الثانية ١٤٠٨ھ

(١٣٤)قواعد في علوم الحديث ،علامه ظفر أحمد عثماني،تحقيق:عبد الفتاح أبو غده ،ناشر مكتبه ادارة القرآن كراچى

(١٣٥)القول البديع فى الصلاة على الحبيب الشفيع ، محمدبن عبد الرحمان السخاوي ،تحقيق:محمدعوامه،ناشر مكتبه دار إليسر ،الطبعةالثانية ١٤٢٥ھ

(١٣٦)القول المبتكر على شرح نخبةالفكر ،قاسم بن قطلوبغا ،تحقيق:إبراهيم بن ناصر الناصر ،ناشر دار الوطن ،الطبعة الأولى ١٤٢٩ھ

ك

(١٣٧)الكاشف في معرفة من له رواية فى الكتب الستة ،محمدبن أحمد الذهبي،تحقيق وتعليق :عزت علي عيد عطيه ،موسى محمد علي الموشي، ناشر دار الحديثيه ،طبع اول ١٣٩٣ھ

(١٣٨)الكفايه في معرفة أصول الرواية ،أحمدبن علي ،تحقيق وتعليق :أبو إسحاق

إبراهيم بن مصطفى ،ناشر دار الهدي ميت غمر ،الطبعة الأولى ١٤٢٣ھ

(١٣٩)الكامل في ضعفاء الرجال ،أحمد بن عبد الله بن عدي،تحقيق و تعليق :شيخ عادل أحمد عبد الموجود ،شيخ علي محمد معوض ،ناشر دار الكتب العلميه، الطبعة الأولى ١٤١٨ھ

(١٤٠) كتاب التلخيص في أصول الفقه إمام الحرمين الجويني ،تحقيق:عبد الله جولم النبإلي ،بشير أحمد العمري ، ناشر دار البشائر الإسلايه ،الطبعة ١٤١٧ھ

(١٤١) كتاب العلل،محمدبن عبد الرحمان ابن أبي حاتم ،تحقيق :أبو علي النظيف ،ناشر دار الكتب العلميه ،طبع اول ١٤٢٧ھ

(١٤٢) كتا ب المجروحين من المحدثين ، محمدبن حبان ،تحقيق :حمدي عبد المجيد السلفي ، ناشر دار الصميعي، الطبعة الأولى ١٤٢٠ھ

(١٤٣) كشف الاسرار،عبد العزيز بن أحمد البخاري ، تحقيق : محمد معتصم با لله البغدادي، ناشر قديمی کتب خانه

(١٤٤) كشف الأسرار بشرح المنارللنسفي،ناشرقديمی کتب خانه آرام باغ کراچی

(١٤٥) كوثر النبي ،عبد العزيز فرهاروي، ناشر مكتبه قاسميه ملتان

(١٤٦)الكوكب الدري على جامع الترمذي، رشيد أحمد گنگوهي، ناشر مكتبه ايچ ايم سعيد کمپنی کراچی

ل

(١٤٧)لسان العرب ،محمدبن مكرم بن منظور الأنصاري الأفريقي ،نا شر ادب الحوزه قم ايران الطبعة الأولى ١٤٠٥ھ

(١٤٨)لسان الميزان،أحمدبن علي بن حجر ،تحقيق وتعليق :عبد الفتاح أبو غده

،ناشر دار البشائر الإسلاميه ، الطبعة الأولى ١٤٢٣ھ
(١٤٩)لمعات التنقيح شرح مشكات المصابيح ،شيخ سليم الله خان ، ناشر مكتبه فاروقيه شاه فيصل كالو نى نمبر ٤ كراچى ،الطبعة الأولى ١٤٢٣ھ
م
(١٥٠)متن الأربعين ،للنووي ،ناشر مكتبه نور محمد كتب خانه كراچى
(١٥١)المثنوي والبتار في نحر العنيد المعثار الطاعن فيما صح من السنن والآثار،أحمدبن محمدالغماري ، ناشر مطبعة الاسلاميه ازهر ،الطبعة ١٣٥٢ھ
(١٥٢)مجموع فتا وى ،امام ابن تيميه ،تحقيق :أنور الباز ،عامر الجزار ، ناشر دار الوفاء ،الطبعة الثالثة ١٤٢٤ھ
(١٥٣)المجموع فى الضعفاء والمتروكين ،امام نسائي ،دراسه وتحقيق: شيخ عبد العزيز عزالدين السيرواني ،ناشر دار القلم ،الطبعة الأولى ١٤٠٥ھ
(١٥٤)المحيط البرهاني فى الفقه النعماني برهان الدين محمودبن أحمدالبخاري، تحقيق: أحمد عزوعنايه، ناشر المكتبة الغفاريه كانسى روڈ كوئٹه
(١٥٥)المحصول في أصول الفقه لابن العربي،تحقيق:حسين علي ،ناشر دار البياق اردن ، الطبعة الأولى ١٤٢٠ھ
(١٥٦) المحلى بالآثار ابن حزم الظاهري ،تحقيق:عبد الغفا ر سليمان بنداري ، ناشر دار الكتب العلميه ،الطبعة الأولى ١٤٢٣ھ
(١٥٧)مختصر وشرح وتهذيب لسنن أبي داؤد ، منذري ،علامه خطابي ،ابن قيم،تحقيق :محمدحامد ،ناشر مكتبة السنة المحمديه ،الطبعة ١٣٦٨ھ
(١٥٨) مختصر الصواعق المرسلة ،ابن قيم ،ناشر ادارات البحوث العلميه والافتاء والدعوة والإرشاد الرياض،

(۱۵۹)مختصر العلو للعلی الغفار حافظ ذهبي ، تحقيق وتعليق :محمد ناصر الدين الباني ، ناشر المكتب الاسلامي،الطبعة الأولى ۱٤۰۱ھ
(۱٦۰)المدخل إلى مذهب الامام أحمدبن حنبل ،عبد القادربن بدران ، تحقيق:عبد الله بن عبد المحسن التركي ،ناشر مؤسسة الرسالة ،الطبعة الأولى ۱٤۰۱ھ
(۱٦۱)مرقات المفاتيح شرح مشكاة المصابيح ،ملاعلي قاري ، ناشر مكتبه امداديه ملتان
(۱٦۲)المسامره شرح المسايره ،ابن أبي شريف ،تحقيق وتخريج :محمودعمر الدمياطي ،ناشر دارالكتب العلميه ،الطبعة الأولى ۱٤۲۳ھ
(۱٦۳)المستدك على الصحيحين ،إمام حاكم النيسابوري ، دراسه وتحقيق : مصطفى عبد القادر عطا ، ناشر دار الكتب العلميه ،الطبعة الثانية ۱٤۲۲ھ
(۱٦٤)المستصفى في علم الاصول للغزالي ، تحقيق:محمدبن سليمان الأشقر ،ناشر مؤسسة الرساله بيروت لبنان ، الطبعة الأولى ۱٤۱۷ھ
(۱٦٥)مسندأحمد ،إمام أحمدبن حنبل ،تحقيق:أسيد أبو معاطي ، أحمد عبد الرزاق ،ناشر دار الكتب العلميه ،الطبعة الأولى ۱٤۱۹ھ
(۱٦٦)مشاهير علماء،قارى فيوض الرحمان ، ناشر پبليشنك فر نيثر كمپنى اردوبازار لاهور
(۱٦۷)معجم البلدان ياقوت الحموي ، ناشر دار صادر بيروت ،الطبعة الثانية ۲۰۰۷ء
(۱٦۸)المعجم الكبير ، سليمان بن أحمد الطبراني ، تحقيق وتخريج : ي بو محمد الأسيوطي ، ناشردار الكتب العلميه ، الطبعة الأولى ۱٤۲۸ھ

(۱۶۹)معرفة أنواع علم الحديث ،ابن الصلاح ، تحقيق :ماهر يا سين الفحل ، عبد اللطيف ،ناشر دار الكتب العلميه ، الطبعة الأولى ۱۴۲۳ھ

(۱۷۰)معرفة علوم الحديث ، إمام حاكم النيسابوري ، تصحيح و تعليق :سيد معظم حسين ،ناشر دار الكتب العلميه ،الطبعة الثانية ۱۳۹۷ھ

(۱۷۱) معارف السنن شرح جامع ترمذی، علامہ محمد یوسف بنوری،ناشرمجلس الدعوۃ و تحقيق الاسلامی کراچی

(۱۷۲)المفردات والوحدان ،مسلم بن الحجاج ، تحقيق : عبد الغفار سليمان بنداري ،ناشر دار الكتب العلميه ،الطبعة الأولى ۱۴۰۸ھ

(۱۷۳)مقالات كوثري ، علامه زاهد الكوثري ، ناشر وحيدى كتب خانه پشاور

(۱۷۴)مقد مة في أصول الحديث ،شيخ عبد الحق محدث دهلوي،

تحقيق : سلمان ندوي ،سيد عبد الماجد غوري ، ناشردار ابن كثير ،الطبعة الأولى ۱۴۲۶ھ

(۱۷۵)مقدمه صحيح مسلم مع شرح إمام نووي ،إمام مسلم، تحقيق : محمد فواد عبد الباقي ، ناشر دار الكتب العلميه ، الطبعة الأولى ۱۴۲۳ھ

(۱۷۶)المغنى ، موفق الدين ابن قدامه ، ناشر دار الفكر

(۱۷۷) مغنى المحتاج شرح المنهاج ، محمد شربيني ،ناشر مطبعة مصطفى البابي الحلبي ،مصر ،الطبعة ۱۳۷۷ھ

(۱۷۸)المنتقى الحبار،عبدالله بن عبدالاسلام الحرانى

(۱۷۹)منهاج السنةالنوبية ، إمام ابن تيميه ، ناشر المطبعة الكبرى الأميريه بولاق مصر ،الطبعة الأولى ۱۳۲۱ھ

(۱۸۰)المنهل الروي في مختصر علوم الحديث ،بدر الدين بن جماعه ، تحقيق :

محی الدین عبد الرحمان رمضان ،ناشر دار الفکر ،الطبعة الثانية ١٤٠٦ھ
(١٨١)منهج النقد في علوم الحديث ، نور الدين عتر ، ناشر دار الفكر
(١٨٢)الموضوعات الكبرى ، ملا علي القاري ، تحقيق : أبو حاجب محمد سعيد بن بسيوني زغلول،ناشر قدیمی کتب خانه
(١٨٣)الموطأ، للإمام مالك بن أنس، تحقيق وتخريج : بشار عواد معروف ، ناشر دار الغرب الاسلامي ،الطبعة الثانية١٤١٧ھ
(١٨٤) ميزان الاعتدال ، علامه ذهبي ، ناشر مكتبه رحمانيه لاهور
ن
(١٨٥)النبراس ، عبد العزيز فرهاروي ، ناشر مكتبه امداديه
(١٨٦)النجوم الزاهرةفي ملوك مصر والقاهرة ،يوسف بن تغمري ،ناشر دار الكتب
(١٨٧)نزهة النظر ،حافظ ابن حجر ، تحقيق :نور الدين عتر ، ناشر الرحيم اکیڈیمی کراچی ،الطبعة الثالثة ١٤٢١ھ
(١٨٨)نزهة الخواطر و بهجة المسامع والنواظر ،عبد الحي بن فخر الدين ،ناشر دائر ة المعارف العثمانيه حيدر آباد الدكن الهند ،الطبعة الأولى ١٣٧٨ھ
(١٨٩)النكت على كتاب ابن الصلاح ، بدر الدين الزركشي، تحقيق :محمدعلي سمك ،ناشر دار الكتب العلميه ،الطبعة الأولى ١٤٢٥ھ
(١٩٠)النكت على كتاب ابن الصلاح ،حافظ ابن حجر ، بيع بن هاوي ،عمير المدخلي ، ناشر مكتبة الفرقان ،الطبعة الثالثة ١٤٢٤ھ
(١٩١)النور السافر عن أخبار القرن العاشر ، عبد القادر بن شيخ العيد روس ، تحقيق وتعليق : محمود الأرنوط ، اكرم البوشي، ناشر دار صادر بيروت، الطبعة الثالثة ١٤٢٧ھ

(۱۹۲)نیل الأوطار شرح منتقى الأخبار ، محمدبن علي الشوكاني ، ناشر مكتبه دار الجيل بيروت لبنان ، الطبعة ۱۳۷۳ء
و
(۱۹۳)وفيات الأعيان و أنباء أبناء الزمان ، ابن خلكان ،تحقيق : محمد عبد الرحمان المرعشيلي ، ناشر دار احياء التراث العربي الطبعة الأولى، ۱٤۱۷ه
ه
(۱۹٤)هدي الساري مقدمه فتح الباري،حافظ ابن حجر ،ناشر قديمى كتب خانه آرام باغ كراچى

# ضعیف حدیث کی شرعی حیثیت

مولانا محمد انور کوہستانی نے ''ضعیف حدیث کی شرعی حیثیت'' کے عنوان پر مقالہ لکھا ہے، جو لوگ ضعیف حدیث کو موضوع حدیث کا درجہ دیتے ہیں، مقالہ ان کے رد میں ہے۔ جمہور محدثین اور فقہاء نے ہمیشہ ضعیف حدیث سے استدلال کیا ہے، تو اسکو موضوع حدیث کا درجہ کیسے دیا جاسکتا ہے۔ مولانا عبدالماجد رفیق استاد شعبہ تخصص فی علوم الحدیث نے مولانا محمد انور کے مقالہ پر نہایت قیمتی اور جاندار تبصرہ لکھا ہے، احقر اسکی تائید کرتا ہے، اور متفق ہے۔ (شیخ الحدیث مولانا سلیم اللہ خان صاحب)

پھر خدا بھلا کرے ان فقہاء و محدثین کا، جنہوں نے احادیث رسول ﷺ اگر چہ ضعیف ہی ہوں لیکن اپنے قیاس اور رائے پر اس کو ترجیح دے کر بطور مؤید اور شاہد کے لے لیا، نہ جانے اس میں کونسا گناہ انہوں نے کیا؟ شاہد تمنا عمادی، پرویز غلام، اسلم جیراج پوری، عمر عثمان جیسے تقویٰ اور طہارت سے محروم لوگوں کی رائے نہ لینا ان کا مقدر اور جرم ٹھہرا۔

برادر مکرم مولوی محمد انور نے حدیث ضعیف، اس کے مراتب، احکام شرعیہ میں اس کا درجہ، فضائل میں اس کا مقام پر کھل کر گفتگو کی ہے۔ ''مشک آنست خود ببوید۔ نہ آنکہ عطار بگوید''، اہل علم سے میری گذارش ہے کہ حقائق علمیہ کے متلاشی بن کر کتاب کا مطالعہ فرمائیں۔ (مولانا منظور احمد مینگل صاحب)

اس کتاب میں موصوف نے ''حدیث ضعیف'' کی شرعی حیثیت کو بیان کیا ہے۔ فن حدیث سے وابستہ حضرات اس حقیقت سے بخوبی واقف ہیں کہ اس اہم اور دقیق عنوان پر قلم اٹھانا اور راہ اعتدال اختیار کرتے ہوئے افراط و تفریط کے پُر خار راستوں کے درمیان عافیت کے ساتھ دامن بچا کر گذر جانا ناممکن تو نہیں، لیکن انتہائی مشکل کٹھن اور دشوار ضرور ہے۔

اکابر محدثین، ناقدین اور فن شناس لوگوں کی موجودگی میں ضعیف روایات کے بارے میں نرم رویہ اپنایا گیا تو پھر آج اس طرح کے خواہ مخواہ کے تشدد سے کسی کو کیا سوجھی!! ہماری غرض و منشأ ہرگز یہ نہیں کہ صحیح اور حسن درجہ والی روایات کو چھوڑ کر ضعیف الاسناد روایات پر ہی دار و مدار ہو، بلکہ مقصود یہ ہے کہ ضعیف الاسناد روایات کو ان کا وہ مقام دیا جائے جو جمہور علماء اپنے قول و عمل سے دیتے چلے آئے ہیں۔

(مولانا عبدالماجد رفیق)

الخلیل پبلشنگ ہاؤس راولپنڈی
دوکان نمبر I-B، فضل داد پلازہ، اقبال روڈ، راولپنڈی۔
Ph: 051-5553248, Cell: 0331-5459409
e-mail: akpublishing124@gmail.com